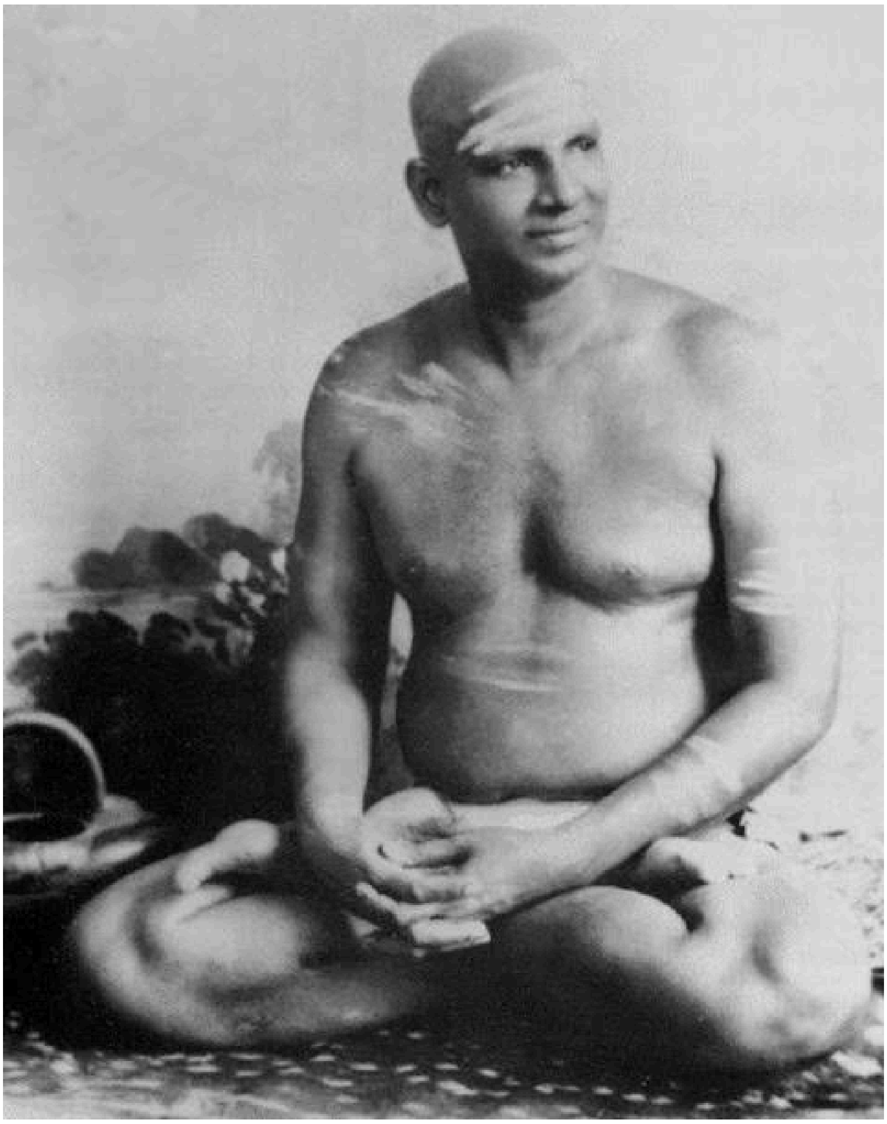
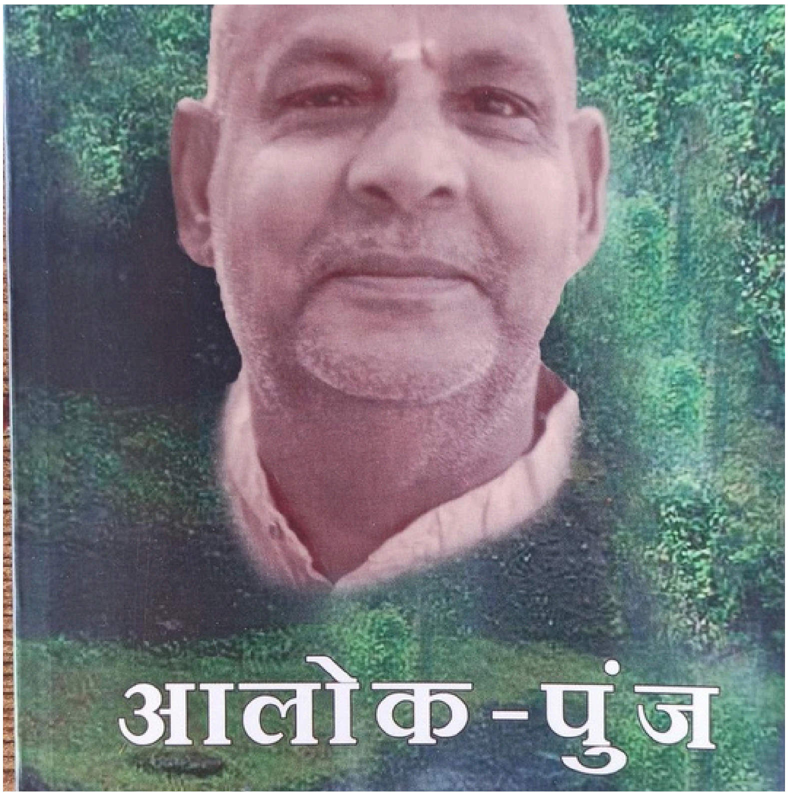




आलोक-पुंज

LIGHT FOUNTAIN

का हिन्दी रूपान्तर

लेखक
श्री स्वामी   हिदानन्द सरस्वती

अनवादक
श्री स्वामी अपपणानन्द सरस्वती
(पूवापश्रम-नाम : हरुंहसपल श्री िमन लाल शमाप)

रकाशक
द हिवाइन लाइफ सोसायटी
पत्रालय : हशवानन्दनगर२४९१९२
हजला : हटिरी गढ़वाल उत्तराखण्ड (हिमालय), भारत
www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org
रथम हिन्दीसुंस्करण : १९७७
हितीय हिन्दीसुंस्करण : १९९१
तृतीय हिन्दीसुंस्करण२००९
तिथप हिन्दीसुंस्करण:२०१६
(५०० रहतयाँ)

HC2

PRICE: 105/-

'द हिवाइन लाइफ सोसायटी,हशवानन्दनगर ' के हलएस्वामीपद्मनाभानन्दिारा
रकाहशत तथा उन्ीके िरि 'योगबेदान्तफारेस्टएकिोमीरेस ,
पो हशवानन्दनगर २४९१९२ हजला हटिरी गढ़वाल उत्तराखण्ड में महित। '
For onlineordersandCataloguevisit:dlsbooks.org

रकाशकीय वक्तव्य

इस छोटी-सी पस्तक में सामान्य जन के समक्ष स्वामी जी के अतीत तथा वतपमान रिोक जीवन की कछ रमख घटनाओ ◌ंके पररेक्ष्य में उनके व्यक्तक्तत्व का एक हनष्पक्ष अध्ययन रस्त त करने का रयास हकया गया ◌ि ै।

उनके जीवन-हवषयक इससे पूवपतन रकाहशत दो-तीन ग्रन्◌ो ◌ंसे सवपथा हभन्न, रस्त त प स्तक का मख्य उद्देश्य उनकी सामान्य गहतहवहियो ◌ंमें अि◌ःस्थ दशपन तथा समाहवष्ट व्याविाररक हशक्षाओ ◌ं को रकाश में लाना ◌ि ै। अतः यि पस्तक उनकी जीवनियाप का मात्र वणपन न ◌ि ो कर राक्तन पस्तको ◌ंका हवकहसत तथा पररहनष्पन्न रूप ◌ि ै।

कछ हवश्लेषणात्मक भाविारा में हलखी जाने के कारण, इसमें अनेक उपयोगी तथा पथ-रदशपक संकेत रस्तत हकये गये ◌ि ैं जो हनश्चय ◌ि ी रत्येक वगप के पाठक के हलए अतीव व्याविाररक मूल्य के ◌ि ोगें। यिी इस पस्तक की हवहशष्ट अिपता ◌ि ै।

यि पस्तक आदशप मानव के अनेकहवि रहतमान के रूप में स्वामी जी के अब तक अज्ञात कछ सन्दर हवहशष्ट गणो ◌ंको रकाश में लाती ◌ि ै।

-द डिवाइन लाइफ सोसायटी

दो शब्द

भगवत्कृपा की गहत भले ि◌ी मन्द ि◌ो; हकन्त जब वि ि◌ोती ि◌ै तो उसकी झडी-सी लग जाती ि◌ै। मेरे साथ भी ऐसा ि◌ी हुआ। सवोपरर बात तो यि ि◌ै हक हविाता ने इस सवपजनहिताय सत्कायप के हलए मेरा ि◌यन कर म झे अतीव सौभाग्यशाली बनाया। मैं इसे अपना परम सद्भाग्य समझता हाँ हक म झे य ग-हवभूहत स्वामी हशवानन्द जी मिाराज के सम्बन्ध में हलखने का स्वणप-अवसर राप्त हुआ जो केवल भारतवषप के ि◌ी नीं, ◌ं अहपत हनक्तखल हवश्व के रकाश स्तम्भ ि◌ैं।

इस रिना को रस्त त करने में म झे अतीव आनन्द की अनभूहत ि◌ो रिी ि◌ै। पस्तक का उद्देश्य रस्तावना से ि◌ी पूणपतया स स्पष्ट ि◌ो जाता ि◌ै। यहद उक्तिक्तखत उद्देश्य की हकंहिन्मात्र भी पूहतप ि◌ सकी तो मैं अपने को ि◌न्य समहाँगा।

- स्वामी डिदानन्द

श्री स्वामी हिदानन्द सरस्वती

(जीवन का एक रेखा डित्र-)

स्वामी हिदानन्द जी के पूवापश्रम का नाम श्रीिर राव था। उनके हपता का नाम श्रीहनवास राव और माता का नाम सरोहजनी था। उनका जन्म २४ हसतम्बर, १९१६ को हुआ। वि अपने माता-हपता की पााँि सिन्तानो ◌ं में से हितीय सन्तान और उनके पत्रो ◌ं में ज्येष्ठ थे। श्रीहनवास राव समृद्ध जमीदुंार और दहक्षण भारत में कई ग्राम, हवसूतृत भूखण्ड और राजसी भवन के स्वामी थे। सरोहजनी देवीएक आदशप भारतीय माता थी ◌ंऔर अपने साध्विाार के हलए रहसद्ध थी।◌ं

आठ वषप की आय में उनके जीवन पर एक अनन्तैया नामक व्यक्तक्त का रभाव पडा। श्री अनन्तैया इनके दादा के हमत्र थे और रामायण तथा मिाभारत मिाकाव्य से इन् कथाएँ स नाया करते थे। तपश्चयाप, ऋहष-जीवन-यापन और भगवद्-दशपन इनके हरय आदशप बने।

इनके फूफा श्रीकृष्ण राव ने इनके ित हदपक् व्याप्त भौहतकवादी जगत् के क रभावो ंसे इनकी रक्षा की और इनमें हनवृहत्त-जीवन का बीज वपन हकया। जैसा हक बाद की घटनाओ ंने हसद्ध हकया, यि उस बीज को सन्तत्व में हवकहसत िोने तक बडी रसन्नता से िारण हकये रि।

रारक्तम्भक हशक्षा मैंगलोर में राप्त कर यि सन् १९३२ में मिास के म तै्थैया िेट्टी सूकूल में रहवष्ट हुए जिाँ पर एक रहतभाशाली हवद्याथी के रूप में इन्ोनें ख्याहत राप्त की। इन्ोनें अपने रफ ि व्यक्तक्तत्व, अन करणीय व्यविार तथा असािारण ग णो ंसे अपने सम्पकप में आने वाले सभी अध्यापको ंऔर हवद्याहथपयो ंके हृदय में अपने हलए एक हवहशष्ट स्थान राप्त कर हलया।

सन् १९३६ में लोयोला कालेज में रवेश हकया, हजसमें बहुत िी मेिावी हवद्याथी िी रवेश पाते िैं। सन् १९३८ में साहित्य-स्नातक (बी. ए.) की उपाहि राप्त की। इनका हवद्याथी-जीवन अहिकांशतः ईसाई कालेज में व्यतीत हुआ, इसका भी अपना मित्त्व िै। इनके हृदय में रभ ईसा, ईशदूतो ंतथा ईसाई सन्तो ंके भव्य आदशप का हिन्दू-संसृकृहत के सवोत्कृष्ट एवं अहभजात तत्त्वो ंके साथ स न्दर संशे्लेषण हुआ िै।

बाइहबल का स्वाध्याय इनके हलए केवल दैहनक कृत्य िी निी ंथा, वि तो इनके हलए भागवत-जीवन था। वि इनके हलए उतना िी जीवन्त और सत्य था हजतना हक वेद, उपहनषद् और गीता के शब्द । अपने स्वाभाहवक हवशाल दृहष्टकोण के कारण ये कृष्ण में ईसा के, कृष्ण के स्थान में ईसा के निी, ं दशपन कर सके। यि ईसा मसीि के उतने िी भक्त थे हजतने हक भगवान् हवष्ण के थे।

राव पररवार उच्च कोहट की सदािाररता के हलए रहसद्ध था और यि श्रीिर राव के जीवन में भी रहतहष्ठत हकया गया। उनके पररवार के रते्येक व्यक्तक्त के कण-कण में दान और सेवा का ग ण व्याप्त था। इन सद्ग णो ंने श्रीिर राव में अपना साकार रूप ग्रिण हकया। उन्ोनें इन ग णो ं की अहभव्यक्तक्त के सािन ढूँढ़ हनकाले। कोई भी व्यक्तक्त, जो उनसे सिायता की यािना करता था, खाली िाथ वापस निी ंजाता था। वि दररिो ंको म क्त िस्त से दान करते थे।

क हष्ठयो ंकी सेवा ने उनके जीवनादशप का रूप हलया। वि अपने घर के हवसृतृत मैदान में उनके हलए झोपहडयाँ बनवाते और उनकी इस तरि से देखभाल करते मानो वे साक्षात् देवता िो।ं कालान्तर में जब वि आश्रम में आ गये तो उनके रारक्तम्भक जीवन का यि ग ण पूणप व हनबापि रूप से अहभव्यक्त हुआ। 'सभी राणी एक िैं', इस परम ज्ञान पर आहश्रत हदव्य रेम के हवशाल साम्राज्य में श्रेष्ठ से श्रेष्ठ व्यक्तक्त भी कदाहित् िी रवेश करने का सािस करे। पास-पडोस से नाना रकार के उग्र व्याहियो ंसे पीहडत रोगी उनके पास आते और हिदानन्द जी के हलए वे रोगी निी ं थे, साक्षात् नारायण थे। वि मृद रेम और करुणा से उनकी सेवा करते। उनके िाथो ंकी गहत िी उनका ऐसा हित्रांकन करती मानो वि साक्षात् भगवान् नारायण की पूजा कर रिे िो।ं कोई भी कायप िो, हकतनी िी तात्काहलक अहवलम्ब्यता का कायप िो, वि रुग्ण आश्रमवासी को स ख और सान्त्वना देने से कभी न रुकते ।

सेवा और हवशेषकर रोहगयो ुंकी सेवा से ऐसा पता िला हक उन्ें अपनी व्यक्तक्तगत पृथक् सत्ता का भान निी ुंरिता।
ऐसा लगता ि ै हक मानो उनका शरीर एक ऐसे जीवात्मा से ढीला-ढाला
हिपटा हुआ ि ै जो हक पूणप रूप से उद्ब द्ध ि ो ि का ि ै और यि अन भव करता ि ै हक विी सब
शरीरो ुंमें हनवास करता ि ै।

और उनकी यि सेवा केवल मानव जाहत तक िी सीहमत निी ुंथी। पश और पक्षी भी,
यहद मन ष्य से अहिक निी ुंतो कम-से-कम मन ष्य के समान उनके ध्यान के अहिकारी थे। वि
उनकी पीडा की भाषा समझते थे। एक बीमार क त्ते की सेवा पर ग रुदेव ने उनकी बडी सरािना
की थी। हकसी व्यक्तक्त को अपनी उपक्तस्थहत में हकसी मूक राणी पर नृशुंसता का व्यविार करते
देख कर वि अपने िाथ के डुंहगत से उसे उग्र हशक्षा देते।

क हष्टयो ुंके कल्याण-कायप में गम्भीर और क्तस्थर रुहि रखने के कारण वि राजकीय
अहिकाररयो ुंकी रशुंसा व हवश्वास के पात्र बने और रदेश िारा सुंस्थाहपत क ष्ठी कल्याण सहमहत के
हलए हनवापहित हकये गये। म हन-की-रेती अहिसूहित क्षेत्र सहमहत के वि पिले तो उपाध्यक्ष और बाद
में अध्यक्ष हनवापहित हुए।

यद्यहप श्रीिर सम्पन्न पररवार के थे, तथाहप एकान्त और ध्यान में सुंलग्न रिने के हलए
उन्ोनें बिपन से िी सभी साुंसाररक भोगो ुंको हतलाुंजहल दे दी। जिाँ तक अध्ययन का सम्बन्ध ि ै,
कालेज की प स्तको ुंकी अपेक्षा आध्याक्तत्मक प स्तको ुंमें उनकी अहिक रुहि थी। लोयोला कालेज में
रिते हुए भी वि पाठ्य-प स्तको ुंकी त लना में आध्याक्तत्मक प स्तको ुंको राथहमक स्थान देते थे। श्री
रामकृष्ण, स्वामी हववेकानन्द और ग रुदेव की प स्तको ुंको अन्य सभी प स्तको ुंसे पूवपता देते थे।

श्रीिर अपने ज्ञान में दूसरो ुंको इतना सिभागी बनाते थे हक वि घर तथा पास-पडोस के
लोगो ुंके वस्त तः ग रु बन गये। उनके साथ वि सच्चाई, रेम, श हिता, सेवा और भगवद्-भक्तक्त
की ििाप हकया करते थे। वि श्री राम का जप करने के हलए उन्ें उत्साहित हकया करते थे। जब
वि बीस वषप की वय के िी थे, तभी से उन्ोनें नवय वको ुंको रामतारक मन्त्र की दीक्षा देना
आरम्भ कर हदया था। उनके अन याहययो ुंमें एक श्री योगेश थे जो बालक ग रु श्रीिर िारा हदये गये
तारक मन्त्र का जप १२ वषप तक हनरन्तर करते रिे।

वि श्री रामकृष्ण और स्वामी हववेकानन्द के परम रेमी थे। मिास के मठ में हनयहमत रूप
से जाते और विाँ पूजा में भाग लेते थे। स्वामी हववेकानन्द का सुंन्यास के हलए आह्वान उनके श द्ध
हृदय में गूाँजता रिता था। मिान्गर में पिरने वाले सि -सन्तो ुंके दशपन के हलए वि सदा िी
लालाहयत रिते थे।

सन् १९३६ में श्रीिर छ प कर घर से िले गये। उनके माता-हपता ने बडी खोज के बाद
उन्ें हतरुपहत के पहवत्र पवपतीय मक्तन्दर से क छ मील दूर एक मिापत्मा सन्त के हनजपन आश्रम में
पाया। बहुत समझाने-ब झाने पर वे घर वापस गये। उनका यि अस्थायी हवयोग पररवार, हमत्र और
सम्पहत्त के मोिमय सुंसार से अक्तन्तम हवदाई लेने की तैयारी थी। जब वि घर पर थे, तब भी
उनका हृदय अपने अन्तवपती ज्ञान-गुंगा के सनातन रणव-नाद के साथ सस्वर ि ो कर स्पक्तन्दत िोता
और आध्याक्तत्मक हविारो ुंके हनस्तब्ध वनो ुंमें रमण करता रिता था। हतरुपहत से वापस आने पर
उन्ोनें सात वषप घर में व्यतीत हकये। इन हदनो ुंउनके जीवन पर एकान्तवास, सेवा, आध्याक्तत्मक

साहित्य के गिन अध्ययन, आत्म-सुंयम, इक्तिय-हनग्रि, सरल और साक्तत्त्वक जीवनियाप और आिार, हवलाहसता का पररिार और तपोहनष्ठ जीवन के अभ्यास की गिरी छाप पडी और ये िी उनकी अन्तः आध्याक्तत्मक शक्तक्त के सुंविपन में सिायक हुए।

सन् १९४३ में उन्ोनें अपने भावी जीवन के सम्बन्ध में अक्तन्तम हनणपय हकया। ऋहषकेश के श्री स्वामी हशवानन्द जी से वे पिले से िी पत्र-व्यविार कर रिे थे। अन्त में वि आश्रम में सक्तिहलत िोने के हलए स्वामी जी की अन महत राप्त करने में सफल हुए।

आश्रम में पदापपण करने के साथ िी उन्ोनें स्वभावतः औषिालय का कायपभार अपने ऊपर ले हलया। उनके िाथो ुंमें रोग के हनवारण की अद्भ त शक्तक्त थी। यि ख्याहत िारो ुंओर फैल गयी, हजससे हशवानन्द दातव्य औषिालय में रोहगयो ुंका जमघट लगने लग गया।

आश्रम आने के तत्काल बाद िी श्रीर ने अपनी क शाग्र ब क्तद्ध का पयापप्त पररिय हदया। उन्ोनें भाषण हदये, पत्र-पहत्रकाओ ुंके हलए लेख तैयार हकये और आश्रम में पिारने वाले हजज्ञास ओ ुं को आध्याक्तत्मक उपदेश हदये। सन् १९४८ में जब 'योग-वेदान्त आरण्य हवश्वहवद्यालय' (अब योग-वेदान्त आरण्य अकादमी के नाम से रहसद्ध) की स्थापना हुई, तो ग रुदेव ने उन्ें इसका उप-क लपहत और राजयोग का राध्यापक हनय क्त कर यथोहित सिान हदया। रथम वषप में उन्ोनें मिहषप पतुंजहल के योग-सूत्रो ुंकी सुंजल व्याख्या रस्त त कर हजज्ञास ओ ुंको योग-मागप की रेरणा दी।

आश्रम में अपने हनवास-काल के रथम वषप में िी उन्ोनें स्वामी हशवानन्द जी की अमर जीवन-कथा पर 'Light Fountain' (लाइट् फाउन्ेटेन) नामक ग्रन् की रिना की। इस ग्रन् पर ग रुदेव ने एक बार अपना मत व्यक्त करते हुए किा था- "ऐसा समय आयेगा जब हशवानन्द इस जगत् से रयाण कर जायेगा, हकन्त 'लाइटू फाउन्ेटेन' सदा अमर रिेगी।"

कायपबहुल एवुं गम्भीर सािनामय जीवन िोते हुए भी उन्ोनें ग रुदेव के हनदेशन में सन् १९४८ में योग-मूयूहियम (योग-कौत कालय) की स्थापना की हजसमें वेदान्त का सारा दशपन तथा योग सािना की सभी रहियाएँ हित्रो ुंिारा दशापयी गयी िैं।

सन् १९४८ के अक्तन्तम हदनो ुंमें जब श्री हनजबिो जी ने हदव्य जीवन सुंघ के मिासहिव के पद से अवकाश ग्रिण हकया, तो ग रुदेव ने श्रीर को उनके स्थान पर मनोनीत हकया। अब उनके कन्धो ुंपर सुंघ की व्यवस्था का मिान् उत्तरदाहयत्व आ पडा। इस हनय क्तक्त के तत्काल बाद िी इन्ोनें सुंस्था की सभी रवृहत्तयो ुंमें उपक्तस्थत रि कर, मन्त्रणा दे कर तथा ब क्तद्धमत्तापूवपक उनका नेतृत्व विन कर आध्याक्तत्मकता का प ट हदया। वि सभी को अपनी िेतना को हदव्य िेतना के समकक्ष लाने के हलए रोत्साहित करते रिते थे।

१० ज लाई १९४९ को ग रु-पूहणपमा के हदन श्रीर परम पूज्य श्री स्वामी हशवानन्द जी मिाराज से दीक्षा ले कर सुंन्यास आश्रम में रहवष्ट हुए। अब वि 'स्वामी हिदानन्द' के नाम से अहभहित हुए। हिदानन्द का अथप िै-सवोपरर िेतना और ज्ञान में क्तस्थत व्यक्तक्त।

भारत के हवहभन्न भागो ुंमें हदव्य जीवन सुंघ की शाखाओ ुंके क शलतापूवपक सुंयोजन का श्रेय उन्ें राप्त हुआ। इसके अहतररक्त सन् १९५० में ग रुदेव की नवय ग हनमापणकारी अक्तखल भारतीय यात्रा की सफलता में उनका योगदान हिरस्मरणीय रिेगा। सब लोगो ुंके सक्तिहलत रयास से भारत

के बडे-बडे राजनैहतक तथा सामाहजक नेता गण, राजकीय उच्च पदाहिकारी तथा राज्यो ंके नरेशो ं में हदव्य जीवन के अहभयान की ओर जाग्रहत पैदा की।

ग रुदेव ने स्वामी हिदानन्द को अपने व्यक्तक्तगत रहतहनहि के रूप में नूतन जगत् में हदव्य जीवन के सने्देश का रिार करने के हलए भेजा। उन्ोनें अमरीका का यि हवसूतृत पयपटन सन् १९५९ के नवम्बर मिा में आरम्भ हकया। अमरीकावाहसयो ंने पाश्चात्य वैिाररक भूहम में पले हुए लोगो ंमें भारतीय योग की व्याख्या रस्त त करने में पूणप हनष्णात भारत के एक योगी के रूप में उनका स्वागत हकया। उन्ोनें दहक्षणी अमरीका का भी पयपटन हकया और माण्टीवीहियो तथा बूयूहनस आयसप आहद नगरो ंमें िमप-रिार हकया। अमरीका से उन्ोनें यूरोप की हक्षर यात्रा की और १९६२ के मिाप मिा में आश्रम वापस आ गये।

अरैल १९६२ में उन्ोनें दहक्षण भारत की तीथपयात्रा के हलए रस्थान हकया। अपनी इस यात्रा में वि दहक्षण के मक्तन्दरो ंऔर तीथपस्थानो ंके दशपन करते तथा आत्मरेरक भाषण देते थे। ग रुदेव की मिासमाहि से लगभग आठ-दश हदन पूवप िी वि १९६३ की ज लाई के रारम्भ में िी दहक्षण की यात्रा से आश्रम में वापस आ गये। इसे वि एक अलौहकक घटना िी मानते िैं।

अगस्त सन् १९६३ में वि ग रुदेव के उत्तराहिकारी के रूप में हदव्य जीवन संुघ के परमाध्यक्ष तथा योग-वेदान्त आरण्य अकादमी के क लपहत हनवापहित हुए।

मिान् ग रु के एक स योग्य उत्तराहिकारी िोने के नाते उन्ोनें इन कहतपय वषों में न केवल इस संुस्था की स दूर देशो ंतक फैली हुई शाखाओ ंके ढााँिे में िी, वरन् हवश्व-भर के उन असंुख्य सािको ंके हृदयो ंमें भी जो हक उनका परामशप, उनकी सिायता तथा मागप-दशपन राप्त करने के हलए उत्स क रिे िैं-त्याग, सेवा, रेम और आध्याक्तत्मकता का झण्डा ऊाँिा बनाये रखने के हलए अथक श्रम हकया िै। एक उन्नत कोहट के संुन्यासी का अन करणीय जीवन-यापन करने, आध्याक्तत्मकता का आकषपण-कें द्र िोने तथा हवश्व में हदव्य जीवन के भव्य आदशों को प नजीवन रदान करने के हलए अपने बहुम खी उग्र रयास के कारण वि सभी लोगो ंके रेम-पात्र बन गये।

पूणप अविानपूवपक स रहक्षत उनके व्यक्तक्तत्व के स्वभावगत सौजन्य तथा स्वच्छन्द सेवाभावी रेमल स्वभाव ने लाखो ंव्यक्तक्तयो ंके जीवन में अहमत सान्त्वना रदान की िै। देश के स दूर और हनकट के स्थानो ंकी यात्रा के साथ-साथ स्वामी जी ने अभी िाल िी में मलेहशया तथा िााँगकााँग की यात्रा की और विााँ पर सच्ची संुसूकृहत, आध्याक्तत्मकता तथा सभी कमों में अिुंभावराहित्य की भावना को हवकीणप एवुं रसाररत हकया और इस भााँहत अगहणत व्यक्तक्तयो ंके हृदयो ंमें हदव्य जीवन-यापन की कला स्थाहपत की। उनके इन ग णो ंके कारण जीवन के सभी क्षेत्रो ंके लोग उनके रहत अहमत कृतज्ञता का भाव द्योतन करते िैं।

संुसार-भर में हदव्य जीवन के मिान् आदशों के प नरुज्जीवन के हलए अथक पररश्रम करते-करते २८ अगस्त २००८ को परम आराध्य श्री स्वामी हिदानन्द जी मिाराज ब्रह्मलीन िो गये।

रस्तावना

(१)

"महाजनो येन गतः स पन्ाः"

"मिात्माओ ंकामिान्जीवन,
करता िै रेररत िमको ।
बनायें अपनेजीवनको,
मि उन जैसा मिान् ।।"

जीवन के दगपम पथ पर संुघषपरत पररश्रान्त पहथक के हलए ज्योहतमपय मिान् व्यक्तक्तयो ंका जीवन एवंु उनके कायप अनवरत रेरणा एवंु नवचेतना के स्थायी स्रोत िैं। सन्तो ंऔर ऋहषयो ंकी दैनक्तन्दन रवहत्तयााँ एवंु हशक्षारद सम्भाषण भ्रहमत पहथको ंके हलए अतीव सियक, पथ-रदशपक एवंु हनदेश-पस्तक तल्य िैं।

इहतिासक अक्तस्तत्व के अन्ध-सागर में जब जीवन की जीणप-शीणप नौका शक्तक्तशालीमाया-न्ित्था वासनाओ ंके रबल झंझावात के थपेडो ंसे िााँवािोल िो जाती िै, तब संुसार-सागरके तूफानो ंमें भटके हुए एकाकी यात्री के हलए हदव्य मिान् आत्माओ ंके देदीप्यमान जीवन–ररत्र रकाश स्तम्भ की जाज्वल्यमान हकरणो ंके समान शक्तक्त व शाक्तन्त रदान करते िैं।

ऐसे अनकरणीय आदशप सच्चररत्र भ्रान्त, पररश्रान्त मानवता के हलए अत्यन्त मित्त्व की वस्त िैं।

ये अज्ञान और बराई की शक्तक्तयो ंके हवरुद्ध मित्त्वपूणप अस्त्रिैंतथापूणपताकेपथपर रगहतशील पहथक को हविहलत करने वाली अनेक दःखदायी समस्याओंकेसमािानितसत्प्रयत्नमें कल्पनातीत सियता रदान करते िैं। उनके व्याविाररक जीवन की रेरणादायीएवंुजाग्रहतलानेवाली

शक्तक्त-जो हजज्ञास के सि ख रस्त त िै-मानव में सहन्नहित उच्चता, श्रेष्ठता एवुं हदव्यता को रस्फ हटत करने और इनके आदशप के अन करण के हलए रोत्साहित करने में िै। इसी में उनकी मित्ता िै।

हरय पाठको! इस प स्तक में इस मिान् िररत्र के वणपन करने का उद्देश्य भी यिी िै। आप इससे अपनी उत्स कता और पात्रता के पररमाणान सार िी रेरणा, मागप-दशपन और शक्तक्त राप्त कर सकते िैं।

अब रश्न यि िै हक क्या रकाश और मागपदशपन के हलए इतनी तीव्र माँग वास्तव में िै भी? पाठको! केवल अपने नेत्र खोहलए और मानवता की दशा िारो ुंऔर देक्तखए। इसी में रश्न का उत्तर सहन्नहित िै। मानवता स ख की खोज में तडप तो री िै; परन्त उसे इक्तियगोिर नश्वर पदाथों में ढूाँढ़ री िै।

मानव सच्चे स ख का न तो स्वरूप िी जानता िै, न िी उसे ज्ञान िै हक उस शाश्वत स ख की हनहश्चत रूप से किाँ और कैसे राक्तप्त िो सकती िै? यि सब भाग-दौड अन्धकार में टक्कर मारने के त ल्य िै। इस खोज ने आि हनक य ग के मानहसक हक्षहतज को परस्पर हवरोिी सैकडो ुं हसद्धान्तो, ुं सम्प्रदायो, ुं दशपनो ुंऔर मतो ुंसे भ्रहमत कर हदया िै।

रत्येक सम्प्रदाय उद्घोहषत करता िै हक उसका मत िी सच्चा िै और भ्रहमत पहथक को अन्य मतो ुंसे बिे रिने के हलए साविान करता िै। तभी तो सवपत्र मागप-दशपन, हनदेशन और रकाश के हलए प कार िो री िै। रत्येक की हजह्वा पर एक िी रश्न िै हक सच्चे आनन्द का मागप कौन-सा िै और इसकी खोज हकस हदशा में की जाय? ऐसे गम्भीर अवसर पर प रातन ऋहष व्यास-रहित एकादश तत्त्व में दी हुई हशक्षा का स्मरण िोता िै, जो इस रकार िै :

**"श्रुहतहविहभन्ना स्मृतयोऽहप हभन्नाः
तथा मुनीनाां मतयोऽहप हभन्नाः ।
धमिस्य तत्त्वां हनहहतां गुहायाां
महाजनो येन गतः स पन्ाः ||"**

अथापत् श्र हतयाँ परस्पर हवरोिी िैं और स्मृहतयो ुंमें भी एक मत निी ुंिै। इसी रकार प रातन ऋहषयो ुंके मतो ुंमें भी हवहभन्नता िै। रतीत यि िोता िै हक िमप का तत्त्व कन्दराओ ुंमें ल प्त िो गया िै। हजस मागप पर िल कर मिात्माओ ुंने अपना अपना जीवन व्यतीत हकया, अब विी एकमात्र अन करणीय मागप िै।

भ्रहमत मानवता के हलए यिी एक हनहश्चत अहभमत िै। उल्लेखनीय बात यि िै हक मिापरुष, िािे वे हकसी भी य ग, देश तथा जाहत से सम्बक्तन्धत रिे िो, ुं उनकीजीवहनयो ुंको राणमय बनाने वाले हृदय और मक्तस्तष्क सम्बन्धी मौहलक ग ण या ऊाँिी भावनाएाँ उनमें सवपत्र समान िैं।

हरय पाठक! अब मैं आपको एक ऐसे आदशप जीवन का पररिय देने जा रिा हाँ जो व्यतीत हुआ िै और िो रिा िै। हकसी हवशेष वातावरण में इस जीवन में क्या रहतहियाएाँ हुईं तथा कौन-सी उच्च भावनाओ ुंसे रेररत िो कर ऐसे कायप हकये जो बाह्यतः अहभ तथा रुक्ष रतीत िोते

थे; हकन्त उनके पीछे हकतनी सद्भावनाएँ हछपी थी;ं इन सबको लेखक ने हजस रूप में देखा, उनका क छ अंश लेखबद्ध हकया जा रिा िै।

वे अंश उत्सािमय, उच्च तथा पूणप जीवन के पक्षो ंको अहभव्यंहजत करते िैं। उनके जीवन का आनन्द दूसरो ंको, यिााँ तक हक संसार-भर को हदन-रात हनरन्तर शारीररक, मानहसक, बौक्तद्धक तथा आध्याक्तत्मक रूप में अपना जीवन तथा समय रदान करने में पूणपतया आिाररत िै। इस तैलिारावत् आत्म-त्याग की भावना से सन्त ष्ट न िो कर स्वामी जी का जीवन सदैव हनत्य नयी हवहियो ंको अपनाने में रत िै हजससे वे संसार-भर के क्ष ि राणी तक पहुाँच कर उसका कष्ट हमटा सकें। इस रेहमल और हनष्काम सेवा में िी अपने को हमटा देने वाले स्वामी जी के िषोल्लास व अखण्ड आनन्द का रिस्य हछपा िै। आनन्दपूणप त्याग िी जीवन िै, रमाद या आराम निी।ं

इस असाधारण-य क्त जीवन की अहमतव्यहयता के साथ-साथ आध्याक्तत्मक जाग्रहत की एक अगाध और मूक अन्तधापरा रवाहित िै, जो सावपभौहमक शक्तक्त एवं रेम का भास हनरन्तर हदलाये रखती िै तथा यि जानती िै हक यि शक्तक्त एवं रेम की धारा िी उनके हिया-कलापो ंमें बि रिी िै। उनका जीवन हशश वत् हवनम्रता से पररपूणप िै हजसे साधारण दशपक समझने में असमथप िै। अहितीय सरलता, पूणप हनष्कपटता, पूणप हनस्स्वाथपता और अनासक्तक्त- ये सब अन्तश्चेतना से रस्फ हटत हुए िैं।

स्वामी जी के हवषय में पूणप ज्ञान से रहित दीन लेखक-रूपी हरज्म (संक्ेषेत्र हजससे सूयप की सप्तरंगी हकरणें वहित िो रहतहबक्तम्बत िोती िैं) िारा उनके जीवन्त रकाशमय जीवन की क छेक हकरणें रहतहबक्तम्बत करने का एक हवनम्र रयास हकया िै। सम्भव िै इनसे हकसी का पथ रकाशमय िो जाये, उसका हृदय ज्योहतत िो जाये हजससे हक उच्चतर जीवन-पथ पर वि सशक्त िो कर अग्रसर िो सके। रत्येक व्यक्तक्त के अज्ञानान्धकार के हवनाश एवं संशय-हनवारणाथप ये अतीव सिायक सिायक िोगी।

सौभाग्य से हजस मिान् व्यक्तक्तत्व का म झे साहन्नध्य राप्त हुआ िै, वि एक हवकहसत प ष्प िै हजसके अंक रण और हवकास को जानने के हलए िमें उनके रारक्तम्भक जीवन को देखना िोगा, जो उन्ोंने मलेहशया के हिहकत्सालय में एक पररश्रमी हिहकत्सक के रूप में व्यतीत हकया। वि दशक इनके मूक हवकास का काल था जो इन्ोंने यत्नपूवपक मानवता के संकट-हनवारण में लगाया।

यौवन के स्वहणपम काल में जब िममें से अहधकांश व्यक्तक्त अपना समय जीवन के स खोपभोग राप्त करने में लगा देते िैं, इन्ोंने उस समय की बहुत अहधक एवं ज्वहलत शक्तक्त का रयोग रसन्नतापूवपक एवं म क्त हृदय से अपने आस-पास की जनता के कल्याणाथप हकया।

अपने रारक्तम्भक जीवन के हिया-कलापो ंका वणपन करने को वे सदैव नकारते रिे। अब भी मूक रूप से रहतहदन की गयी मानवता की सेवा एवं रेम का वे बखान निी ंकरना िािते। स अवसर पा कर, कौशल से रेरणा दे कर िम उनके मौन के स्व-बन्धन को िटाने में तथा यदा-कदाउनके जीवन के हवषय में क छ जानने में सफल हुए। अन्ततः उनके स्वभाव के ममप-स्थलो ंकोस्पशप करने से बहुत-सी बातें इस रकार रकाश में लायी जा सकी।ं

आध्याक्तत्मक पथ के हजज्ञास िोने के नाते बहुत बार िमें अनेक कष्टदायक समस्याओ ुंका सामना करना पडता िै। स्वामी जी को अनेक हजज्ञास ओ ुंके अनेक पत्र आते रिते थे, हजनमें वे अपनी कहठनाइयो ुंके हनवारणाथप एवुं मागपदशपनाथप राथपना करते थे। इससे रोत्साहित िो कर िम इनसे आग्रिपूवपक राथपना करते थे हक वे िमें बतायें हक इन्ोनेुं रारक्तम्भक काल में ऐसी कहठनाइयो ुं
का समिाान कैसे हकया, इनकी सफलता का रिस्य क्या रिा, इनकी रस्फ हटत शक्तक्त और आनन्द का स्रोत क्या रिा और अब उनके जीवन के रत्येक क्षण एवुं िर एक कायप के राणमय
िोने का रिस्य क्या िै ?

िमने इस बात पर बल हदया हक इन सब रेरणादायक उदािरणो ुंसे िमारे साथ- साथ
समग्र सुंसार लाभाक्तित िोगा और हजन हसद्धान्तो ुंसे वे रेररत हुए तथा हजन हशक्षाओ ुंका उन्ोनेुं
अन सरण हकया, उनसे तथा उनके िररत्र के आदशप िारा िमें मागप-दशपन एवुं पयापप्त सिायता
हमलेगी। िमने उन्ें बताया हक उनके व्यक्तक्तगत सुंकोि से िम उनके हसद्धान्तो ुंकी व्याविाररक
उपयोहगता से वुंहित रि कर िाहन में रिेंगे। िमने आग्रिपूवपक हनवेदन हकया हक सबकी भलाई के
हलए उनको बताना िी िोगा। इस रकार िम उनके जीवन के कायप-कलापो ुंपर पडे आवरण को
िटाने में सफल हुए।

ऋहषकेश, हिमालय के प ण्यशील मनीषी एवुं सन्त श्री स्वामी हशवानन्द जी मिाराज
आज हनक आध्याक्तत्मक जगत् में सवपत्र हवख्यात िैं। बीसवी ुंसदी के हपछले पिास वषों में वे अपने
समय के उन जगद्ग रुओ ुंमें से एक िैं हजन्ोनेुं सुंसार के अनेक देशो ुंके लाखो ुंलोगो ुंके हृदयो ुंमें
आध्याक्तत्मक जाग्रहत उत्पन्न की। हवश्व-भर के असुंख्य हजज्ञास इनके आभारी िैं। उनके हलए वे एक
कृपाल हशक्षक, मिान् सद्ग रु और अन पम व करुणामय सन्त िैं।

उन्ोनेुं आध्याक्तत्मक रकाश रकाहशत कर हवहभन्न क्षेत्रो ुंके लोगो ुंको शाक्तन्त तथा आनन्द
रदान हकया। इनका हित्ताकषपण एवुं देदीप्यमान व्यक्तक्तत्व भिता, हनस्स्वाथपता और सावपभौहमक रेम
से दीप्त िै हजसके कारण ऋहषकेश के सहन्नकट पावनी गुंगा-तट पर अवक्तस्थत स न्दर आध्याक्तत्मक
क टीर पर आज हनक सुंसार को दशो ुंहदशाओ ुंसे उत्कट हजज्ञास और भक्त वैसे िी आकृष्ट हुए िैं,
जैसे पूणप हवकहसत कमल-प ष्प पर मि मक्तियााँ आकहषपत िोती िैं।

इनका समू्पणप जीवन पूणपतया हनरन्तर आध्याक्तत्मकता के क्षेत्र में समहपपत हुआ हजसने इन्ें
हजज्ञास साधक तथा स्त्री-प रुष, य वक, वृद्ध, हवद्याथी, हशक्षक, व्यवसायी, राजनीहतज्ञ जैसे सभी
रकार के व्यक्तक्तयो ुंको हशक्षण-रहशक्षण देने, रेरणा तथा मागप-दशपन देने, रेररत करने, शाक्तन्त
रदान करने, रूपान्तरण लाने तथा सिायता करने में अिहनपश व्यस्त रखा। स्वामी हशवानन्द जी इस
अथक अनवरत आध्याक्तत्मक कायप में व्यस्त रि कर १४ ज लाई, १९६३ को अपना पाहथपव शरीर
त्याग कर ब्रह्मलीन हुए।

आज हनक भारत का पावन सन्त जगत् को रकाहशत करने वाला रिी हदशा का रकाश था।
उनके देश ने म हनयो,ुं प ण्यात्माओ,ुं सन्तो ुंऔर ऋहषयो ुंकी इस भूहम में जन्म लेने वाले उच्च कोहट
के आध्याक्तत्मक मागप-रदशपको ुंमें से उन्ें एक मिान् सन्त माना। उन्ोनेुं अपनी आजीवन की
सेवाओ ुंसे वैहदक धमप को प नजीहवत हकया। योग-वेदान्त की अध्यात्म-हवद्या का रभावशाली रिार
हकया जो वतपमान शती में अहितीय तथा हवहशष्ट मानी गयी।

इनका नाम असुंख्य घरो ्ुमें हवख्यात ि ै, जो आध्याक्तत्मक जगत् में आदशप िररत्र और हनष्काम सेवा का द्योतक बन गया ि ै। स्वामी हशवानन्द जी ने मानवता की हनष्काम सेवा, भगवान् की पूजा व आरािना, हदव्य ज्ञान की राक्तप्त व ध्यान के अभ्यास तथा आत्म-साक्षात्कार िारा म क्तक्त का उपदेश हदया।

इन्िोंने सत्य, अहिंसा तथा ब्रह्मियप के हसद्धान्तो ्ुके आिरण पर बल हदया। सत्यता, श द्धता, रेम, सेवा, भक्तक्त, ध्यान तथा ईश्वरान भूहतमय जीवन को स्वामी जी ने 'हदव्य जीवन' की सुंज्ञा दी ि ै। १९३६ में सुंस्थाहपत अपनी 'हदव्य जीवन सुंघ' सुंस्था िारा इन्िोंने हदव्य सन्देशो ्ुका रिार हकया। वे हदव्य जीवन के िमपदूत के रूप में अहभनक्तन्दत हुए।
इस लघ प स्तक 'आलोक-प ्ुंज' (LIGHT FOUNTAIN) में यि रयास हकया गया ि ै हक मिान् आध्याक्तत्मक देदीप्यमान व्यक्तक्त के दैहनक जीवन पर सूक्ष्म दृहष्ट िाली जाये तथा इनके उस रारक्तम्भक जीवन का हित्रण हकया जाये, जब इन्िोंने स दूर मलेहशया में एक हिहकत्सक के रूप में मानवता की सेवा, उपिार और स ख देने का अथक पररश्रम हकया।

इस प स्तक में िम हवनय भाव से उस प ण्यशील व्यक्तक्तत्व के रिस्यो ्ुका अध्ययन करेंगे हजनके िारा हदव्य जीवन-यापन कर इन्िोंने आत्मोन्नहत, आन्तररक उद्घाटन तथा आध्याक्तत्मक पररपूणपता राप्त की। यि प स्तक हदव्य पूणपता-राक्तप्त के मागप पर अग्रसर िोने तथा आदशप जीवन-यापन करने के अहभलाषी िम सभी के हलए रकाश-स्रोत ि ै।

इस प स्तक की रिना १९४३-१९४४ में हुई थी, जब परम पूज्य स्वामी जी मानवता की आध्याक्तत्मक सेवा के रेरक तथा शक्तक्तमय सुंिालक के भव्य रूप में सशरीर हवराजमान थे, इसी कारण प स्तक में वतपमान काल की हियाओ ्ुका रयोग ि ै।

सादर, सभक्तक्त, श्रद्धा-सहित मनोयोगपूवपक अध्ययन करने वाले समस्त सािको,्ु हजज्ञास ओ ्ु पर ग रुदेव की कृपा बनी रिे ! समस्त हजज्ञास उच्चतम आत्म-साक्षात्कार राप्त करें! परम श्रेयस् तथा हदव्यानन्द की अन भूहत करें!

ॐ नमो भगवते हशवानन्दाय !

-स्वामी डिदानन्द

डवषय-सिूी

प्रथम अध्याय

जीवन-रभात

"होनहार डिरवान के होत िीकने पात।"

वषों पूवप मलाया में, हिहकत्सा-कायप में रत, यवा िाक्टर कपूपूस्वामी ने अपने इसी क्षेत्र में पररपूणपता राप्त की। इन्ोनें अपने-आपको हमटा हदया। वे अपनी शक्तक्त, अपनी रहतभा और अपने

शरीर को भी अपना निी ुंसमझते थे। वे उन सब राहणयो ुंके थे, हजनको उनकी आवश्यकता थी तथा जो द ुःखी थे। वे अपनी हकुंहिन्मात्र भी परवाि निी ुंकरते थे।

एक बार की घटना ि ै हक एक पररि (असूपृश्य) दीन स्त्री रसवावस्था में थी। उसका अपना किने को कोई निी ुंथा और न िी कोई सियक था। स हवख्यात पररवार का यि य वा ब्राह्मण हिहकत्सक-हृदय की समस्त करुणा व सिान भूहत हलये त रन्त िी उसके पास पहुाँिा और व्यग्र िो ऐसी पररियाप की, मानो वि उसकी अपनी बिन िो । उन्ोनें यथासम्भव सभी स हविाएँ रदान की ुंव आवश्यकतान सार राहत्र-भर जागरण हकया, उस स्त्री के क्ष ि घर के बिार िरती पर लेटे-लेटे राहत्र व्यतीत की। जब कायप पूणप िो ि का, तभी वि घर लौटे और अपनी ओर उनका ध्यान गया।

सबको हमत्रवत् समझने, ददप को दूर करने, द ुःख को हमटाने, आराम तथा सान्त्वना देने की यि उत्कट हपपासा िी उनके जीवन की राणदाहयनी शक्तक्त थी। सच्ची हनष्कामता और सिान भूहत की अगािता िी आपके व्यक्तक्तत्व के रम ख लक्षण थे। यि वेिी द लपभ सद्ग ण ि ै, जो स ख का कें द्रीय रिस्य ि ै, हजससे आपका जीवन पररपूररत ि ै। सिान भूहत तथा रेम से अहभभूत िो कर िी व्यक्तक्त 'स्व' (अिुं) का हवस्मरण करता ि ै।

जो पाठक मिास के सन्त-त ल्य िाक्टर रुंगािायप के जीवन से पररहित िैं, उन्ें स्मरण िोगा हक हकस रकार सिान भूहत तथा रेम की भावना िी उनके सफल जीवन का रम ख स्वर थी। हवश्वहवख्यात स्तर के स रहसद्ध हिहकत्सक से भी अहिक वि करुणामय रूप में सिस्रो ुंकृतज्ञ हृदयो ुं में रहतहष्ठत थे। वि सबकी सरेम सेवा के हलए, िािे वि हकतना िी क्ष ि अथवा दीन–िीन क्यो ुंन था, सदैव तत्पर थे। उदािरण ि ै हक उन्ोनें सब कायों का हवस्मरण कर (हतलाुंजहल दे) अपनी कार एक हकनारे लगा कर, उससे उतर कर, रसव-व्यथा से पीहडत स्त्री के हनकट जा कर, उसकी पररियाप की जो हनराहश्रत तथा निी जाहत की थी। बहुिा अपने पररियाप-गृि में क छ हदन रोहगयो ुंका उपिार करने पर वि थोडा भी हिहकत्सा-श ल्क, जो वे सुंकोिवश देते थे, स्वीकार निी ुंकरते थे। उसके स्थान पर वे उन्ें उससे हिग हणत राहश आिाराहद के हलए भेंट-स्वरूप में स्वीकार करने के हलए हववश करते थे और उनके सभी आग्रिो ुंको नकार कर उन्ें हवदा करते थे।

इसी रकार स्वामी जी जब मलाया में थे, तो हनिपन रोहगयो ुंको अपने हनवास-स्थान पर रखते थे और तब तक उनकी सेवा-स शूरूषा करते, जब तक वे स्वस्थ न िो जाते। हनजी राहश में से क छ उपिार दे कर उन्ें हवदा करते। हबना हकसी घृणा के असूपृश्य रोहगयो ुंको वे रेहमल सिारा देते थे। यहद वे शय्या से उठने में असमथप िोते, तो सिषप वे स्वयुं उनके हबस्तर झाड कर स्वच्छ कर देते।

बात ध्यानाकृष्ट करने की जो ि ै, वि यि ि ै हक यद्यहप वे ममता से पररपूणप तथा स कोमल हित्त के थे तथाहप इन क्तस्त्रयोहित लक्षणो ुंने उन्ें द बपल, कायर और द बपल सुंकल्प वाला निी ुं बनाया। इसके हवपरीत क्तस्त्रयोहित सिान भूहत, ध्यान रखने तथा आराम व स ख देने की कामना आहद समस्त ग णो ुंमें वे फ्लोरेंस नाइहटुंगेल-त ल्य भावपूणप तथा रेरणारद थे। इनका रत्येक कायप सािस और उद्देश्यपूणप था। इनका जीवन वीरतापूणप, सहिय व सािसी रिा।

वे सभी सामाहजक समारोिों ्ुंके, हजनें वे सिोस एवुं सहिय हियाओ ्ुंिारा राणवान् करते थे, राण थे। अस्पताल में यहद कोई आपहत्त आ जाती, कमपिाररयो ्ुंमें हकसी रकार की असन्त हष्ट व्याप्त िो जाती, िडताल की िमकी का अवसर आता, तो यिी य वा िाक्टर था जो घटना स्थल पर पहुाँिकर त रन्त सब-क छ व्यवक्तस्थत कर देता। नगर-भर से अपररहित हकसी व्यक्तक्त का सम्पकप यहद य वा िाक्टर से िो जाता, तो तत्क्षण िी उसकी सब समस्याओ ्ुंका समािान िो जाता। जो भी वि ििाता, उसके किने के पूवप िी, उत्स क आहतथेय िारा उसकी व्यवस्था उसकी रस्थान-वेला तक, जब तक हक िाक्टर स्वयुं िी उसे हवदा न देता, कर दी जाती।

उनें खेलो ्ुंमें हवशेष रुहि थी। वे मित्त्वपूणप खेल रहतयोहगताओ ्ुंमें सक्तिहलत िोते थे। मलय टाइम्स पहत्रका में वे अपने लेख भेजते थे। हिहकत्सा तथा स्वास्थ्य-सम्बन्धी हशक्षारद लघ प स्तको ्ुंके वे रिहयता थे। एक स्वास्थ्य-सम्बन्धी पहत्रका का वे सम्पादन भी करते रिे।

यहद आज का य वा-वगप सेवा की ऐसी उत्कट भावना से रेररत िो उठे, तो उसके जीवन से शोक का मूलतः नाश िो जायेगा। सुंसार स्वगपमय िो जायेगा। िरती आनन्दपूररत िो कर िन्य िो उठेगी।

क छ वषोपरान्त, जब स्वामी जी फैशनेबल िाक्टर निी ्ुंरिे थे, रत्य त ऋहषकेश में एकान्तवास कर, घोर तपश्चयाप एवुं सािना में लीन थे, उनमें पूवप-काल की करुणा एवुं सेवा की विी रबल भावना भडक उठी थी। परम तत्त्व की खोज के हलए साुंसाररक रलोभनो ्ुंसे हवम ख िोने से अहभराय यि निी ्ुंथा हक श्रेष्ठ भावनाएाँ, जो उनका सिज स्वभाव था, दब जायें एवुं सद्भावनाओ ्ुंको नष्ट कर दें। वे सद्भावनाएाँ हदव्य हनष्कामता एवुं व्यापक िेतना के सुंस्पशप से और भी अहिक परर श द्ध एवुं उद्दीप्त िो उठी।्ुं

यिााँ िम एक घटना का वणपन करते िैं जो स्वामी जी के अद्भ त व्यक्तक्तत्व के आश्चयपजनक पक्षो ्ुंको रकट करती िै। सुंन्यास में दीहक्षत िोने के उपरान्त बदरीनाथ के याहत्रयो ्ुंको औषहि दे कर सिायता करना स्वामी जी के जीवन का िम बन गया। बदरीनाथ की यात्रा का मागप आपहत्तयो ्ुं से पररपूणप, द गपम एवुं बीिड था। जो भी यात्री आपके सम्पकप में आते, आप उनें सात-आठ दवाइयो ्ुंका एक पैकेट बना कर हवतररत कर देते।

एक बार की बात िै हक एक हदन सन्ध्या-समय एक बदरी-यात्री आपसे हमलने आया। थोडी बातिीत के अनन्तर जब वि यात्री िलने लगा तो स्वामी जी ने उसे दवाइयो ्ुंका पैकेट हदया तथा सेवन हवहि समझायी। यात्री अगली िट्टी लक्ष्मणझूला की ओर िला गया। कोई और िोता तो वि इतने िी सत्कायप से सन्त ष्ट िो कर आनन्द की नीदुं सो जाता; पर स्वामी जी ऐसे निी ्ुंथे। यात्री के जाने के पश्चात् स्वामी जी को स्मरण आया हक उसे क छ हवशेष दवा दी जाती तो वि अहिक लाभकारी हसद्ध िोती। स्वामी जी का मन रि-रि कर हविार करता रिा हक यथाशक्तक्त हजतनी सेवा कर सकता था, उतनी निी ्ुंकी।

दूसरे हदन रातःकाल सूयोदय से पूवप िी वि यात्री को दवा देने के हलए द गपम पथ पर दौड पडे। जब वि अगली िट्टी (पडाव) पर पहुाँिे, तो पाया हक उनसे भी जल्दी उठने वाला यात्री अपनी यात्रा पर अग्रसर को ि का था। स्वामी जी िताश निी ्ुंहुए। त रन्त िी गरुडिट्टी पहुाँिने के हलए िढ़ाई िढ़ने लगे। विााँ उनें मालूम हुआ हक वि और आगे बढ़ ि का िै। आप ितोत्साहित

निी ंहुए। फूलिट्टी पहुाँिा विााँ भी उसे न देख कर आप आगे बढ़े। पाााँि मील के बाद स्वामी जी ने उसे पा हलया और विााँ उन्ोंनें उसे हितकारी बहुमूल्य दवाई दे दी। तब तक नौ बज ि के थे।
स्वामी जी को शीघ्र क हटया पर पहुाँिना था ताहक अन्नक्षेत्र से अपनी हभक्षा यथासमय राप्त कर सकें।

मि यिााँ क्षहणक हवराम लें और हविार करें हक यि घटना क्या अहभव्यक्त करती िै? िम देखते िैं हक यि सेवा इतने मूक तथा रदशपन-रहित ढंग से की गयी हजसका दोनो ंसम्बक्तन्धत व्यक्तक्तयो ंके अहतररक्त हकसी और को पता तक न िला और यि सब-क छ उस अपररहित व्यक्तक्त के हलए हुआ हजसे पिले तो कभी देखा िी न था और सम्भवतः बाद में भी न देखा िोगा। वे नाम मात्र की सेवा से सन्त ष्ट निी ंिोते थे। जब तक वे शक्त्यन सार अहिकतम सेवा न कर लेते, तब तक उनको िैन निी ंआता था। परोपकार की उत्कट आकांक्षा उनमें संक्तस्थत थी। िस्तगत कायप को ब क्तद्धमत्तापूवपक सम्पन्न करते थे। उनमें सेवा की ऐसी हवश द्ध भावना थी हक आध्याक्तत्मक हदनियाप तथा व्यक्तक्तगत स ख-आराम के समस्त हविार काफूर िो जाते थे।

स्वस ख की भावना पर, जो एक हनष्काम सेवक के हलए घोर अवरोिक िोती िै, हवजय राप्त कर छि मील की दौड लगाना उनकी हनष्कपटता और सहृदयता का पररिय देते हुए आश्चयपहकत कर देती िै। सािारणतया यहद कोई अन्य व्यक्तक्त िोता और थोडी दूर जाने पर यात्री को न पकड पाता, तो वि कतपव्यपरायणता की इहतश्री मान लेता। यि समू्पणप घटना यि अहभव्यंहजत करती िै हक उनका व्यक्तक्तत्व हकस िात का बना था।

एक अन्य समय की बात िै हक एक वृद्धा ने उतावली में स्वगापश्रम से सात मील दूर नीलकण्ठ मिादेव मक्तन्दर की द गपम िढ़ाई िढ़ने की ठान ली। वि थकावट से िूर िो गयी थी। जब वि लौटी, तो उसके दोनो ंपैरो ंपर सूजन थी। स्वामी जी ने हनस्संकोि उसकी हिहकत्सा की। वे उसके पैरो ंकी माहलश तब तक करते रिे, जब तक उसे पूणप आराम निी ंहमला।

कई अवसरो ंपर वे सािना एवं तपश्चयाप को छोड रोगी की पररियाप तब तक करते रिते थे, जब तक रोगी प नः स्वास्थ्य लाभ न कर लेता। ऋहषकेश में एक कहनष्ट संन्यासी स्वामी आत्मानन्द जी जब गम्भीर रूप से बीमार िो गये, तो आप त रन्त स्वगापश्रम से ऋहषकेश आ गये और तीन सप्तािा तक विााँ रि कर तब तक पररियाप करते रिे, जब तक उनकी क्तस्थहत खतरे से बािर निी ंिो गयी।

उस कृतज्ञ संन्यासी ने हपछले हदनो ंयि हलखा- "हजन्ें ग रुदेव किने का मैं सौभाग्य मानता हाँ, वे स्वयं मेरी पररियापथप मेरी अहत-रुग्णावस्था में ऋहषकेश में हनकट की िमपशाला में लगभग बीस हदन रुके। उस रोग में हजसमें मेरे राण संकट में थे, म झे जीवन-दान हदया। एक यूरोहपयन सि मेिरबाबा का हशष्य स्वामी जी को बताया करता था हक जब कभी मेिरबाबा उसकी रोगशय्या के पास पहुाँिते, उसे तत्क्षण िी स्वास्थ्य-लाभ की लिररयो ंका भास िोता, शीघ्र िी वि आरोग्य का स्पन्दन अन भव करता तथा स्वास्थ्य-लाभ राप्त करता। वास्तव में सिज और अिैत की रेम यहद एक सौभाग्यशाली अहिकारी से उद्भूत िो, तो सकारात्मक शक्तक्त का अन भव कराता िै। यिी रेम था हजसके कारण लोग भगवान् ब द्ध और िजरत ईसा की ओर आकृष्ट िोते थे। आजकल सन्तमूहतप, देश-रेमी मिात्मा गान्धी जी की ओर भी उसी आदर-भाव से जनता क्तखंिी जा रिी िै।

ओि हनक बालिर को रेररत हकया जाता ि ै हक वि रहतहदन कम-से-कम एक सत्कायप अवश्य करें; हकन्त स्वामी जी रत्येक व्यक्तक्त से, जो उनसे भेंट करने आता ि ै, आग्रिपूवपक किते ि ैं हक वि रातः से सायुंकाल तक हदन-भर परोपकार ि ी करता रि। रत्येक स्थान, रत्येक पररक्तस्थहत और जागृहत काल में सवपदा 'सेवा' ि ी उसका उद्देश्य िोना िाहिए।

भला करने और उपयोगी बनने का मनोभाव श्री स्वामी जी के हनश्चयात्मक िररत्र को दशापता ि। "सदैव सेवा के स अवसर को ढूाँढ़ने में रयत्नशील रिो। सेवा के स अवसर को कदाहप िाथ से न जाने दो। सदा इस ताक में रिो हक सद पयोगी िोने के रस्त त स अवसर को पकड सको। पैनी दृहष्ट से देखो हक त म आस-पास वालो ुंके हलए हकस रकार सिायक हसद्ध िो सकते िो।" उत्स क कायपकतापओ ुंको इस रकार की हशक्षा देना उनको रुहिकर था।

वे इससे भी एक पग आगे बढ़े हक त म्हें सेवा का अवसर स्वयुं ढूाँढ़ लेना िाहिए। अवसर की रतीक्षा ि िाथ पर िाथ धरे बैठ कर निी ुंकरो। स्वभाव, ब क्तद्ध एवुं नैसहगपक रहतभा के अन सार जो पथ हवशेषतया त म्हें अन कूल पडता िो, उसमें अपने-आपको उपयोगी एवुं सियोगी बनाने के सािनो ुं का सृजन करो।

हकसी को भी अपनी ईश्वररदत्त रहतभा की उपेक्षा निी ुंकरनी िाहिए। यहद व्यक्तक्त स न्दर-स िौल शरीर और शक्तक्त-य क्त रवृहत्त का िै, तो उसे िाहिए हक वि आसन और व्यायाम सीखे तथा य वा-वगप और हवद्याहथपयो ुंमें शारीररक हशक्षा का रिार करे। उसे समाज की सहिय तथा उत्कट सेवा में रवृत्त िो जाना िाहिए। हिहकत्सक को हनिपन रोहगयो ुंका हनःश ल्क उपिार करना िाहिए। उसे मृद ता तथा सहृदयता से रोगी की पररियाप करनी िाहिए। रोहगयो ुंके साथ व्यविार में वि पूणपतया ईमानदार रिे।

एक हवहिवेत्ता को झूठे म कदमो ुंका पक्ष लेने से इनकार कर देना िाहिए और असत्य के हनकट जाने से इनकार करना िाहिए। वकील िोने के नाते सच्चे न्याय के रहत यिी मिान् सेवा िोगी। हशक्षा क्षेत्र में अध्यापक या आिायप को िाहिए हक उसके सुंरक्षण में जो हवद्याथी िैं, उनको आदशप-य क्त बनाने में मन-राण से ज ट जाये। व्यापारी लेन-देन (व्यापार) में अपनी ईमानदारी से समाज की सेवा कर सकता िै। हनम्न श्रेणी के कमपिारी को िाहिए हक अपने दैहनक कतपव्यो ुंको ईमानदारी से हनभाये। अतः व्यक्तक्त अपने-अपने हवहशष्ट क्षेत्र में सेवा और उपकार के आदशप को सि ख रखे।

ब्राउहनुंग (Browning) के सदृश स्वामी जी का दृढ़ हवश्वास िै हक भगवान् की दृहष्ट में सब रकार की सेवाओ ुंकी मित्ता समान िै। सेवा का कोई भी कायप, िो त च्छ (क्ष ि) िी क्यो ुं न िो, उसकी उपेक्षा न करे। यि मित्त्वपूणप निी ुंहक िम क्या करते िैं, बक्तल्क यि हक हकस भावना से करते िैं, उसका मित्त्व िै। रत्येक कायप को एक स न्दर प ष्प की भााँहत मानवता में अहभव्यक्त हवराट्-स्वरूप भगवान् के िरणो ुंमें सादर समहपपत करो। और मैंने देखा िै हक सेवा िरि आरािना, अपना करना स्वामी जी के हलए एक काव्योक्तक्त िी निी ुंबक्तल्क यथाथप सत्य िै।

हिरकाल से ऋहषकेश एवुं उसके सीमान्त क्षेत्र में वास करने वाले सािओ ुंके सम्पकप में आने पर बातीत िारा स्वामी जी के जीवन के सम्बन्ध में स्वगापश्रम के हदनो ुंकी क छ झलहकयााँ म झे हमल जाती।ुं इस भााँहत मैं जो क छ जान पाता, उनमें स्वामी जी की सेवा के ढुंग के हवषय में

जो मित्त्वपूणप बात म झे नजर आयी, उसको िमें हृदयुंगम करके अन करण करना ािहिए। वि ग ण
ै अिम्बरीनता एवुं हनस्स्वाथपता का। वे बताते थे हक हकस रकार स्वामी जी उस अवसर का
लाभ उठाते। जब वे (सिा) स्नान या शौिाहद से हनवृत्त िोने के हलए जाते, तो स्वामी जी उनकी क हटया को झाड-ब
ारि कर स्वच्छ करते, बतपन साफ करते तथा गुंगा जी से ताजा जल ला कर
रखते और ि पिाप िले जाते। यहद कोई मिात्मा अस्वस्थ िोता, तो स्वामी जी क्षेत्र में जा कर
स्वयुं उसकी हभक्षा लाते और थोडा अहतररक्त दिू ला कर उसकी क हटया में रख आते।

यि मूक और हवनीत सेवा आदर और श्रद्धा की भावना से रेररत बडो ुंके रहत छोटो ुंिारा
की गयी सेवा निी ुंथी। स्मरणीय िै हक उस समय स्वामी जी की अवस्था िालीस के लगभग थी।
इस समय तो मन ष्य में आत्म-सिान एवुं अिुं की भावना जाग्रत िो जाती िै। यि तभी सम्भव िो
पाया जब हक स्वामी जी ने जीवन पयपन्त हशश वत् सिज सरलता को बनाये रखा।

जब रामकृष्ण हमशन के एक सुंन्यासी स्वामी तन्मयानन्द जी मिाराज भयुंकर िेिक रोग से
पीहडत हुए, तो स्वामी जी ने दो-तीन सप्ताि तक हनरन्तर उनके हनकट रि कर उनकी सेवा-
स श्र षा, पथ्य, स्वच्छता और स्वास्थ्य-सम्बन्धी बातो ुंका पूणपरूपेण ध्यान रखा। नदी से जल का
बतपन भर कर लाते।

वषों पश्चात् सुंन्यासी तन्मयानन्द जी से, जो अब वृद्ध और अशक्त िो गये िैं, आकस्क्मक
भेंट हुई। उन्ोनेंु बडे भावपूणप ढुंग से उक्त घटना का वणपन हकया और किा- "उन्ोनेंु म झे
अवश्यम्भावी मृत्य के ग्रास से बिाया। जैसे उन्ोनेंु मेरी हिहकत्सा-पररियाप की, ऐसी हकसी से भी
सम्भव न थी। यहद आपसे उनकी भेंट िो, तो मेरा सन्देश ले लो।" मैंने एक कागज पर स्वामी
जी के हलए उनका अनौपिाररकतापूणप सन्देश हलखा हजसमें कृतज्ञतापूणप प राने हमत्रो ुंके हवगत जीवन
की यादें भरी थी।ुं

हनष्काम सेवा की सच्चाई की पििान उसके उत्साि की तीव्रता की पूणपता में िै। उसके
कायों में कोई मानहसक गोपनीयता निी ुंिोनी िाहिए। हकसी रकार का लेशमात्र स्वाथप भी न िो,
अन्यथा भाव क हृदय इसे त रन्त िी भाँप लेंगे। हफर वे अहपपत की हुई सेवा को स्वीकार करने में
हििहकिायेंगे।

उस समय (लगभग १९२६ में) एक य वा सुंन्यासी स्वगापश्रम में घोर तपस्या कर रिा था।
वि दहक्षण रदेश के सम्भ्रान्त पररवार का य वक था। उसका वैराग्य पूणप था। आत्म-पररत्याग घोर
स्तर का था तथा उसने अपने को इसी रूप में स्स्थर कर हलया था। वि अत्यहिक भाव क एवुं
कोमल रकृहत का था। वि हकसी से हकसी भी रकार की भेंट स्वीकार निी ुंकरता था। हकसी वस्त
को उिार पर भी न लेता था। स्वामी जी िारा दी गयी दैहनक आवश्यकता की वस्त ओ ुंको भी लेने
से उसने दृढ़ता से इनकार हकया और हकसी भी रकार की छोटी-मोटी सेवा के हलए उसने
स्वीकृहत निी ुंदी, हकन्त िीरे-िीरे परम हनःस्वाथपता तथा सेवा की सच्ची भावना के कारण स्वामी
जी ने उसे जीत हलया। अब स्वामी जी जो-क छ लाते, उसे वि स्वीकार कर लेता। इस रगाढ़
अैत की रेम ने भास्करानन्द (य वा सुंन्यासी का नाम) की कठोरता को, हजसके हलए वे उस क्षेत्र
मेंहवख्यात िो ि के थे, कोमलता में पररणत कर हदया।

कई बार तो पररक्तस्थहत हबलक ल हभन्न ि◌ो जाती थी। हिहकत्सा-योग्यता (ज्ञान) और रेहमल स्वभाव को जान कर लोग असमय में भी सिायता एवुं उपिार के हलए उनकी क हटया को घेरे
रिते थे। यिाँ तक हक कभी-कभी वे इस क्षेत्र से दूर गुंगा के हकनारे की ि◌ट्टानो ◌ुंके मध्य हछप
जाने को बाध्य ि◌ो जाते और कभी दूर जुंगल के भीतर ध्वुंहसत क टीर में हछप जाते। इस रकार वे ध्यान के हलए एक या दो घण्टे हनकाल ि◌ी लेते थे।

हकसी पीहडत की आवश्यक प कार के समय आप सब कायप छोड (ि◌ि◌ो ि◌िी रात ि◌ी क्यो ◌ुं
न ि◌ो) उसको पीडा-म क्त करने के हलए दौड पडते थे। एक बार एक मजेदार घटना घहटत हुई
हजसने उनके ि◌ैयप को भी ि◌ नौती दे दी। एक ि◌ठी सिा ि◌पराहत्र के समय ि◌ारो ◌ुंतरफ लगी बाड
को लाँघ कर क हटया के ि◌ार को लगातार खटखटाने लगा। उसकी आँख में बालू का कण पड
गया था, वि उसको हनकलवाने के हलए आया था। इस परीक्षा की घडी में भी उन्ोनें समत्व को
बनाये रखा। उसका पूणप सजगता से उपिार कर सन्त ष्ट करके ि◌ी उसे लौटाया।

हबचूछू-दुंश के हलए तो अरत्याहशत समय पर भी उपिार करना पडता था; क्योहुंक यि
जीव बहुत बडी सुंख्या में आज तक भी उस क्षेत्र में पाया जाता ि◌ै। इन ि◌ि◌ोत्तेजक क्षणो ◌ुंमें भी
उन्ोनें कभी हकसी से रुक्ष व्यविार नि◌ी ◌ुंहकया। हनष्काम सेवक की यि◌ी सच्ची भावना ि◌ोती ि◌ै।
सदा रसन्न-हित्त रिना और सच्चा उत्साि बनाये रखना, क्तखन्नता को कोसो ◌ुंदूर रखना- यि एक
ऐसा आदशप ि◌ै हजसे व्यक्तक्तगत या सामाहजक जीवन में, हवद्याथी ि◌ो अथवा बालिर, समाज-सेवक
ि◌ अथवा स्वयुं- सेवक-सबको सि ख रखना ि◌ाहिए।

एक या दो बार ये रोिक हविार उनके म खारहवन्द से हनःसृत हुए- "कभी-कभी न ि◌ि◌ाने
पर भी सेवा करनी ि◌ाहिए। कभी-कभी असिाय व्यक्तक्त अपेक्षा ि◌ोने पर भी अज्ञानवश सेवा ि◌ी नि◌ी ◌ुं
लेना ि◌ि◌ाते। ऐसे अवसरो ◌ुंपर उनके ि◌िहहकिाने पर भी अपेहक्षत सेवा करो।" उन्ोनें ि◌ँसी–ि◌ँसी में
ऐसे हवरोिात्मक सेवा के दो अवसरो ◌ुंको बताया, जब उन्ोनें आगे बढ़ कर सेवा करने के इस
ढुंग का रयोग हकया था।

एक बार स्वामी ज्ञानानन्द जी मिाराज को हिहकत्सा के हलए जबरदस्ती लखनऊ ले जाया
गया। वि मरिमपट्टी-कक्ष तक जाने तथा लौट कर आने में असमथप थे; हकन्त स्वामी जी मिाराज
के कन्धो ◌ुंपर बैठ कर नि◌ी ◌ुंजाना ि◌ि◌ाते थे। पर स्वामी जी उनके हविरोि करने पर भी रहतहदन
उन्ें अपने कन्धे पर बैठा कर ले जाते थे।

दूसरी घटना ि◌ै-हसुंघाई की साध्वी एवुं भक्ता रानी आदरणीया महिला के रहतवाद करने पर
भी उन्ोनें उस ओर ध्यान न हदया और उन्ें नाव से उठा कर स्टीमर पर पहुँिा हदया। उनकी
मण्डली गुंगा-सागर की यात्रा पर जा रिी थी। पानी उथला था और नाव तरुंगो ◌ुंमें ि◌ोल उठी थी।
भयात र वृद्ध महिला, हजसकी अवस्था सत्तर वषप की थी, क्तस्त्रयोहित हविारो ◌ुंसे आतुंहकत ि◌ोने के
कारण स्वामी जी की सिायता लेने की अहनच्छ क थी। हकन्त स्वामी जी ने व्यथप तकप में समय नि◌ी ◌ुं
गाँवाया। क्षण-भर में ि◌ी स्वामी जी ने उस हविरोि करती हुई महिला को आदरपूवपक उठाया और
स रहक्षत ढुंग से स्टीमर में बैठा हदया। स्वामी जी के इस कौशलपूणप कृत्य पर अपनी ि◌ी प हत्रयो ◌ुंके
ि◌ँसने पर वि ि◌ क्रुद्ध ि◌ो गयी। उन्ोनें साथ में यि भी जोडा- “लेहकन सदैव हशष्टता, भिता और
कोमलता का व्यविार करो। दूसरो ◌ुंकी भावनाओ ◌ुंको मित्ता दो। सेवा के नाम पर कभी भी रुक्ष
मत बनो।”

डितीय अध्याय

राथपना के िमपदूत

मिमें से वे लोग जो ऐसी क्तस्थहत में िैं हक न तो वे सेवा के क्षेत्र में िैं और न हजनको हनष्काम सेवा का सअवसर िी हमलता िै, उनके सामने स्वामी जी के जीवन का यि (राथपना) एकऐसाअल्प-पररहितपक्षिैजोरेरणाऔरमिन्ताकीसम्पदासेपररपूणपिै।परहितिैतग प्त रूप से सतत राथपना करना उनका अभ्यास िै। जो लोग ठोस सेवा करने में अशक्त िैं, उन्ें सदैव, सवपत्र, सभी अवसरों पर सबके हित के हलए राथपना करनी िी िाहिए। सभी राहणयों के हित एवं कल्याण के हलए रामाहणकता से राथपना आरम्भ कर देनी िाहिए। हजनको सियता की आवश्यकता िै, उन सबको िम अपनी हनष्काम रेम की भावनाओं से रिस्यमय ढंग से सेवा कर सकते िैं।अपने-आपमेंयिएकउत्कृष्टसेविै।

सेवा रेम का अहभव्यक्त स्वरूप िै। व्यक्तक्त में हवकहसत यि असीम रेम हवश्व- हितकी दृढ़ सकारात्मक िाि से हिगहणत िोने पर रभावी एवं उच्च कोहट की सेवा का रूप िारणकर लेता िै। स्वास्थ्य एवं सियोग का िमारा ऐसा स्पन्दन िी सूक्ष्म तथाहप अहिक सशक्त रूपसे सामान्य हित-सािन करेगा।

स्वामी जी अब भी इसको अभ्यास में रहतहदन लाते िैं। मैंने देखा िै हक वे हनरपवाद रूप से सबके हलए राथपना करते िैं। यहद वे हकसी रुग्ण व्यक्तक्त को देखते िैं, तो तत्क्षण उसकी स्वस्थता के हलए राथपना करते िैं। हकसी की मृत्य के शोक-समािार को स नते िी हदवंगत आत्मा की शाक्तन्त के हलए वे तरन्त राथपना करेंगे। य द्ध की समाक्तप्त के हलए तथा बंगाल की क्ष िा-पीहडत जनता की रित के हलए वे हनत्य हनयहमत रूप से राथपना करते िैं। लाँगडाते क त्ते को देख कर राथपना उनके हृदय से रस्फहटत िो उठती िै। उनकी उपक्तस्थहत में हकसी के पाँव से यहद िीट्टी किल जाती िै, तो तत्काल िी उनका हृदय मूक भाव से राथपना करने लग जाता िै।

हकसी से अन्य व्यक्तक्त की अस्वस्थता का समािार जानने पर स्वामी जी उस अपररहित व्यक्तक्त के आरोग्य एवं स्वास्थ्य के हलए राथपना करने लग जाते िैं। जब कभी उनके अपनेदो हशष्य परस्पर असिमत िोने पर िोिावेश में क छ अपशब्द कि बैठते, तो स्वामी जी हबनाहकसी को बताये उस हदन हनरािार रि कर दोषी व्यक्तक्त के हलए राथपना करने लग जाते। राथपनाकरने का सतत अभ्यास उनके जीवन का इतना आिार बन गया िै हक वि स्वामी जी के अक्तस्तत्वसे अहभन्न िो गया िै।

उनके इस ग ण के बारे में क छ इतनी अद्‌भ त एवुं सारभूत ईसाइयत िै हक सामान्य गैर ईसाई उन्‌ें समझने में असमथप रिता िै। इस स्वभाव की रशुंसा करने में हकसी को कहठनाई भी िो सकती िै; क्योहुंक यि पौवापत्य से स सुंगत निी ुंलगती। दूसरी और हनष्ठावान्‌ ईसाई अपनी दृढ़ आस्था के साथ इससे पूणप सिान भूहत अन भव कर सकता िै।

स्वामी जी राथपना में हनष्कपटता और रामाहणकता के रहत रबल आस्थावान्‌ िैं। एक बार एक रश्न के उत्तर में उन्‌ोंने किा था- "िााँ, राथपना में अहमत रभाव िै। हनष्कपटता से की गयी राथपना सब-क छ करने में समथप िै। यि त रन्त स नी जाती िै तथा तत्काल फलवती िोती िै। अपने हनत्य-रहत के सुंघषपय क्त जीवन में राथपना करें तथा अपने हलए मिान्‌ रभाव की अन भूहत कीहजए। राथपना हजस ढुंग से करना िों, करें। हशश वत्‌ सरल बहनए। हनष्कपट बहनए। तभी आप सब-क छ राप्त करेंगे।"

उन्‌ोंने अपने इसी जीवन में इसको रमाहणत कर हदखाया िै। म झे इसमें हकुंहित्‌ भी सन्‌देि निी ुंिै। स्वामी जी के पास देश भर से आने वाले असुंख्य पत्रो ुंको पढ़ने का सौभाग्य म झे हमला हुआ था। यि किना अत्य क्त न िोगा हक भारत के कोने-कोने से लोग उनसे पत्र-व्यविार करते िैं। मैंने पाया हक स्वामी जी के पास रहतहदन आने वाले असुंख्य पत्रो ुंमें हकसी व्यक्तक्त के हलए राथपना करने का हनवेदन िोता था। कभी हकसी की रोग-म क्तक्त के हलए, कभी नव-हववाहित दम्पहत की स ख-समृक्तद्ध के हलए अथवा नवजात हशश की मुंगल-कामना के हलए हनवेदन िोता था। कोई पीिदे कायप में सफलता राप्त करने िेत राथपना के हलए अन नय करता िै। स्वामी जी िारा की गयी राथपनाओ ुंके रिस्यात्मक रभाव के रहत कृतज्ञतापूणप रमाण-पत्र अहनक्तच्छत िोने पर भी आते रिते िैं।

इसे आप आत्म-हवश्वास का फल कहिए या मनोहिहकत्सा सम्बन्धी हनयम या क छ भी कहिए, ठोस वास्तहवकता तो यिी िै हक यि एक यथाथप िै। िाल िी में लगातार तीन हदन आवश्यक तीन तार आये। उन तीनो ुंमें मालाबार के फैरोकी (Feroke) हनवासी गोपाल एम. नामक दीघपकालीन रोगी की ओर से राथपना के हलए हवनय की गयी थी। ऐसी असुंख्य घटनाएाँ िैं हजनको देख कर सुंशय करने का सािस िी निी ुंिोता हक स्वामी जी का राथपना-हवषयक दृढ़ अहभमत उनके हनजी अन भवो ुंऔर रयोगो ुंपर आिाररत िै।

आज के जाग्रत य ग में एक बौक्तद्धक एवुं ताहकपक व्यक्तक्त हनयहमत राथपना करने के हवलक्षण काल-व्यहतिम पर िाँसे हबना निी ुंरि सकेगा। यि उहित िोगा हक व्यक्तक्त अपने-आपसे पूछे हक राथपना के कट्टर व आस्थावान्‌ समथपक गान्धी जी को नवय ग का मिान्‌ हविारक कैसे माना जाता िै? यहद राथपना रािीन पररपाटी मात्र िी िोती, तो गान्धी जी की हवविेनात्मक ब क्तद्ध, हजसकी श्रेष्ठता रश्नातीत िै, इसको हन:सुंकोि ठ करा देती। जो राथपना को त च्छ एवुं असुंगत समझते िैं, उन्‌ोंने कभी हविार िी निी ुंहकया हक राथपना क्या िै और कैसे हियाशील िोती िै?

परजनो ुंके हलए राथपना एक रकार से भलाई िािने का उत्कट भाव िै। सबकी भलाई के हलए हनरन्तर हिन्तन करने का यि हन:स्वाथप भाव राथपनापूणप हृदय में हवश द्ध रेम की िारा रवाहित करता िै। हवश द्ध अिैत की रेम वस्त त: स्वयुं में ईश्वर िै। रेम हदव्यता का सार तत्त्व िै। अत: आकाश-मण्डल में हजसके अन्तगपत ब्रह्माण्ड का अक्तस्तत्व िै, राथपना हदव्यता की िारा रवाहित करती िै और जिााँ इसकी आवश्यकता पडती िै, यि (तरुंग) लिरी अपनी अन ग्रि-शक्तक्त से विााँ

पहुाँ कर हियाशील िोती िै। हवश्व के एक कोने के एक अ ाँिेरे कक्ष की मेज पर बैठा हुआ व्यक्तक्त जब बटन दबा कर तत्काल अपना सन्देश सिस्रो ंमील दूर भेजने में समथप िोता िै, तब राथपना के हवियक रभाव को सरलता से समझा जा सकता िै। मानव में अन्तहनपहित मानहसक एवुं अहत-मानहसक शक्तक्तयो ंको मानव-हियाओ ंके हनिापरण में सशक्त कारक के रूप में तेजी के साथ मान्य हकया जा रिा िै।

स्वामी जी इस दृढ़ हवश्वास से इतने आपूररत िैं हक कोई भी पयपवेक्षक जो हनरीक्षण में हवशेष उत्स क िै, जान जायेगा हक उन्ोनें रत्येक सम्भव कायप और अवसर (रसुंग) को राथपना के कायप से सुंय क्त हकया हुआ िै। मैंने देखा िै हक जो क छ उनके अपने िारा या उनके मागप-दशपन से अन्यो ंिारा सम्पन्न िोता िै, उन सबका श भारम्भ व उपसुंिार राथपना िारा िी िोता िै। यहद हकसी कमरे का हनमापण िो रिा िोता िै, तो सभी कमपिारी नन्दीप के िारो ंओर एकत्र िो कर पिले भगवद्-कीतपन तथा राथपना करते िैं और तब कायप रारम्भ करते िैं। यहद हकसी िारा रेहषत सुंगमरमर की रहतमा पहुाँिती िै, तो त रन्त िी राथपना की जाती िै।

सिा ओ ंको हदये गये भोज के अवसर पर राथपना भी उस समारिी का अहभन्न कायपिम िोता िै। पैकेट और पहत्रकाओ ंको िाक में भेजने के हलए बाँिते और लपेटते समय स्वामी जी कमपिाररयो ंको बताते िैं हक िाथो ंसे कायप करते हुए भगवद्-ग णगान करो। व्यथप की बातिीत मत करो। आश्रम में पवपत पर क्तस्थत भजन-कक्ष में वे तथा उनके थोडे से कायपकताप एकहत्रत िो कर सक्तिहलत स्वर व लय में ईश्वर का नाम गाते िैं। प नः सान्ध्य वेला में गम्भीर मौन में हवश्व शाक्तन्त के हलए हवश्व-राथपना की जाती िै।

तृतीय अध्याय

अक्तस्तत्व और कमप

स्वामी जी की बाह्य रवृहत्तयो ंको देख कर नव-दशपनाथी उनके राथपनामय जीवन का अनमान निी ंलगा सकता, अहपत उसके ऊपर हवपरीत रभाव पडता िै। यहद कोई ऐसा व्यक्तक्त िै जो काल्पहनक जगत् में हविरण निी ंकरता, तो वि स्वामी जी िैं। मैंने इनसे अहिक व्यस्त और सहिय जीवन कोई और देखा िी निी।ं हजस तपस्वी ने पााँ विषप तक अपनी कहटया में िी एकान्तवास हकया और २५ वषप तक उस स्थान को निी ंत्यागा, उसकी गत्यात्मकता पर सिज िी हवश्वास निी ंिो पाता। जब उनसे मेरा सम्पकप नया था और उनकी आश्चयपजनक हियाशीलता के साथ मैं अभ्यस्त निी ंिो पाया था, तो मैं इनकी व्यस्तता को देख कर िहकत व असिाय रि जाता था। छि मास पूवप जब हक इनका सत्तावनवााँ जन्म-हदवस मनाया गया, तब से आज तक यि भास निी ंिो पाता हक वि षिोशवषीय (यवक) निी ंिैं।

पाठक यि हवश्वास रखें हक मैं लेशमात्र भी भावक निी ंहाँ, पर जो यथाथपता मेरे सामने िै, उसे स्वीकार करने को बाध्य िो जाता हाँ। यौवनमय उत्सािा से पररपूणप िाव-भाव उनकी अवस्था

को नकारता िै। राय: देखा गया िै हक अनायास कोई हविार अथवा कोई नयी योजना उनको जैसे िी सूझी, तो तत्क्षण िी आभा-य क्त म खाकृहत से बाल-स लभ उिास रस्फ हटत िो उठता िै, उनके अन्तमपन की रफ िता नेत्रो ुंमें िमक उठती िै। इससे यि रकट िो जाता िै हक उनकी कल्पनाशीलता में उद्भूत हविारो ुंको हियाक्तित करने में वे हकतने सुंलग्न िो जाते िैं। वे हकसी कायप को अिूरा निी ुंछोडते। उनमें अहनहश्चतता निी ुंिै। हझझक तो नाम मात्र को निी ुंिै। वे कमप-सम्पादन में हजतने रवीण िैं, उतने िी राथपनामय जीवन में हनष्कपट, रगाढ़ एवुं परम पावन िैं।

कल-कल ध्वहन-य क्त रवाहित गररमामयी मौन गुंगा के तट पर क्तस्थत शान्त क टीर से आप रात: १० बजे बािर हनकलते िैं। हनज कक्ष से बािर हनकलते िी वे हभन्न व्यक्तक्त बन जाते िैं। वे जीवन-हवद्य त् तरुंगो ुंसे पररपूणप िो उठते िैं। ईंटो ुंसे हनहमपत िार से सुंस्था के रुांगण में उनके तीव्र गहत से पहुाँिते िी छोटे-से हशष्य-सम दाय में सहियता रकट िोने लगती िै। उनकी उपक्तस्थहत में हकसी का भी हियािीन रिना असम्भव िो जाता िै।

कहतपय रमादी सािको ुंके साथ उनका व्यविार रोिक था। ऐसे िी एक सािक का स्वभाव दम्भपूणप एवुं रमादी था। अपने इस स्वभाव को वि आन्तररक आध्याक्तत्मक शाक्तन्त के रूप में अहभहित करता था। पवपत पर क्तस्थत सामूहिक पूजा-गृि के बािर िौडे बरामदे में स्वामी जी क छ आगन्त को ुंके साथ वातापलाप कर रिे थे। ढीली-ढाली मस्त िाल से िलते उक्त सािक पर तत्काल स्वामी जी की दृहष्ट पडी। उन्ोनें किा- "य वक! इिर आओ। आपके साथ क्या समस्या िै? क्या भूखे रिते िो? क्या रसोईघर में भोज्य पदाथप क छ भी निी ुंिै या त म्हारे पास भोजन करने के हलए समय निी ुंिै? त म्हारे बाल अभी सफेद निी ुंहुए; हकन्त अिप भूखे व्यक्तक्त की-सी िाल क्यो ुं िै? त म्हारी शक्तक्त और यौवन किााँ िला गया िै? त म दौड कर फ ती से क्यो ुंनिी ुंिलते? मैं त म्हें दौडते हुए देखना िािता हाँ। आओ, उपासना-गृि का एक िक्कर लगाओ।"

उस नव-य वक का सुंकोि देख कर एकाएक मेरी ओर म ड कर स्वामी जी ने म झे गम्भीर वाणी में किा- "इस य वक को मैं सैहनक-हशहवर में भेजना िािता हाँ। सैहनक-रहशक्षण िारा मदिोश सािओ ुंमें भी शक्तक्त का सुंिार िो सकता िै। मेरा हविार िै हक व्यक्तक्त जन्मता िी आलसी िै। ऐसा मालूम पडता िै हक इनके हलए वैराग्यमय जीवन शारीररक हशहथलता और हनक्तियता का पयापय िै। भगवान् जाने ऐसे हविार इनको किााँ से राप्त िोते िैं? मेहिकल कालेज के य वा छात्रो ुंसे तथा नगर-हनवाहसयो ुंके व्यस्त जीवन से त म्हें क छ सीखना िाहिए। एक य वा हिहकत्सक हकतना सूफूहतपवान्, योग्य और उत्साि से पररपूणप िोता िै। अस्पताल के दैहनक जीवन में वि हकतनी फ ती से एक रखण्ड से दूसरे रखण्ड में, एक वािप से दूसरे वािप में, बरामदो ुंतथा सीहढ़यो ुंसे जाता िै। िम उसको अपना आदशप क्यो ुंनिी ुंमानते? इसके हवपरीत एक सुंन्यासी को तो गहतशील कायपकताप िोना िाहिए; क्योहुंक वि (लौहकक) जीवन की हवहवि सन्तापपूणप हिन्ताओ ुं से म क्त िोता िै। कल से िी सूफूहतपवान् बन जाओ। मैं त म्हें इस रूप में देखने के बजाय दौडता हुआ देखूाँ। मैं त म्हें तत्काल सवपत्र उपक्तस्थत देखूाँ। सािता हशहथलता का पयापय निी ुंिै। यहद ऐसा िोता तो क सी, मेज, स्तम्भ, हभहत्त भी इस श्रेणी में आ जाते। हरय य वक! अपने में सूफूहतप लाओ और हनष्णात कायपकताप में पररणत िो जाओ।"

सुंशय-य क्त य वक के म ख से िडबडी व उहिग्नतापूवपक ये शब्द हनकले- "श्रीमान्! मैं ऐसा िी बनूाँगा।" ये शब्द किता हुआ वि विााँ से शीघ्रता से िला गया। दूसरे िी क्षण स्वामी जी ने

अभ्यागतो ुंको सरल हित्त से सम्बोहित करते हुए किा- "आपका इस सम्बन्ध में क्या हविार ि ै? क्या मैंने उहित नीिं किा? अथवा क्या यि उबा देने वाला उपदेश मात्र था? क्या आपका यि हविार निी ुंि ै हक रत्येक य वा को सहिय और सूफूहतपवान् िोना िाहिए?"

हवश्वास कीहजए हक दूसरे िी हदन से न केवल वि सिाक बक्तल्क ऐसे िी एक-दो और ढीले-ढाले सिाक ि स्ती एवुं शक्तक्तमय सूफूहतप से कायप करते देखे गये।

इस सन्दभप में एक हवलक्षण रमेय के वणपन हकये हबना निी ुंरि सकता हजसने हवहशष्ट रूप से मेरा ध्यान आकृष्ट हकया ि ै। स्वामी जी जब हकसी व्यक्तक्त को कमप का मागप-दशपन करते िैं, तो वि न िािते हुए भी देर-सवेर उसका अन सरण करने िी लग जाता ि ै। वि ििो हकतना िी रमादी क्यो ुंन िो, ििो उसको हनदेशो ुंका हवस्मरण िी िो जाये अथवा भले िी उस समय उनके मागप-दशपन को वि इतनी मित्ता न दे या व्यस्तता के कारण उस पर ध्यान देने में असमथप रिे; हकन्त अन्ततः वि स्वामी जी की हशक्षाओ ुंका अन पालन करने लग िी जाता ि ै। इसके पीछे का रिस्य क्या ि ै?

पाठक हनस्सने्दि रूप से जानते िैं हक ऐसे सिस्रो ुंक्क्द्धि हपतृ गण, हनराश माताएँ, असिाय हशक्षक वगप, अिायप गण, भयकारी अहिकारी गण तथा कट हशकायतें करने वाले नेता गण िैं जो सदा आदेशो ुंका अन पालन करवाने में जनता को आकृष्ट करने में असफल रिे िैं। वे निी ुंजान पाते हक हकस रकार जनता का ध्यान अपने आदशों की ओर आकहषपत हकया जाये? हकन्त ऐसे कायपकतापओ ुंसे, हजनका लौहकक जीवन से परस्पर कोई सम्बन्ध निी ुंि ै और हजनका उद्देश्य सब बन्धनो ुंसे हवम क्त िोना ि ै, एक ऐसा हवलक्षण व्यक्तक्त ि ै जो सुंहक्षप्त उपदेश व परामशप देता ि ै; परन्त अन पालन की हवहियो ुंव पद्धहतयो ुंकी हिन्ता निी ुंकरता। हफर भी थोडे िी समयोपरान्त बडे उपय क्त रयास से तदन सार अािरण िोता देखते िैं। इसका रिस्य किाँ ि ै? इसकी व्याविाररक उपयोहगता से िम क्या ग्रिण कर सकते िैं?

मैं इस पररणाम पर पहुँिने में बाध्य िो जाता हाँ हक व्यक्तक्त की कथनी और करनी के अन्तर में यि गूढ़ रिस्य हछपा ि ै। लोग केवल हकसी व्यक्तक्त के शब्द स न कर िी कायप के हलए रेररत निी ुंिोते; परन्त हजसका अािरण कथनान सार ि ै, उसका अनजाने िी अन सरण करने लग जाते िैं। वाणी के अन सार अािरण करने वाले व्यक्तक्त के सामने अत्यहिक अहडयल तथा अिुंकारी व्यक्तक्त भी नतमस्तक िो जायेगा। उदािरण-रूप में स्वयुं को आदशप-रूप में रस्त त करना िी उसके अन सार करवाने की पद्धहत ि ै। जो केवल उपदेश मात्र करते िैं और वे जो स्वभावान सार सतत हनस्स्वाथप रूप से सब राहणयो ुंकी समदृहष्ट से सेवा करते िैं-दोनो ुंमें मिान् अन्तराल ि ै। इस हदशा में परामशप और अन पालन करने की गम्भीर समस्या की समीक्षा करने से हनस्सने्दि सन्तप्त अहभभावक, उपदेशक, हशक्षक और नेता गणो ुंको बहुत अहिक सिायता हमलेगी।

अाि हनक य ग के िमत्कारी प रुष गान्धी जी के जीवन के राजनैहतक एवुं सामाहजक नैहतकता की उपलक्तब्धयो ुंकी पृष्ठभूहम में यिी हनयम हियाशील ि ै। लाखो ुंके हृदयो ुंमें उनके नाम का रभाव िै और उन्ें एक शक्तक्त के रूप में जाना गया ि ै। यि उल्लेखनीय उपलक्तब्ध आस्थाओ ुंके रहत जीवन की समरसता एवुं परम हनष्कपटता के कारण िी उन्ें िो पायी ि ै। क्ष ि कायप को भी पूजा का रूप देना उनके जीवन का रभावकारी अुंग ि ै।

किा जाता ि ै हक जब उनके स प त्र देवदास गान्धी का हववाि स हवख्यात श्री राजगोपालिाायप की स प त्री से हुआ, तो हववाि-संुस्कार के त रन्त बाद टोकरी और झाू ले कर उस क्षेत्र के क छ स्थानो ुंकी सफाई के हलए किा। वर के हपता की हववाि- संुस्कार के उपलक्ष्य में नव-दम्पहत को यिी श भ भेंट थी। सेवाग्राम के मिान् सन्त स्वयं उन आदशों की जीवन्त मूहतप ि ैं हजनका रिार वे स्वयं भी करते िैं।

ठीक यिी हवशेषता आनन्द-क टीर के गहतशील सन्त की हवहभन्न रकार की रवृहत्तयो ुंमें रकट िोती ि ै। म झे यि रत्यक्ष अन भव हुआ हक स्वामी जी के हलए नैहतक तथा आध्याक्तत्मक सत्य केवल िमप-ग्रन्ो ुंकी शोभा बढ़ाने वाले वाक्य मात्र निी ुंिैं, अहपत अपने जीवन की कथनी और करनी में साम्य रमाहणत करने के तथ्य िोते िैं। व्यक्तक्त को उन उपदेशो ुंऔर हशक्षाओ ुंका हजन्ें वि स नाना और अन सरण कराना िािता ि ै, मूहतपमान् अहभव्यक्तक्त बनना िाहिए। तभी जगत् उसका उसी रकार अन सरण करेगा जैसा हक हदवस राहत्र का करता ि ै। निी ुंतो कथाविाक ब्राह्मण की तरि आज्ञा-पालन करवाने की आशा रखना व्यथप िोगा।

ऐसा किा जाता ि ै हक कनापटक के एक व्यावसाहयक कथाविाक ब्राह्मण को एक समय दैहनक श्रोताओ ुंमें से एक रशंुसक ने एक सब्जी की टोकरी भेंट की। उपिार में दी गयी शाक-सक्तब्जयो ुंके अहतररक्त उसमें क छ एक ताजा रस-भरे बैंगन भी थे। पक्तण्डत ने घर पहुाँिकर अपनी फूिड पत्नी को टोकरी देते हुए किा हक इनसे स्वाहदष्ट कढ़ी तैयार करो। बात यि थी हक उससे एक हदन पूवप पक्तण्डत जी ने कथा में कई वस्त ओ ुंका ग ण-कथन करते हुए बैंगनो ुंको रहतहदन के आिार में त्याज्य बतलाया था, क्योहुंक वि मानव में तामहसकता को उद्दीप्त करते िैं। उनकी पत्नी ने, जो उस व्याख्यान में उपक्तस्थत थी, यि सब स ना था उसने सािस के साथ पक्तण्डत जी को शास्त्रोक्त उक्तक्त का स्मरण हदलाया। तत्क्षण वि ि ु्द्ध िो गया और िीिाया-"ओ नारी! क्या त म म झे िमप का पाठ पढ़ाना िािती िो? स नो! ग्रन्ो ुंमें वहणपत बैंगनो ुंका रयोग वहजपत किा गया ि ै, टोकरी वाले बैंगनो ुंका निी।ुं शीघ्रता से टोकरी वाले बैंगनो ुंको पकाओ!"

श्री रामकृष्ण परमिंुस भी अपनी िािप में इस रकार के लोगो ुंके हवषय में अनोखे ढंुग से बताया करते थे हक केवल शास्त्रीय ज्ञान से कोई लाभ निी ुं। त्याग और हववेक से सम्पन्न हविान् के सि ख िोने में मैं भी हनरुत्साहित िो जाता हाँ। हकन्त यहद कोई शास्त्रीय पक्तण्डत मात्र ि ै, तो मेरी दृहष्ट में वि क त्ते और बकरी से बढ़ कर निी ुंि ै।

स्वामी जी पूणप योग्यता के साथ अपने लेखो ुंमें वहणपत हविारो ुंऔर विनो ुंको हनरन्तर तथा यथाशक्तक्त अपने कायों में िररताथप करते िैं। यिी कारण ि ै हक उनके विनो ुंका उिंघन अन्य व्यक्तक्तयो ुंके हलए असम्भव-सा िो जाता ि ै। स्वामी जी से राप्त िोने वाला व्यक्तक्तगत परामशप जीवन्त, अहिकारपूणप हकन्त मूक िोता ि ै। उनमें पास्यूअर संुस्थान या 'मे ऐण्ड बेकसप' िारा रदत्त सूत्र के समान अरहतरोिी सान्त्वना एक हवश्वसनीयता िोती ि ै।

तिुथि अध्याय

तीव्र कमपठता का रिस्य

स्वामी जी जब िर एक से सहिय सेवा और परोपकाररता का आग्रि करते िैं, तो वे स्वयुं
भी ठीक इसी तथ्य को िररताथप कर रिे िोते िैं। उनके जीवन का एक क्षण भी व्यथप निी ुंजाता। वे हशहथलता का
नाम िी निी ुंजानते, जैसे हक नेपोहलयन 'असम्भव' शब्द का अथप िी निी ुं
जानता था। कई बार वे यि किते थे- "एक हदन के हलए िौबीस घण्टे अपयापप्त िैं। रत्येक क्षण
अमूल्य िै। एक क्षण भी व्यथप निी ुंगाँवाना िाहिए। शरीर तथा मन की व्यस्तता आहि-व्याहियो ुंकी
सुंजीवनी बूटी िै। अहनयहमत जीवन और आलस्य िी रत्येक बराई की जड िै।" इसहलए स्वामी जी
बेंजाहमन फ्रैंकहलन और सैमयल स्माइल्स आहद के समान एक हनहश्चत हदनियापनसार रत्येक हनहश्चत
कायप को हनहश्चत समय पर िी करते िैं। हभन्न-हभन्न कायों में व्यस्त सुंसार के लोगो ुंको वे इसी का
अभ्यास करने की सुंस्तहत करते िैं।

हनहश्चत हदनियाप का यि हसद्धान्त जिाँ एक ओर अहिकतम व सतत हियाशीलता का
अवसर देता िै और त्तस्थरता लाता िै, विीुं दूसरी ओर हनरुदे्देश्यता तथा हवकषपण से बिाता िै।
यद्यहपस्वामीजीस्वभावर्सेपरम्पराऔरऔपिाररकताकेहवरुद्धिैं,तथाहपउनमेंद बपलता
अथवा अहनहश्चतता लेशमात्र भी निीुं िै। हनरन्तर सूफूहतपदायक रवृहत्त को वे त्तस्थरता और हनिपन्
शात्तन्त से साँजोये रखते िैं। वे रसन्नतापूणप रूप में गैर परम्परा वाले िैं, तथाहप सिज व गररमामय
िैं। यि तभी सम्भव िो पाया िै, जब हक उनके समय और कायों में किीुं हशहथलता निीुं िै। ए

वीी प रुष असफल िोता िै हजसके जीवन में अहनहश्चतता िोती िै। उनके व्यविार में जो शाक्तन्त व रवृहत्त अहभव्यक्त िोती िै, वि उनके पूवप-हनयोहजत हनहश्चत और पूणपरूपेण व्यवक्तस्थत हदनियाप का िी पररणाम िै। ऐसी व्यवक्तस्थत हदनियाप समस्त रमाद व उत्तेजना को रभावकारी ढंग से दूर रखती िै तथा जीवन को शाक्तन्त और गररमा रदान करती िै, हजसकी राक्तप्त कायपिम व हसद्धान्त से शून्य अहनयहमत व अराजक जीवन में स्वप्नवत् िै।

हनस्सन्देि समय अल्प िै और इसमें एक व्यस्त नागररक समयाभाव के कारण पारमाहथपक कायों को निी ंकर पाता। यहद वि अपने कायप-व्यविार को स व्यवक्तस्थत ढंग से करे, तो उसे शीघ्र पता िल जायेगा हक अहिकांश समय व्यथप में अनजाने में गँवा हदया गया। समय के सद पयोग में िी जीवन की सफलता सहन्नहित िै। समय का सद पयोग वस्त तः मित्त्व का िै और इस हवश्व में स्वद ःख हनवारणाथप तथा परहिताथप हजतने भी रयत्न हकये जायें, उतने िी थोडे िैं। हनत्य जो समय आप हशक्षा, नौकरी अथवा व्यापार आहद कायों के हलए आने-जाने के समय रेल, टराम और बस में क्तखडकी से झाँकने अथवा ऊँघने में व्यतीत करते आये िैं, विी समय अपने आत्म-पररष्कार एवं आत्म-हवकास में लगा सकते िैं।

इसी रकार मध्यान्तर भोजन का समय व्यथप वातापलाप में निी ंखोना िाहिए। इतना िी निी,ं ताँगा, बस आहद की रतीक्षा के समय भी मन ष्य सदैव अथपिीन हविारो ंअथवा हिन्ताओ ंमें पड जाता िै। इस हिम खी ब राई को रोकना िाहिए और असफलता, द बपलता, द ःख और व्यसन के य द्ध में हवजय राप्त करने के हलए सेवा िारा समय का सद पयोग करना िाहिए। इस फ टकर समय का, जो हक अनजाने िी व्यथप िला जाता िै, साविानी से हनयमन करके सद पयोग करना िाहिए।

जैसे सम्पूणप संघषप में सेना को भरती करके उनके आिमण-रक्षा के हलए अस्त्र-शस्त्रो ंका संग्रि हकया जाता िै और रगड कर िमकाया जाता िै, इसी रकार सफलता के इच्छ क मन ष्य को अपने सािनो ंका संिय करके जीवन के रत्येक क्षण का पूरा-पूरा लाभ उठाना िाहिए। रत्येक हदवस अनमोल सीपी के समान िै जो जीवन-सररता की काल-िारा में रवाहित िोता िै। पररश्रमी व्यक्तक्त, हजसको समय के मूल्य का ज्ञान िै और इसका पूरी तरि साविानी से उपयोग करता िै, शीघ्रतापूवपक सीप के जल-रवाि में बि जाने से पिले िी उसे खोल कर अनमोल मोती की राक्तप्त कर उसका पूणपरूपेण सम हित रयोग करता िै। इसके हवपरीत समय को व्यथप खोने वाला व्यक्तक्त इस अनमोल मोती को सदा के हलए खो बैठता िै।

रहतहदन और रहतवषप व्यथप खोये गये हदन लौि कहडयो ंके रूप में एक शृंखला बनाते िैं जो एक असाविान व्यक्तक्त के जीवन को बन्धन बना देती िै; हकन्त इसके हवपरीत एक परमाथी का जीवन अनमोल मोहतयो ंकी माला के रूप में अपने जीवन- रदाता के िरणो ंमें समहपपत िो जाता िै।

जो व्यक्तक्त स्वामी जी के व्यक्तक्तगत सम्पकप में आये िैं, उनमें से क छेक ने उनके उदािरण से रेरणा ले कर रहतक्षण के सद पयोग के पथ को अपनाया िै। इसमें संशय निी ंहक इससे उनके जीवन का हित हुआ िै। इसका उल्लेखनीय उदािरण हदल्ली के वकील श्री िाररकानाथ हझंगन िैं, हजन्ोंने अपने उद्धार के हलए अपने जीवन के रत्येक क्षण के सद पयोग का सफलतापूवपक अभ्यास हकया िै। एक लोकहरय मानसशास्त्री डेल कानेगी भी इस अभ्यास के मित्त्व पर बल देते िैं।

सफलता के सिाक को पररश्रमपूवपक अभ्यास से अवश्यमेव िमत्काररक लाभ िोगा। मन ष्य समय की हमतव्ययता का इतना ध्यान रखे हक उस सजग व्यक्तक्त की तरि वि यि कि सके हक
ायि! मैंने साठ क्षण-रूपी िीरो ुंसे जहडत एक स्वहणपम घण्टा खो हदया िै।
समय के लाभदायक सद पयोग व सुंरक्षण पर इतना बल देने का हवलक्षण फल 'आध्याक्तत्मक दैनक्तन्दनी' के रूप में सामने आया िै। यि आलस्य, उदे्देश्यिीनता तथा दीघपसूत्रता
जैसे िोरो ुंको दूर रख कर समय पर रभावशाली अुंक श रखती िै। स्वामी जी ने आध्याक्तत्मक दैनक्तन्दनी के असुंख्य लाभो ुंकी ििाप करते हुए किा िै- "दैनक्तन्दनी से बढ़ कर कोई सच्चा हमत्र, हवश्वसनीय हशक्षक या ग रु निी ुंिै। यि त म्हें समय के मूल्य का ज्ञान कराती िै। इसी से त म्हें ज्ञान िोगा हक त म पारमाहथपक कायों में हकतना समय लगा रिे िो। यहद आप अपनी दैनक्तन्दनी को भली रकार दोष रहित भरेंगे, तो आप एक क्षण को भी अनावश्यक कायों में निी ुंगवायेंगे। तभी आप समय के मित्त्व को जान सकेंगे और इसे िाथ से हनकलने निी ुंदेंगे।"

नि ष से छूटे हुए तीर और म ख से हनकले हुए शब्द की तरि बीता हुआ समय वापस निी ुंआ सकता। स्वामी जी के मक्तस्तष्क में यि बात सदा के हलए स्पष्ट रिी, जैसा हक वे अपनी अमूल्य कृहत 'जीवन में सफलता के रिस्य' (Sure Ways for Success in Life) में हलखते िैं- "वस्त तः समय अनमोल वस्त िै। बीता समय िाथ निी ुंआता। काल की गहत बहुत तीव्र िै। रत्येक घडी िम मृत्य की ओर अग्रसर िो रिे िैं। सदैव स्मरण रिे हक जब घहडयाल बजता िै, तब जीवन-काल का एक घण्टा कम िो जाता िै। पाश्चात्य जन ठीक िी सिोते िैं हक काल उस तीव्र गहत से दौडते हुए बूढ़े मन ष्य के समान िै हजसके हसर के अग्रभाग में बालो ुंका एक िी ग च्छ बिा िै।"

काल और ज्वारभाटा-ये दो ऐसी रबल शक्तक्तयााँ िैं हजन्ें न तो रोका जा सकता िै और न िी मन ष्य की स हविान सार वापस लाया जा सकता िै। इसी कारण स्वामी जी ने 'त रन्त (अभी) करो' ('D.I.N') का हसद्धान्त अपनाया िै। हजस कायप को अगले मास करना िै, उसे आज िी कर लेना िाहिए। हजसे कल के हलए रखा िै, उसे अभी कर लेना िाहिए। िाथ में हलये हुए िर कायप को त रन्त िी कर लेना िाहिए। मृत्य अपने आगमन के समय आपको तैयार रिने का सन्देश निी ुंदेगी। जीवन क्षहणक िै और समय रविमान िै। 'उठो, जागो और आत्म-साक्षात्कार करो।' स्वामी जी के ये सुंहक्षप्त आदशप वाक्य िैं हजन्ें वे पथ-रदशपन के हलए आये हुए हजज्ञास ओ ुंके समक्ष रस्त त हकये हबना निी ुंरिते।

हकसी एक अवसर पर जब हकसी ने अपने जीवन का नव-हनमापण हनकट भहवष्य की हकसी हतहथ से आरम्भ करने के हलए किा, तो स्वामी जी आवेश में कि उठे- "ऐसा मत कहिए। 'कल' की गणना मूखप लोग करते िैं। 'कल' कभी निी ुंआता। हदवस, मास, वषप यो ुंिी व्यतीत िोते जायेंगे और स्वयुं जीवन भी अज्ञानतावश व्यथप िला जायेगा। इसी क्षण से रयत्न करना आरम्भ कर दो।"

यि बडे मित्त्व की बात िै हक स्वामी जी सुंन्यासी तथा कई एक की दृहष्ट में अिैत वेदान्त के सिाहसक व्याख्याकार िोते हुए भी दैनक्तन्दनी, हदनियाप, स्व-हनमापण और जीवन की सफलता पर इतना बल देते िैं, जब हक मायावादी की दृहष्ट में यि शरीर, यि लौहकक व्यविार, यिााँ तक हक सारा हवश्व िी हमथ्या िै। इसके पीछे एक हवशेष कारण िै। वस्त तः आध्याक्तत्मक जीवन की

महिमामयी गररमा, भव्य परमोच्चता तथा उच्चतम पररणहत िी अक्तन्तम अैत हसक्तद्ध िै। वेदाक्तन्तक अन भूहत की यि अक्तन्तम सीमा िै। अतः यि हवषय सािारण मनष्य की वाक्चातरी तथा कल्पना मात्र निीं िुं िै। अन शासनबद्ध एवुं हनयहमत जीवन िारा िी व्यक्तक्त की बक्तद्ध अगम्य सत्य को राप्त एवुं आत्मसात् कर सकती िै।

माया-जाल का हवच्छेदन कोई बच्चो ुंका खेल निीं िुं िै। अिन्ता के सुंकीणप अक्तस्तत्वि– से म क्त िोने के हलए जीवन के रत्येक क्षण को, रत्येक हित्त-वृहत्त को, अपने व्यक्तक्तत्व की रत्येक शक्तक्त को दृढ़तापूवपक उस ओर उन्म ख करना िोगा। एक उत्कट हजज्ञास के हलए अनेको ुं कहठनाइयाँ और बािाएँ म ुँि बाये खडी िोती िैं। अनशासन का िर पिलू अत्यहिक व्याविाररक िोना िाहिए। सैद्धाक्तन्तक ज्ञान रेरणा दे सकता िै अथवा पथ-रदशपन कर सकता िै, पर हनत्य का अभ्यास िी शनैः-शनैः हसद्धान्त को यथाथप का रूप देता िै। वे ऐसा कई बार कहते िैं हक योग की सीढ़ी को एक-एक करके िढ़ना िोगा और इस सािना में सतत जागरूकता, शक्तक्त का सुंरक्षण तथा समय का सद पयोग परम मित्त्व के िैं।

पांिि अध्याय

जीवनोपदेश

रस्तत हवषय अन्य हवषयो ुंकी अपेक्षा आध्याक्तत्मक जीवन तथा व्याविाररक आध्याक्तत्मक सािना से अहिक सम्बक्तन्धत िै, हजसका हनष्पक्ष अध्ययन करने पर अनेक हशक्षाएँ हमलती िैं-सािना-काल की रारक्तम्भक अवस्थाओ ुंमें कठोर अनशासन, तपश्चयाप, अन्तिपन्हि हनसूपि अभीप्सा का अनवरत अथक रयत्न, दृढ़ सुंकल्प की रगहतशील हवजय, हनहश्चत हदनियाप एवुं मायावी रूप मन पर उत्तरोत्तर हवजय से उनका व्यक्तक्तत्व पूणपतः हनखर उठा, हजसका उद्घाटन इस सुंन्यासी व्यक्तक्तत्व में रत्यक्ष िो रिा िै।

वैराग्य और आध्याक्तत्मक उपलक्तब्धयो ुंसे कई हशक्षारद तथ्यो ुंका रकटन िोता िै। जीवन के रारक्तम्भक वषप उस बहनयाद बनाने का काम कर रिे थे हजस पर परवती रेरणादायी आध्याक्तत्मक जीवन का मकान हनहमपत िोना था।

अपने जीवन के रारक्तम्भक काल से स्वामी जी स्वभावतः िर कायप के हलए, हजसको वे िाथ में लेते थे, अपनी सारी (ईश्वर-रदत्त) शक्तक्त व समस्त ध्यान लगा हदया करते थे। उस हवशेष कायप से सम्बन्ध न रखने वाली िर बात को वे दूर रखते व उसकी उपेक्षा करते। उदिारणाथप-एक नवय वक के रूप में, जब वे हकशोर िी थे, शरीर को स िौल बनाने की ि न उन्हें सवार िो गयी। तत्क्षण उनके मक्तस्तष्क ने सोत्सिा इस हविार को पकड हलया और उसमें लीन िो गया। तत्काल उन्ोनें व्यायाम का हवशेष अभ्यास आरम्भ कर हदया। प राणपन्ी माता-हपता इसके बहुत अन कूल निी ंथे, तो भी वि हकशोर रभात वेला में िी तीन अथवा साढ़े तीन बजे शय्या त्याग देता और पररवार के दूसरे सदस्यो ंके (हनिा त्यागने) से पिले िी घर से िला जाता।

सूमृहत आने पर िमक भरी आँखो ंसे उन्ोनें एक बार किा- "मैं इस बात को अब भी स्वीकार करता हाँ हक कई बार मैं अपनी शय्या पर तहकये को इस तरि हबछा देता हक जैसे हनदोष गिन हनिा में मैं िी सो रिा हाँ।" ये सब उन्हें अपने हनरीक्षक हपता को सन्त ष्ट करने के हलए करना पडता। उनको यि ज्ञात न िो पाता हक उनका बेटा व्यायामशाला में िै और शरीर को हृष्ट-प ष्ट करने वाली िीडा में तिीन िै।

वे अदम्य सिास से सम्पन्न थे। सािहनत अहतहथयो ंकी अभ्यथपना करने, स्वागत-भाषण देने या अहभनय के हलए वे अपने हमत्र गणो ंतथा हवहशष्ट जनो ंके आकषपण का केि बने रिते। हवनम्र िोते हुए भी अवसर आने पर वे हनभपय िो हवहशष्ट जनो ंके समक्ष आ जाते। उनकी यि हनभपयता अब भी उनमें रम ख िै और स्वगापश्रम में सािना के हदनो ंमें इससे उन्हें बहुत सिायता हमली िै। यि हवशेषता अब भी उनके स्वभाव में हवद्यमान िै। अंशतः उनके स्पष्टवादी व हनभीक स िारक िोने का रिस्य भी इसी में िै। जनता की आलोिना उन्हें कभी हविहलत निी ंकरती। लोक-कल्याण से सम्बक्तन्धत हकसी योजना के हलए कहटबद्ध िो जाने पर वे हकसी की राय पर ध्यान निी ंदेते।

पाठक गण को भी इसका अन भव हुआ िोगा हक कोई भी मन ष्य जो अटल हसद्धान्तो ंको मूतप रूप देने का रयत्न करता िै, उसे अपने सािस की परीक्षा देने के हलए कडे रहतरोि का सामना करना पडता िै। ऐसे अवसर आने पर स्वामी जी सदैव अपने हसद्धान्तो ंपर अहडग रिते िैं। दायें िाथ से ऐनक ठीक करते हुए उठे हुए बायें िाथ की अनाहमका उँगली से संकेत कर एक हवहशष्ट हवलक्षण म िा में स्वामी जी ने एक बार किा था-"निी–ंनिी,ं मेरा यि रूप सदा निी ंरिता। मैं अत्यहिक आिामक भी िो जाता हाँ। यहद कोई ऐसा अवसर आता िै, तो मैं पराजय स्वीकार निी ंकरता। कभी- कभी तो मैं योद्धा के आवेश में आ कर उग्र रूप िारण कर लेता हाँ। इस हदशा में मैं ग रु गोहवन्दहसंि सरीखा हाँ। समय आने पर सबको उत्सिा हदखाना िाहिए।"

जो व्यक्तक्त उच्च आदशों व हसद्धान्तो ंका अन सरण करने के हलए रयत्नशील िै तथा हजसको इस सािना में पग-पग पर परीक्षा देनी पडती िै, उसके हलए यि ठोस उदािरण िै। हवशेषतया यहद आप हवनम्र और शान्त रकहत के िैं और हवरोिी पररक्तस्थहतयो ंमें भीरु समझे जाते िैं, तो उस समय आप स्वामी जी के उपय पक्त दृहष्टकोण का सिारा ले सकते िैं।

जो तन्मयता और उत्सिा आज स्वामी जी के स्वभाव में दृहष्टगोिर िोता िै, यि स्वभाव उनका हिहकत्सक-हवद्याथी-काल में भी था। उनकी उपक्तस्थहत में जब यि हवरल हटप्पणी स नने में आयी, तो स्वामी जी ने एक बार किा - "म झे यि निी ंमालूम हक काम को अिूरा कैसे छोडा

जाता ि ै? मैं सदैव काम को पूणप व सम्यक् ढुंग से हकया करता था तथा पूरा करके ि ी छोडा करता था। आज के तरुण-वगप में हनहदपष्ट समय पर ि ी तैयारी करने का जो स्वभाव ि ै, उससे मैं सदा अपररहित रि। हबना पूवप-सूिना के हकसी भी हवषय की परीक्षा देने को मैं सदैव तैयार रिता। आज भी मैं अपने को परीक्षाथी के रूप में तैयार रखता हाँ। सतत तत्पर रिने तथा सजग
रिने का मेरा सिज ग ण बन गया ि ै।

"हवश्राम का मेरी दृहष्ट में कोई अक्तस्तत्व नि ीं। मैं सदैव सजग तथा व्यस्त रिता हाँ। आपको जीवन के रहत शाश्वत हशष्य की तरि यिी दृहष्टकोण रखना ि ाहिए और अपने को सदैव परीक्षाथी समझना ि ाहिए। रत्येक घडी, रत्येक समय, रत्येक हदन नये हवषय को सीखने के हलए उत्स क रहिए। मेरी तरि बौक्तद्धक सेवक बहनए। आप ि र एक से क छ-न-क छ हशक्षा ग्रिण कर सकते ि ैं। एक हजज्ञास के हलए सृहष्ट के कण-कण से उपदेशामृत झरता ि ै।

"हकसी भी अन भव की उपेक्षा मत कररए। सुंसार के ि र मिान् उदािरण से क छ रेरणा व हशक्षा ग्रिण कररए। इस रकार शायद हकसी समय आपके रहत की गयी ि ीन आलोिना आपके जीवन में उभर कर आपको आपहत्त से बिा ले और आपके जीवन की ि ारा को ि ी पररवहतपत कर दे। ि र वस्त से सार-सुंग्रि करके उसे अपने मक्तस्तष्क में साँजो के रक्तखए। छोटी-छोटी बातो ुं के रहत उदासीनता वैराग्य का लक्षण नि ीं, बक्तल्क उपेक्षा की तामहसक रवृहत्त का लक्षण ि ै।"

उपय पक्त रकार की अपनी ग्राह्य शक्तक्त को स्वामी जी ने बडी साविानी तथा हववेक से बनाये रखा ि ै। अपनी उपक्तस्थहत में रस्त त ि र नये स झाव, नये हविार, नयी सूिना को तत्क्षण वे अपने पास रखी नोटब क में हलख लेते ि ैं। नोट करने के हलए वे सदैव अपने पास दैनक्तन्दनी रखते ि ैं। लौहकक तथा आध्याक्तत्मक-दोनो ुं दृहष्टकोणो ुं से इस अभ्यास के व्यापक हित के रहत वे आश्वस्त ि ैं।

तरुण ि ाक्टर के रूप में भी वे अपने अवकाश के क्षणो ुं को व्यथप गाँवाने की अपेक्षा अध्ययन, हनरीक्षण में ि ी पूरी तरि व्यतीत करते। अपना सारा हिन्तन वे और हवषयो ुं से ि टा कर इसी रोिक हवषय पर केक्तित कर लेते। इसमें कोई आश्चयप की बात नि ीं हक रथम वषप में ि ी वे हिहकत्सा के पूरे पाठ्यिम से पररहित ि ो गये थे। उनकी अटूट एकाग्रता एवुं सिजता का रिस्य उनके आज के दैहनक जीवन में भी देखा जा सकता ि ै।

मैंने कई बार हदव्य जीवन सुंघ के कायापलय में हबछी हुई पीहठका पर उनके हवराजमान िोते समय इसका हनरीक्षण हकया। उस समय कभी हकसी उत्तेहजत हजज्ञास की हपपासा शान्त करने के हलए वे पत्रोत्तर हलखते, तो कभी शुंका-समािान अथवा रश्नोत्तरी करते। हनकट से टाइपराइटर की टक टक आवाज और पास के कमरे से ठक-ठक की आवाज आ रिी ि ै जिाँ कोई सेवक नयी प स्तको ुं पर कायापलय की म ि र लगा रिा ि ै। बािर से ि थौडी से प स्तको ुं की पेहटका पर कील ठोकने का शोर आ रिा ि ै। कक्ष से क छ दूर सडक पर ि लने वाली मोटर गाहडयो ुं की कणप-कट ध्वहन और गुंगा की ि ारा में तैरती नाव में याहत्रयो ुं के पावन गान का उनकी भाव-म ि ा पर कोई रभाव नि ीं पडता।

यिी निी, ं स्वामी जी के पाश्वप में अभ्यागतो ंका समिू बैठा िै। कोई हिन्दी प स्तक के हलए
यािना कर रिा िै, तो कोई मेज पर फल-फूल भेंट कर रिा िै। कोई हशश िंिल व बातूनी िै और कोई पिाडी रोग-ग्रस्त प त्री के हलए औषहि की माँग कर रिा िै। इन सबके मध्य पीहठका पर शान्त म िा में हवराजमान स्वामी जी आस-पास के इस वातावरण से अहविहलत िैं और उनकी
लेखनी अपनी सिज गहत से िल रिी िै। वि अपने इस कायप में इतने अहिक संुलग्न िैं हक जब तक पत्र पूरा निी ंिोता, वि अपने िश्मे को आँखो ंसे िटा कर 'केस' में वापस निी ंरख देते और लेखनी को 'कैप' लगा कर मेज पर निी ंरख देते, तब तक वि आस-पास के वातावरण
से अनहभज्ञ िी रिते िैं।

जब उनकी दृहष्ट समक्ष बैठे अभ्यागतो ंपर पडती िै और उनको शोरग ल का भास िोता िै,
तब वे कि उठते िैं- "कृपया यि ठक-ठक बन्द करो और एस. को किो हक वि प स्तको ंपर
म िा-अंकन क छ समय उपरान्त करे।"

इस रकार का अभ्यास रत्येक हजज्ञास व सामान्य जन के हलए अहनवायप िै। एकाग्रता का
सम्बन्ध समय और क्तस्थहत-हवशेष में हकये जाने वाले कमपकाण्ड से न िो कर सािक की अभ्यस्त
मानहसक क्तस्थहत से िै। स्वामी जी के अन सार िारणा और ध्यान का अभ्यास कोई िमत्काररक
जादूगरी का हवषय निी।ं यि तो छोटे-से-छोटे काम को रुहि व ध्यानपूवपक करने वाले व्यक्तक्त को
सिज िी राप्त िो जाता िै।

छोटे-से-छोटे कायप को व्यवक्तस्थत ढंुग से न करने वाले का मक्तस्तष्क कमजोर िो जाता िै,
हजस कारण वि ध्यान की क्षमता भी खो बैठता िै। स्वामी जी किते िैं- "ििो आप पेक्तिल बनायें
या हटकट हिपकायें, उसको भी उतनी िी तन्मयता व साविानी से कररए हजतनी तन्मयता से एक
जौिरी राजसी अाँगूठी में िीरा जडता िै या एक नेत्र-हिहकत्सक नेत्र की शल्य हिहकत्सा का कायप
करता िै। जो भी कायप आप करेंििे भोजन करने का िो या दन्तिावन का, पढ़ने का िो या
हलखने का, ििो जूते साफ करने का िी िो, उसे पूणप तन्मयता से ध्यानपूवपक करें। इस अभ्यास
से एकाग्रता रभावी ढंुग से हवकहसत िोगी।"

गाजीप र के पविारी बाबा भी अपने सािको ंको यिी हशक्षा देते हक छोटे- से-छोटे कायप
को भी इतनी साविानी से करो हक समस्त जीवन उसी पर आिाररत िै। रस्त त कायप के अहतररक्त
और सब-क छ भूल जाओ।

हवद्याथी-काल के पश्चात् मलेहशया तथा हसंुगाप र के राज संुघ के हिहकत्सक के रूप में
स्वामी जी ने हिहकत्सा तथा मानव-समाज-सेवा के कायों में विी तीिनता हदखायी। मलाया में
व्यतीत हकये दश वषों में वि हनष्कलंुक रिे।

हनस्सने्दि आध्याक्तत्मक सािना में तत्पर एक सािक के हलए एकाग्रता तथा उसकी राक्तप्त की
मनोवृहत्त अहनवायपतया िाहमपक भावना से सम्बन्ध रखती िै। उसको अपनी िर हिया आध्याक्तत्मक
आदशप से सम्बक्तन्धत करनी िोती िै।

पाश्चात्य देशो ुंमें भी एकाग्रता की रहतभा हवकहसत िोती हदखायी देती िै; परन्त विााँ वि हवश द्ध रूप से भौहतकवादी मागप से िै। पाश्चात्य सभ्यता के मानस- शास्त्री व्यक्तक्तत्व-हवकास व वृक्तद्ध िेत सभी शक्तक्तयो ुंके केंद्रीयकरण के रहत सदैव सिेत रिे िैं।

साुंसृ्कहतक उत्थान के सम्बन्ध में सबसे अहिक मित्त्व की बात यि िै हक व्यक्तक्तगत जीवन में ऐसा रहशक्षण शैशव-काल से आरम्भ कर देना िाहिए। बिपन में िी इस वृहत्त को रोत्सािन देने की आवश्यकता पहश्चमी देशो ुंमें स पररहित िै। बच्चो ुंको भवन-खण्डो,ुं हित्रो,ुं पिेहलयो ुंऔर बाद में रहतभाशाली व वैज्ञाहनक हवहि वाले 'मेकानो' की तरि के खेलो ुंमें व्यस्त रखा जाता िै जो तन्मयता व तिीनता को रहवष्ट कराने में सिायक िोते िैं।

मैं यि देख कर आश्चयपिहकत रि गया हक यि तपस्वी भारतीय सभ्यता व सुंसृ्कहत के प नरुत्थान जैसे उद्देश्य की पूहतप के हलए ऋहषकेश जैसे एकान्त स्थल में बैठ कर दीघप काल से एकाग्रता, तन्मयता तथा तिीनता जैसे हसद्धान्तो ुंका रयोग कर रिे िैं। अपने हनकट के क्षेत्र में हकये गये रयोग से उनको अभूतपूवप सफलता हमली िै। आश्रम िारा सुंिाहलत राथहमक पाठशाला इसी रयोग का एक उदािरण िै। नन्हे-म न्हे जो अभी त तलाते िैं, कीतपन करने व राम-सीता हिरल व कीतपन-रमाण में क शल िोते जा रिे िैं।

सािना-सप्ताि तथा अन्य ऐसे िी अनेक स अवसरो ुंपर आये अभ्यागत हवक्तस्मत रि जाते िैं, जब वे देखते िैं हक इतनी बडी सभा में एक छोटा-सा बालक, हजसको उठा कर मुंि पर खडा हकया जाता िै, रणाम करता िै, हिन्दी तथा अुंगरेजी में सुंहक्षप्त भाषण देने के पश्चात् मि र स्वर में 'रािाकृष्ण', 'गोपालकृष्ण' का कीतपन आरम्भ कर देता िै। दूसरा बच्चा आ कर 'उपहनषद्' व 'गीता' में से उद्धृत क छ पुंक्तक्तयो ुंको अपनी तोतली भाषा में अहवराम गहत से रस्त त करके आपको स्तब्ध कर देता िै।

बडी मित्त्वपूणप बात यि िै हक स्वामी जी यद्यहप अपने हविारो ुंव हसद्धान्तो ुंमें अद्यतन रतीत िोते िैं, तथाहप दैहनक व्यविार में देश की साुंसृ्कहतक परम्परा के अन रूप बने रिने के रहत पूणपतया सजग रिते िैं। आज का य वा-वगप पूवी व पहश्चमी सभ्यता की मूल रवृहत्तयो,ुं हविारो ुं तथा आदशों के द ःखदायी तालमेल में अपनी असाविानी के कारण िी असफल हसद्ध हुआ िै। हजस रकार एक किावत िै- "स बि का भूला शाम को घर आ जाये, तो भूला निी ुं किलाता", स्वामी जी एक दूसरी िी किावत लागू करने में हवश्वास रखते िैं-"अच्छी हशक्षा हजतनी शीघ्र रारम्भ की जाये उतना िी अच्छा िै ।" इससे भी आगे बढ़ते हुए वे मानते िैं हक बच्चे की हशक्षा उसके जन्म से पूवप िी रारम्भ िो जानी िाहिए।

उनका कथन िै- "गभपस्थ हशश के मक्तस्तष्क पर मााँ की रत्येक हिया का गिरा रभाव पडता िै। यहद एक गभपवती स्त्री कीतपन, जप तथा िाहमपक प स्तको ुंके अध्ययन में समय व्यतीत करती िै और अपनी इस अवहि में जीवन को पूणप पहवत्र बनाये रखती िै, तो वि गभपस्थ हशश आध्याक्तत्मक सुंस्कारो ुंसे स सम्पन्न िोगा। उसकी हित्त-वृहत्त जन्म से िी आध्याक्तत्मक िोगी।"

प नः किे गये स्वामी जी के शब्द िैं- "बच्चो ुंका मक्तस्तष्क स कोमल व लिीला िोता िै हजसे हबना अहिक पररश्रम के स न्दरता से हनहमपत हकया जा सकता िै। जो भी सुंस्कार बाल्यावस्था में िाले जाते िैं, उनका रभाव आजीवन रिता िै। वे सुंस्कार अहमट िोते िैं।"

जब कभी कोई गृिस्थी स्वामी जी के पास आता िै, तो वे उससे यि अवश्य पूछते िैं हक वि अपनी सन्तान को बिपन से िी हशक्षा-दीक्षा उहित हवहि अनसार दे रिे िैं अथवा निी।ुं

स्वामी जी की यि उत्कट अहभलाषा िै हक एक ऐसी सुंस्था स्थाहपत की जाये (हजसमें माता-हपता स्वेच्छा से अपने बच्चो ुंको भेजें) जिााँ हनःस्वाथप सुंन्याहसयो ुंके मागप-दशपन में हनष्काम सेवा एवुं आध्याक्तत्मकता का रहशक्षण बच्चो ुंको बाल्यावस्था से हदया जाये। माता-हपता का स्वेच्छा से सन्तान को विााँ भेजने का सियोग वाुंछनीय िै। विााँ पर वे ऐसे उच्च व आदशप वातावरण में हघरे रिें हक साुंसाररकता से पूणपतया अछूते रिें। उनमें श्रेष्ठ व उच्च हविारो ुंका सुंिार हकया जाये।

कौन जानता िै (क्या पता?) एक हदन ऐसी सुंस्था का हनमापण िो जाये जो सावपभौहमक तथाहवश्व-रेम का पाठ पढ़ाने वाले मानव-सेहवयो ुंको जन्म दे?

षष्ठ अध्याय

सच्चे त्याग की ििकती ज्वाला

स्वामी जी के त्याग, वैराग्य की कोई समता निी-ुं िााँ, सेवा-भावना भी इतनी रबल िै हक शेष सभी हवशेषताएाँ इस सच्चे त्याग के सामने फीकी (मन्द) पड जाती िैं। उनके त्याग का उदािरण अहितीय िै। उनका यि आदशप सािक के हलए सदा-सवपदा अमूल्य रेरणा का स्रोत िै। जब उनके पूवापश्रम की पृष्ठभूहम को देखते िैं, तो उनके जीवन की असािारण घटना यानी
आध्याक्तत्मक रूपान्तरण एवुं सुंन्यस्त-वृहत्त का आदशप सजीव िो उठता िै।

एक व्यस्त हिहकत्सक एवुं लोकहरय समाजसेवी के रूप में स्वामी जी ने ऐसे त्याग तथा आत्म-साक्षात्कार के हवषय में सोिा तक न था। एक भ्रमणशील सुंन्यासी, जो-कछ हदन (मलाया में) इनके पास ठिरा था, बीमार पड गया। स्वामी जी ने उसकी हनरोगता के हलए इतने स्नेि से हिहकत्सा की हक वि सािु इनके रेहमल व्यविार पर मग्ध िो गया। उसके पास वेदान्त की क छ पस्तकें थी ुंहजन्ें उसने बहुत साँभाल कर रखा हुआ था। वि सदैव उनको हछपा कर रखता था व हकसी को देने के हलए सिज िी तैयार निी ुंिोता था। उसने उनमें से सवोत्तम प स्तक छााँट कर स्वामी जी को दी। वि स्वामी सक्तच्चदानन्द रहित 'जीव-ब्रह्म ऐक्यम्' पस्तक थी।

इस पस्तक ने स्वामी जी की सप्त आध्याक्तत्मकता को रज्वहलत कर हदया और उनकी रवृहत्त ईश्वरोन्मखी िो गयी। इसके पश्चात् उन्ोनें अनेक पस्तको ुंका अध्ययन हकया हजनमें स्वामी रामतीथप का साहित्य, स्वामी हववेकानन्द का साहित्य आहद रमख था। आध्याक्तत्मक जीवन की सत्यता व

मित्ता का ज्ञान िोने पर स्वामी जी इस हदशा की ओर गिराई व तीव्रता से खोज करने लगे। इस नये ढुंग के जीवन में उतनी िी पूणपता थी हजतनी उनके हिहकत्सक व लोकसेवी जीवन में थी।

तीव्र वैराग्य की ज्वाला उनके अन्दर ऐसी भडकी हक पूवापश्रम का जीवन उन्ें इतना बन्धन-स्वरूप रतीत िोने लगा हक हजसकी तीव्रता से उन्ोनें ु अपने समृद्ध, स खमय, रभावशाली तथा लोकहरय हिहकत्सक के जीवन को एकाएक त्याग हदया, हजस पर व्यक्तक्त आश्चयपिहकत िो उठते िैं। उनके मृद ल स्वभाव, आकषपक व्यक्तक्तत्व तथा कमपठ जीवन का विााँ के लोगो ुंपर इतना अहिक रभाव था हक वे उस क्ेषेत्र में शक्तक्त-स्वरूप बन गये। यहद उन्ें रेल से यात्रा करनी िोती, तो रेलवे कमपिारी अपने हरय हिहकत्सक के हलए रेल को रोक लेते। जिाज से यात्रा करनी िोती, तो थोडी देर से पहुाँिने पर भी विााँ जाने के हलए हसुंगापर की नाव इनको िढ़ाये हबना रवाना न िोती। यिााँ तक हक बैंको ुंमें रहववार की छ ट्टी के हदन भी इनका नगदी का लेन-देन का काम अपवाद स्वरूप के साथ िो जाता। ये सब सिान, रभाव, सम्पन्नता, लोकहरयता आहद उनकी दृहष्ट में इतने त च्छ हुए हक उनको तृणवत् त्याग हदया।

उसी िोनिार सवप-स ख-सम्पन्न, समृद्ध हिहकत्सक को एक सािारण तीथपयात्री के रूप में अपनी इस रिस्यमय िरती को एकाकी िक्करदार िूलि-िूसररत सडको ुंपर भ्रमण करते, अनन्त लोक का यात्री बनते देखा गया। जो प रुष क छ िी हदनो ुंपिले एक वैभवशाली पररवार का था, जिााँ सदैव अहतहथयो ुंकी िलल-पिल रिती थी, उसके पास अब केवल एक दण्ड, एक हभक्षापात्र तथा दिे पर लपेटा सादा वस्त्र िी पूाँजी थी।

स्वामी जी श भ व सौन्दयप के इतने रेमी थे हक हभन्न-हभन्न बहुमूल्य वस्त्रो–ुं कमीज, पैंट, कोट आहद से य क्त सन्दूको ुंसे कमरे तक भरे रिते थे। विी राणी अपने अन्दर ििकती तीव्र त्याग-वैराग्य की ज्वाला के कारण अब िन को छूता तक न था। िमें उनके जीवन से ज्ञात िोता िै हक तरि-तरि की वेशभूषा व आभूषण उन्ें इतने अहिक हरय थे हक हभन्न-हभन्न रत्नो ुंसे जडी अुंगूहठयााँ व हभन्न नमूने की घडीिान आहद का सुंग्रि करते िी रिते थे।

सभ्यता व सुंसृकृहत से सम्बक्तन्धत कोई भी स न्दर वस्त इस कलाकार को बरबस िी अपनी ओर आकहषपत कर लेती थी, हजसे वे हबना आवश्यक-अनावश्यक बात पर ध्यान हदये अपने पास रख लेते थे। ऐसी सुंहित की गयी िीजो ुंमें कई िारमोहनयम, तीन स न्दर ग्रामोफोन और हबलक ल नये टुंकण यन्त्र भी थे। रािीन समय के गोपीिन्द व हसद्धाथप के आदशप की भााँहत स्वामी जी ने इस समस्त वैभव को हतनके की भााँहत त्याग हदया और तीव्र त्याग व वैराग्य की हनहि से य क्त परमात्माहश्रत हभक्ष क का जीवन ग्रिण हकया।

वतपमान समय के हनवृहत्त-मागप को अुंगीकार करने वाले नब्बे रहतशत सािको ुंकी असफलता का एकमात्र कारण उनका अिूरा त्याग व सुंशय-य क्त वैराग्य िै। सािक हवगत रेम-सम्बन्धो, ुं मि र सूमृहतयो ुंएवुं रुहियो ुंको समूल नष्ट निी ुंकर पाता। इसहलए कई वषों तक सुंन्यासी-जीवन व्यतीत करने पर भी सच्चे अथों में पूणप सुंन्यास व हवरक्तक्त न िोने के कारण हनक्तियता व एकाकीपन िी िाथ आता िै। अन्ततः मन व्यथप की तृष्णाओ ुंऔर हनराशाओ ुंसे य क्त िो जाता िै। ऐसे सािको ुंको स्वामी जी के उतृकृष्ट वैराग्य के आदशप से हशक्षा ले कर उसी के अन रूप जीवन ढालने का रयास करना िाहिए।

अक्तस्थर एवुं हविहलत सािको ुंके हलए यि एक वस्त गत हशक्षा िै। अहनहश्चत मन से जीवन में
ऐसे मित्त्वपूणप पथ अपनाने से सािक को न तो आध्यात्क्तत्मक जीवन में और न भौहतक जीवन में
सफलता राप्त िोगी। दो नौकाओ ुंमें सवार हुए यात्री की भााँहत वि हनराशा के सम ि में िी गोते
लगायेगा। सािारण लौहकक व्यविार में भी हकसी द व्यपसन में जो आपको दास बना लेता िै—
छ टकारा पाने के हलए अथवा ब राइयो ुंको समूल नष्ट करने के हलए हनश्चयात्मक ब क्तद्ध से हनणपय लेने
की आवश्यकता िोती िै।

स्वान भव के आिार पर िी स्वामी जी सािको ुंको उद्बोहित करते हुए किते िैं-"दृढ़ हनश्चय
व दृढ़ सुंकल्प से काम लो। एक बार हनवृहत्त-मागप को अपनाने पर पीछे सुंसार की ओर म ड कर
कभी न देखो। सािस से काम लो, ब क्तद्ध को क्तस्थर रखो, जीवन के हनहदपष्ट उदे्देश्य को अपनाओ,
हविहलत न िोओ। क्या आप शरीर एवुं जीवन सहित सभी रकार के स्वत्वो ुंको त्यागने के हलए
तैयार िैं? तभी आप हनवृहत्त-मागप और सुंन्यास में दीहक्षत िो सकते िैं। िीरता, सिनशीलता व दृढ़
सुंकल्प-शक्तक्त वाला िी इस मागप पर िल सकता िै। जैसा हक सभी सोिते िैं, यि फूलो ुंकी सेज
निीं,ुं काूँटो ुंकी बाडी िै। यि मागप अनहगनत कहठनाइयो ुंसे भरपूर िै। क्या आपने िर मूल्य पर
सुंन्यास लेने का दृढ़ सुंकल्प कर हलया िै? क्या आप अपने सभी सम्बक्तन्धयो ुं(ररश्ेतेदारो)ुं से नाता
(सम्बन्ध) तोड सकते िैं? इस पर गिराई से हविाररए, सोहिए।"

प नः स्वामी जी किते िैं- "गिराई से क छ समय हविार करने पर िी कोई हनश्चय लीहजए,
तभी आप अक्तन्तम हनणपय लेने योग्य बन सकते िैं। हफर तत्काल उस हनणपय को व्यविार में लाइए।
अहवलम्ब िी उसे हियाक्तित कीहजए। तभी सफलता आपके िरण िूमेगी। इस अनमोल हविार को
कभी न भूहलए हक दृढ़ सुंकल्प से द हविा की बेहडयााँ कट जाती िैं।"
हजस हनभपयता से उन्ोनुं स्वयुं इस ग्रक्तन् का भेदन हकया िै, उसकी व्याख्या की अपेक्षा िी
निीं ुंिै। इतना िी किना पयापप्त िोगा हक उनका आध्याक्तत्मक पररवतपन 'मर कर जीने' की
किावत
िोररताथप करता िै।

सप्तमअध्याय

दगपम पथ

कष्टो ुंको विन हकये हबना हकसी भी दलपभ वस्त की राक्तप्त सम्भव निीं ुंिै। श्रम से बिने
वाले स्वेद-कणो ुंके हबना हिरस्थायी आदशप की राक्तप्त निीं ुंिो सकती। बीज अपने अक्तस्तत्व को

हमटा कर पिौ के रूप में रस्फ हटत िोता िै। फूल मि र फल की रात्तप्त के हलए जीवनोत्सगप करता
ि। आग की भट्ठी में तप कर िी िोत श द्ध स्वणप बनती िै। इसी रकार एक सिाक को भी सिाना-काल में पूणप एकान्त, हवहभन्न कष्ट व सुंघषों की भट्ठी में तप कर िी सि ता का मूल्य ि काना पडता िै।

स्वामी जी का रारत्तम्भक पररव्राजक जीवन इस कट सत्य को रमाहणत करता रिा िै।
मिाराष्टर जैसे उष्ण रदेश में स्वामी जी तपते आकाश के नीिे नुंगे हसर, नुंगे पाँव, बदन पर
एकिा वस्त्र पिने िी भटकते रिे। राहत्र पडने पर कभी-कभी तो वि सडक के हकनारे पेड के
नीिे िी सो जाते। भोजन न हमलने पर बहुिा भूखे रिना पडता। बहुत भूख लगने पर जुंगल के
कन्दमूल,जुंगलीबेरजोपेडके नीिेहबखरेिोते,उन्िेंिीिो नते,साफकरतेवउदरकीक्षिा
कोशान्तकरते।दैहिकपररिानहकयेहुएवस्त्रके दोट कडेभीअबिीथडेमात्ररिगयेहजसकी
उन्िोंने तहनक भी परवाि निीं की।

इस असह्य कठोर तपस्या ने उनके हृदय में रदीप्त तीव्र वैराग्य की ज्वाला में आहुहत का
कायपहकया।इसअनोखेतरुणतपस्वीसािककेतेजोमयम खारहवन्दनेसबकोआकहषपतहकया।
हकसी गाँव के उदार हनवाहसयों ने उनके देदीप्यमान शरीर पर पडे िीथडे देख कर आपस में िी
क छिनसुंग्रिकरकेएकजोडानयेवस्त्रउन्िेंखरीददहदये।आश्रय-स्थलकेअभावमेंशीतऋत
की कडकडाती सदी को उन्िोंने शात्तन्तपूवपक सिन हकया।

एकबारमूसलािाारवषापमेंभीगनेसेवेसदीसेहठठ रनेलगे,हफरभीउनकािलना
जारी रिा।परन्तराहत्रके घनेअन्धकारमेंमीलोंयात्राकरनेके बादउनकोहकसीएकसािारण-
सी बस्तीमेंइसयात्राकोहवरामदेनापडा।किींआश्रयनहमलनेपरएकभूसेकेढेरपररिी
भीगे कपडोंमेंकाँपतेहुएउन्िोंने राहत्रव्यतीतकी।

रत्येक सािक को ऐसी यातना का आगे या पीछे सामना तो करना िी पडता िै। परीक्षा
की इन घहडयो ुंमें सािक को स्वामी जी के समान िी अटूट िैयप से म काबला करना िाहिए।
आध्यात्त्मक मागप में कठोर तपस्या व अदम्य सािस वाुंछनीय िै। सभी सच्चे हजज्ञास ओ ुंका भी-
हजन्िोंने आत्म-साक्षात्कार िेत अज्ञान व जगत् की हनरथपकता से म ख मोड हलया-यिी अन भव िै।
सत्य तो यिी िै हक परीक्षा और आपदा-रूपी भट्ठी में आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध स्थाहपत
िोता िै।

आध्यात्त्मकता के सच्चे पथ के हवषय में स्वामी जी को हकसी रकार का भी भ्रम निीं ुंिै।
अपनी रिनाओ ुंमें वे स्पष्ट शब्दो ुंमें हलखते िैं-"अध्यात्म का कोई राजपथ निीं ुंिै।" वे किते िैं-
"हवपहत्त एक रच्छन्न वरदान िै। हवपहत्त िमारी सुंकल्प-शत्तक्त तथा सिनशीलता को बढ़ाती िै।
मिारी सहिष्ण ता और त्तथरता में वृत्तद्ध करती िै। प रातन काल से िी योहगयो,ुं सन्तो,ुं भक्तो,ुं
मिात्माओ ुंऔर पीर-फकीरो ुंको हवषम पररत्तस्थहतयो ुंके हवरुद्ध सुंघषप करना पडा। ईश्वर अपने भक्तों
को घोर तपस्याओ ुंऔर कठोर परीक्षाओ ुंका सामना करवाता िै।"

आपकी सच्चाई व सिनशीलताकीपरीक्षाभीभगवान्अवश्यलेंगे।सािकोंकोतोवे
अनेक रकार के कष्टो ुंमें झोकुंते िैं।वेआपकोसवपरथमअहतशयअसिायअवस्थामेंरखेंगे,तब
परीक्षण करेंगे हक इस दयनीय अवस्थामेंभीआपकेहृदयमेंउनकेहलएभत्तक्तिैयािनिीं।ुंइन

परीक्षाओ ंके स्वरूप के बारे में क छ निी ंकिा जा सकता; हकन्त एक सच्चा भक्त इन हवपदाओ ं में हबलक ल निी ंघबराता। हकसी भी आदशप की राक्तप्त के हलए पररक्तस्थहतयो ंमें पररवतपन आने पर भी सिनशीलता, सहिष्ण ता तथा संुकल्प-शक्तक्त बनाये रखना अत्यावश्यक िै।

वे लोग जो आक्षेप लगाते िैं हक अपने असंुख्य लेखो ंिारा स्वामी जी सवपस्व त्याग करके सबको संुन्यास के हलए रेररत करते िैं, उनको उपय पक्त अन च्छेदो ंका अध्ययन करना िाहिए। इससे उन्ें सन्तोष िो जायेगा हक स्वामी जी ने संुन्यास-जीवन का कोई स खद या आकषपक रूप ब क्तद्धीन य वा-वगप के समक्ष रस्त त निी ंहकया; कोई बात घ मा-हफरा कर निी ंकिी। स्वामी जी के स्वयंु के कठोर जीवन से उत्पन्न पररपक्व अन भव पर आिाररत ये तथ्य सािको ंको साविान करते िैं, ताहक वे पारमाहथपक जीवन के कट सत्य से अवगत रिें तथा आवश्यकता िोने पर क्तस्थहतयो ंसे सामंुजस्य स्थाहपत कर सकें। वस्त तः यि पथ द गपम िै। इस हफसलने वाले संुकीणप मागप पर सन्त हलत िो कर िलो।

मैंने ि पिाप देखा हक आज साठ वषप की अवस्था में भी स्वामी जी अपनी वैयक्तक्तक वीतरागता के आदशप को अज्ञात एवंु हवनीत भाव सहित सजीव बनाये हुए िैं। कभी-कभी तो उनका एकादशी व्रत उसी हदन तक सीहमत न रि तीन हदनो ंतक िलता िै। भूख-प्यास की पीडा को सिने, हठठ रती सदी को सिने तथा पथरीले मागप पर नंुगे पााँव िलने की तपस्या उनकी आज भी लिती िै।

एक बार सािक-समूि को िेतावनी देते हुए उन्ोंने किा हक वे अपनी रस प्त वृहत्तयो ंसे सिेत रिें। स्वामी जी ने किा- "मन ष्य स्वभाव से िी हवलासी िै। आप रारम्भ में तो अवश्य िी वैराग्य तथा व्रत -पालन में उत्सािी रि सकते िैं; परन्त यहद आप स्वयंु के रिरी न बने, तो िीरे ंआपकी सािना-शक्तक्त िीरे-िीरे हशहथल पड जायेगी। आप आरामपसन्द बनते जायेंगे और अन्ततः उस पाश में बाँि कर असिाय बन जायेंगे। अपनी देि को आराम अथवा हवलाहसता में रिने की आपने जरा भी छूट दी, तो सािना िारा उसे प नः अन शाहसत करना असम्भव िो जायेगा।"

कोमल शय्या पर शयन करते हुए उनकी हवरि की भावना एकाएक जाग्रत िो जाती और वि अपनी क टीर के नंुगे, ठण्ढे व पथरीले फशप पर लेटे हुए पाये जाते। कभी-कभी वस्त्र उतार कर वे नाली के पास गीले फशप पर िी पालथी लगा कर बैठ जाते। आिार और वस्त्र की सादगी के आदशप को बनाये रखने में वे सदैव रयत्नशील िैं। तपस्या के इन समस्त रूपो ंके रहत सािक कभी असाविानी न बरते; क्योहंक जिााँ ये रगहत में सिायक िैं, विााँ इनके िारा पतन की भी आशंुका िै।

िेतावनी के तौर पर स्वामी जी दहक्षण के एक रहसद्ध संुन्यासी के दयनीय पतन का उदािरण हदया करते थे। उस संुन्यासी ने तीव्र वैराग्य व तपस्या िारा अपने बडे भाई को भी संुन्यास के हलए रेररत और उत्तेहजत हकया। खेद की बात िै हक वि स्वयंु पथ-च्य त िो कर भोग-हवलासी बन गया। हववाि करके पूणप सांुसाररक व हवषयी बन गया। यिााँ तक हक उसने अपनी वृद्धा िाहमपक माँ को भोजन आहद से सम्बक्तन्धत संुकल्पो ंको तोडने के हलए बाध्य कर हदया।

ऐसे कई दृष्टान्त िैं हजनमें एकान्त-सेवी संुन्यासी वर्षों की तपस्या के बाद भी अपने रशंुसक भक्तो ंके सम्पकप में आ कर आरामरद जीवन के हशकार बन जाते िैं। रहसक्तद्ध राप्त करते िी

उनके आस-पास स्वेच्छा से उनकी हनजी सेवा के हलए तत्पर भक्तो ंकी भीड लग जाती ि ै। रारम्भ में तो सुंन्यासी उत्स क हशष्यो ंको हनराश न करने के कारण थोडी छूट दे देते ि ैं, हकन्त अन्त में
वि ि र रकार की हवलाहसता के दास बन जाते ि ैं।

स्वामी जी के ि ी समकालीन एक सिा जो हिमालय की ग फाओ ंमें तपस्या करते थे, एक
बार एक भक्त के आग्रि पर रसोइया रखने के हलए तैयार ि ो गये। उन् हनत्य हनयत समय पर
भोजन करने का अभ्यास पड गया। विी तपस्वी सिा जो अन्नक्षेत्र से कभी-कभी हमलने वाली हभक्षा
पर हनभपर थे, अब भोजन में थोडा-सा हवलम्ब ि ो जाने पर आग-बबूला ि ो जाते ि ैं।

सिाक के जीवन में जरा-सी भी द बपलता आने पर मन इस अवसर का लाभ उठा लेता ि ै।
मन हशकार को दबिोने के हलए अपने पुंजे सदैव तैयार रखने वाले हसुंकी तरि ि ै। स्वामी जी
के जीवन से यि ि ररताथप ि ोता ि ै हक स प्त सुंस्कारो ंके आकक्तस्मक आिमण के रहत सतत सजग
रिना ि ाहिए। क्तस्त्रयो ंके सुंसगप से दूर रिने में तो वि उच्च कोहट के सिाको ंके हलए मिान्
आदशप ि ैं। स्वामी जी भक्त गणो ंके ि ारा उन् साष्टाुंग रणाम के समय अपने ि रण स्पशप करने का
समय कभी निी ंदेते। उच्च कोहट की साहिका ि ारा वे ि रण स्पशप का हनषेि करते ि ैं। शायद
आपने भी स ना ि ोगा हक स्वामी हववेकानन्द के सिपाठी, हजनका सुंन्यासी-जीवन त्याग व सुंकल्प
से पररपूणप था, कई वषों के आत्म-सुंयम एवुं हनष्काम सेवा के बाद भी अन्ततः एक स्त्री के
रलोभन में ब री तरि फाँस गये। स्वामी त रीयानन्द ने अपने सिाको ंकी एक अनौपिाररक वाताप में
यि उदािरण हदया था।

यिााँ पहवत्र और अपहवत्र ि ोने का रसुंग निी ंि ै। ििो व्यक्तक्त पहवत्र वा श द्ध- हृदयी ि ी
क्यो ंन ि ो, तो भी स्त्री जाहत का सम्पकप मात्र ि ी उसे सुंसगप की ओर ले जाता ि ै। क्तस्त्रयो ंके
म क्त सिियप में मन ष्य की आहदम रवृहत्तयााँ उभरने लगती ि ैं और वि मन ष्य के हनयन्त्रण में
स गमता से निी ंआ पाटी। नारी हनष्कलुंका ि ो सकती ि ै, पर ईश्वर की माया अनजाने में उसके
माध्यम से सहिय ि ोती ि ै। मन ष्य की रस प्त वासनाएाँ स्त्री के सुंसगप व सुंगहत का अवसर पाते ि ी
अहभव्यक्त ि ो उठती ि ैं।

येरपेि के पूज्य मलयाला स्वामी, जो स्वामी जी के समकालीन मिान् सन्त ि ैं, अकारण ि ी
क्तस्त्रयो ंकी सुंगहत का हनषेि निी ंकरते। एक सिाक ने अनजाने में अपनी रुग्णावस्था में सेवा-
स शूरूषा करने वाली सहृदया स्त्री को अपने पााँव की माहलश करने की अन महत दी। उसे मलयाला
स्वामी ने समझाते हुए बताया- "त म्हारे ऐसे पाप का म झसे कोई रायहश्चत्त पूछा जाये, तो मैं यि
कहाँगा हक स्त्री ि ारा स्पशप हकये गये पााँव के भाग पर जलते हुए अुंगारे रख हदये जायें।"

भौहतकवादी, सौन्दयप-रेमी, स्त्री-प रुष के आध्याक्तत्मक सम्बन्ध की भावना रखने वाला,
यौन-भावना को काव्य-कल्पना में हिहत्रत करने वाला आि हनक मन घोर तपश्चयाप की इस पराकाष्ठा
का रहतरोि कर उठेगा। वे सन्तो ंपर स्त्री-घृणा का आरोप लगा सकते ि ैं, पर वास्तव में ऐसा
निी ंि ै। ऐसी साविानी आवश्यक ि ै।

आज के लगभग सभी सन्त जन नारी की हदव्यता में हवश्वास रखते ि ैं। वे नारी को मिान्
आदर की दृहष्ट से देखते ि ैं। उनका हविार ि ै हक नारी भी देश के प नरुत्थान में रम ख भूहमका का
हनवाि कर सकती ि ै। वस्त तः श्री मलयाला स्वामी स्वयुं, आनन्द आश्रम के श्री स्वामी रामदास,

उपासनी मिाराज के सिकारी हशष्य, स्वामी ओकुंार जी, श्री वासवानी जी आहद सब अनेक व्याविाररक रूपो ुंमें स्त्री-हशक्षा, स्त्री-जागरण तथा स्त्री-रहशक्षण के रहत सहिय िैं। तथाहप एक सािक के हलए स्त्री-सुंसगप पूणपतया हनहषद्ध िै।

नारी को सम हित आदर अवश्य हमलना िाहिए, उसके उत्थान के हलए उहित रहशक्षण भी हमलना िाहिए; पर यि सब पृथक् सुंस्थाओ ुंमें िोना िाहिए। उनके हलए ऐसे आश्रमो ुंकी व्यवस्था िोनी िाहिए जिााँ ज्ञान-वृद्ध आत्माएाँ सम हित सिाननीय दूरी रखते हुए उनसे व्यविार कर सकें। किने की आवश्यकता निी ुंहक नारी-वगप को भी प रुष-वगप की सुंगहत में इतना िी अन शासन व सुंयम हदखाना िोगा।

मिारे हिन्दू-शास्त्रो ुंमें स्पष्ट रूप से ऐसे उदिारण हमलते िैं जब मानवोपरर श्रेणी के ब्रह्मा, नारद व हवश्वाहमत्र आहद भी हवपरीत हलुंग के आकषपण में फाँस गये। िि िो कोई शास्त्रो ुंको आहिकाररक माने या न माने; पर जो हशक्षाएाँ उनमें वहणपत व रस्त त की गयी िैं, उन पर िमें यथोहित हविार अवश्य करना िाहिए। आध्याक्तत्मक सािक के हलए वे हवपरीत हलुंग से दूर रिने का स्पष्टतया समथपन करते िैं। इसका तात्पयप स्त्री-प रुष के पारस्पररक सम्बन्धो ुंको नष्ट एवुं उते्तहजत करना निी ुंिै, बक्तल्क इसका आशय यि िै हक स्त्री-प रुष एक-दूसरे को आदर सहित उहित दृहष्टकोण से देखें और ईश्वर-रदत्त एक-दूसरे की अहमत शक्तक्त के वास्तहवक स्वरूप को समझने का रयत्न करें। इस तथ्य की अविेलना निी ुंकी जा सकती हक अहिकाुंश लोगो ुंमें काम-हलप्सा अहिक रबल िै। अतः इस असामुंजस्य को दूर करने की आवश्यकता िै। पारस्पररक हवरोिी दृहष्टकोण तथा तीक्ष्ण परामशप के पीछे हववेक की आवश्यकता िै।

स्वामी जी िारा हनहदपष्ट पथ को अपना कर िी रत्येक सािक व्यक्तक्तगत रूप से लाभाक्तित िो सकता िै। वस्त तः आध्याक्तत्मक जीवन और इसकी अन भूहत भी अनन्त िी िै। यि कायप हकसी भी अवहि तक सीहमत निी ुंिै हक उसको पूणप करने के पश्चात् अवकाश मनाया जाय। यहद जीवन में हकसी उच्च आदशप की राक्तप्त करनी िै, तो परमोच्च श द्धता और अन शासन बनाये रखना िोगा। इसमें हशहथलता और साविानी की उपेक्षा असह्य िै। शक्तक्तशाली सावपभौहमक माया-जाल कोई सािारण खेल निी ुंिै। वषों से कष्टो ुंको सिते हुए की हुई तपश्चयाप को नष्ट करने के हलए वासना-वेग का एक िी झोुंका पयापप्त िै। तत्त्व-वेत्ताओ ुंके कथनान सार इसे सदैव याद रक्तखए हक सािक को राथपना में सवपदा सजग रिना िोगा।

यि उहित िोगा हक मद रा के उस सन्त का उदिारण सामने रखें हजसके हवषय में ऐसा किा जाता िै हक नगर में जब वि एक बार हनरुदे्दश्य घूम रिा था, तो एक अहिकारी तथा िृष्ट व्यापारी ने रश्न हकया - "सन्त की दाढ़ी और गिे की पूाँछ के बालो ुंका ग च्छा, दोनो ुंमें से हकसकी मिानता अहिक िै ।" सन्त ने रश्नकताप की ओर मौन दृहष्टपात हकया और ि िुपिाप आगे बढ़ गया।

वषों उपरान्त उस सन्त ने व्यापारी को त रन्त पहुाँिने को किलाया। वि मसखरा व्यापारी, जो हिरकाल से की हुई अपमानसूिक हठठोली को भूल ि का था, िहकत रि गय। और सोिता गया हक क्या बात िो सकती िै? विााँ पहुाँिने पर उसने वन्दनीय मिात्मा को मृत्य -शय्या पर पडे पाया। मरणासन्न मिात्मा उठे और िीरे से फ सफ साते हुए व्यापारी से किने लगे- "ि भि व्यक्तक्त!

वर्षों पूवप आपने म झसे एक रश्न हकया था। ठीक िै, मेरी दाढ़ी गिे की पूाँछ के बालो ंसे मिान् ैं। अब आपको अपने रश्न का उत्तर हमल गया। हवलम्ब के हलए क्षमा करें।"

अवनहमत व्यापारी ने यि उत्तर स न कर सन्त से पूछा- "वर्षों के मौन के उपरान्त उसके पृष्टितापूवपक हकये गये रश्न का उत्तर देने के हलए उन्ोनंे जीवन के अक्तन्तम क्षणो ंको िी क्यो ं िना?"

सन्त ने हवनम्रतापूवपक उत्तर हदया- 'यथाथपतः यि मेरे जीवन के अक्तन्तम क्षण िैं। हनस्सने्दि मैं तब भी यि उत्तर दे सकता था जो मैं अब दे रिा हाँ, पर तब मैंने सािस न हकया। हरय बन्ध ! ईश्वर की माया इतनी रिस्यमयी व अगम्य िै हक मैं जानता िी न था हक अगले क्षण मैं क्या कर बैठूाँगा? माया के आकर्षपण के समक्ष मानव की उपलक्तब्धयााँ नगण्य िैं। हदव्य लीला के मुंि पर उसी का शासन सवोपरर िै। कोई भी व्यक्तक्त हनश्चयात्मक रूप से निी ंकि सकता हक वि समस्त रलोभनो ंसे परे िै। भगवत्कृपा न उसको केवल पहवत्र बनाती िै, बक्तल्क अन्त तक उसकी पहवत्रता का संरक्षण भी करती िै। मन ष्य का िमप यिी िै हक वि सतत सजग रि कर नम्रतापूवपक व्यविार करे।

"हवगत वर्षों में मैं अपने-आपको हनष्कलंक एवं पहवत्र रखने के हलए उस रभ की करुणा और रेम पर हनष्ठापूवपक आहश्रत रिा। अब मेरे जीवन के क छ िी क्षण शेर्ष िैं और हविहलत िोने की कोई सम्भावना निी ंिै। अतः अक्तन्तम श्वास के समय मैंने ऐस उत्तर हदया िै।" यि कि कर मिात्मा पीछे को ल ढ़क गये और उनकी इिलीला समा िो गयी।

अतः असत् से सत् की ओर, अन्धकार से रकाश की ओर, मृत्य से अमरत्व की ओर ले जाने, पर हविहलत करने वाले पथ पर हनरन्तर रगहत की ओर बढ़ने के हलए मानव को सच्ची हवनम्रता और सतत साविानी जैसी मिान् हशक्षाओ ंको दृढ़तापूवपक िारण करने के हलए सदैव जागरूक रिना िोगा।

अष्टम अध्याय

समाज में रिने वाले सािको ंकी समस्या

आध्याक्तत्मक पथ के सािको ंतथा ऐसे सािको ंको जो साथ-साथ लौहकक िमप सम्पन्न करते हुए नैहतकता के पथ पर अग्रसर िो रिे िैं, जहटल समस्या का सामना करना पडता िै। पूणपतया हनवृहत्त-मागप को अपनाने वाले सािको ंके हलए यि हनदेश पूणपरूपेण व्याविाररक िै।

परन्त सिहशक्षा-संस्थानो ंमें हशक्षा राप्त करने वाले हवद्याहथपयो,ं हिहकत्सको–हजनके रोगी परुर्ष िी निी ंमहिलाएाँ भी िोती िैं और वकील-हजनके वादी दोनो ंवगों के िोते िैं तथा ऐसे व्यवसायी जो मख्य रूप से नारी-जगत् के काम आने वाली सामग्री का िी व्यापार करते िैं-इन

सबको नारी-सम्पकप में िर समय रिना िी पडता िै। इन सबको हकस ढंग से इस समस्या का सामना करना िाहिए ? समाज-सेवी और हनष्काम कमपयोहगयो ंके सामने भी इस समस्या की िनौती रस्त त िोती िै।

इस समस्या का स्वामी जी को पूणप ज्ञान िै। इसका पिला कारण िै हक वि स्वयुं अपने जीवन के रारक्तम्भक काल से िी हनष्काम कमपयोगी थे। हिहकत्सक के रूप में, तत्पश्चात् सुंन्यासी के रूप में बदरीनारायण मागप पर क्तस्थहत 'सत्य सेवा आश्रम' के िमापथप औषिालय में सेवा की अवहि में उन्ें िर वगप के यात्री एवुं रोगी का उपिार करना िोता था। दूसरा कारण यि था हक नाम-सुंकीतपन-रिार में वि महिलाओ ंव बच्चो– ंसभी को कीतपन का अभ्यास कराया करते थे। उनको पूणप हवश्वास था हक नारी िी देश की आध्याक्तत्मक सम्पदा को अक्ष ण्ण रख सकती िै।

जिााँ-किी ंभी वे जाते, उपिार का कायप हकये हबना न रिते। सेवा का यि रूप उन्ें बहुत हरय था। औषहियो ंऔर राथहमक हिहकत्सा के काम आने वाली अन्य आवश्यक वस्त ओ ंसे उनका रिस्यमय थैला रवास में सदा उनके साथ रिता था। यिााँ तक हक सुंकीतपन-मण्डप में भी थैला उनके पास रिता और कायपिम के अन्त में वे घोषणा करते हक हजसे भी उपिार व औषहियो ंकी आवश्यकता िो, वि उनकी सेवा का लाभ उठा सकता िै। इस रकार उनके हलए जनता से हनकट सम्पकप स्थाहपत करना आवश्यक िो जाता िै। ऐसे अवसरो ंपर वि अपनी समस्या को कैसे स लझाते िैं तथा आपके व मेरे सि ख इसका समािान कैसे रखते िैं?

समस्या-समािान के रूप में वे पााँि-छि मित्त्वपूणप बातें अपनाने के हलए किते िैं। इस जहटल समस्या के समािान का सवोपरर रूप साक्तत्त्वक भाव को जाग्रत करना िै। मानव अपने हृदय के हविारो ंका िी रहतहबम्ब बाह्य जगत् में देखता िै। इसीहलए स्वामी जी 'दृहष्टकोण-पररवतपन' का िी समथपन करते िैं। हजन सािको ंको अपने जीवन में नारी-सम्पकप में हववशतया रिना िी पडता िै, वे सब उन्ें जगज्जननी के हदव्य स्वरूप में देखा करें। नारी के रहत हृदय में 'देवी' भाव की जागृहत एक मित्त्वपूणप रभावशाली ढंग िै जो व्यक्तक्त के हलए सिम ि िी ढाल व कवि का कायप करता िै।

गत अक्ूतूबर मास के रारक्तम्भक हदनो ंका एक दृश्य मेरे समक्ष सजीव िो उठता िै। नवराहत्र के हदनो ंमें आश्रम में राहत्र के समय देवी-पूजा बडे भक्तक्त-भाव व हनष्ठापूवपक स न्दर ढंग से की जाती िै। हवजयादशमी के पावन पवप पर स्वामी जी को एकाएक जगज्जननी के साक्षात् स्वरूप की पूजा का हविार आया। 'मााँ' की आरती करने के हलए रेशमी वस्त्र, फल-फूल तथा पूजा की अन्य सामग्री लाने के हलए तत्क्षण िी एक ब्रह्मिारी को उन्ोनें बाजार भेजा।

देवी के साक्षात् स्वरूप में उन्ोनें राथहमक हवद्यालय की तीन वषप से दश वषप तक की क मारी कन्याओ ंको ब ला कर लम्बी िटाई के ऊपर उन्ें एक पुंक्तक्त में आसीन करवाया। यि एक अद्भ त अहवस्मरणीय दृश्य था। स िौल व हृष्ट-प ष्ट दिे वाले स्वामी जी ने रत्येक क मारी कन्या को नतमस्तक िो कर रणाम हकया। उनके भाल पर क मक म लगाया तथा प ष्पाुंजहल अहपपत की। कपूपर से उनकी आरती उतारी तथा कायपिम के अन्त में स्वयुं अपने कर कमलो ंसे उस हमष्टान्न को परोसा, हजसे देवी के भोग िेत नैवेद्य के रूप में हवशेष रूप से तैयार करवाया था। यि सब देख कर मैंने मन-िी-मन सोिा- "अब मैं स्वामी जी के साक्तत्त्वक भाव (नारी के रहत) के आशय को

समझ गया। जीवन की परीक्षा की घहडयो ुंमें हनष्कलुंक उतरने के हलए म झ जैसे सािको ुंके हलए यिी दृहष्टकोण अपेहक्षत िै।"

परन्त सुंसार में ऐसे लोग भी िैं हजनकी मनोवृहत्त िाहमपक निी ुंिै, न िी वे भक्तक्त-भावना में हवश्वास रखते िैं। वे िर हवषय को वैज्ञाहनक ढुंग एवुं समालोिना के रूप में लेना िािते िैं। इस वगप के लोगो ुंको नारी की शरीर रिना व उसके अवयवो ुंका वैज्ञाहनक दृहष्टकोण सामने रखना िाहिए। उन्ें मानव शरीर का हवश्लेषण करना िाहिए। हववेक और हविार से देखने वाली आँखो ुंके समक्ष नारी-शरीर का आकषपण समाप्त िो जायेगा।

स्वामी जी िारा हलखे 'ब्रह्मियप' (हवषय) पर दो अन च्छेदो ुंको शब्दशः यिाँ उद्धृत करने की रेरणा को मैं निी ुंरोक सकता। उन्ें बारम्बार पढ़ा जाना िाहिए। 'दृहष्टकोण बदलो' शीषपक में वे हलखते िैं- "वैज्ञाहनक की दृहष्ट में नारी हवद्य त्कणो ुंका प ुंज मात्र िै। ऋहष कणाद के हविारो ुंमें नारी अण -परमाण , ियअण , त्रयअण का हपण्ड मात्र िै। शेर के हलए नारी हशकार मात्र िै। हवषयी पहत के हलए वि केवल भोग-हवलास की वस्त िै। एक हबलखते बच्चे के हलए वि स्नेिदात्री िै हजससे बच्चे को दू, हमठाइयाँ व अन्य स ख राप्त िोते िैं। ईष्यापल ननद व सास की दृहष्ट में वि शत्र वत् िै। हववेकी और वैरागी के दृहष्टकोण में नारी िाड-मांुस, मल-मूत्र तथा खून-पसीने आहद का हमश्रण मात्र िै। एक तत्त्ववेत्ता ज्ञानी के हलए वि सक्तच्चदानन्द आत्मा िै।

"नारी का सौन्दयप हकसमें हनहित िै? हविाररए और हवश्लेषण कीहजए। क्या एक हववेकी इस दैहिक माया जाल का ध्यान करेगा ? एक सप्ताि की रुग्णावस्था के पश्चात् हकसी नारी के अुंगो ुं को, नेत्रो ुंको व िेिरे को देखें। वि सौन्दयप किाँ िला जाता िै? वृद्धा नारी के झ ररपयो ुंभरे िेिरे पर दृहष्टपात तो कररए। नारी की शरीर रिना के उस मायावी रूप का हवश्लेषण करेंगे, तो वि स्वतः सदा-सवपदा के हलए त्याज्य िो जायेगा।"

तीसरा ढुंग िै-रहतपक्ष भावना का। यहद हकसी समय नारी-ग्रािक या अभ्यागता को देख कर आपके अन्दर काम-हलप्सा जाग उठे, तो उसी समय क्षण- भुंग र हवषय-स ख की भयाविता का हिन्तन कररए। हवलास की पीडाओ,ुं सतीत्व तथा पहवत्र जीवन के सौन्दयप को न भूहलए। मानहसक नमस्कार से भी द भापवनाओ ुंपर अुंक श लगाने में सिायता हमलेगी।

नारी की आँखो ुंकी ओर देखने व म स्कराने का रयत्न िी न कररए। नारी की आकृहत में नेत्र सबसे अहिक ल भाने वाले वशीकरण अुंग िैं। तरुणी के नेत्र शक्तक्तशाली िोते िैं जो सन्देश-माध्यम का काम करते िैं। उसके िुंिल कटाक्ष असाविान मन ष्य को अपने माया-जाल में फँसाने के हलए प ष्प-बाणो ुंका काम करते िैं।

स्वामी जी ने हलखा िै हक नारी को सामने देख कर पिले तो आपमें उससे बात करने की इच्छा िोगी और हफर स्पशप की। िीरे-िीरे हनकट सम्पकप के िारा आपका अपहवत्र मन आपको पतन के गतप में िकेल देगा। अतः समाज में रिहलत िाथ हमलाने की रथा को त्याग देना िाहिए। नारी से सम्पकप स्थाहपत करने के हलए इस हिया को बार-बार और बहुत देर तक हकया जाता िै। हवदेश से आया हुआ यि फैशन हिन्दू-समाज के हलए अहभशाप िै।

अक्तन्तम, परन्त सवापहिक मित्त्वपूणप हविार तो यि ि◌ै हक नारी को स्वयुं भी उसके उच्च आदशप के रहत रहशक्षण देना गिोगा हजसके अन सार उसका परम कतपव्य बचे्चे में उसके शैशव-काल से ि◌ी 'मानवता' जैसी भावना के बीज बोना ि◌ै। आवश्यकता इस बात की भी ि◌ै हक नारी को
उसके श द्ध सतीत्व के उच्च आदशो ◌ुंसे अवगत कराया जाय। उसे अपने सचे्चे सतीत्व (नारीत्व)
तथा मातृत्व की गररमा का ज्ञान कराया जाय। इसके साथ-साथ वि वैवाहिक बन्धन की पहवत्रता (श द्धता) का पूणप ध्यान रखती हुई मन ष्य को रलोभन में न फाँसा कर उसके उत्थान का सिान
बने ।

नारी-जगत् में जाग्रहत लाने एवुं ि◌ाररहत्रक उत्थान के हलए समस्त माता-हपता, अहभभावक, पहत, ग रु जन, हशक्षक एवुं हशक्षाशाक्तस्त्रयो ◌ुंका उत्तरदाहयत्वपूणप कतपव्य ि◌ै।

अतः उन सब सिाको ◌ुंको, जो लौहकक व्यविार के साथ-साथ सिाना में पूणपता अथवा
सफलता ि◌ाते ि◌ैं, समस्या समिाान के रूप में स्वामी जी ि◌ारा हदये गये हववेक-यक्त, न्यायोहित,
व्यक्तक्तगत पररक्तस्थहतयो ◌ुंके अन सार लागू ि◌ोने वाले इन सझावो ◌ुंको मान्यता देनी ि◌ोगी।

नवम अध्याय

सतत सजग साविानी और हविारशीलता

यि बडा रोिक हवषय िै हक स्वामी जी छोटी-छोटी बातो ंमें भी हकस रकार तीक्ष्ण व जाग्रत ब द्धि से कायप करते हुए सजग तथा सिेत रिते िैं। ऐसे क छ दृष्टान्त हजन्ोनें मेरा ध्यान
अपनी ओर आकहषपत हकया, नीिे हदये जाते िैं।

एक बार एक रहसद्ध कहव, हजसका स्वामी जी से पररिय (सन् १९५०) भारत- यात्रा के
हदनो ंमें हुआ था, संयोगवश आनन्द-क टीर के पास आ कर ठिरा। उस समय स्वामी जी दो-तीन
प स्तको ंके एक-साथ रकाशन िेत घण्टो ंतक हवषय-सामग्री हलखवाने में सदैव की भााँहत अत्यहिक
व्यस्त थे।

जब उन्ें पडोस में ठिरे कहव के आगमन का पता िला, तो उसके क टीर में रवेश करने
से पूवप िी स्वामी जी ने हनजी कक्ष में जाने की शीघ्रता हदखायी। इसका कारण उस कहव की
अत्यहिक वािालता थी; क्योहंक जैसे िी वि स्वामी जी को एक बार देख लेता, तो घण्टो ंतक
अहवराम बातें करने में उनका समय व्यथप में िी नष्ट कर देता था।

हजस कायप को स्वामी जी उस समय कर रिे थे, वि इतना मित्त्वपूणप था हक उसे टाला
निी ंजा सकता था। स्वामी जी के पास उसकी हवहवतापूणप बातिीत के हलए तहनक भी समय निी ं
था, इसहलए शीघ्र िी अपने दो हशष्यो ंको उस कहव मिोदय (जो वस्त तः आश्रम का अहतहथ निी ं
था) की स ख-स हविा का ध्यान रखने का आदेश दे कर त रन्त हनजी कक्ष में िले गये। मैं मूक
भाव से यि सब-क छ देख रिा था। किी ंसमय व्यथप न िला जाये, इस बात की हिन्ता उनके
िेिरे पर स्पष्ट झलक रिी थी।

पााँि हमनट बीते। और लो! तीव्रता से स्वामी जी अपने कक्ष से िमारी ओर आते हदखायी
हदये। अब उनके िेिरे पर हनणपय का भाव था, कोई हिन्ता या व्यग्रता निी ंथी। उन्ोनें किा-
"अब आपको उसकी देखरेख करने की कोई आवश्यकता निी ंिै। यि कायप मैं स्वयं करूाँगा। दूि
से भरा एक पात्र (जग), थोडे बादाम, हमश्री तथा मेरे थैले से हनकाल कर फल भी म झे दे
दीहजए।" सब िीजें लायी जाने पर वे स्वयं िी उन्ें उठा कर उस अभ्यागत (हजससे वे क छ क्षण
पूवप हमलने के अहनच्छ क थे) के पास ले कर गये, उसका अहभवादन हकया, भोजन की सामग्री
भेंट की तथा थोडी देर उससे बातिीत की, तब कमरे में वापस लौटे।

मैंने शाक्तन्तपूवपक यि सब देखा हक हकस रकार उनके मन के दो पिलू तीव्रता से एक के
पश्चात् एक पररवहतपत हुए। साक्तत्त्वक भाव ने राजसी भाव के क्षहणक अक्तस्तत्व का विी ंशीघ्रतापूवपक
उन्मूलन कर हदया। अपने मित्त्वपूणप कायप की राथहमकता के कारण िी स्वामी जी ने इस अभ्यागत
से बातिीत में समय व्यथप करने से बिना िािा था; हकन्त अगले िी क्षण इसमें उन्ें 'हनज-स ख'
की गन्ध आयी।

साविानी के अंक श ने उन्ें विी ंएकदम सिेत कर हदया। जब उन्ोनें सेवा-परायणता की
भावना में थोडी-सी भी हशहथलता आती देखी, तो रहतहिया- स्वरूप त रन्त स्वयं जा कर उसकी
सेवा से इस भावना का स िार हकया। उनकी आत्म-स िार की रबल रवृहत्त तीक्ष्ण तलवार के सदृश
हवरोिी वृहत्तयो ंके रवेश से पूवप िी उन्ें समूल हवनष्ट कर िालती िै।

समदृहष्ट एवुं समत्व के आदशप को बनाये रखने के हलए स्वामी जी ने सचे्चे सुंन्यासी की
भाँहत स्वयुं को कई कहठन परीक्षाओ ुं में िाला िै। रते्येक अन भव में समत्व-ब क्तद्ध कायम रखने तथा सैकडो ुंलोगो ुंिारा रहतष्ठा राप्त करते समय वे अपने को क्तस्थर रखते िैं। एक बार मान- अहभमान के नशे से बिने के हलए झािू व जूतो ुंसे स्वयुं अपने शरीर को पीटते हुए हशरोभाग को भी निी ुं
छोडा। मानापमान की रहतहिया से मन को बडी साविानी से बिा कर वे एक सचे्चे सुंन्यासी का आदशप सामने रखते िैं।

जाहत-अहभमान की जन्मजात रवृहत्त इतनी सूक्ष्म और रबल िोती िै हक कोई भी मानव
हनरन्तर अथक रयत्न करने पर भी उसे सिज िी निी ुंहमटा सकता। स्वामी जी ने एक रख्यात,
मिप-परायण तथा उच्च क ल के ब्राह्मण पररवार में जन्म हलया था। एक सुंन्यासी और वेदान्ती के
हलए अिुं की आशातीत िुंिलता को बढ़ावा देना एक त्र हट माना जाता िै; इसीहलए स्वामी जी ने
मेितरो ुंको सदा साष्टाुंग रणाम करने तथा उनके साथ वातापलाप और व्यविार में अपने समान
सिान देने की रवृहत्त िारा इस सूक्ष्म भावना का नाश हकया।

एक बार एक ईसाई िमापवलम्बी आनन्द-क टीर में क छ हदनो ुंके हलए ठिरा। आश्रमवासी
उसका भोजन कमरे में िी दे आते थे। स्वामी जी की पैनी दृहष्ट से यि हछप न सका। अगले िी
हदन स्वामी जी ने उसके भोजन के हलए अपने िी क टीर में रबन्ध हकया। हिहश्चयन भक्त और
स्वामी जी एक-साथ खाने बैठे। यि किना अनावश्यक िै हक हकहश्चयन भक्त सिभोज में भी
सक्तिहलत िोने लगा।

एक अन्य अवसर पर हशव-मक्तन्दर के हनमापण कायप के हनरीक्षक का भोजन भी हनरीक्षण-
स्थल पर भेजा जाता था। वि जाहत से म सलमान था। म सहलम लोगो ुंके गो-बि तथा गो-माुंस खाने
की रवृहत्त के कारण हिन्दू लोग द भापग्यवश एक म सलमान से इतना दूर भागते थे, हजतना हक
अछूत से निी ुंभागते। इस रहतहिया का कारण ब्राह्मणो ुंका गाय को देवता के रूप में पूजना िै।
इसी कारण म सलमान का भोजन पत्तल में तथा सब्जी हमट्टी के क ल्हड में भेजी जाती थी। स्वामी
जी ने यि देख हलया। अगले िी हदन भोजन के समय स्वामी जी भोजनालय के दरवाजे पर
उपक्तस्थत थे और खाने के हलए पत्तल तथा क ल्हड के स्थान पर स्वच्छ थाली, दो प्याले और एक
हगलास भेजे गये।

स्वामी जी कई वषों तक ऐसे ब्राह्मणेतर सेवको ुंिारा परोसा गया भोजन से्वच्छा से करते
रिे, ताहक इस गिरी सूक्ष्म भावना का अुंश मात्र भी शेष न रिे।

स्वामी जी यदा-कदा अपनी इस जाहत-अहभमान की सूक्ष्म भावना की परीक्षा लेते। एक बार
जब वे सीताप र में थे, उनकी दृहष्ट एक िोबी पर पडी, जो नदी हकनारे कपडे िोने में व्यस्त था।
स्वामी जी ब्राह्मणत्व-भाव को हमटाने के इस स अवसर को भला िाथ से कैसे जाने देते! वे तत्काल
नदी के पानी में उतर गये और िोबी को सब कपडो ुंको िोने में सिायता दी।

तत्त्वतः सुंन्यासी स्वामी जी ने एक बार अन भव हकया हक उनका आश्रम-जीवन शायद उन्ें
मूल वैराग्य से दूर कर रिा िै। पररणाम स्वरूप एक स िावनी रात: वेला में वे अपने क टीर से
अदृश्य िो गये। य वा हशष्य-वगप तो व्यहथत िो उठा। तरुण हशष्य व्याक ल िो उठे। हिक्तन्तत िो कर

वे सब उन्हें ढूँढ़ने लगे; परन्त स्वामी जी का पता तक न िला। एक पक्ष बीतने के बाद हशष्यो ं के सामने थके-माँदे, िूलि–ूसररत, द बपल तथा अस्वस्थ रूप में आ उपक्तस्थत हुए।

एक बार हफर स्वामी जी ने पररव्राजक रूप अपना कर उत्तर भारत में आश्रयिीन रि कर, गरमी के हदनो ंमें नुंगे पाँव िूल-भरे रास्तो ंपर िल कर, यदा-कदा हमलने वाली हभक्षा पर िी हिनभपर रि कर तथा राहत्र में ख ले आकाश के निी सो कर कठोर तपश्चयाप की। पिास वषप से भी ऊपर की आय में इस पररव्राजक-जीवन को उन्ोनें स्वेच्छा से अपनाया।

िाति को यहद तपन से लाल अंगारा बनाये रखना िािते िैं, तो आग को हनरन्तर रज्वहलत रखना िोगा। िीमी आाँि से िात -पदाथप ठण्ढा व काला पड जाता िै। हनरन्तर रगडने अथवा मिकाने से वस्त में िमक बनी रिती िै। तोताप री मिाराज ने भी श्री रामकृष्ण परमिुंस के रश्नोत्तर के रूप में इसी सत्य को प ष्ट हकया िै।

दहक्षणेश्वर के सन्त श्री रामकृष्ण परमिुंस ने तोताप री मिाराज से रश्न हकया था हक इतना उच्च ज्ञान राप्त करने के बाद भी वे हनत्य के ध्यान के हवषय में इतने सजग क्यो ंथे? तोतापरी मिाराज ने शाक्तन्तपूवपक पीतल से बने पानी के बतपन की ओर इुंहगत करते हुए किा था-"पता िै, यि वतपन इतना कैसे िमकता िै? यहद में हनत्यरहत इसकी रगडाई न करूाँ तो क्या यि अपनी काक्तन्त न खो देगा।" मानव के हवषय में भी यिी सत्य लागू िोता िै।

दशम अध्याय

उपदेश तथा व्याविाररक जीवन

स्वामी जी के साहन्नध्य में रिने व भ्रमण करने से यि ज्ञान िो जाता िै हक मन, विन और कमप में एकरूपता कैसे आ सकती िै? जिााँ तक मैंने अवलोकन हकया िै, वास्तहवकता यि िै हक वे जो रिार करते िैं, तदनसार आिरण करने के हलए सिेष्ट रिते िैं। सािक को हजन सिानामागीय साविाहनयो ंऔर मयापदाओ ंका हनदेश देते िैं, उन सबका वे अपने हदनानहदन जीवन में दृढ़ता से पालन करते िैं।

उनके हलए यि अहनवायपता किाँ ि? जिाँ तक मेरी ब क्तद्ध एवुं पयपवेक्षण आाँक पाया ि और जो घटनात्मक साक्ष्य रमाहणत करते िैं, वि यि ि हक स्वामी जी को अब अन शासनबद्ध रिने की आवश्यकता निी ुंि। आध्याक्तत्मक पथ के परमोच्च मिान् प रुष, सुंन्यासी, वैरागी- जो हक मिात्माओ ुंके रूप में सिननीय एवुं समादृत िैं-वे सभी स्वामी जी को अत्यहिक आदर से सिहनत करते िैं। बहुत से उनें आध्याक्तत्मक ज्येष्ठ बन्ध के रूप में मानते िैं तथा रायः वे स्वामी जी के दशपनाथप और रणाम हनवेदन करने ित आते रिते िैं।

उदािरणतः जब 'हदव्य जीवन सुंघ' के कायपकतापओ ुंने सुंस्थापक श्री स्वामी जी का जन्म-मिोत्सव मनाने का आयोजन हकया, तो हनमन्त्रण देने के हलए म झे स्वगापश्रम भेजा गया। अन्य मिात्माओ ुंके साथ िी म झे वृन्दावन के एक हवख्यात सन्त को भी हनमक्तन्त्रत करना था जो उस समय स्वगापश्रम में हवराज रिे थे। रणामोपरान्त मैंने हनमन्त्रण-पत्र अहपपत हकया तथा व्यक्तक्तगत रूप से सहवनय राथपना की हक वे आ कर अपनी उपक्तस्थहत से िमें अन गृिीत करें। हकन्त गुंगा पार करने की असमथपता के कारण उन्ोनें खेद रकट हकया और तब भाव-सुंकेत से (वे सन्त मौन-व्रत में हनष्ठ थे) स्वामी जी की उच्च क्तस्थहत को बताया। उन्ोनें अपने फैले हुए िाथ भक्तक्तपूवपक रणाम ित जोडे और स्वामी जी के रहत दीघप श्वासोच्छवास िारा अपना आदर हनवेदन करने के हलए किा।

उस मिान् प रुष िारा, जो सन्त-रूप में स्त त्य तथा हवश्र त था, स्वामी जी की आध्याक्तत्मक उपलक्तब्धयो ुंएवुं मित्ता का यि मूक हकन्त अहभव्यक्तक्तसूचक रमाण-पत्र हमला। उनकी अन्त क्तस्थहत की उच्चता के रहत म झे अपनी अनहभज्ञता का भास हुआ। इसने मेरी आाँखें खोल दी ुंतथा मेरा ध्यान आकहषपत हकया हक हफर क्यो ुंस्वामी जी उन बन्धनो ुंसे बािर िैं जो एक नव-सािक के हलए िी आवश्यक िोते िैं।

क छ हदनोपरान्त इस (मूक) रश्न का उत्तर म झे हमला। एक हवदेशी दन्त- हचहकत्सक से हवचार-हवमशप िो रिा था। हवषय था- 'आध्याक्तत्मक सुंस्थाओ ुंके सदस्यो ुंको कैसे जीवन-यापन करना चाहिए?' स्वामी जी ने बताया हक आध्याक्तत्मक सुंस्थाएाँ जन-हृदयो ुंपर व्यापक रभाव उत्पन्न करने में क्यो ुंअसफल रिती िैं? इसका कारण यि ि हक हजन आदशों से सुंस्थापक मूलतः रेररत िोते िैं, उन्ी ुंआदशों से सुंस्था के कायपकताप हवम ख िो जाते िैं।

सुंस्था के कायों की बहुलता के कारण व्यक्तक्तगत तपस्या अनजाने िी हशहथल पड जाती ि। केवल हकसी-न-हकसी रकार की तपस्या िी आध्याक्तत्मक ज्वाला िारा मानव-हृदयो ुंव मक्तस्तष्को ुंको उत्तेहजत करती ि, हजसके अभाव में कोई भी कायप समाज पर स्थायी रभाव अुंहकत निी ुंकर सकता। तपस्या-रूपी बल िी कायों को शक्तक्त रदान करता ि और विनो ुंको रभावशाली बनाता ि। तपस्या िी व्यक्तक्तयो ुंको हकसी भी एक िारा में श्रवण एवुं मनन करने के हलए रोत्साहित करती ि। यि वस्त ओ ुंके रूपो ुंमें पररवतपन ला देती ि तथा घटना–क्रम को रभाहवत करती ि। इस तपस्या- शक्तक्त के अभाव में सुंस्थाएाँ आध्याक्तत्मक रूप से अशक्त िो जाती िैं; क्योंहक सुंस्थाएाँ अपनी इकाइयो ुंका सुंय क्त रूप िोती िैं।

शृुंखला की शक्तक्त उसकी कमजोर कडी में िी सहन्नहित ि। यि बात तब स्पष्ट िो जाती ि जब व्यक्तक्त इहतिास का हसुंिावलोकन करता ि। वि देख पाता ि हक सिस्रो ुंनेताओ ुंऔर स िारको ुं में केवल क छ िी ऐसे िोते िैं जो सुंसार को रेररत करते िैं और समाज में मूल पररवतपन ला पाते

ीं। सेवाग्राम के लघ समाज की मूक शक्तक्त का रिस्य वृद्ध व्यक्तक्त की तपश्चयाप में हनहित िै हजसे वि आत्म-बल से व्यवहृत करता िै। गान्धी जी तपोहनष्ठ थे, यद्यहप सुंन्यासी निीं ुंथे और कोमलहृदयी िोते हुए भी वि कठोर अन शासक थे।

जन-सम दाय में प नः आध्यात्क्तत्मक जाग्रहत लाने में कहटबद्ध स्वामी जी हजज्ञास ओ ुंके हलए स्वयुं एक ज्वलन्त आदशप िैं। उनके स्वभाव की रामाहणकता उनके विन और कमप में एकरूपता लाती िै। उनका हनष्कपट स्वभाव हकसी भी रकार के छल-कपट को हकसी भी दशा में सिन निीं ुं कर पाता।

हितीय, स्वामी जी की रकृहत में दृढ़ता (कठोरता) िै। हकसी पर अत्यािार देख कर उनकी यि कठोरता रकट िो जाती िै। अहत-स कोमल हृदय पररक्तस्थत्यन सार योद्धा-रूप में पररवहतपत िो जाता िै। उिखनीय बात यि िै हक बिार से वि इस (आिमणकारी) रकृहत का जरा भी आभास निीं ुंिोने देते, हकन्त स्वयुं के हलए इसका उपयोग करते िैं। आन्तररक सुंघषप में हवजय के हलए कठोरता को ख ली छूट दे देते िैं।

हवश्वाहमत्र जैसी यि रवृहत्त उनमें अिुं के हलए भय का कायप करती िै। अिुंकार ने ज्यो-ुंिी हसर उठाया हक उस पर कठोरता का दण्ड पड जाता िै। उनमें सुंक्तस्थत वैराग्य, िठ, हतहतक्षा, तपश्चयाप आहद उनके म क्त सिज बाह्य व्यक्तक्तत्व से आच्छाहदत िैं। इस रकार वे ऐसे ज्वालाम खी िैं हजसने अपना काम थोडी देर के हलए रोक रखा िै। रकृहत अपना रूप हदखाती िै और स्वगापश्रम में की गयी सािना की ज्वाला अब भी भडक उठती िै।

तृतीय, अखण्ड सािना-काल ने उनके भीतर मानहसक रिरी व सुंरक्षक को जन्म हदया िै जो अन्ततपम में हनरन्तर आिामक िै। तीक्ष्ण हनरिी के सुंस्कार हशहथलता का मूलोच्छेदन कर देते िैं जो हकसी भी समय आ कर घेर सकती िै।

अन्ततः स्वामी जी का दशपन यि अपेक्षा रखता िै हक सािक की सािना या हशष्य-मनोवृहत्त अन्त तक बनी रिनी िाहिए। मायावाद की जादू की छडी हिलाने और 'हशवोऽिम्' रटने मात्र से ईश्वर की गिन एवुं रिस्यमयी माया (जाल) का मूलोच्छेदन करने में उनका हवश्वास निीं ुंथा। वे अिुंकार की असीम शक्तक्त एवुं उसके सूक्ष्म रिारो ुंको खूब समझते थे। यि शरीर सदैव िी गिा िै और मन अन्त तक बन्दर िै। अतः आध्यात्क्तत्मकता (अन शासन) के कोडे और तपश्चयाप-हतहतक्षा के िण्डे को सदैव तैयार रखना िाहिए।

वे रायः किा करते िैं-"ििो आप जीवन्म क्त िी क्यो ुंन िो,ुं आपको सदा सजग रिना िोगा। माया रिस्यमयी िै।" हजतना आप ऊाँिा उठेंगे, पतन की सम्भावना उतनी िी अहिक िै। असाविानी में हुई छोटी-सी भूल-िूक भी आपको पहतत अिोयावस्था में वेग से हगरा देगी। इस हवषय में उनके समूपूणप कथ्य का सार इस लघ उक्तक्त में िै- "ििो आप आध्यात्क्तत्मक जगत् में उच्चतमावस्था में पहुाँि िे के िो,ुं सदैव यिी सोहिए हक आपकी सािना का अभी श्रीगणेश िो रिा िै।" इस उपदेश का वे स्वयुं अन्त तक अक्षरशः पालन करते रिे िैं। इसहलए समय-समय पर वे उपवास, सहिष्ण ता, तपश्चयाप, आत्म-पररत्याग के हलए तत्पर रिते िैं ।

इसमें आश्चयप निी ंहक उनकी वाणी और लेखनी समान रूप से रभावकारी िैं। उनके अन भूत हनदेश सबके सि ख रस्त त िैं और उनसे रत्येक लाभाक्तित िो सकता िै। आध्याक्तत्मक सम्पदा और आध्याक्तत्मक शक्तक्त से पररपूणप िोने के कारण वे हनदेश पाठक अथवा श्रोता में आक्तत्मक जाग्रहत लाने में कभी हवफल निी ंिोते। बताया जाता िै हक पयपटन-काल में उनके ओजस्वी भाषणो ं के रेरणात्मक विनो ंकी शक्तक्त से रभाहवत िो कर एक यवा श्रोता ने अपने पररवार और सम्पहत्त को त रन्त त्याग कर तत्क्षण माता-हपता को पत्र में 'मेरा अक्तन्तम रणाम' हलखा और उनसे हवदा ले ली।

ऐसा भी देखा गया िै हक प स्तकालय में स्वामी जी की हकसी पस्तक के दो वाक्यो ंका स्वाध्याय करने मात्र से व्यक्तक्त के मन में िाक्तन्तकारी पररवतपन आ गया िै। तबसे उसने अपना जीवन अपने रेरक से पथ-रदशपन राप्त करते हुए हनयहमत सािना में समहपपत कर हदया।

नि ष-बाण को खींिने से कसी हुई रत्यंिा ऊाँिी उठेगी और बाण वेग से दूर पहुाँि जायेगा। यहद रत्यंिा ढीली हुई, तो बाण लक्ष्य पर निी ंपहुाँि पायेगा।

एकादश अध्याय

तपश्चयाप एवं सामान्य बक्तद्ध

हपछले अध्याय के अनचे्छेदो ुंमें मनन, अभ्यास और आत्मसात करने के हलए हवषय-सामग्री रस्त त की गयी िै। साथ िी स्वामी जी की आन्तररक तपस्या की झलक हमलती िै। हतहतक्षा को बनाये रखने की आवश्यकता के दृहष्टकोण से भी िम कछ सीमा तक अवगत िोते िैं; हकन्त केवल तपश्चयाप में िी उनके व्यक्तक्तत्व की समूपूणपता निी ुंिै और न वे स्थूल व अपररपक्व सुंयम की पराकाष्ठा के पक्ष में िैं। तपस्या एवुं हतहतक्षा के रहत उनके हविार सामान्य बक्तद्ध एवुं बौक्तद्धक उदारता से पररप ष्ट िैं।

डतडतक्षा : साधना का सहायक अ ंग

अतीत के बद्ध की भाँहत, स्वहणपम मध्यम मागप के अहिवक्ता के रूप में, वे उत्कट सजगता एवुं सन्तहलत आत्म-सुंयम की क्तस्थहत में शरीर और मन की शक्तक्तयो ुंके उपकरणो ुंको क्तस्थर बनाये रखने के हलए तपस्या को उनका एक माध्यम मानने की आवश्यकता पर बल देते िैं। यि न तो लक्ष्य िी िै और न सत्यान भूहत की हवहशष्ट पद्धहत िै। सवोत्तम बौक्तद्धकता की दृहष्ट से सत्य के साक्षात्कार िेत तपश्चयाप एक सिायक माध्यम िै। इसका मित्त्व इसी में िै हक यि एक आवश्यकता िै। किा जा सकता िै हक यि एक अपररिायप सियोगी अुंग िै।

गौण रूप में िोते हुए भी यि त्याज्य निी।ुं इसहलए एक सच्चा सािक इसकी अविेलना न करे, बक्तल्क हववेक-यक्त दृहष्ट से इसका मूल्याकन करे। दिे–मप की मयापदाओ ुंके अन सार भी इसमें साविानी की आवश्यकता िै। अतः इसके व्याविाररक रूप में बहुत हभन्नता आयेगी िी; क्योहुंक सािको ुंकी श्रेणी में स्वभाव, स्वास्थ्य एवुं व्यवस्था आहद की हवहभन्नता िोती िै। स्मरणीय तथ्य यि िै हक तपश्चयाप का हसद्धान्त जीवन में अवश्य उपक्तस्थत रिना िाहिए।

व्याविाररक अनभव के आिार पर स्वामी जी सभी सािको ुंएवुं सुंन्याहसयो ुंको तपश्चयाप का सदपदेश अवश्य देते िैं; हकन्त उसके सीमा-अहतिमण न करने की ितावनी भी देते िैं। एक ओर स्वामी जी का यि वैयक्तक्तक अन भव रिा िै हक अनेक वषप एकान्तवास करने पर भी तपस्या की उपेक्षा के कारण सािा पनः साुंसाररक गतप में हगर जाते िैं। दूसरी ओर उनकी अपनी कठोर तपश्चयाप की पराकाष्ठा के पररणाम- स्वरूप उन्ें अनेक शारीररक कष्ट सिने पडे। ऋहषकेश में हिरकाल से रिने वाले वयोवृद्ध अनेक मिात्माओ ुंसे यदा-कदा वाताप में स्वामी जी की स्वगापश्रम में की गयी कठोर सािना व तपश्चयाप के क छ हववरण म झे यत्र-तत्र हमले।

एक वयोवृद्ध सुंन्यासी (श्री राज हगरर) ने (हजनके पास मैं उपिार के हलए दवाई ले कर जाता था) बातिीत में मझे स्वामी जी की उन हदनों की सािना के हवषय से अवगत कराया। इतना जानते िी हक मैं स्वामी जी के 'िमापथप औषिालय' से दवाई ले कर गया हाँ, उन्ोनें मेरी ओर असेकहसोचतेदेखाऔरबोले-"हाँ,स्वामीजीकीआपजैसेय वा-वगपके समझते िैं जैसे वे आजकल आपको हदखायी देते िैं। आपकी दृहष्ट में वे सम्भवतः आराम-हरयता काजीवन-यापनकररिैं।क्याआपऐसानिींसोिते?आजसेहबलक लहभन्नरूपमेंउनकोमैं जानता हाँ हजसके हवषय में आप अनहभज्ञ िैं। उन हदनों उनको इतना तीव्र वैराग्य था हक भोजन व वस्त्र जैसी दैहनक जीवन की अहनवायप आवश्यकताओं सामग्री भी वे अपने पास रखना निीं िािते थे।

"अन्नक्षेत्र में हभक्षाटन के हलए रहतहदन जाने से इनको सािना में हवघ्न पडता, इसहलए शरीर-हनवापि के हलए बासी भोजन पर हनभपर रिना श्रेयस्कर समझते। रोटी को कई हदन तक
साँभाले रखते, सूख जाने पर गुंगा-जल में हभगो कर खा लेते। इसका अथप था हक एक हदन की भोजन-सामग्री को वे सप्ताि-पयपन्त रखते थे। हदन-रहत-हदन अपने मूल्यवान् समय को अहिकाहिक
जप, उपासना और ध्यान में व्यतीत करने के हलए स्वादिीन, सूखी और कडी रोटी िी इनका
म ख्य भोजन रिा।

"इसी रकार पिनने के सम्बन्ध में भी िम जानते िैं हक उनके पास दो िी वस्त्र थे। उनके
कमरे में एक कम्बल व एकमात्र पानी पीने के पात्र के अहतररक्त क छ भी न था। वि एकमात्र
कम्बल भी एक बार उन्िोंने एक हनिपन यात्री को दे हदया, जो सूती व पतले वस्त्र के कारण
हठठ र रिा था। भगवत्प्रेरणा से एक भि यात्री ने एक नया कम्बल ला कर हदया। तब तक वे हबना
कम्बल के रिे।

"जप-सािना के हलए िी वे राहत्र के एकान्त अन्धकार में उठ जाते और गुंगा जी में कहट-
पयपन्त गिरे शीतल जल में खडे रि कर माला-जप आरम्भ कर देते। भ वन- भास्कर की रथम
रक्तश्म के दशपन तक उनकी यि सािना िलती रिती। सूयपनमस्कार और सूयोपासना के पश्चात् िी वे
गुंगा जी केजल से बािर आते।

"ऐसी अभूतपूवप कठोर सािना (जो उनके स क मार शरीर के हलए घातक हसद्ध िो सकती
थी) के पररणाम-स्वरूप उनको अहतसार का रोग िो गया जैसा पिले कभी निी ुंदेखा गया था।
कमर-ददप दूसरा पररणाम था। मानहसक एकाग्रता को बहुत दे बनाये रखने के कारण उन्िें मिमि
रोग भी आरम्भ िो ि का था।"

समझदार िनो

तपस्या की अहत के भानक पररणाम के अनभवो ुंके आिार पर स्वामी जी िो बताते िैं-
"हवलाहसता की उपेक्षा करना अच्छा िै; पर शरीर-रक्षा िेत कछ अपेहक्षत आरामदायी
आवश्यकताओ ुंपूहतप करने में कोई सुंकोि निी ुंकरना िाहिए। यहद आप कछ देर कायप में हनरन्तर
सुंलग्न रिें, तो उसके पश्चात् पयापप्त पौहष्टक भोजन से हवमख मत िोइए। जब आप बौक्तद्धक कायप
में व्यस्त िो,ुं तो हसर को शीतलता रदान करने वाला ब्राह्मी आँवला जैसा तेल रयोग करें। मेरे
िारा हदये गये फल-रसाद को अस्वीकार न करें।"

इस रकार जब सािक स्वाध्याय और लेखन-कायप में व्यस्त रिते, तो स्वामी जी उनसे
दूि, घी, बादाम आहद का अहतररक्त मात्रा में सेवन करने का आग्रि करते। यहद वे लेने में
ििहकते, तो उनका सझाव िोता- "इसमें बक्तद्धमत्ता निी ुंिै। क्या आप मिमि तथा नाडी-दौबपल्य
के रोगी बनना िािते िैं? मेरी घोर तपश्चयाप का पररणाम आप देक्तखए। सित्व की कसौटी केवल
सूखी रोटी और दाल खाना निी ुंिै। अपने कायप के अनसार िी उहित और आवश्यक भोजन लेना
िाहिए।

"समय-पररवतपन के साथ मानव की शारीररक शक्तक्त क्षीण िोती जा रिी िै। अब मन ष्य की
वि क्तस्थहत निी ुंजो तपस्वी ध्रव और वाल्मीहक के समय में थी। वतपमान समय में घास खा कर

और एक टाँग पर खडे रि कर तपस्या निी ुंकर सकते। आुंहशक उपवास करके अथवा नमक, ीनी रहित भोजन ले कर आप आत्म-सुंयम का अभ्यास कर सकते िैं।

"आत्म-सुंयम के हलए गहत िीमी िोनी िाहिए। शरीर को एकाएक पररवतपन के हलए बाध्य मत कररए। सामान्य स्वास्थ्य के हबना क छ भी राक्तप्त निी ुंिो सकती।"

स्वामी जी रुग्णावस्था में भी औषहि रयोग न करने के हसद्धान्त के पक्ष में निी ुंिैं। सिनशीलता बढ़ाने के हलए यि हसद्धान्त उनको िास्यास्पद रतीत िोता िै। (रूहढ़वादी व मायावादी भले िी इस हसद्धान्त का समथपन न करें।) सच्ची हतहतक्षा का स्वरूप यि निी ुंिै। यि कठोर सदी-गमी सिने व भूख-प्यास की यातना झेलने की अपेक्षा अपने रहत किे गये कट विन को मूक िो कर सिना, द व्यपविार और अनादर को शाक्तन्तपूवपक सिन करना कम तपस्या निी ुंिै।

इसी रकार एक िी स्थान पर वषप-पयपन्त हटके रिने में उतनी िी तपस्या िै हजतनी हक आश्रयिीन रि कर जुंगलो ुंव पवपतो ुंमें घूमने से िोती िै, भले िी कल्पना को यि भ्रमण सािहसक और मनोिारी रतीत िो। कल्पना और भावना के रवाि में बिने से यथाथप जीवन में क छ भी िाथ निी ुंलगता।

शरीर-रक्षा िेत व्यायाम आवश्यक िै। स्वामी जी को हकशोरावस्था से िी व्यायाम करने का अभ्यास िो गया था। सािना-काल में भी व्यायाम को आध्याक्तत्मक रूप दे कर वे उन्म क्त वातावरण में एक या दो मील की दौड लगाते थे। आज के रूहढ़वादी सुंन्यासी व्यायाम के इस लौहकक रूप को अक्षमता और रहतकूलता की दृहष्ट से देखते िैं। कभी-कभी तो साि -समाज सुंकीणप और हनषेिक िोने के कारण ऐसे व्यायाम-समथपक साि को अिहमपक और िेय समझ कर अपमाहनत करता िै; हकन्त स्वामी जी ने िमापन्धता को कभी तपस्या का रूप निी ुंहदया।

स्वगापश्रम की म ख्य बस्ती से क छ दूर जिाँ गुंगा जी का मोड िै, विाँ से भी आगे जा कर स्वामी जी रहतहदन मील-दो-मील सोत्साि दौड लगाया करते थे। कायप की अहवराम सुंलग्नता के बीि अवसर राप्त िोते िी दौड लगाने का उनका अभ्यास हनयहमत रूप से आज भी िलता िै। इस अभ्यास के हलए वे सबको रेररत करते िैं, हवशेष रूप से ऐसे सािको ुंको हजनको अन्य खेल व व्यायाम आहद करने की स हविा निी ुंहमलती। ऐसे गृिस्थी हजनका कायप अपने व्यवसाय व नौकरी के अन सार अहिक बैठने का िै, उन्ें भी अपने कमरे अथवा आुंगण में िी कम-से-कम क छ समय तो दौड लगाने का अभ्यास करना िाहिए। दैहनक कायों के बीि में भी दीघप श्वास की रहिया तथा कायपभार की अहिकता में भी हवश्राम के हलए क छ क्षण हनकाल लेने की य क्तक्त शरीर को तरुण तथा स्वस्थ बनाये रखने के हलए अपेहक्षत िै।

स्वामी जी ने यि अन भव हकया- "तपश्चयाप ने यद्यहप मेरे शरीर-रिनािम को अव्यवक्तस्थत कर हदया िै और म झ पर भारी रहतहिया की िै, तथाहप इस सबके भयुंकर घातक पररणामो ुंसे मैंने अपने शरीर को बिाये रखा िै। व्यायाम के इस अभ्यास ने िी मेरे शरीर को स रहक्षत रखा िै। आज भी मैं इस अभ्यास को हबना िूके रहतहदन हनयहमत रूप से करता हाँ। रहतहिया को मैं अपने ऊपर सवार निी ुंिोने देता। हकसी कायप के हलए खडे िोने पर कभी-कभी मेरा हसर िकराने लगता िै, सो मैं इस पर हनयन्त्रण कर लेता हाँ और पिाडी पर दौड लगा कर एवुं शीषापसन करके कायप में प नः सुंलग्न िो जाता हाँ।

"इसके बाद जैसे ि◌ी हकसी कायप के हलए तत्पर ि◌ोता हाँ, मझे हवपल शक्तक्त सुंरिण का अन भव ि◌ोतिौ।ईश्वरीजानेयिशक्तक्तकिााँसेआतिी?तबमैंसशकिोकरसिजी अपने-आपको कायप में लगा देता हाँ। तब मेरे रविापूणप ओजस्वी भाषण रस्फहटत ि◌ोते ि◌ैं। थकान अन भवकरनेपरीमैंरुकताहाँ,बिीमेंमझेकोईनिंिुरोकसकता।मैंस्वयुंऐसाकरपाने की अपनीइसक्षमतापरहवक्तस्मतिोताहाँ।

"कभी-कभी तो मेरे अन्दर खडे ि◌ोने की भी शक्तक्त निी ि◌ुंि◌ोती;परजबएकबारखडा िो जाता हाँ, तो एकाएक शक्तक्त का स्रोत किााँ से फूट पडता ि◌ै, इसकारिस्यकेवलईश्वरी जान सकता ि◌ै। यि शक्तक्त मेरी स्वयुं की निी ि◌ुंि◌ोती, मैं तो सिान मात्रहाँ,परमैंइतनाअवश्य जानता हाँ हक व्यायाम के इस अभ्यास के पररणाम स्वरूप ि◌ी मेरा स्वस्थशरीरएकाएकअहमत शक्तक्त-सुंरिको विन कर पाता ि◌ै।"

माध्यम की रक्षा करो

अगले ि◌ी क्षण अपने दीघपकाय शरीर पर ि◌ारण हकये हुए बडे कोट की ओर इुंहगत करते हुए (ये सदी के रारक्तम्भक हदन थे और जाडा हसिरन पैदा करने वाला था) अपनी ि◌ाँसी दबाते हुए उन्ोनेंु किा- "हनस्सन्देिे मेरी यि वेशभूषा, ठाटबाट-य क्त ि◌ै, पर मैं अपने सम्बन्ध में सुंसार के हष्टिोषण की हिन्ता निीुंकरता। शभ कायप अनवरत रूप से करने के हलए दिे को स्वस्थ क्तस्थहत में सरहक्षत रखना अत्यावश्यक ि◌ै। जो भी हनहि आपके पास ि◌ै, उसका भागी हवश्व को भी बनाइए, अन्यथा मानव-जीवन वृथा ि◌ै। ऐसा करने के हलए शारीररक एवुं मानहसक क्षमता को अखण्ड बनाये रखना ि◌ोगा।

"यहद मैं सदी में गमप वस्त्रो ि◌ुंसे शरीर की रक्षा निी ि◌ुंकरता, तो उसका पररणाम कमर ददप को हनमन्त्रण देना ि◌ी ि◌ोगा और ऐसी रुग्णावस्था में मैं अपने काम व सुंसार की सेवा करने में असमथप ि◌ो जाऊाँगा। केवल औषहि-हविेता को भले ि◌ी इसका लाभ ि◌ो जायेगा।"

तब आगे किा- "क्या आपने ध्यान निी ि◌ुंहदया? मैं कोई भी ि◌ीज क्षण भर के हलए अपने तक सीहमत निी ि◌ुंरख सकता। कोई भी नवीन ज्ञान राप्त ि◌ो, उसे मैं मानवता की सेवा ि◌ेत समहपपत कर देता हाँ। उसे सहवस्तार समझा कर लोगो ि◌ुंको लाभाक्तित करने में मैं क्षण-भर भी हवलम्ब निी ि◌ुंकरता। अतः मैं सतत सहिय रिता हाँ। हवश्राम के हलए मेरे पास कोई अवकाश (समय) निी ि◌ुंि◌ै। सहियता के इस हसद्धान्त के आिार पर ि◌ी मैं अपने इस लौहकक जीवन के रत्येक क्षण को लोक-हिताथप लगाना ि◌िाता हाँ।

"रागैहतिाहसक तपस्या व कठोरता के नाम पर मैं अपने शरीर को हवपहत्त में कैसे ि◌ाल सकता हाँ? तपस्या की अहतवाहदता के साथ आप स्वयुं को कभी परमाथप की उपय क्त क्तस्थहत में निी ि◌ुंरख सकते। इसके हलए तो स्वास्थ्य-रक्षा आवश्यक ि◌ै। ि◌ााँ, हवलाहसता से बिने का तो रामाहणक रयत्न करते ि◌ी रिना ि◌ै।"

मानव-सेवी सन्त ए. सी. सी. के अनसार इस दि-रूपी गि को यदा-कदा भोजन-रूपी
ारा िालते िी रिना िाहिए। इस तथ्य से िम हकनारा निी ंकर सकते। तभी शरीर-रूप गदपभ
बन्ध की सिलता कायम रखी जा सकेगी।

अतएव,तपस्याहववेक-य क्त मयापदा में व्याविारोहित िोनी िाहिए, निी ंतो इस असाविानी
से आध्याक्तत्मकक्षमताक्षीणविास्यास्पद िो जायेगी। इसको व्याविाररक ज्ञान तथा सजगता िारा
सन्त हलतबनायेरखनािोगा।तपस्वी अवश्य बहनए, परन्त अहत तक मत जाइए, निी ंतो हवषम
क्तस्थहतउत्पन्निोजायेगी।िमारे धे्येय के हवपरीत िै। िमारा धे्येय अमरत्व व मोक्ष की राक्तप्त िै
हजसके हलएिमेंअिंवहनम्नव्यक्तक्तत्व को हमटाना िै, स्थूल शरीर को निी।ं अतः स्वहणपम मध्यम
मागपिारािीधे्येयकीराक्तप्तकीहजए।

ादिश अध्याय

सुंसार के सवपस्व

एक हित्र मेरे मक्तस्तष्क में हनरन्तर उभरता िै। एक टेढ़ा-मेढ़ा, लम्बा–िौडा, ऊबड-खाबड
मैदान िै जो शष्क एवुं कठोर भी िै। कोई पगिण्डी निी।ं िााँ, कछ िरण-हिह्न अवश्य िैं जो
दगपम मागप पर सदूर हक्षहतज तक जाते दृहष्टगत िोते िैं। हनरभ्र आकाश में हनमपमतापूवपक िमकने
वाले सूयप के ताप से िरा की सति हवदीणप िो गयी िै। ऐसे हवशाल मैदान में हजसके एक छोर से
दूसरे छोर तक छाया अथवा आश्रय का नाम निी,ं किी ंकछ सम्पष्ट वृक्ष िैं जो उस हनजपन स्थान में रमख रूप से
दीख रि िैं। सूयप की रिण्ड एवुं असह्य हकरणो ंको सिती हुई िरी–री घनी
शाखाएँ स्पष्ट दृहष्टगोर िो री िैं।

कभी-कभी तो हबना पूवपर्ि्तावनी के ऋत -पररवतपन िोता िै। आकाश में घनघोर घटाएँ छा जाती िैं। िरती को िीर देने वाली दाहमनी दमकती िै। बादलो ुंकी रिै गडगडिट के साथ मूसलिाार वषाप आरम्भ िा जाती िै। ये दोनो ुंरूप िी कभी-कभी हनजीव हनस्तब्धता को जन्म देते िैं। जब वाय का एक झोकुं ा भी निी ुंिोता, तब ऐसा रतीत िोता िै मानो िरती जीवन-हिह्न रहित िै। पर निी–ुंनिी,ुं इस घने अन्धकार के आवरण में भी कई भयानक जीव-जन्त रेंग रिे िैं, सरक रिे िैं। उडने वाले कीट-पतुंगे आहद िर एक को, जो भी उनके सामने आता िै, हनगलने को दौडते िैं।

इस भयानक राज्य के अन्धकार में ठोकरें खाते, द ःख से तडपते, वषाप में हठठ रते, गरमी से तप्त िरती पर पसीने से लथपथ िाँफते हुए मानव-जीवन का िारा-रविा सुंघषप िलता िै। इस रकार दैव का रकोप सिते, हवषिर जीवो ुंके िुंग ल से बिते, रास्ता भटक जाने के भय से आिान्त मन ष्य िहिा उठता िै- "िाय! किी ुंतो आश्वय हमले, किी ुंतो शरण हमले, किाँ िै छाया? किाँ हमलेगा आश्रय? िाय! सूखे िोठो ुंको गीला करने को एक बूँद शीतल जल तो हमले किी ुंसे।"

भय-ज्वर से पीहडत जन-समिू को उस बुंजर मैदान में भी क छ सिासी पेड दृहष्टगोिर िोते िैं, हजनकी छाया में उनको हवश्राम हमलता िै। इन क छ पेडो ुंमें भी सबके पास निी ुंपहुँिा जा सकता। क छेक तो ऊँिी िोटी पर िैं, हजनके निी आश्रय की कोई सम्भावना िी निी,ुं पर इनमें दो ऊँिे पेड पास िी िैं। इनमें से एक बृिद् रूप में फैला हुआ पीपल का वृक्ष िै। घनी िररयाली से िरे-भरे, ठण्ढी छाया सहित इस पेड की जडो ुंके पास शीतल और श द्ध जल का एक स्रोत फूट पडा िै।

इस मनिोर पेड की छाया और आश्रय ने सिस्रो ुंप्यासे पहथको ुंको िडबडी में भी हवश्राक्तन्त दी िै। यि एक ऐसा हवश्राम-स्थल िै जो केवल आश्रय िी निी ुंदेता, अहपत िूप, वषाप और हवद्य त् से भी रक्षा करता िै। इसी वृक्ष के मूल से एक पगिण्डी हनकलती दृहष्टगोिर िो रिी िै। अब सोत्सिा, अज्ञात हवश्वासपूवपक और सिोस यात्री अपनी यात्रा को गहतमान रखते िैं।

जब कभी भी मैं गुंगातीर-क्तस्थत क टीर में हनवास करने वाले इस स हवख्यात सन्त के हवषय में सोिता हाँ, तब यिी हित्र िर समय मेरे मक्तस्तष्क में उभर आता िै। वे अपने-आपको मानवता के साथी और सेवक के रूप में िी स्वीकार करते िैं, दूसरे हकसी रूप में निी।ुं यदा-कदा वे किते िैं- "मेरा यिाँ क छ निी ुंिै। सब-क छ आपका िै। जिाँ तक सम्भव िो, मैं दूसरो ुंकी सेवा के हलए िी हजन्दा रिना िािता हाँ और हकसी भी समय मैं यि नश्वर शरीर छोड सकता हाँ। इसीहलए िािता हाँ हक अहिकाहिक जनता मेरे पास आये और इस शरीर के समाहि लेने से पूवप जो-क छ भी मैं बाँटना िािता हाँ,, उसे राप्त करे।"

जो लोग ज्ञान, पथ-रदशपन, शाक्तन्त एवुं रेरणा-राक्तप्त ित इनके पास पहुँिते िैं, उन असुंख्य लोगो ुंको वे शरण तथा आश्रय रदान करते िैं। आज के इस अन्धकारमय भौहतकवादी हवश्व-अक्तस्तत्व के जुंगल में, जब हक हवश्व पाश्चात्य सभ्यता से उत्पन्न अराजकता का साक्षी बन रिा िै, स्वामी जी घने अशोक या पीपल के वृक्ष की तरि शरणागत की रक्षा करते िैं, आध्याक्तत्मक उद्देश्य की राक्तप्त के हलए उनको सजग करते िैं तथा पथ-रदशपन के िारा जीवन के अथप की ओर

रेररत करते िैं। इसका अन भव उसी को िै, हजसकी कहठनाइयो,ं शुंकाओ ंतथा समस्याओ ंका समािान स्वामी जी ने स्वयुं हकया िै और ऐसे लोगो ंकी हगनती एकि निी,ं असुंख्य िै।

एक बार नागप र से िाक्टर बी. ए. वैद्य ने अपने पत्र में स्वामी जी को हलखा- "आपको अपने हलए क छ निी ंकरना िै। न िी आपको अपनी हिन्ता िै, तो भी आप सैकडो ंपररवारो ंका दाहयत्व स्वयुं विन करते िैं।"

वास्तव में ऐसा िी िै। स्वामी जी का पररवार अकल्पनीय रूप में बहुत बडा िै। इस पररवार के भाँहत-भाँहत के सदस्यो ंकी अनेकहवि इकाइयाँ हवशाल उपमिािीप के कोने-कोने में िी निी ंिैं, अहपत पोलैण्ड, रूमाहनया, यूगोस्लाहवया, अमेररका, इुंगलैण्ड आहद देशो ंके हनवासी भी अपने को इस हवश्व - क ट म्ब का सदस्य मानते िैं।

स्वामी जी को इस रकार के हवहभन्न क्षेत्रो ंसे सम्बक्तन्धत हवषयो ंमें अहत िी व्यस्त देख कर म झे हजज्ञासा िोती थी। स्वामी जी ने इसको ताड हलया और किा- " सोिता हाँ हक मेरी गृिस्थी हवश्व के सिस्रो ंगृिक्तस्थयो ंसे भी बहुत हवशाल िै। उनकी गािपस्थ्य हिन्ताओ ंकी एक सीमा िै; पर मेरे पररवार की कोई सीमा निी ंिै। असीम कतपव्यो ंकी भी गणना निी ंिो सकती िै। मेरे हिया-कलाप का इतना अहिक हवस्तार िै हक हवश्श्राम के हलए मैं सोि भी निी ंसकता। त म्हें हवस्मय िो रिा िोगा और सोिते िोगे हक यि स्वामी जी भी हकतने व्यस्त व्यक्तक्त िैं!"

उन्ोनें प नः किा- "मैंने कभी स्वप्न में भी न सोिा था हक ईश्वर म झे इस रकार समस्याओ ंमें जकड देगा। मैंने सवपस्व त्याग हदया, सब बन्धन तोड फेंके। यि सोिा था हक अब तन्मयता के साथ मि र राम-नाम का सदैव स्मरण करता हुआ एकान्त का आनन्द लूुंगा; परन्त देखो, ईश्वर ने म झे इतना हवशाल पररवार दे हदया िै और इसके सदस्य म झ पर इतने अन रक्त िैं हक मैं िाहाँ अथवा न िाहाँ, वे म झे हबलक ल अपना समझते िैं। क्या मालूम, भगवान् ने म झे इसीहलए जन्म हदया िो? जब तक म झसे कोई अुंशमात्र भी लाभाक्तित िोता रिेगा, मैं इसमें िी रसन्न रहाँगा हक समूपूणप रूप से उनका अपना रहाँ। जो म झे सवपस्व समझते िैं, मैं भी उनके रहत सवपस्व समपपण कर देता हाँ।"

इतना तो स्पष्टतया सत्य िै हक स्वामी जी के पास हवश्राम के हलए कोई समय निी ंिै। पर-सेवाथप वे अपने शारीररक स ख की हबलक ल हिन्ता निी ंकरते। शरीर को तो अपना समझते िी निी।ं उनके साथ दो-तीन हदन के सम्पकप से यि स्पष्ट ज्ञात िो जायेगा हक उनका अहिकाुंश समय इस हदव्य पररवार के सिस्रो ंबच्चो ंकी समस्याओ,ं कहठनाइयो,ं द ःखो ंऔर सुंशयो ंको स लझाने में िी व्यतीत िोता िै।

कोई भी व्यक्तक्त हजसको अलौहकक अन भव िोते िैं, कल्पना में अनेक रकार का आभास िोता िै, ध्यान में हदव्य ज्योहत की िलहकयाुँ िोती िैं, शरीर-रणाली में अरकट शक्तक्त-रवाि-सा अन भव िोता िै, तो वि प लहकत व व्याक ल िो कर स्वामी जी को रश्नो ंसे पररपूणप एवुं पथ-रदशपनाथप हनवेदन-य क्त पत्र हलखता िै। दूसरा व्यक्तक्त हकसी हवषय-हवशेष का अध्ययन करता िै, शुंकाओ ंका समािान िािता िै तथा ज्ञान-राक्तप्त िेत यािना करता िै। तीसरा व्यक्तक्त भी हजसके सामने जीवन-पथ पर दो मागप िैं-वि हकस मागप को अपनाये, इसके हलए समािान िािता िै।

इनके अहतररक्त ऐसे भी लोग िैं, जो व्यथाओ ुंव हिन्ताओ ुंके अगाि सागर में गोते खा रिे िोते िैं। वे सािस, शाक्तन्त तथा उत्साि व रेरणा के हलए स्वामी जी के कर कमलो ुंसे हलक्तखत सने्दश के हलए आक ल िोते िैं। पररणामतः इस रकार की समस्याओ ुंको स लझाने में उनका दैहनक
जीवन व्यस्त रिता िै।

व्यक्तक्तगत जीवन से सम्बक्तन्धत कतपव्य-पूहतप िेत भी स्वामी जी पर उत्तरदाहयत्व रिते िैं। रोग-ग्रस्त बच्चो ुंके माता-हपता, हनदपयी हविाता िारा असमय िी मृत्य को राप्त बच्चो ुंके माता-हपता, शोकाक ल हवि र, कातर हवविा, भाग्यिीनता में फुंसे ऐसे उद्योगपहत जो समृद्ध एवुं सम्पन्न थे, अब कुंगाल िो गये िैं, ऐसे हवद्याथी हजनकी रगहत को एकाएक आपात पहुँिा िै-ऐसे व्यक्तक्त स्वामी जी के पास सान्त्वना, शाक्तन्त तथा रेरणा के हलए दौडे िले आते िैं। इन सबका एक िी आग्रि िोता िै हक स्वामी जी उनकी व्यथा को एकहित्त िो कर स न लें तथा अपनी मृद वाणी से उनको सान्त्वना दें।

स्वामी जी भी उनकी द ःख-भरी गाथा स न कर ऐसे व्याक ल िो जाते िैं मानो उन पर िी बीती िो अथवा बीत रिी िो। उनका हृदय िहवत िो उठता िै। जब सिान भूहत हदखाते हुए उनके द ःख का बोझ स्वामी जी स्वयुं विन करने का आश्वासन देते िैं, तब ये लोग ऐसा अन भव करते िैं मानो उनके कष्ट का सारा बोझ उतर गया िै और उनके शरीर में शाक्तन्त तथा नव-शक्तक्त का सुंिार िो रिा िै।

असफल हवद्याहथपयो ुंके साथ वातापलाप करने में स्वामी जी बडा उत्साि हदखाते और उन्ें अपनी स दृढ़ आशावाहदता से रोत्साहित करते िैं। शोक सन्तप्त बच्चे को वे कोमल-हित हपता की तरि मि र शब्दो ुंमें सान्त्वना देते िैं। कालिक्र की गहत बता कर मृत्य की अहनवायपता स्पष्ट करते हुए उनको ऐसे अन्य कई द ःखी लोगो ुंका उदािरण देते िैं। ऐसे लोगो ुंका दृष्टान्त देते िैं हजन्ोनें इसी तरि की पररक्तस्थहत में अपने द ःखो ुंको मूक रि कर सिन हकया तथा ऐसी हवपदा की क्तस्थहत में भगवहदच्छा पर हनभपर रिे। स्वामी जी उनको भी ऐसे िी सािसी दृष्टान्तो ुंका अन गमन करने का आग्रि करते िैं।

ऐसे हनराश और द ःखी व्यापारी लोग हजनको बडी िाहन उठानी पडी, उनको स्वामी जी िन की व्यथपता तथा त्याग-वैराग्य के हवषय में इस रकार समझाते हक वे भी अपने घाटे को भूल कर अपनी जड-ब क्तद्ध को कोसने लगते। इस रकार का िम अनवरत रूप से िलता। इस सुंसार में काम, िोि, लोभ, मोि, राग तथा िेष की ज्वाला से सन्तप्त थके-िारे और बोहझल मन वाले लोगो ुंको स्वामी जी द ःखो ुंसे छ टकारा हदला कर आध्याक्तत्मक सम्पदा िारा उनके हृदय में शाक्तन्त-हवश्राक्तन्त का साम्राज्य स्थाहपत कर देते।

ऐसे व्यक्तक्तयो ुंके रहत स्वामी जी का व्यविार अहत िी मृद ल िोता। देखने का स नने में हवस्मय तो िोता िै हक हकस रकार वे द ःखी लोगो ुंकी िर स ख-स हविा का स्वयुं ध्यान रखते। अपने िी कर कमलो ुंसे न केवल उनको खाना परोसते, बक्तल्क अपने सामने बैठा कर क्तखलाते। इसका पररणाम यि िोता हक वे लोग हनराशा के अन्धकार से हनकल कर आशा के रकाश में हविरण करने लगते। मन भी उनका क्तस्थर तथा शान्त िो जाता। ऐसे व्यक्तक्तगत व्यथा से पीहडत कई भक्तो ुंएवुं दशपनाहथपयो ुंके हलए वे सच्चे माता-हपता की तरि ममता तथा वात्सल्य उँडेलते।

अनेक रवृहत्तयो ुंके मध्य थकान-रहित जीवन में अपने समस्त सिाको ुंका- ि‍िोवेगिृस्थी ‍िितें अथवा वैरागी सबका -हित-हिन्तन उनकी हदनियाप का सबसे औत्स क्यपूणप अुंगिोतिौ। हवशेष रूप से वैरागी सिाको ुंके हलए तो वे सवपस्व िैं। वे िी उनके एकमात्र पथ-रदशपक,हमत्र और ग रु िैं; क्योहुंक रते्येक मित्त्वपूणप हवषय में पथ-रदशपन के हलए वे मात्र स्वामी जी परहनभपर रिते िैं। हदन-रात स्वामी जी अपने सिाको ुंकी न केवल लौहकक, बक्तल्क पारलौहकक रगहतके हवषय में भी सिोते रिते िैं।

समाज-स िारक तथा आध्याक्तत्मक ज्ञान के रिार-कायों में उनको इतना अहिक व्यस्त रिना पडता िै हक कई बार वे िीरज खो कर खीझ उठते िैं हक अपने ऐसे सिाको–ुंहजन्िोनेंु अपने हनहदपष्ट उद्देश्य की पूहतप के हलए पूणपरूपेण समपपण कर हदया था-की ओर इतना ध्यान निी ुंदे पाते िैंहजतना हक वे िािते िैं।

हदव्य जीवन सुंघ के छोटे-से कायापलय में कायप-भार एवुं कायप-व्यस्तता के बीि में भी कभी-कभी वे अपने हरय सिाको ुंसे रभावपूणप शैली में आग्रि करते हक वे अपने हित-हिन्तन एवुं हनजत्व को सवपथा भूल कर मानवता की सेवा जैसे उच्चादशो ुंकी राक्तप्त में पूणपतया लगे रिें। प लहकत िो कर स्वामी जी हनष्काम सेवा को सवोत्तम योग, बडे-से-बडा यज्ञ तथा भगवद्-आरािना बता कर उसकी मित्ता बताते ।

ऐसे सिाक कई बार हनराश िो कर सिोते हक मानव-समस्याओ ुंतथा उनके कष्टो ुंका अन्त िी निी–ुंभला वे हनरीि और असमथप जीव हवश्व-कल्याण और मानवता की सेवा जैसे उच्च आदशों की पूहतप कैसे कर सकते िैं? यि तो हदव्य आत्माओ ुंका िी काम िै।

उन्ें ऐसा हनराश देख कर स्वामी जी उनके ितोत्साहित हृदयो ुंको हनश्चय सहित आश्वासन देते हक हवश्व-कल्याण अथवा मानवता की सेवा जैसे आदशप की पूहतप में हबताया गया जीवन कभी असफल निी ुंिोता। उत्सिा का सुंिार करते हुए वे किते- आत्म-साक्षात्कार िोता िै अथवा निी,ुं इसकी हिन्ता मत करो। नैहतक उत्थान के हलए मास्व-सेवा में िर सम्भव रयास से ज ट जायें। नर में नारायण के दशपन करो। जनता को जनादपन मानो।

"यहद आप ईश्वर की सवपव्यापकता में हवश्वास रखते िैं, तो सब जीवो ुंमें उनके दशपन क्यो ुंनिी ुंकरते ? अपने इस हवश्वास को कायापक्तित करने में क्यो ुंहििकते िैं? ऐसा निी ुंसोिना िाहिए हक उस भगवान् के दशपन बन्द आँखो ुंअथवा ताले में बन्द इक्तन्दर के भीतर िी िो सकते िैं। रते्येक में उसकी सत्ता को हवद्यमान मानो। सवपत्र और समस्त में उनके दशपन करके सेवा करो। हफर वे स्वयुं आपके हृदय-मक्तन्दर में रत्यक्ष िो कर दशपन देंगे।

"जब तक हृदय से मल का नाश निी ुंिोगा, पहवत्रता निी ुंआयेगी और पहवत्रता के हबना आध्याक्तत्मक अन भव कैसे िोगा? जब तक अपनी रकृहत को पूणप निी ुंबनायेंगे, तब तक सत्य की अन भूहत कैसे िोगी जो पररपूणपतम का सार-तत्त्व िै। अिुंकार, िोि, लोभ, िेष आहद तथा छल-कपट का समूल नाश हनष्काम सेवा िारा करें।

"यहद आप दश मन ष्यो ुंकी थोडी भी सेवा कर पाते िैं, यहद आप एक भी ब राई हमटा कर एक िी ग ण अहजपत कर लेते िैं, तो हनहश्चत समझ लीहजए हक आपका जीवन व्यथप निी ुंहुआ।

लाख में से दश व्यक्तक्त भी ऐसा स अवसर उपलब्ध निी ंकर पाते, क्या हुआ जो समाहि और साक्षात्कार का अन भव न हमला?"

इससे आगे भी वे किते-"सदा रसन्न-हित्त रहिए। तन-मन लगा कर यि काम कीहजए। हनहश्चत रूप से आप सौभाग्यशाली और स खी बनेंगे। न तो अपने भाग्य से असन्त ष्ट रहिए और न उत्थान के हलए ितोत्साहित िोइए। मेरी हशक्षाओ ंको हियाक्तित कररए। आपके आध्यात्क्तत्मक उत्थान की क्या म झे हिन्ता निी ंिै? अच्छा िोता, आप जान पाते हक हदन-रात, रत्येक क्षण आपके हित के हिन्तन में मेरा हृदय हकतना व्याक ल रिता िै!"

एक हदन स्वामी जी ने म झसे अपने मन की बात इस तरि किी - "खेद की बात िै हक मेरे अपने हशक्षाथी सािक कई बार मेरी बातो ंका उपय क्त अथप निी ंसमझ पाते, जब हक मैं उन्ें आग्रिपूवपक किता हाँ हक वे अपना जीवन हनष्काम सेवा िेत अपपण कर दें। यहद मैं कोई अन्य कायप उन्ें सौपुंता हाँ, तो उसका यि अथप निी ंहक वे सािना की अविेलना करें। रहतहदन हनहश्चत समय पर रातः और सायुं की व्यवक्तस्थत सािना शशेष कायों से असुंगत निी ंिै।

"मेरा यि सब किने का रयोजन यि िै हक वे अपने को अकताप, अभोक्ता या ईश्वर-अपपण की भावना से और अपने-आपको हनहमत्त-मात्र मान कर रत्येक कायप को आध्याक्तत्मक सािना का रूप दें। इन कायों की सम्पन्नता से तो हदन-भर भगवद्- आरािना िोती रिेगी। उनके जीवन में हनत्य िी हवराटर रूप की पूजा से ज्ञान-ज्योहत का रकाश हवकीणप िोता जायेगा। शनैः शनैः हकन्त अवश्यमेव उनके जीवन में पररवतपन आ जायेगा।

"ऐसे कई गृिस्थी िैं जो अपने लौहकक कायों के साथ-साथ आध्याक्तत्मक सािना को व्यवक्तस्थत ढुंग से कर रिे िैं। यहद आप जैसे ब क्तद्धजीवी तरुण भी मनोवैज्ञाहनक तकप िारा अपने मानहसक दृहष्टकोण को बदल कर कायों में रवृत्त निी ंिोते, तो सािारण जनता से कमपयोग के हसद्धान्त को समझने की क्या अपेक्षा की जा सकती िै?

"सािना क्या िै, क्या निी ंिै? पूवप-हनणीत हवलक्षण सािना–िम के हसद्धान्त को छोड दीहजए। हनष्काम और सादर हकये गये कमप सािना िी तो िैं। 'कमप िी पूजा िै' के हसद्धान्त को अपनाने वाले के जीवन में हनराशा कभी निी ंआती।"

साथ िी यि भी देखने में आता िै हक स्वामी जी से अहिक हविारवान् और श भ-हिन्तक कोई निी ंिै। स्वामी जी जब भी यि जान पाते िैं हक कोई सािक हकसी कारण से अशान्त और व्याक ल िै, तो वे ऐसे सािक को त रन्त िी कायप करने को मना कर देते िैं और क छ हदन पूणप स्वतन्त्रता से हबताने व मनोरुंजन के हलए हकसी भी सािन को अपनाने का आग्रि करते िैं।

मेरे साथ भी ऐसा िी हुआ। हकसी मानहसक अन्तिपन्द्व के कारण में हशहथलता और व्यग्रता का अन भव करने लगा। उन्ोनें भी मेरी इस क्तस्थहत को एक िी दृहष्ट में ताड हलया। म झे सब कायप बन्द करने को किा और अपनी इच्छान सार समय व्यतीत करने का हनदेश हदया। काम करने को त रन्त मना करते हुए अपनी शारीररक अन कूलता के अन सार हदनियाप बनाने की मन्त्रणा दी।

मैं वनो ◌ंमें हविरण करता। पवपतो ◌ंके एकान्त स्थल में आनन्द का पान करता। हवहक्षप्त हविार भी मन में उन्म त्त रूप से हविरण व ि◌ीडा करते। इस रकार मि र एकान्त और राथपना से मेरी खोयी हुई शक्तक्त पूणपतया शरीर में प नः मुंरिरत ि◌ोने लगी।

ऐसा देखा गया हक स्वामी जी को अपने पररवार के हजज्ञास ओ ◌ंतथा सािको ◌ंव पुंरिरयो ◌ंके शारीररक एवुं मानहसक स्वास्थ्य की अत्यन्त हिन्ता रिती ि◌ै। इसके अहतशीत म ि◌ा यूगोस्लाहवया और लटेहवया में भी कई ऐसे हजज्ञास ि◌ैं जो अपने को बाबा मान कर स्वामी जी को पूज्य मानते ि◌ैं। उन्ोंनें पारमाहथपक हदग्दशपन के हलए ज्ञानी ि◌ोर स्वामी जी को सौपुं दी ि◌ै। उनकी समस्याओ ◌ंव शुंका-समािान ि◌ेत भी स्वामी जी को बहुि समय हनकालना पडता ि◌ै।

य द्ध और भव से िािन्त आज की मानवता की शाक्तन्त और सचे्चे स ख की काम ब झाने वाले आनन्द-क टीर के इस दयाल , कृपाल सन्त को ऋहषकेश के स्थानीय एवुं आस-पास के लोग अपने पूजनीय आत्म जनो ◌ंसे भी अहिक मानते ि◌ैं। भारतीयो ◌ंके ि◌ी निीं,◌ं बक्तल्क हवदेहशयो ◌ंके हलए भी स्वामी जी ज्ञानदाता ि◌ैं और सुंघषप से पीहडतो ◌ंके हलए रत्येक क्षण रत्येक आवश्यकता के पूरक ि◌ैं।

वे सािारण व्यक्तक्त को भी अपने कोमल विनो ◌ंसे इस रकार रेरणा और हशक्षा देते ि◌ैं हक वि इनके विनो ◌ंको आज्ञा मान कर हशरिोिायप करता ि◌ै और अपने दैहनक जीवन में रुहि लेने लगता ि◌ै, मानो उसका दृहष्टकोण बदल गया ि◌ो और उसे आध्याक्तत्मक नव-जीवन राप्त हुआ ि◌ो।

पहत्रकाओ ◌ंऔर प स्तको ◌ंमें हनहिष-रूप से अुंहकत विन भी रेरक बन जाते ि◌ैं जो सुंसार-भर को नव-जीवन रदान करते ि◌ैं। उनका उपदेशामृत जीवन-रूपी वृक्ष की लताओ ◌ंको शीतलता तथा ि◌ररयाली रदान करता हुआ शरणागत जन-समि◌ू को अपनी छाया तले आश्रय तथा हवश्राक्तन्त देता ि◌ै।

मिप तथा परमाथप-पथ के वे पहथक, हजन्ोंनें सािना को ि◌ी अपने जीवन का आिार बना रखा ि◌ै, उनके हलए स्वामी जी रज्ञा और ज्ञान के अखण्ड स्रोत ि◌ैं। उनके हनजी अन भव और अलौहकक ज्ञान-सररता प स्तको ◌ंके रूप में वि हनकली ि◌ै। इन प स्तको ◌ंके माध्यम से स्वामी जी हवश्व-भर के सािको ◌ंको अपने आध्याक्तत्मक ज्ञान का सने्देश देते रिते ि◌ैं।

हजज्ञास हवशेष के हलए तो वे एक मूक हशक्षक की भााँहत ि◌ैं, जो उन्ें अपनी प स्तको ◌ंके माध्यम से रगहत-पथ पर अग्रसर करता रिता ि◌ै। प स्तको ◌ंमें हलखे रेरणादायी शब्दो ◌ंि◌ारा अरकट रूप से वे सचे्चे साथी की तरि पथ-रदशपन करते ि◌ैं।

सािना के इस कण्टकाकीणप मागप पर ि◌ल रि◌े सािको ◌ंको माया के सूक्ष्माहतसूक्ष्म रूप को, मन की रिस्यमयी ग क्तत्थयो ◌ंको स लझाने; आध्याक्तत्मक पथ से च्य त करने वाले अनेक कारणो ◌ंव उनसे बिने के सािनो ◌ंि◌ारा स्वामी जी सदैव अपनी हशक्षाओ,◌ं हनदेशो ◌ंतथा आदेशो ◌ंके रूप में उनके अन्धकारमय मागप को अपने ज्ञान-सूयप की हकरणो ◌ंि◌ारा रकाहशत करते रिते ि◌ैं। सािना में आने वाले हवघ्नो ◌ंतथा बािाओ ◌ंको समझा कर उन पर हवजय राप्त करने के हलए हवहभन्न रकृहत और सामथ्यप वाले सािको ◌ंको हवहभन्न समािान एवुं सािन बताते ि◌ैं।

स्वामी जी इस रकार की बािाओ ुंको पार करने के हलए भक्तक्तयोग, ज्ञानयोग,
मनोवैज्ञाहनक, नकारात्मक, सकारात्मक उपेक्षा एवुं अविेलना तथा राथपना आहद हवहभन्न ढुंग बताते िैं। स्वामी जी की यि हदव्य ज्ञान-गुंगा, जो उनकी जीवन-रूपी िारा में रवाहित िो रिी िै,
सािक के हलए जीवन का आिारभूत स्रोत हसद्ध हुई िै।

वे राहणमात्र का जीवन अपनी ज्ञानिारा से सींि रिे िैं। सािको ुंको कीतपन-कक्षा व वषप-
भर में दो बार सािना-सप्ताि िारा व्यक्तक्तगत स झाव दे कर स्वामी जी सािको ुंकी इच्छा-शक्तक्त
को दृढ़ बनाये रखते िैं, उनमें रेरणा िारा राण फ़ुंकते रिते िैं। अपने ओजस्वी भाषण िारा स्वामी
जी सािको ुंमें जीवन-शक्तक्त का सुंचार करते िैं। ऐसे अवसरो ुंपर वे अपने साहन्नध्य से उनकी
भावना को रबल बनाये रखते िैं।

इस रकार स्वामी जी जगत् के हलए दो वरदानो ुंके मूहतपमन्त स्वरूप हसद्ध हुए- एक तो
भव-रोग एवुं भय-ज्वर से पीहडत जनता को उत्सािदायक आश्रय-स्थल की उपलक्तब्ध और दूसरा
सुंसार-भर के सािक-वगप को जीवन-रदाहयनी सुंजीवनी राप्त हुई।

त्रयोदश अध्याय

स्वामी जी की दृहष्ट में जगत्

"मूलतः जगत् जैसा दृहष्टगोचर िोता िै, वैसा िी रिेगा; हकन्त जगत् के रहत ज्ञानी सन्त
का दृहष्टकोण हभन्न िोगा।" **-डशव**

वेदान्ती की यि एक सवपहरय सुंकल्पना और हितकर मान्यता िै हक बाह्य दृहष्टगोचर जगत्
वास्तव में स्व-रहित भ्रम मात्र िै और इसका कोई अक्तस्तत्व िी निी ुंिै। जगत् नाम की कोई वस्त

ि ी नी।ं अतः ब क्त्द्धमत्ता इसी में ै हक इसके अक्तस्तत्व की पूणपतया उपेक्षा की जाये। यहद ऐसा भास ोने लगे हक जगत् भी वेदान्ती के कथन की उपेक्षा करता ै, तब उस बिारे जगत् का रक्षक भगवान् ी ै। वेदान्ती के कथन की उपेक्षा करने पर वि तत्काल ी क्ष ब्ध ो सुंघषप के
हलए उद्यत ो जायेगा।

तात्पयप यि ै हक आज का वेदान्ती हिरकाल से पीहडत सुंसार से यि किेगा- "देखो, मैं त म्हें मन ष्य ारा रय क्त न हकये गये सब रकार के अपशब्द कहाँगा और त म्हारे अक्तस्तत्व के मौहलक अहिकार को भी नकार दूँगा। मैं तो ऐसा कहाँगा हक त म उसके रहतकार में सब मनोिर एवुं श्रेष्ठ वस्त एँ म झे दे दो।

व्यक्तक्त को जो राक्तप्त ोती ै, वि उसे हबना आभार रकट हकये ी ग्रिण कर लेता ै। सत्य तो यि ै हक कौन हकसका न्यवाद करे? वास्तव में जब हकसी का अक्तस्तत्व ी नी,ं तो न्यिवाद कैसा? न कोई कताप ै, न ी कोई कमप, न ी सियता, न ी आभार-रदशपन। क्या बहढ़या हसद्धान्त ै यि! अहिकार सब; हकन्त आभार-रदशपन नगण्य! यि तो आनन्दोत्सव में भाग्य-पत्रक (लॉटरी) ो गया जिाँ लेना-ी-लेना ै, देना क छ नी।ं जिाँ 'मैं' के अहतररक्त जब कोई दूसरा नी ंै ी नी,ं तब रत्य त्तर का रश्न ी नी ंउठता।

जगत् के रहत स्वामी जी के मनोरम दृहष्टकोण को हृदयुंगम करने के हलए उपय पक्त ारणा को हबलक ल ी उलट देना ोगा। यहद 'केवलोऽम्', 'केवलोऽम्' की उच्च घोषणा से ी सुंसार की उपेक्षा की जाती ै, तो स्वामी जी अपने-आपकी उपेक्षा करते हुए जगत् को हनत्य जीवन्त और भव्य, श्रेष्ठतम सत्य के रूप में मानेंगे। रत्यक्ष हवश्व-रूपी हदव्यता की वेदी के समक्ष अपने अक्तस्तत्व को पूणपतया समहपपत कर उसमें हवलीन कर देना ी उनकी सािना ै। सदैव उपलब्ध शास्त्रोक्त दो स लभ वाक्यो ंसे वा सुंसार के अक्तस्तत्व को हमटा देते रतीत नी ंोते। िाँ, यि सत्य ै हक स्वामी जी अैत वेदान्ती ैं। हनश्चय ी वे आहद ग रु शुंकरािायप जी के 'केवल अैत-दशपन' के अन यायी ैं। 'ब्रह्म सत्युं जगक्तन्मथ्या' सत्य ै। सब-क छ ोते हुए भी हनश्चयात्मक रूप से यि किा जा सकता ै हक वे श ष्क मायावादी या हमथ्यावादी नी ंैं।

हनस्सन्देि रूप से सत्य के समक्ष गोिर जगत् हमथ्या ै; हकन्त जिाँ तक वि १ पर शरीर िारण करके रिता ै, िीनी और नमक का सेवन करता ै, स ख और द ःख भोगता ै, वि अपनी हनष्कामता को न्याय-य क्त कि सकता ै। क्योहुंक यि हनहश्चत रूप से किा जा सकता ै हक साक्षात्कार-राक्तप्त पर हकसी के हशर पर रात-ी-रात में उसके सीगुं नी ंउग आते, न ी सौर-मण्डल तथा अन्य मण्डल तारा-मण्डल में लय ो कर दृहष्ट से ओझल ो जाते ैं और न भौगोहलक जगत् में तत्काल ी हवद्य त्-मण्डल के कारण पररवतपन ोता ै।

स्वामी जी ने एक बार हलखा था- "जगत् के अभाव और नाश से यि तात्पयप नी ंहक पवपतो,ं झीलो ंऔर वृक्षो ंआहद का हवनाश ो जाता ै। तृण-तृण ी रिेगा। हबचूछू-काँटा पूवपवत् काटेगा ी। ाउन एक्सरेस पूवपवत् साढ़े आठ बजे आयेगी। रेलवे व राशन किाप के दर पूवपवत् स ख-द ःख का कारण बनते रिेंगे।"

हफर जगत् में क्या पररवतपन ो जाते ैं? ज्ञात करने की बात तो यि ै हक द्रष्टा को क्या ो जाता ै; क्योहुंक पररवतपन तो केवल द्रष्टा में ी ोता ै।

भौहतक जगत् का स्वरूप तो पूवपवत् रिता िै, हकन्त ज्ञानोदय िोने पर जगत् के रहत
उसका वैसा दृहष्टकोण नीि ंरिता जैसा पिले था। उसे रत्येेक वस्त हदव्य रकाश से रकाहशत रतीत िोती िै जो
सामान्य-जन को दृहष्टगोिर नीि ंथी। सौभाग्यशाली आत्मा के हलए एक नव-आध्याक्तत्मक
दशपन कृपा का वरदान-स्वरूप िै और मानहसक तथा ऐक्तिक भास के स्थान पर रत्यक्ष अन्तज्ञापन
की अन भूहत स्थानापन्न िो जाती िै।

जगत् को मौक्तखक रूप से नकारने पर िम किीं ंके न रिेंगे। परन्त िमारा रामाहणक
रयास यि िोना िाहिए हक िम हवश्वातीत, परम श द्ध दृहष्ट की राक्तप्त करें। यि गोिर जगत् हनत्य
ज्योहत-प ंज का रत्यक्ष आकार िै और परम सत्ता स्वयं में पररपूणप सत्य िै जो अगम्य शक्तक्त के
पारदशपक रूप िारा िमक रिा िै और इक्तियातीत माया के स्वरूप के रहत पूणपतया आनन्दपूवपक
जागरूक िै। रिहलत मिावाक्यो ंऔर शास्त्रोक्तक्तयो ंके आिार पर हवश्व के अक्तस्तत्व को शून्यता में
पररवहतपत नीि ंहकया जा सकता।

अतः ऐसा सोिने की अपेक्षा हक जो क छ रत्यक्ष गोिर जगत् िै, उसका अक्तस्तत्व िै िी
नीि, ंस्वामी जी ने हनरन्तर ऐसा भास करने का रयास हकया हक जो दृहष्टगोिर िै, वि स्वयं विी
िै। उनकी दृहष्ट में सब हवराट्-स्वरूप िै जो रत्यक्ष अहभव्यक्त िै। जैसा हक एक बवेरी के
रिस्यवादी ने किा िै हक वि परम सत्ता की रत्यक्ष िस्ताक्षररत म िा िै। हवश्व में हदव्यता का दशपन
करने से व्यक्तक्त का स्व- अक्तस्तत्व भी पूणपरूपेण उस परम सत्ता में हविरण करने लगता िै। तब
हनष्प्रयोजनीय स्वाभाहवक हिया-कलापो ंसे जी ि राने व संक हित िोने की आवश्यकता नीि ंरि
जाती। हनत्य सत्ता से हकसी भी वस्त की पृथकता का भास िोना िी समस्त द ःख एवं भव के
बन्धनो ंका कारण िै। यहद सवपत्र उस परम सत्य के िी दशपन करें, तो आप जीवन्म क्त िैं।

जब व्यक्तक्त उपय पक्त दृहष्ट से जगत् को देखता िै, तो उसके आक्तत्मक अन भव हनश्चय िी
हविारो ंऔर हियाओ ंमें रहतहबक्तम्बत िोते िैं और वे इंहगत करते िैं हक उसमें हदव्यता की
हवद्यमानता के िेतना-प ष्प हवकहसत िैं।

स्वामी जी का जीवन सबमें व्याप्त रत्यक्ष हवराट्-स्वरूप की अनवरत (तैलिारावत्) पूजा
िै। सदैव सिज हवनम्रता, सब राहणयो ंके रहत गिरा आदर-भाव, रत्येेक व्यक्तक्त में पूणप एवं सिज
हवश्वास, हकसी में अवग ण देखने की वृहत्त का पूणप अभाव हनश्चय िी मानवता में हदव्यता के दशपन
करने के कारण िैं। यथाथप में मैंने यि देखा िै हक वि हकसी से कट विन कि िी नीि ंसकते।
हकसी ने कभी उन्ें िोिावेश में नीि ंदेखा, यद्यहप िोिावेश को हवस्फोहटत करने वाली कई
घटनाएँ घहटत हुईं।

इसी रकार अहतशय स्त हत या तीव्र कट आलोिना से अरभाहवत उनके म खारहवन्द पर सदैव
की भाँहत सिज मि र म स्कान हथरकती रिती िै। कई बार देखा गया हक एक िी समय में वे हभन्न
रकार के व्यक्तक्तयो ंसे एक-सा व्यविार करते-भले िी वि प रुष िो या स्त्री, बालक िो या वृद्ध,
पवपतीय िो या हिंदी का हशष्ट जन िो। यिाँ तक हक एक आकक्तस्मक दशपक यि समझता िै हक
स्वामी जी शून्य हित्त से सबसे बातिीत कर रिे िैं। कभी तो यि भी देखने में आया हक वे अिम
व्यक्तक्त का स्वागत भी एक उच्च कोहट के मिात्मा के समान करते। समस्त कीटाण एवं राहणयो ंके

रहत उनकी हवलक्षण कोमल भावना िै। मच्छर से ले कर उच्च कोहट के हशहक्षत एवुं रहतहष्ठत व्यक्तक्त के रहत उनकी समदृहष्ट िै।

इन सबके पररणाम स्वरूप अनेक रकार से अपने बारो ुंओर दूसरो ुंकी सेवा सदैव सत्बद्ध रिते िैं, भले िी दूसरे िीिों या न िीिों। वे रत्यक्ष जगत् के के असख्यासुंख्य रूपो ुंकी पूजा करते िैं। उनको सम हित रूप से समझने के हलए क अनन्त रकार के कायप-कलापो ुंमें उनकी व्यस्तता के दशपन करने िोगेुं। उनकी व्यस्तता को देख कर कई रूहढ़वादी सुंन्यासी ज्ञान की अपेक्षा कमप को अन्यायपूर रिनता एवुं मित्ता देने का आरोप लगाते िैं।

हकन्त आश्चयप तो यि िै हक दोषारोपण करने वाले उनका हवहशष्ट लक्ष्य देखन िूक गये। हकसी की उपेक्षा करना और हकसी को मित्ता देने का तो यिााँ रश्न िी जिााँ उठता, अहपत यि एक सिज अन भव िै हक समभाव व्यविार करना उनके स्वभाव स्थायी एवुं अहवक्तच्छन्न अुंग बन िका िै। किना तो यि िाहिए हक आहिक आनन्द-सागर में अवगािन करने वाले व्यक्तक्त का यि पूणप व िाहदपक उन्म क्त हवकास िै। अपनी आनन्द-य क्त िाँसी को दशापये हबना वि रि निीं ुंसकता। वायहलन पर उब हनष्णात सुंगीतज्ञ की उँगहलयााँ क शलता से िलेंगी, तो मि र स्वर कैसे ध्वहनत निीं ुं िोगा? वुंशी में तान देने पर मि र स्वर कैसे निीं ुंहनकलेगा? यि किना हनरथपक एवुं असुंगत िोगा हक म रली से मि र स्वर क्यो ुंध्वहनत िोते िैं? ग लाब स वास क्यो ुंहवकीणुं करता िै? अगरबत्ती से मनोम ग्धकारी स गक्तन्ध क्यो ुंफैलती िै?

सच्चा वेदान्ती हकसी को भी सुंकीणप एवुं स्व-केक्तित निीं ुंबनाता। यि तो असीम िेतना का हवस्तार िै, सुंकीणपता का निीं।ुं स्वामी जी इसकी सशक्त घोषणा करते िैं हक अिैत-भाव की परीक्षा स्वाथप के लोप और हवश्व-रेम के उत्थान में िै।

समग्र सृहष्ट को आत्मवत् मानना और मानव-मानव में भेद-भावना को हछन्न-हवक्तच्छन्न करना िी बौक्तद्धक वेदान्त का रहतफल िै। 'ईशावास्यहमदुं सवपम्' की भावना हनहमपत िोने के बाद भेद-भाव तथा ऊाँि-निी की भावना का तो अक्तस्तत्व िी निीं ुंरिता।

स्वामी जी का आह्वान मानव को सवपस्पशी हवश्व-रेम का हवकास करने के हलए िै। वे बलपूवपक किते िैं-"सबमें एकत्व का अन भव करो। पाथपक्य मृत्य िै। एकता जीवन िै। सृहष्ट का रते्येक जीवन्त राणी भगवान् का सने्देश ले कर आता िै हक वि जीवन का उद्गम िै, विी परम सत्ता िै और उसमें सभी राणी हनवास व हविरण करते िैं। रकृहत में असीम सत्ता के दशपन करो। सवपत्र अमरत्व के दशपन करो।"

भव्य! भव्य िै यि सने्देश! और हकस सत्य की मानव को आवश्यकता िै?

तुिदिश अध्याय

हवश्व-मुंि पर अहभनय

वेद तथा वणापश्रम िमप वाले इस देश के सामाहजक और िाहमपक इहतिास में रीीन काल से एक हवषय की प नरावृहत्त िोती िली आ री िै। समय-समय पर रीीन ऋहषयो ंके अन भव और मिप व आध्यात्मकता के जीवन से सम्बक्तन्धत हनत्य सत्य (हजनका हववेिन संस्कृत भाषा के साहित्य में िै) क छ उच्च रूहढ़वादी वगप के अल्पसख्यक व्यक्तियो ंतक िी सीहमत रिते िैं।

संस्कृत में हलखे िोने के कारण शास्त्रो ंका अध्ययन क छेक उच्च वगप के लोगो ंका एकाहिकार बन गया िै। अतः अहशहक्षत तथा अज्ञानी लोगो ंको शास्त्रो ंके अध्ययन से बहित रिना पडता िै। संस्कृत भाषा-भाषी लोग बहुत कम िैं, पररणाम-स्वरूप बहुसख्यक वगप हविार-हवहभन्नता आने से शनैः शनैः हमथ्या िमापवलम्बी बन जाता िै।

समाज के अहिकांश वगप जीहवकोपाजपन की समस्या िेत हदन-रात ज टे रिते िैं। उनके पास शास्त्रो ंके गम्भीर अध्ययन-मनन के हलए, संस्कृत सीखने के हलए न तो सामथ्यप िै, न शक्ति और न िी इतना समय िै हक ज्ञानोपाजपन िेत शास्त्र - ममपज्ञो ंके िरणो ंमें घण्टो ंतक बैठे रि सकें। [illegible] शास्त्रो ं से क छ सम्पकप निी ं शास्त्रान सरण करने वाले िमापवलम्बी उठाते िैं जो अज्ञानी जनता को ईश्वरीय ज्ञान, नैहतकता तथा मरणोपरान्त जीवन का ज्ञान देने में अपना एकमात्र रभ त्व समझते िैं।

ऐसे समय में एक ऐसे मिान भाव का आहवभापव िोता िै जो उच्च आदशों से रेररत िो कर अपने और जनता के बीि की खाई पर क्तस्थहत-अन कूल सेत बन्ध का कायप आरम्भ कर देता िै। समय की माँग और जनता की रुहि के अन सार िमप के बहुमूल्य रत्नो ंको वि जन-भाषा के माध्यम से रकाश में लाता िै। हशवं-स न्दरं का सन्देश जनता के सामने इस रकार उपक्तस्थत करता िै हक लोग अपने िमप, अपनी संस्कृहत के वास्तहवक रूप को प नः स गमता से समझने लगते िैं, हजससे उनके जीवन में पररवतपन आ जाता िै। यि उत्तेजक सन्देश रत्य त्तर में इतना रभावशाली िोता िै हक समाज में एक जाग्रहत आ जाती िै।

ऐसे क छेक दूरदशी व्यक्तियो ंिो वे हविानो ंके िास्य तथा नाक्तस्तक लोगो ंके व्यंग का भले िी पात्र बनें, तो भी-हनष्काम भाव से जनता की सेवा करते रिते िैं। लोगो ंके ज्ञानदेव ने अहितीय प स्तक 'ज्ञानेश्वरी गीता' तथा अन्य रिनाएँ मिाराष्टर के ल हनहमत्त हलखी।ं इसी रकार एनी बेसेन्ट ने अँगरेजी भाषा-रेमी दहक्षण रदेशीय य वा लोगो ंके हलए 'गीता' हलखी। एकनाथ मिाराज ने मिान् ग्रन् 'श्रीमद्भागवत' उन लोगो ंके हलए हलखा हजनको संस्कृत भाषा का ज्ञान न था।

आन्ध्र रदेश के वीर-हृदय पोतन्ना, उत्तर रदेश के सन्त त लसीदास जी तहमलनाडु के कम्बर की रहतभा इस हवषय में संस्मरणीय िै। इन्होंने रामायण के रमणीक रसंगो ंको जनता के हृदय तक पहुँिाया। इनकी रिनाओ ंने जन-वाणी का रूप िारण कर पूरे देश को लाभाक्तन्वत हकया। लक्ष्मीश कहव और मोरोपन्त भी पहवत्र मिाभारत को स न्दरतम काव्य का रूप दे कर कन्नड और मराठी भाषा-भाषी जनता की सेवा में समा गये िैं। इसी रकार हनश्चलदास का वेदान्त के उच्च हविारो ंसे ओत-रोत 'हविार-सागर' सबके हलए उपलब्ध िै।

वतपमान समय की क्तस्थहत हनयहत की अद्भ तता के अनोखेपन से य क्त थी। हनस्सन्देि इहतिास की प नरावृहत्त िोती रिती िै, पर भगवान् भी कभी-कभी हवलक्षण िास्य-हवनोद करते िैं। इस बार भी ऐसा िी क्तखलवाड हुआ। इस समय पूवप-इहतिास से अन्तर इतना था हक पिले तो

अहशहक्षत जन-सिाारण िी अज्ञानतावश ईश्वर व िमप के अध्ययन से वुंहित रिता था, पर इस बार विी रूहढ़वादी लोग जो शास्त्रो ुंके रक्षक थे, पाश्चात्य रुंग में राँगी नयी हविारिरा और नये आदशों के रभाव में आ गये थे।

सुंसूकृत भाषा का तो एक िी राहत्र में बहिष्कार कर हदया गया था। िमप-परम्परा के रहत श्रद्धा तथा प राने समय से रहतहष्ठत रीहत-ररवाजो ुंको लोकािार के हवरुद्ध माना गया, हजसके हलए उनको रायहश्चत्त करना िाहिए था। ईस्ट इक्तण्डया कम्पनी िारा आयोहजत घृणास्पद हशक्षा-नीहत का हशकार रथमतः ब क्तद्धजीवी हुए। घोहषत व रकट स्वीकृत नीहत के अन सार अाँगरेजी भाषा को राष्टरभाषा के रूप में अपनाया गया।

लिाप मैकाले के १८३५ के ऐक्ट के अन सार अाँगरेजी को हवहिवत् हशक्षा का माध्यम बना हदया गया। वे िी लोग जो सुंसूकृत-रेमी थे, अब अाँगरेजी के भक्त बन गये और कम्पनी को योग्य लेखक, व्याख्याकार तथा सिायक देने लगे। शासनान सार बाद में ऐसे िी लोगो ुंकी लेखा-जोखा हवभाग, न्यायालयो,ुं कायापलयो ुंव राजस्व हवभाग में क्लकों के रूप में हनय क्तक्त िोने लगी।

फल-स्वरूप उन्ी ुंकहतपय व्यक्तक्तयो ुंने, हजन्ोनुें ससूकृत को शास्त्राध्ययन से जीहवत बनाया हुआ था, अब ससूकृताध्ययन करना हबलक ल त्याग हदया। शास्त्रो ुंको भूल गये, परम्पराओ ुंसे सम्बन्ध हवक्तच्छन्न कर हदया और पाश्चात्य रीहत-ररवाजो ुंको अपना हलया। सम्पदा के रक्षको ुंने िी जब सम्पहत्त की रक्षा न की, तो और कौन करता? इसका समाज पर क्या रभाव पडा िोगा? इसकी कल्पना की जा सकती िै।

अतः इस बार शास्त्र-हवद्या तथा आध्याक्तत्मकता को प नजीवन देने का कायप ऐसे व्यक्तक्त को सौपुं ा गया जो स्वयुं इसी अंि हनक श्रेणी से सम्बक्तन्धत था। भाग्य की हवम्बना तो यि रिी हक हजस भाषा के कारण सुंसूकृत एवुं सुंसूकृहत का पतन हुआ, उस पतन का रहतकार करने के हलए विी अाँगरेजी इस व्यक्तक्त के हविार-रसार का माध्यम बनी।

यि ऐहतिाहसक रोग मिाराष्टर, आन्ध्र और तहमलनाि तक िी सीहमत न रि कर समूपूणप भारत में व्याप्त िो गया था। शासकीय भाषा अाँगरेजी का उपिव सब जगि व्याप्त था। यि हवहभन्न हलहपयो ुंतथा हवहभन्न भाषा-भाषी भारत जैसे देश में जहटल समस्या बन गयी। यहद हकसी रादेहशक भाषा को माध्यम बनाया जाता, तो सम्भवतया सफलता न राप्त िोती। जैसे सामान्य ग्रामवासी जूते से कटे घाव को िमडा जला कर लगाने से ठीक करता िै या जैसे हिहकत्सक रोगी के शरीर में से वैक्सीन का टीका तैयार करता िै-इस रोगी की भी वैसी िी औषहि अपनायी गयी। अतः उसी तरि भाग्य ने भारतीय ज्ञान को प नजपन्म देने वाले िमपदूत के रूप में एक ऐसे व्यक्तक्त को िी ि ना जो स्वयुं अाँगरेजी में हशहक्षत तथा क छ सीमा तक अाँगरेहजयत के रुंग में रुंग ि का था। जो अाँगरेजी रोग का कारण बनी, विी साुंसूकृहतक प नरुत्थान-रूपी उपिार का सािन भी हसद्ध हुई। िमप और आध्याक्तत्मक ज्ञान का रसार स्वामी जी ने अाँगरेजी में िी श रू हकया, क्योहुंक अाँगरेजी अब तक दूसरी मातृ-भाषा का रूप िारण कर ि की थी।

हदव्य जीवन के हसद्धान्तो,ुं हजनकी अब तक बहुत उपेक्षा िो ि की थी तथा इिलोक में रि कर अलौहकक अन भव करने के सन्देशो ुंका स्वामी जी ने सरल अाँगरेजी भाषा को माध्यम बना कर देश के कोने-कोने में व्यवक्तस्थत ढुंग से रसार आरम्भ हकया। पाश्चात्य सभ्यता और सुंसूकृहत के

रभाव में आ कर अपने देश की मिन्ता को भूल कर हजन मित्त्वपूणप उच्चादशों के ज्ञान की अविेलना िो रिी थी, उसका स्मरण लोगो ुंको अनवरत रूप से कराते रिे।

सुंसूकृत के बहिष्कार से स्वदेशी साहित्य पर जो क ठाराघात हुआ, विी मानो पयापप्त न था। हवदेहशयो ुंके आगमन से ऐसे हविार और परम्पराओ ुंको मान्यता हमली हक भारतीय सुंसूकृहत और राष्टरीय आध्याक्तत्मक रहतभा के मूल्यो ुंकी अविेलना िोने लगी। भारतवाहसयो ुंका दृहष्टकोण िी व्यावसाहयक और िनोपाजपन का िो गया था। रूहढ़वादी पररवार जो हवदेशी रोग से अछूते रिे, वे अब भी परम्परान सार ज्योहतष-गणना, नक्षत्र-हवद्या, कमपकाण्ड आहद िारा प रोहित तथा शास्त्री के रूप में जीवन-हनवापि करते थे या वे पक्तण्डत गण थे जो शास्त्राथप करने व व्याकरण के ज्ञाता थे। अतः आध्याक्तत्मकता की सवपत्र द ःखद क्तस्थहत िो गयी थी।

रत्येक सम्भव मागप से, रत्येक हवहि से स्वामी जी ने देश भर को आध्याक्तत्मक ज्ञान–िारा से आप्लाहवत कर हदया। स्वामी जी ने सिस्रो ुंलोगो ुंको जीवन-रदायक तथ्यो ुंईश्वर, िमप, नैहतकता व सदािार तथा आध्याक्तत्मकता के हवसूतृत ज्ञान आहद से पररहित कराया। हनत्य सत्य का हवषय जो देवनागरी हलहप में आबद्ध था, उसका स गम अुँगरेजी में इस तरि रिर हकया हक िाईसूकूल का हकशोर भी हबना हकसी कहठनाई से रथम पाठन में िी समझ सकता था।

उपहनषद्, तात्तन्त्रक हवद्या, योग-सूत्र, श्रीमद्भागवत, रामायण, मिाभारत व गीता और योगवाहसष्ठ आहद के ज्ञान को जन-जन तक पहुँिाने का कायप स्वामी जी लगभग हपछले १५ वषप से कर रिे िैं। उनके िी भरसक रयत्नो ुंका फल िै हक ब्रह्मियप जैसे हवषय को देश के हवद्याथी और तरुण वगप के हलए उहित मित्त्व राप्त हुआ िै। स्वामी जी को अपनी रिनाओ ुंिारा गृिक्तस्थयो ुंको आदशप जीवन-यापन का पाठ पढ़ाने में सफलता हमली। बहुत से गृिस्थी आज भी इसके ज्वलन्त रमाण िैं।

उन्ोनें देश-भर के सामने यि स्पष्ट कर हदया हक मानव-जीवन का एकमात्र लक्ष्य ईश्वर-साक्षात्कार िै। मानव-जीवन का यिी सवोच्च उद्देश्य िै। इस उद्देश्य की पूहतप के हलए व्याविाररक सािना के हवसूतृत ज्ञान का सुंग्रि कर उनको हवहभन्न ढुंगो ुंमें हवभाहजत करके जनता के सामने बडे रभावशाली सीिे-सादे परन्त व्यवक्तस्थत एवुं अन पम ढुंग से उन्ोनें रस्त त हकया।

आध्याक्तत्मक ज्ञान के रिारक, जनता में जाग्रहत लाने वाले अपने इस िमिपारायण कतपव्यहनष्ठा वाले रूप में स्वामी जी असाम्प्रदाहयक, सावपभौहमक हविारो ुंको हवश्व के सब िमों के सामान्य हसद्धान्तो ुंका सोत्सि रिार एवुं रसार करने के कारण सवपरहसद्ध िो गये। इस लौहकक व्यविार को हनयक्तन्त्रत तथा मागप-दशपन करने वाली उस अज्ञात शक्तक्त ने देश के प नरुद्धार का कायप मानो इनके िी भाग्य में हलखा था।

उनको इस क्षेत्र में हकतनी सफलता हमली, इसका ज्ञान िर िष्टा को िै। इसका रत्यक्ष रमाण यिी िै हक देश-भर की जनता में जाग्रहत आ गयी िै हजसने सब िमावलक्तम्बयो ुंको रभाहवत हकया िै। हवशेष रूप से वे मध्यम और उच्च श्रेणी के लोग जो पाश्चात्य सभ्यता के प जारी बनते जा रिे थे, उन पर इस अथक रिार का अहमट रभाव पडा। स्वामी जी के इस रिार का स्वदेश के िाहमपक और सांसूकृहतक साहित्य एवुं परम्परा के यथोहित मित्त्व और मूल्य के रूप में-कल्याणकारी रूप स्पष्ट िो गया।

पूवापग्रि की भावनाएँ सदैव दृढ़ रिती िैं। गिरी हनष्ठाएँ हमटती निी।ं िमापन्ध व्यक्तक्तयो ंको अब भी यि हविार जकडे हुए िै हक शास्त्रीय हवद्या की सम्पहत्त हजस-हतस को निी ंबाँटी जानी िाहिए और उस भाषा में तो इसका आदान-रदान िोना िी निी ंिाहिए जो हक हवदेश से आयी
ि, क्योहुंक रूहढ़वादी हिन्तन के अन सार ये लोग हवदेशी वस्त को अपहवत्र मानते िैं।

स्वामी जी ने िमप और आध्यात्तत्मकता का रिार और रसार अ ँगरेजी में हकया, इसकी कट आलोिना और टीका-हटप्पणी कोई कम निी ंहुई। सुंन्यासी िो कर अहवराम रूप से ऐसे कायप में रत रिने की रवृहत्त से कई लोग सिमत निी ंथे।

इस आलोिना और टीका-हटप्पणी का स्वामी जी पर लेशमात्र भी रभाव निी ंपडा। वे अहिग और अहविल रिे। कारण यिी हक स्वामी जी के पास हनरुद्देश्य हवषय स नने के हलए न समय था और न रुहि। वे अपने समय और श्रम को व्यथप िी निी ंगँवाना ि ािते थे। एक रेमी हवि र िारा सुंगमरमर से हनहमपत भव्य ताजमिल के सौन्दयप पर मोहित िोना मूढ़ता िै। ऐसी कट आलोिना के रहत अहविहलत रिना िी स्वामी जी की त्तस्थहत िै।

भारतीय परम्पराओ ंके रहत उनकी हनष्ठा दृढ़ िै; हकन्त साथ िी समय का माँग के अन सार स िार करने में वे हझझकते निी ंिैं। जब भी वे देखते िैं हक कोई भी परम्परा अब समय की माँग की पूहतप निी ंकरती और रूहढ़ का रूप िारण करती जा रिी िै, वे उसी समय अहतररक्त भावनात्मक बोझ को उठा फेंकते िैं और आवश्यक रूहढ़यो ंकी शल्य-हिहकत्सा करने लग जाते िैं। उनका कथन िै- "सामाहजक और िाहमपक क रीहतयो ंको अपनाने में कोई रयोजन निी ंिै। रगहत के हलए बौक्तद्धक उदारता और अन कूलन-क्षमता की अत्यन्त आवश्यकता िै। भगवान् ने मन ष्य को हवकास-मागप पर सतत गहतशील करने के हलए बनाया िै। यहद आिार-हविार स्वस्थ बनाने के हलए पररवतपनीय स िार हकया जाता िै, तो इसका अथप यि निी ंहक आदशो ंऔर मूल हसद्धान्तो ंका आमूल पररवतपन भी आवश्यक िो जाता िै।"

वे ऐसा भी किते िैं-"अपने हसद्धान्तो ंमें सहिष्ण और पक्षपातिीन बनो, उदार बनो, हवशाल हृदयी बनो। क्ष ि बातो ंसे ऊपर उठो । परम्पराओ, ंक रीहतयो, ंछ आछूत, खान-पान, हतलक-छापो ंजैसी बातो ंसे ऊपर उठो। अन्तभूपत आिारो ंव गिराइयो ंपर ध्यान दो।"

मन स्मृहत स्वयुं में बहुत अच्छी िै। वणापश्रमिमप का आदर िोना िाहिए और िमप-शास्त्रो ंका अन सरण करना िाहिए, पर साथ िी यि निी ंभूलना िाहिए हक वस्त एँ तेजी से पररवहतपत िोती िैं जो प राने हनयमो ंकी व्याख्या नयी हविाररिारा के सन्दभप में करवाना ि ािती िैं। उदािरण के हलए सुंन्यासिमप का पालन करने में स्वामी जी लकीर के फकीर निी ंबने और सुंन्यासी बन्ध ओ ंसे इस हवषय में उनका मतभेद िै।

अब तक यि भ्रम था हक जगत् की दौडिूप की अपेक्षा काषाय वस्त्रो ंकी मित्ता बौक्तद्धक और शारीररक तपस्या में िै। स्वामी जी में इस हमथ्या भ्रम को सिने का िैयप निी ंिै। उनके हविार में सुंन्याहसयो ंको मानवता का गहतशील सेवक और मागपदशपक िोना िाहिए। वे सुंन्याहसयो ं को परामशप देते िैं हक समाज की अहिकाहिक सेवा िेत अपनी रहतभा को सवपतोम खी बनाने का रहतहदन रयत्न करना िाहिए। इस रकार उनके हविारान सार औषहि-ज्ञान, स्वास्थ्य और शरीर-

हवज्ञान, पत्रकाररता, रविन और सुंगीत आहद का ज्ञान रखना सुंन्यासि–मप के हलए असुंगत एवुं ाहिनकर निी ुंि। सुंन्यासी की रहतभा बहुम खी िोनी िाहिए ताहक अहिक-से-अहिक व्यक्तक्त उनके आदशप का अन करण कर सकें। हनष्काम सेवा ित सवाांगीण हवकास िी उसका िरम लक्ष्य िोना ाहिए। आि हनक य ग में ग फा-जीवन का आदशप अन करणीय निी ुंि।

हवश्व-शाक्तन्त हवषय पर हलखे एक अद्यतन लेख के अन सार वे यिाँ तक किते िैं हक सिा ओ,ुं सुंन्याहसयो ुंको वीरतापूवपक जनता के समक्ष आ कर देश के कणपिारो ुंका हनदेशन और मागपदशपन करना िाहिए; क्योहुंक उनकी नीहतयो ुंपर िी जन-कल्याण हनभपर ि। यिाँ तक हक केवल सुंन्यासी िी नवय ग का हनमापण और नयी व्यवस्था को स्थाहपत करने में अपना पूरा जीवन समहपपत कर सकते िैं। शाक्तन्त का साम्राज्य स्थाहपत करने के हलए भी ये िी लोग उपय क्त िैं।

समाज के और लोगो ुंकी अपेक्षा सुंन्यासी हवश्व-कल्याण में पयापप्त योगदान दे सकते िैं। मायावाद के रहतपादक श्री शुंकरिायप ने स्वयुं अपने अल्प हकन्त स्वहणपम जीवन में स्थायी सेवा का कायप हकया। इसीहलए स्वामी जी का भी यिी आह्वान 'ले सन्याहसयो ! जागो! लकीर के फकीर मत बनो। सुंगहठत िो जाओ। आि हनक बैि में यायोहित ढुंग से अपने कतपव्य की पूहतप करो। समय के अन कूल बनो। हमथ्या भ्रम में आ कर शरीर को अक्तस्थ-पुंजर मत बनाओ।"

आज के सभ्य किलाने वाले समाज की ब राइयो ुंका स्वामी जी स्पष्ट एवुं अबाि रूप से खण्डन करते िैं। वे अस्पष्ट रूप से कभी कोई बात निी ुंकिते। समाज में रिहलत छ आछूत, बाल-हववाि, अनैहतक भ्रष्टािार, िरम सीमा की हनरक्षरता, दिेज-रथा, हववाि और अन्य अवसरो ुं पर िन का अपव्यय आहद अनेक ब राइयो ुंको स्वामी जी ने कलुंक कि कर हनन्दा की ि। उन्ोंनें रि सम्भव ढुंग से इन ब राइयो ुंका समाज से बहिष्कार करने का भरसक रयत्न हकया ि।

कई बार वे किते िैं-"यहद आपकी कन्या सेवा और त्याग जैसे हवशेष सस्कार ले कर पैदा हुई ि, तो उसे अच्छी हशक्षा व रहशक्षण देना िी पयापप्त ि। जीवन का पथ उसे अपने-आप हनिापररत करने दो। हववाि-बन्धन के हलए उसे हववश मत करो। ऐसे अपवाद के हवषय में आपको सािस और ब क्तद्धमत्ता से काम लेना िोगा। सदैव सामाहजक क रीहतयो ुंका हशकार मत बनो।"

एक और अवसर पर उन्ोंनें उत्सािपूवपक यि किा- "उपिासास्पद त च्छ बातो ुंमें समय गाँवाने से हकसी भी मिान् उदे्देश्य की राक्तप्त निी ुंिो सकती ि। खान-पान जैसी छोटी बातो ुंपर िी लड मरने से क्या आप िमप की रक्षा कर सकते िैं? जरा ध्यान से सोहिए, यि सब हकतना िास्यास्पद लगता ि? यहद एक िमपशाला में दश ब्राह्मण ठिरे िैं, तो वे दशो ुंअलग-अलग रसोईघर में अपना खाना पकायेंगे। एक उपजाहत का व्यक्तक्त दूसरी उपजाहत के साथ खाना निी ुं खायेगा। ऐसे हनरथपक बन्धनो ुंको हनदपयतापूवपक तोड िाहलए।"

समाज-कल्याण ित अछूतोद्धार, हनरक्षरता-हनवारण, पददहलत वगप के हशक्षण एवुं रहशक्षण तथा हनष्काम सेवा के हलए राष्टरीय सुंस्थान स्थाहपत करना आहद सेवाएँ करना उनकी िाहदपक अहभलाषा ि।

अब रश्न यि उठता ि हक जब उनके जीवन का िरम लक्ष्य आध्याक्तत्मक जागरण ि, तो इन सब हवषयो ुंका उससे क्या सम्बन्ध ? उनके रम ख कायप में इनका स्थान हकस तरि उपय क्त

ौं? इसके उत्तर के हलए म झे दूर निी ◌ंजाना पडा। वास्तहवक आध्याक्तत्मक वृक्तद्ध व रगहत के हलए क छ हनहश्चत क्तस्थहतयाँ एवुं हनहश्चत नैहतक मूल्य राथहमक आवश्यकताएँ ◌िैं। व्यक्तक्तगत व सामाहजक स रक्षा, रि र मात्रा से व्यावसाहयक ज्ञान ईमानदारी से जीवन-यापन और आहथपक स्वतन्त्रता के हलए अत्पन आवश्यक ◌िै। देश में शाक्तन्त व क्तस्थरता का वातावरण, उच्च कोहट का राष्टरीय स्वास्थ आहद तत्त्व देश में आध्याक्तत्मकता की रुहि उत्पन्न करने के हलए अत्यन्त आवश्यक ◌िै।

उच्च आदशों और हनत्य सत्य की राक्तप्त की बात लोगो ◌ंको भला कैसे स ◌ाियेगी, जब हक देश में अराजकता की क्तस्थहत ◌ाे और लोग भोजन, वस्त्र, आवास तथा अन्य आवश्यकताओ ◌ं सम हित व्यवस्था के हलए हिक्तन्तत ◌ाे? ◌ं आध्याक्तत्मक रगहत का अथप ◌ि-ैरेम, एकता, सिनशीलता और समदृहष्ट की राक्तप्त। जब तक स्वाथपूणप जाहत- पाँहत का भेद-भाव और साम्प्रदाहयकता के क्ष ◌ि बन्धन निी ◌ंटूटेंगे और यथोहित क्षेत्र तैयार निी ◌ं◌ाेगा, तब तक आध्याक्तत्मक रिार एक ढोगुं मात्र रिेगा। पररणाम-स्वरूप एक ◌ाहमपक उपदेशक, आध्याक्तत्मक रिारक को समाज-स ◌ाार में भी योगदान देना ◌ाहिए।

स्वामी जी में इन दोनो ◌ंरूपो ◌ंका समिय ◌िै। वे दोनो ◌ंका रिार-कायप इस रकार साथ–ी-साथ करते ◌िैं हक अन्ततः बल आध्याक्तत्मक पिलू पर ◌िी पडता ◌िै।

इन दो तथ्यो ◌ंके अहतररक्त स्वामी जी का एक और मित्त्वपूणप रूप ◌िै और वि ◌िै-सनातन मिप के प नरुत्थान (Revival) की परम्परा को हववेकपूवपक अहनवायप रूप से बनाये रखना।

भारत को भावी हवश्व की आध्याक्तत्मक जननी ◌ाेने के हलए हिन्दू–मप को रभावशाली और जीवन्त शक्तक्त बनाना ◌ाेगा। बुंगाल के स दूर दिेात की एक हवनम्र क हटया में आज से सौ वषप पिले हिन्दू–मप के प नरुत्थान की रबल भावना भडकी। इस भडकती ज्वाला ने दो ◌िजार वषप की आध्याक्तत्मकता और सुंसृकृहत में ऐसी हवद्य च्छक्तक्त का सुंिार हकया हजससे य वा वगप को नयी हदशा हमली और हजसने शताक्तब्दयो ◌ंप रानी जडता व हनिा को दूर कर आध्याक्तत्मक सम्पहत्त के रहत उनकी उदासीनता से उन्ें जाग्रत हकया। पर जब तक जनता पूरी तरि जाग्रत ◌ाे और जडता से अपने को पूणपतया म क्त करे, तब तक वि देदीप्यमान ज्योहत भी हवलीन ◌ाे गयी।

उस सिासी योगी का जीवन हजतना अहिक ज्योहतत था, उतना ◌िी अल्प था। ज्वार-भाटा के रिाि की हदशा तो बदल गयी थी, पर ◌ारा-रिाि को अजस्र बनाये रखने की अत्यन्त आवश्यकता थी।

अतः जनता की मिो-हनिा को दूर कर आध्याक्तत्मकता को हियाशील व गहतशील बनाने के अत्यन्त मिान् कायप के हलए हविाता को मानो स्वामी जी से बढ़ कर और उपय क्त व्यक्तक्त निी ◌ं हमला।

म झे भी ऐसा ◌िी रतीत ◌ाेता ◌िै हक इस उच्च आदशप की पूहतप के हलए स्वामी जी सवापहिक उपय क्त ◌िैं, क्योहुंक सतत कायपशील रिना, हवश्राक्तन्त को पास न फटकने देना उनका एक दैवी ग णिै। देश को इनके रूप में ◌ाहमपक ◌ितना की शान्त, अजस्र परन्त वेगवती ◌ारा हमली ◌िै।

पांदिश अध्याय

मेरी एकमात्र आरिाना

"हजज्ञासओ ंऔर सिाको ंकी हनष्काम सेवा िी मेरे हविार में ईश्वर की सच्ची पूजा िै। हकसी और भगवान् को मैं निी ंजानता। इनकी हजज्ञासा की हपपासा को शान्त करना िी मेरी योग-सािना िै और इसी में आत्म-साक्षात्कार िै। सब-क छ इसी में हनहित िै।"

समग्र भारत में कैलास के हशखर से ले कर कन्याक मारी पयपन्त-श्रद्धाल हिन्द ओ ंकी पूजा, उपासना की पद्धहत एक-सी िी िै और वि िै-झााँझ-मुंजीर, घण्टे-घहडयाल आहद को मि र ताल-सहित बजा कर, शास्त्रान सार श्लोको ंका सस्वर उच्चारण करते हुए कपूर की स गक्तन्धत ज्योहत से सव्यवक्तस्थत ढुंग से देवता की आरती उतारना। पारसी लोगो ंकी उपासना-पद्धहत इससे हभन्न िै। वे पहवत्र ज्योहत के सि ख रभावशाली व्यक्तक्तत्व से सम्पन्न प रोहित तथा गाउन व कैप पिने भक्त जनो ंकी व्यवक्तस्थत सभा में 'जेन्द अवस्ता' में से 'अहुरमज्दा' की महिमा का गान करते िैं। घटनो ंके बल बैठ कर ईसाई लोग 'िे परम हपता!' किते हुए िॉस का आकार बना कर ाहिदपक पूजा-भावना को मूक रूप से अहभव्यक्त करते िैं। पूजा-स्थल मोमबहत्तयो ंके रकाश से जगमगा रिा िोता िै। वाद्यवृन्द पर हृदय को आह्लाहदत करने वाले गम्भीर और मि र स्तोत्रो ंका गायन िोता िै। दूसरी ओर िम देखते िैं हक पहश्चम की ओर म ख हकये हुए इस्लामि–मप का राथी घटनो ंपर बैठ हनमग्न िो करुणावरुणालय भगवान् को ररझाता िै, यदा-कदा मसहजद में आरािना-स्थल की ओर पष्पांजहल व स गक्तन्ध हदखा कर हनिारता िै। इस रकार मक्तन्दर, मसहजद और हगरजाघर में उस एक िी हदव्य शक्तक्त की उपासना हवहभन्न िमापन यायी अपने-अपने ढुंग से सम्पन्न करते िैं।

इसी रकार उस सौभाग्यशाली की-हजसे भगवतूकृपा से अन्तदृपहष्ट राप्त िो गयी िै-पूजा-उपासना की पद्धहत अपने िी ढुंग की िै।

इस रकार स्वामी जी की सवोत्तम पूजा-पद्धहत ने-बाह्य रूप में 'हदव्य जीवन संुघ' का रूप िारण हकया िै।

उनके हविार में मिती पूजा सबको इस तथ्य से अवगत कराना िै हक वे हदव्य शक्तक्त की सन्तान िैं। वास्तहवक हदव्य पूजा का अथप भी यिी िै। योगी श द्धानन्द जी के हलखने के अन सार स्वामी जी का मत िै- "मानव के अन्तर में हदव्यत्व को जगाना िावा उसे हदव्य बनाना िी सचे्चे अथों में मानव-सेवा िै। शेष तो इसी सेवा के अंुग मात्र िैं।"
हदव्य जीवन के इस नाटक में-उत्पहत्त, क्तस्थहत और संुिार के इस अनन्त अहभनय में मन ष्य अपने सत्य स्वरूप को भूल कर एक दास मात्र रि गया िै। मानवता की स प्त हदव्यता को जगाना, माया के भ्रमात्मक आवरण को िटाना तथा नव-राणी को अपने हदव्य आत्म-तत्त्व के दशपन कराना िी स्वामी जी के जीवन का रम ख ध्येय िै। 'हदव्य जीवन संुघ' की स्थापना का मूलमन्त्र यिी िै और इसका परम आदशप भी यिी िै।

स्वामी जी की पूजा-पद्धहत में शास्त्रान कूल उपासना-जैसे अिपना, स्तहतगान, अगर, िूप, दीप, आरती आहद भी सक्तिहलत िैं, पर इनका स्वरूप हभन्न िै। ज्ञान-हनहि से पररपूररत अनेक प स्तकें, व्याविाररक सािना के हलए संुकेत रूप में पररपत्र तथा सिस्रो ंुहजज्ञासओ ंुको हलखे गये अनेक रेरणादायक पत्र िी उनकी पूजा की हवलक्षण सामग्री िै।

रत्येक प स्तक िी मानो देवता को अहपपत की गयी पष्पमाला िै; रत्येक लघ पस्तक िी छोटा-सा स गक्तन्धत प ष्प िै; अिपना तथा मानव को उहत्तहष्ठत करने वाले लेखो ंुका सतत रवाि िी मानो िूप की स गक्तन्ध िै। रोत्सािन, आश्वासन, उपदेश, पथ-रदशपन, हशक्षा और परामशप के रूप में हलखे गये पत्रो ंुका अहवरल रवाि िी मानो (मैं ऐसा िी सोचता हाँ) उपासक की-हजसका हृदय हदव्य रकाश से य क्त िै-अपने इष्टदेव के रहत शाश्वत उिसमयी जय-जयकार िै।

इस संुघ की जो और शाखाएाँ िैं तथा जो हनष्काम सेवक िैं, वे इस भव्य हवश्व-पूजा में भाग्यशाली सिायक िैं।

(२)

हवराट्-पूजा के इस पजारी के हवहशष्ट पूजा-मण्डप की शोभा का तो क्या िी किना िै। इसकी साज-सज्जा तो हवशेष उिेखनीय िै। यि आश्रम परम भाग्यशाली िै। पहवत्र भागीरथी के तीर पर क्तस्थत, हिमालय की पािडी पर बसा हुआ यि आश्रम रकृहत की िीडास्थली-सा रतीत िोता िै। यिााँ पर आये सािको, ंु हजज्ञासओ, ंु अहतहथयो, ंु पररहितो, ंु रशंुसको, ंु भक्तो, ंु तीथप-याहत्रयो ंु तथा रोहगयो ंुतक की भी हनष्काम भाव से सेवा-पूजा िोती िै। हवशेष रूप से सािना-सप्ताि तथा अन्य सामहयक उत्सवो ंुमें केवल कायपकताप िी निी, ंु अहपत स्वामी जी स्वयंु भी अभ्यागतो की सेवा में तन-मन अपपण कर देते िैं।

रख्यात आनन्द-कटीर में लोग भक्तक्त-भावना से इन मिात्मा के दशपन व आशीवापद राप्त करने के हलए आते िैं, पर यिााँ पहुाँचने पर उस वैभवय क्त, प ष्टकाय सन्त के उत्कक्तण्ठत सेवा-व्यविार को देख कर दशपनाथी िहकत िो कर दहविा में पड जाता िै मानो स्वामी जी िी दशपनाथी िो।ंु यद्यहप स्वामी जी की उपक्तस्थहत सदैव हदव्यता और शाक्तन्त रदान करने वाली िोती िै, तथाहप उनकी रत्येक गहतहवहि, रत्येक शब्द और हियाकलाप यिी किता हुआ रतीत िोता िै हक मैं आपका सेवक हाँ।

स्वामी जी जब आश्रम में ठिरे अभ्यागतो–ंुदशपनाहथपयो ंुकी व्यक्तक्तगत रूप से देखभाल करते िैं, तो यि दृश्य अपूवप िोता िै। एक रहसद्ध दाशपहनक अन्ताराहष्टरय ख्याहत-राप्त लेखक, हशक्षक, देश-भर के शीषपस्थ जनहरय सािक और सबसे अहिक तो एक मिान् व हवशाल संुघ के संुस्थापक एवंु रिान िोते हुए भी-इन सबको भूल कर-स्वामी जी अपने-आपको सदैव उस हवराटर स्वरूप का सेवक एवंु उपासक िी मानते िैं।

स्वामी जी की सेवा में तत्पर दजपनो ंुसेवक एक िी संुकेत पर आज्ञा-पालन के हलए सन्नद्ध रिते िैं, तो भी कभी-कभी ऐसा िोता िै हक एक थके-मााँदै अहतहथ के हलए जब तक दूि का हगलास तैयार िो, तब तक स्वामी जी स्वयंु िाथ में दूि का हगलास हलये क टीर से आ कर उपक्तस्थत िो जाते िैं। इतना िी निी ंुफल भी सफेद थैले से हनकाल कर देते िैं। यहद वे देखते िैं

हक दशपनाथी सुंकोिी रकृहत का िै और अपनी आवश्यकताओ ुंको रकट करने में हझझकता िै, तो स्वामी जी उसकी आवश्यकताओ ुंको भाँप लेते और उसके किने के पूवप िी उनकी पूहतप करने को हकसी एक आश्रमवासी को किते तथा सहवस्तर सब बातें समझा देते ताहक उसको हकसी रकार की कहठनाई न िो। सायुंकालीन भ्रमण के समय भी स्वामी जी फल तथा खाने की अन्य सामग्री व प स्तक आहद अपने साथ रखने के अभ्यस्त िैं हजनको देने के हलए वि स्वयुं अभ्यागतो ुंके कक्षो ुंमें लिे जाते िैं। मध्याह्न में भी अपने क टीर को जाते हुए यहद मागप में हकसी सिा को आश्रम िारा परोसी गयी हभक्षा ग्रिण करते देखते, तो उसकी स हविा के हलए वि बन्दरो ुंको दूर भगा देते और उसके िाथ ि लाने के हलए स्वयुं जल देने लग जाते। ऐसे अवसर पर आप हकतना िी उन्ें यि सब करने के हलए मना करें, पर वे सेवा के स अवसर को िाथ से भला क्यो ुंजाने दें!

जब भी कोई भक्त इनको फल और हमष्टान्न भेंट-स्वरूप भेजता, तो तत्काल िी उन सामग्री को उपक्तस्थत दशपनाहथपयो ुंमें बाँटना आरम्भ कर देते। आश्रम के बालक, सेवक, नाई, पोस्टमैन, पहथक, हभक्ष क, यिाँ तक हक यहद मेितर भी विाँ उस समय िोता, तो सबको एक-समान िी भाग हमलता।

हवशेष अवसरो ुंपर जब हवशाल भोज का आयोजन िोता, तो िलवाई को हकसी हवहशष्ट वस्त को बनाये अभी आिा घण्टा िी बीता िोता हक स्वामी जी बच्चो ुंकी भाँहत िैवप खो देते। उनका भगवान् अहिक देर तक रतीक्षा निी ुंकर सकता। माँ गुंगा को शीघ्रता से थोडा-सा अपपण कर हजतना भी तैयार िोता, उसी को ले कर आस-पास बाँटना आरम्भ कर देते िैं।

वे केवल देना िी जानते िैं। बाँटना भी एक िाथ से निी,ु दोनो ुंिाथो ुंसे। बाँटने के उत्सिा में तो वे बचे्च और बडे का अन्तर िी भूल जाते िैं। क छ न कर सकते हुए भी मैंने ऐसा िास्यिजनक दृश्य कई बार देखा। प्यारे प्यारे बच्चो ुंके छोटे-छोटे िाथो ुंको वे इतना अहिक भर देते िैं हक वि अकेला उस कृपा-रसाद को साँभाल िी निी ुंपाता िै, उठा कर ले जाने की बात तो दूर रिी।

एक रूहढ़वादी सुंन्यासी जब इनको अपने भक्तो ुंकी सेवा में तत्पर देखता िै, तो वि एकाएक आश्चयप में िूब जाता िै। अहतहथ यि सिोता िै हक स्वामी जी का समस्त समय और ध्यान उस पर िी केक्तित िै और स्वामी जी उसी का सवापहिक ध्यान रखते िैं। जैसे िी उसको रिने के हलए कमरा हमलता िै, त रन्त िी कई सेवक उसकी आवश्यकताओ ुंपूहतप अथवा स ख-स हविा या आराम पहुँचाने िेत विाँ पहुँच जाते िैं। पानी का रबन्ध उसके कमरे में पिले िी से िोता िै। रकाश के हलए लैम्प तत्काल पहुँचा हदया जाता िै (उन हदनो ुंआश्रम में हबजली निी ुंथी)।

गरमी के हदनो ुंमें त रन्त मच्छरदानी और सदी के हदनो ुंमें एक या दो अहतररक्त कम्बल इत्याहद दे हदये जाते िैं। यहद अहतहथ वृद्ध या रोगी िोता िै, तो एक आरामरद क सी भी तैयार रिती िै। स्वामी जी प स्तकालय के रबन्धक को उसकी रुच्यन सार प स्तक भी देने को किते िैं। ये सब वि उसे भगवत्स्वरूप समझ कर करते िैं और आध्याक्तत्मक साहित्य िारा उसकी आत्मा की भूख हमटाने का पूरा ध्यान रखते िैं। उनके आहतथ्य-सत्कार-भाव में यि सेवा रम ख िै। आगे इसका उदािरण भी रस्त त िै।

बुंगलोर से आये एक भक्त को जब गुंगा जी में स्नान करने से सदी एवुं ज्वा िो गया, तब स्वामी जी रात के समय उसके कमरे में उसका िाल पूछने स्वयुं गये और पूछताछ की हक

उसको ठीक दवाई हमली या निी, ं उसने दवायी खायी भी हक निी ंऔर अब उसका क्या िाल िै? अभी हपछले हदनो ंएक दशपनाथी हकसी कारण अस्वस्थ था और अपने कमरे में िी था। श्री हवश्वनाथ मक्तन्दर की सायुंकालीन पूजा-आरती के पश्चात् कमरे में अपने सामने आिनक आरती का थाल देख कर आश्चयपिहकत रि गया।

स्वामी जी हकसी भी बात से िूकते निी ंिैं। यिी कारण था हक उस रोगी के हलए एक सेवक को हवशेष रूप से हनयत हकया और समझाया हक आरती के थाल के साथ कपूर की एक हटक्की भी ले जाया करे। ध्यान देने की बात तो यि िै हक कई बार दशपनाहथपयो ंमें से कई ऐसे अपररहित िोते िैं हजनसे आश्रम में क छ हदन वास करने के पश्चात् जीवन-भर कभी हमलन निी ंिो पाता।

स्वामी जी की इस िाहदपक अहतहथ सत्कार की भावना की पराकाष्ठा देख कर दशपनाथी हवक्तस्मत िो कर कि उठता िै- "इस हवषय में स्वामी जी के समक्ष िम लक्तज्जत िो जाते िैं। वे मि गृिस्थयो ंको सचे्च अहतहथ सत्कार का पाठ पढ़ाते िैं। अहतहथ-सत्कार की कला में स्वामी जी स्वयुं िी पूणप िैं। िम अन भव करते िैं हक उनसे िमें कई हशक्षाएँ लेनी िैं। गृिस्थी िो कर िम सोिते िैं हक िमारे हलए क छ और सीखने की बात िै िी निी, ं पर स्वामी जी के अहतहथ सत्कार के आदशप को देख कर िमें लगता िै हक िमें इस आदशप-मूहतप का पूणपरूपेण अन करण करना िाहिए।"

आशा िै हक हवषयान्तर के हलए पाठक म झे क्षमा करेंगे; क्योहुंक इस हवषय की ििाप करना मैं आवश्यक समझता हाँ। इस उदािरण से ऐसा आदशप सामने आता िै जो िाहमपक और आध्याक्तत्मक सुंस्थाओ ंके हलए भी अन करणीय िै। जन-सामान्य के रहत यहद हशष्टता, रेम और हवनम्रता का व्यविार हकया जाये, तो जन-सािारण के हलए अन करणीय आदशप बन जायेगा। इन सुंस्थाओ ंका मूल उदे्दश्य भी यिी िै। अतः जनता के सियोग के हलए जनता को रभाहवत करना िै हजससे सुंस्थाओ ंके म ख्य कायप-जैसे जन-सािारण के हृदय में आध्याक्तत्मकता का बीजारोपण और नाक्तस्तकता तथा रमाद का हवनष्टीकरण स गमता से िो सके।

िाहमपक सुंस्थाओ ंके हनष्काम सेवको ंको हवनम्र और स्नेहिल िोना िाहिए हजससे हक नाक्तस्तक और आलोिक का हृदय भी पररवहतपत िो जाये। इस िाहदपक सद्भावना के आदान-रदान में िी आध्याक्तत्मक सुंस्थाओ ंके हदव्य कायो ंका वैभव िै: हकन्त जब ये सुंस्थाएँ रहसक्तद्ध को राप्त िो जाती िैं और अपने आदशप को भ ला देती िैं, िी पररणाम-स्वरूप जनता के रहत सहृदयता समाप्त िो जाती िै। आश्रमवासी दशपनाहथपयो ंकी अविेलना करने लगते िैं और केवल समृद्ध अहतहथयो ंका िी िाहदपक स्वागत िोता िै हजससे वे समदहशपता के आदशप से च्य त िो जाते िैं।

इस आश्रम का अहतहथयो ंतथा दशपनाहथपयो ंके रहत व्यविार लोगो ंकी आँखें खोलने वाला िै, इसमें तहनक भी अहतशयोक्तक्त निी ंिै। आश्रमवासी तथा इससे सम्बक्तन्धत समस्त व्यक्तक्तयो ंको इस बात का गौरव िै। इसका सभी हनष्पक्षता से समथपन करते िैं। स्वामी जी इस बात का कडा हनरीक्षण करते िैं तथा ध्यान रखते िैं। ये सदैव अपने सािको ंको दशपनाहथपयो ंके रहत हवनम्र रिने की हशक्षा देते िैं तथा हसखाते िैं हक सेवा-भाव में सदैव सजगता, दयाल ता, मृद ता तथा तत्परता हदखानी िाहिए। इसी का फल िै हक यिाँ अहतहथयो ंका सिषप स्वागत िोता िै तथा उनके साथ स्नेहिल व्यविार िोता िै।

स्वामी जी सदैव किते िैं-"यहद आप सबमें आत्म-भाव रखने का रयत्न करते िो अथवा सबमें उस वास देव के िी दशपन करते िो **('वासुदेवः सविडमडत')** और 'सवप हवष्ण मयुं जगत्' के हसद्धान्त में हवश्वास रखते िो, तो अपने आिरण में इसी भाव का रकटीकरण करो, निी ुंतो वि हनष्प्रयोजन-सा िी लगता िै हक आप उच्चादशों से मक्तस्तष्क को भरपूर रखें, पर आिरण के समय ाथो ुंको जेब में बन्द रखें।

"यिााँ ठिरने वालो ुंको आध्याक्तत्मकता की राक्तप्त िो अथवा न िो; पर जब तक वे यिााँ ठिरें, उन्ें वास्तहवक शाक्तन्त का आनन्द अवश्य करना िाहिए, क्योहुंक बाद में जब कभी वे यिााँ राप्त िोने वाले इस हदव्य रेम और दया का स्मरण करेंगे तो उन्ें यिााँ से सम्बक्तन्धत हदव्य शाक्तन्त, मााँ गुंगा, सुंकीतपन तथा आध्याक्तत्मक उपदेशो ुंका स्वतः स्मरण आ जायेगा। इसहलए सबकी भावपूवपक सेवा करो। िाहमपक सुंस्थाओ ुंऔर मठो ुंको साक्तत्त्वक भाव, हनष्काम सेवा और हनःस्वाथप रेम का आदशप रस्त त करना िाहिए।"

हनस्सने्दि एक ऐसे व्यक्तक्त को हजसके हृदय में योगी और सुंन्यासी के हलए केवल पारम्पररक या प स्तकीय सुंकल्पना िै, इसमें बहुत क छ हवहित्र रतीत िोता िै। स्वामी जी की आहतथ्य-भावना और आदशप-आिरण का ममप समझने का रयत्न करें, तो स्पष्ट िो जायेगा हक वे यि सब लोकािार िेत निी ुंकरते। हशष्टािार का भाव तो केवल रसुंगवश िै। रिान तथ्य तो यि िै हक उच्चादशप िी उनके सेवा-पूजा-कायों का रेरक िै। कमपकाण्डी की पूजा की भााँहत इनकी आरािना भी सूक्ष्माहतसूक्ष्म भावो ुंको ले कर िी िोती िै, तभी तो उसमें हकसी रकार की साविानी व क शलता-सम्बन्धी त्र हट देखने में निी ुंआती।

सवापहिक मित्त्वपूणप ध्यान केक्तित करने वाली बात तो यि िै हक स्वामी जी अपने इस दयाल व्यविार से व्यक्तक्त का हृदय जीत कर उसको रत्यक्षतः एक नव-उन्नत रूप में पररवहतपत कर लौटाते िैं। उस व्यक्तक्त का दृहष्टकोण एकाएक बदल जाता िै। वे उसकी क्तस्थहत और सामथ्यापन सार उसमें अज्ञात शक्तक्त भर कर हवदाई देते िैं। एक ब क्तद्धमान् और क शल रबन्धक की भााँहत वे आहतथ्य व सेवा के साथ िीनी से हलपटी गोहलयो ुंकी दवाई दे कर उसके आिार-हविार में अल्प हदनो ुंमें िी पररवतपन ले आते िैं।

इस हवलक्षण कृपा का रूप अनोखा िी िै। वि दशपनाथी अब क छ कीतपन- ध्वहनयो ुंको गा लेता िै, क छ आसन और सिारण राणायाम का अभ्यास कर लेता िै और अल्प जन-सम दाय के समक्ष दो बार भाषण दे लेता िै। हलक्तखत जप, आध्याक्तत्मक िायरी तथा स व्यवक्तस्थत हदनियाप का भी क छ अभ्यास करवा हदया जाता िै। ध्यान, स्वाध्याय और राथपना की कक्षा के सुंिालन का रहशक्षण भी राप्त कर लेता िै। सुंक्षेप में जब तक वि अहतहथ हवदाई लेता िै, तब तक वस्त तः वि हदव्य हविारो ुंऔर आध्याक्तत्मक सिानो ुंका रिार-रसार करने का सशक्त कें बनने में समथप िो जाता िै।

स्वामी जी का यि रहशक्षण आि हनक य ग की अद्यतन य द्धकालीन पद्धहत के त ल्य िै। थोडे िी समय में तीव्रता से, गिराई से यि हशक्षण उसी रकार हमलता िै जैसे आकक्तस्मक य द्धकालीन क्तस्थहत में तकनीकी रहशक्षाहथपयो ुंको हवशेष कें िो ुंमें हवशेष रहशक्षण राप्त िोता िै। एक सप्ताि अथवा दश हदनो ुंके अल्प समय में िी अभ्यागत सािक सुंक्षेप में हकन्त स्पष्ट रूप से बहुत-सी बातो ुंका हशक्षण राप्त कर लेता िै।

इस ि त 'सद्यो पूजा' का-जैसा हक मैंने इसको नाम हदया िै-ढुंग उस सुंहक्षप्त पूजा से
हमलता िै जो हक दहक्षण भारत के हनवासी उत्सवो ुंपर अपने स्थानीय देवता की शोभा-यात्रा के अवसर पर करते
ैं। देवता से स सक्तज्जत पालकी मागप में आये भक्तो ुंके घरो ुंके सिख रोक दी
जाती िै। वे भक्त सुंहक्षप्त अिपना कर नैवेद्य और आरती अहपपत करते िैं। तब पालकी आगे बढ़
जाती िै।

जब हकसी ने पररिास में इस रहशक्षण की समानता आकक्तस्मक यद्ध-व्यवस्था के रहशक्षण
सेकी,तोस्वामीजीत रन्तबोलउठे-"िााँ!िााँ!क्योंुंनिी!ुं आजकेयगमेंसुंहक्षप्तऔरमृद
नीहत िी अपनानी िाहिए। परम्परागत पहवत्रता का लोप िो िका िै। समयाभाव के कारण लोग
उसपरकृतिरािकयोबिंहुबषयपकातेसमुंस्यहिोकोरिना
ाहिए।जीवनक्षण-भुंग रि-हदनोंुंऔरवीकेबीतनेकापतिािनीुंिलिता।अतःमैंअपनेपास
आयेभक्तोंुंकोउनकेस्वभावान कूलतथाउनकीक्तस्थहतहवशेषकेअनसारशीघ्राहतशीघ्ररहशक्षणदे
देता हाँ।"

(३)

उनके जीवनोद्देश्य के व्यापक पिलओ ुंको जीवन्त रखने व हवकहसत करने का काम इस सुंघ की कई शाखाओ ुंएवुं
इनके हनष्काम सेवक और उत्सािी, अन रागी भक्त-मण्डली िारा िो
रिा िै। कई सािक, हजनको स्वामी जी में पूणप हनष्ठा िै, व्यक्तक्तगत रूप से इस आदशप के अनसरण िारा जनता के
सामने उदािरण रस्तत कर रिे िैं। इस सत्यता की साक्षी सुंघ की अनेक शाखाएँ और उनके कायप-हवस्तार की सफलताएँ
ैं।

की प काइसकेस्वामीजीके िैंअथकारसवक्षसको ुं
आशातीत लाभ उठा कर िाहदपक कृतज्ञता तथा रशुंसा के रूप में अपने भावो ुंका रकटीकरण कर
रिे िैं। उनके इस िैयपूवपक हकये गये शिो के स पररणाम के रहत िाहदपक आभार को लोगो ुंने
व्यक्तक्तगत रूप में पत्र-व्यविार तथा समािार पत्रो ुंिारा रकट हकया िै।

स्वामी जी ने भी दृढ़ सुंकल्पानसार गुंगा-तट क्तस्थत छोटी-से क टीर में िी रि कर गुंगा
माता के रहत आदर तथा रेम का पररिय हदया िै। कटीर में रि कर भी हदव्य रेम, हनष्काम
सेवा तथा सत्यता की रेरणा देने का कायप देश के कोने-कोने में िी निी,ुं अहपत स दूर दहक्षण
कोलम्बो तथा जाफना, उत्तर में श्रीनगर तथा पेशावर पयपन्त हकया िै। हवहभन्न स्थानो ुंकी हदव्य
जीवन की शाखाएँ आध्याक्तत्मकता का रसार बडे उत्सािा और तीव्रता से कर रिी िैं। इसका रमाण
अनेको ुंसािको ुंिारा स्वामी जी के पास भेजी गयी आध्याक्तत्मक दैनक्तन्दनी व हनयहमत सािना की
जानकाररयााँ िैं।

पूवप में सुंघाई, रुंगून और रॉम में सुंस्थाहपत हदव्य जीवन सुंघ की शाखाओ ुंसे सूफ़ुहतपदायक
कायों के उत्सािवपक रहतवेदन हमल रिे िैं। यद्ध के कारण आवागमन में अवरोि उपक्तस्थत िोने से
आजकल परस्पर सम्पकप स्थाहपत करना कहठन िो गया िै हजससे उनकी रगहत के हवषय में क छ
ज्ञातिोना असम्भव िै।

रुंगून से राप्त समिाार के अन सार विाँ हनत्य-रहत वेद-पाठ, साप्ताहिक गीता कक्षाएँ, रहववारीय यज्ञ–वन का कायपिम लिता ि। पहश्चमी सागर के पार भी फारस की खाडी के पास
बिेरीन (Behrein) तक तथा हब्रहटश ईस्ट अफ्रीका में इससे अहिक उत्सािा से 'हदव्य जीवन सुंघ' की शाखाओ ुंका कायप िल रिा ि।

भारत के रम ख नगरो ुंमें जिाँ के लोग लक्ष्मी के प जारी बन गये िैं, विाँ भी हदवय् जीवन का रसार िो रिा ि और उन लोगो ुंमें आध्यात्क्तमकता का बीज बोया जा रिा ि। अतः िषप का हवषय ि हक बम्बई, कलकत्ता, लािौर (अब पाहकस्तान में), मिास, मैसूर, बैंगलोर, हदिी, पटना, करािी (पाहकस्तान), अिमदाबाद, मेिसाना आहद नगरो ुंमें हदव्य जीवन का रसार िो रिा िै।

पूना, नागप र, बरार, हसयालकोट (पाहकस्तान), अमृतसर, इलािाबाद, रावलहपण्डी (पाहकस्तान), हत्रिी, हत्रविेम, सेलम, मैटूपलायम, क ण्डाप र, कारकल, नरोल, हवशाखापट्टम आहद शिरो ुंमें लोग अगाि हनष्ठा से इस कायप में रुहि ले रिे िैं। क छ केिो ुंमें राहत्र-कक्षाएँ, क छ में िमापथप औषिालय तथा क छ में हनिपनो ुंको भोजन देने के कायपिम सफलता से िल रिे िैं। इस रकार वे सब लोग व्याविाररक आध्यात्क्तमक सािना का कायपिम सम्पन्न कर रिे िैं।

भारत के स दूर नगरो ुंतथा गाँवो ुंमें लोग पारस्पररक वाताप िेत सुंगोष्ठी का हनयहमत रूप से आयोजन करते िैं ताहक स्वामी जी िारा बतायी गयी सािना और हनष्काम सेवा का कायप स िारु और सामूहिक रूप से िो सके। ऐसे लोग हजनके जीवन में सािना नाम का अुंश भी न था, अब ब्राह्मम हतप में ४ बजे उठना, हनिापररत आसन पर बैठ कर माला जपना तथा इष्टदेव के हदव्य नाम का स्मरण करना अच्छी तरि सीख गये िैं।

श्रीमद्भगवद्गीता, रामायण तथा श्रीमद्भागवत आहद जो ग्रन् हवसूमृहत के गनप में थे, उनका पाठ, स्वाध्याय, अध्ययन और मनन आरम्भ िो गया ि, हजससे उन पर वषों से जमी िूल िट गयी ि, ताजी िवा का सुंस्पशप हुआ ि और हफर से नये वस्त्रो ुंमें लपेट कर रखने से उनका िाहदपक स्वागत हुआ ि। सिस्रो ुंसािको ुंने हलक्तखत जप में रुहि ले कर हकतनी िी अछूती मन्त्र-प क्तस्तकाओ ुंके पन्ने-के-पन्ने भर िाले।

हलक्तखत जप की सवापहिक रेरणा स्वामी जी से िी हमली। उसी का पररणाम ि हक म ख्यालय में सािको ुंिारा भेजे गये मन्त्र-प क्तस्तकाओ ुंके बण्डल-के-बण्डल राप्त िो रिे िैं। अभी हपछले हदनो ुंबम्बई की एक सम्भ्रान्त महिला ने करोडो ुंकी सुंख्या में 'राम-कोहट' राम-राम हलख कर ताँबे की पेटी में रख कर भेजा ि।

आसनो ुंके अभ्यास में भी वृद्ध, य वा-सभी वगप के लोग रुहि ले कर आशातीत लाभाक्तित िो रिे िैं। हनत्य-रहत कीतपन तथा साप्ताहिक रविन का आयोजन भी िोता ि। यि सम दाय िी हदव्य जीवन सुंघ के हवहभन्न केिो ुंका रूप िारण कर हदव्य जीवन सम्बन्धी सावपभौहमक तत्त्वो ुंके प ण्य-कायों का सुंिालन कर रिे िैं।

स्वामी जी ने स्वयुं भी अपने इस मित्त्वपूणप कायप के हवस्तार की इतनी कल्पना न की िोगी, पर हविाता ने भी आस री-सम्पहत्त के हवरुद्ध हदव्य जीवन का सशक्त शस्त्र उठा हलया ि।

अतः इसने अहिंसा, सत्य और ब्रह्मियप आहद तत्त्वो ंका आश्रय ले कर िन-दौलत तथा भौहतकवाद के हवरुद्ध अहभयान आरम्भ कर हदया ि।
आध्यात्त्मक साहित्य तथा ज्ञान के रसार ित विनालय एवं पस्तकालय पयापप्त सफल सिान हसद्ध हुए िैं। औषिालयो, ं हिहकत्सालयो ंकी व्यवस्था कई किो ंमें की गयी ि। समस्त किो ंमें कायप स्वेच्छा एवं हवश द्ध रेम से िो रि ि। इन सब हवहवि आयोजनो ंके कि-हबन्द स्वामी जी िैं
जो अपने आश्रम में रि कर भी आध्यात्त्मक ऊजाप-कि की भााँहत सब श्रेय मातृ-शत्क्त को िी देते िैं- "रकृहत िी इस भव्य नाटक की सूत्रिार ि। मैं क्या कर रिा हाँ? मैं तो स्वयं को यन्त्र मात्र समझता हाँ हजसका िियन मातृ-शत्क्त ने हकया ि। िााँ, जब तक उसकी इच्छा ि, मैं इस कायप को गहतमान करता रहाँगा। यहद उसकी इच्छा िोगी, तो इसको जारी रखेगी। मझे इस हवषय में हकंहिन्मात्र भी हिन्ता निी ंि। मेरी इतनी राथपना अवश्य ि हक मैं मृत्य- पयपन्त अपनी इस आरािना और हनष्काम सेवा में संलग्न रहाँ।"

षिोश अध्याय

आिहनक य ग का माध्यम

"सत्साहित्य के हलए परमात्मा को िन्यवाद दें। " –बिूल्यू. ई. िहनपि

कछ हदनो ंपूवप की बात ि हक मसूरी शमशेर नाम का स्वामी जी का एक परम हरय हमत्र आश्रम में आया। वास्तव में वि तीन–िार हदन से अपराह्न वेला में कई घण्टो ंके हलए हनयहमत रूप से स्वामी जी के पास आता था। उनमें से हजन व्यत्क्तयो ंको मैं अब तक हमल ि का हाँ,
नेपाल के एक सम्भ्रान्त पररवार का यि (कमार) सहशहक्षत, ससंसृकृत और सबसे अहिक स न्दर और रीक व्यत्क्तयो ंमें से एक ि। यि राजकमार बत्द्ध और हवनोदि–ित यप-दोनो ंग णो ंसे सम्पन्न िै।

जब यि स्वामी जी से वातापलाप करता, तब बहुत िी आनन्द आता। अतः इन दोनो ंको बातिीत में व्यस्त रखना और हफर उस हविार-हवमशप को सनने में हवलक्षण आनन्द की अन भूहत िोती। बातो–ंिी-बातो ंमें उसने स्वामी जी के हलए तीन सरािनीय कथन कि, हजसने त रन्त मेरा ध्यान उन विनो ंमें अहभव्यंहजत हनणपय की यथाथपता और गूढ़ मित्ता की ओर आकृष्ट हकया।

राजकमार बडा िी गम्भीर, हविारवान् और ितर न्यायहवद् था। िााँ, बात करने का ढंग भले िी सरल और िपल था। अतः जो उत्क्त उसने स्वामी जी के हवषय में किी, उसको मैं सरलता से निी ंभूलूाँगा। जब स्वामी जी उसको नव-हनहमपत मत्न्दर (जो पवपत पर बना था) की ओर ले जा रिे थे, मसूरी शमशेर एकाएक रुक गया और स्वामी जी को हनिारते हुए किने लगा-
"मैं निी ंजान पाया हक आप कौन िैं और वास्तव में आप क्या िै? आप ज्ञानी सन्त िैं, राजयोगी िैं, भक्त िैं, मिा कमपयोगी िैं या संकीतपन-सम्राट् !"

पनः बोला- "कोई भी सन्त जनता में परम भक्त के रूप में या ख्याहत-राप्त योगी या हवख्यात िठयोगी के रूप में रहसद्ध िोता ि। आप इन सबसे सम्पन्न िोते हुए भी एक हवशेष उपाहि से हवभूहषत निी ंिैं। आप एक गहतशील कमपयोगी िैं। उत्तर रदेश और पंजाब के लोग

आपका अहभनन्दन 'सुंकीतपन-सम्राट्' के रूप में करते िैं। आप योग-योगाुंग के भी पूणप ज्ञाता िैं तथा अन्य सभी योगो ुंमें भी हनष्णात िैं। अतः आप एक पिेली िैं।"

ऐसा कि कर वि द हविा से हसर हिला कर म स्कराने लगा।

क छ क्षणोपरान्त उसने गम्भीरतापूवपक किा - "आप क्या अन भव करते िैं, यि क छ निीं ुं मालूम, पर जब मैं आपके इन हपछले दश-ग्यारि वषों के मित्त्वपूणप कायों की जालक्तब्ध के हवषय में सोिता हाँ, तो मेरी यि व्यक्तक्तगत अन भूहत िै हक जो-क छ आपने अकेले कर हदखाया, वि मानवेतर िै।"

हकतनी पूणपता िै उसके हनरीक्षण में और हकतना सम हित समीकरण िै स्वामी जी उपलक्तब्धयो ुंका! पाठक गण हपछले अध्याय में हदये गये तथ्यो ुंके आिार पर इसका सम हित हनणपय कर सकते िैं। स्वामी जी की कृहतयो ुंसे यि हसद्ध िो जाता िै हक स्वामी जी वास्तव में एक पिेली िैं। उन्ोनें जीवनोद्देश्य की पूहतप के हलए प स्तको ुंके माध्यम का ियन हकया िै, हजसमें उन्ोनें अपने हविारो ुंऔर अन भवो ुंको म हित पृष्ठो ुंके माध्यम से अुंहकत कर जनता के हलए स लभ बना हदया िै।

वषों पूवप रगहतशील पाश्चात्य देशो ुंमें बहुत आवश्यक एवुं मित्त्वपूणप सूिना भेजने का शीघ्रगामी सािन सवारी गाडी से बढ़ कर और निीं ुंथा। मरणासन्न व्यक्तक्त-सम्बन्धी सूिना उसके हरय सम्बन्धी को भेजने के सािन की भी यिी सीमा थी। ऐसा भी िोता हक गाडी अभी थोडी िी दूर गयी िोती हक मरणासन्न व्यक्तक्त परलोक भी हसिार जाता।

आज के य ग में यहद कोई व्यक्तक्त इस सािन िारा समािार भेजना िािे, तो उसे मिामूखप किा जायेगा। द हनया उसका उपिास करेगी और उसके कमप को िास्पशप की सुंज्ञा देगी। अब ितिगामी तार दो घण्टे में सम्बक्तन्धत व्यक्तक्त के पास पहुाँि जाता िै और ि तगामी गाडी उस व्यक्तक्त को उसी हदन सन्ध्या-समय उसके गन्तव्य स्थान पर पहुाँिा देती िै। क छ वषों पूवप सुंसार-भर में जॉक लगवा कर रोगोपिार का ढुंग रििलत था। आज इसको कोई भी आजमाना निीं ुंिािेगा।

कायप करने के सािन बदल ि के िैं। रािीन काल के हघसे-हपटे सािनो ुंकी अपेक्षा व्यक्तक्त नये एवुं स न्दर सािनो ुंको िी मित्त्व देता िै। वतपमान य ग की बडी सुंस्थाओ ुंकी भााँहत (स्वामी जी स्वयुं िी एक सुंस्था िैं) स्वामी जी ने अपने लक्ष्य की पूहतप िेत म िणालय के सािन को अपनाया ि। इसीहलए स्वामी जी के कर कमलो ुंने जाग्रहत िेत पाठको ुंतक अपने सन्देश पहुाँिाने और सिस्रो ुंकृतज्ञ पाठको ुंको (सच्चे) शाश्वत स ख की ओर ले जाने के हलए साहित्य को अपना माध्यम बनाया। मानव जाहत म िणालय के आहवष्कारक की हृदय से आभारी िै। इसी के फल-स्वरूप सब देशो ुंके हविारवान् एवुं सामान्य व्यक्तक्त का, जो जीवन-यापन हिताथप िोर करते िैं, परस्पर सिज सम्पकप बना।

म ख्यतः प स्तको ुंिारा िी परस्पर सम्पकप स्थाहपत कर मिान् प रुषो ुंके पररश्रम के मिाफल की राक्तप्त िोती िै। यि मागप सबके हलए ख ला िै। सब िमो सद्ग्रन् जो अब तक अज्ञात थे, इसी माध्यम से सब-काल, सब देशो ुंमें स लभ िो गये िैं।

मिान् आत्माएँ अपनी उच्च सिाना को प स्तको ुंके माध्यम से िी करता के समक्ष रस्त त करती िैं, आपसे वातापलाप करती िैं, अपने अमूल्य हविारो ुंमें अपने आत्मसात भावो ुंएवुं अन भूहतयो ुंका रकटीकरण करती िैं। केक्तम्पस की 'इहटयन आफ िाइस्ट', आगस्टाइन की
'कन्फेशन', सम्राट् ओरहलयस की 'मेहिटेशन', की 'सीररयस कॉल' गीता, बाइहबल आहद
मिान् रिनाएँ िजारो ुंलोगो ुंके हलए अज्ञात िी रिती यहद हवश्व-भर में हिक्तिनबोथम्स और ह्वीलर
की कम्पहनयााँ उनके रसार की माध्यम न बनी।ुं

'हदसम्बर १९४२ का नवम सुंस्करण' या इसी तरि के दूसरे रकाशनो ुंका सम हित मूल्य,
आकषपक हजल्द असुंख्य भाग्यशाली पाठको ुंका जीवन पररवतपन करने व उनके जीवन में रसन्नता,
शाक्तन्त व ज्ञान रदान करने का अरत्यक्ष माध्यम बनी िै। प स्तकें िी मानव को मिान् आत्माओ,ुं
ऋहषयो,ुं सन्तो ुंका सत्सुंग एवुं आध्याक्तत्मक अन भूहत रदान करती िैं। िबूल्यू. िी. केहनुंग के शब्दो ुं
में िमें भी प स्तको ुंके हलए ईस्वर का अहतशय आभार रदहशपत करना िाहिए; क्योहुंक टेनीसन ने
भी हलखा िै हक ईझकर अपनी अहभव्यक्तक्त अनेक माध्यमो ुंमें से प स्तको ुंके माध्यम से करता िै।

थोडा िी हविारने से मालूम िो जाता िै हक स्वामी जी की कृहतयााँ हिम खी तीव्र आकाुंक्षाओ ुं
का पररणाम िैं। रथम तो मानव को जगाने की तीव्र इच्छा, ज्ञान रदान करना, मागप-दशपन में
सियता करना और दूसरे अपनी रिनाओ ुंको रत्येक देश के सभी रकार के लोगो,ुं जीवन के
सभी क्षेत्रो,ुं रत्येक क्तस्थहत और उहिकास के रत्येक स्तर के अन कूल बनाना। सत्य तो यि िै हक
इस माध्यम से इन्ोनें हवश्व की सेवा की िै।

उनकी कृहतयो ुंके हवषय में एक रोिक बात यि िै हक इनसे इनके 'हिन्तक-ऋहष' तथा
जन-नेता के स्वरूप का स्पष्ट ज्ञान िो जाता िै। लेखबद्ध हवषयो ुंमें हजनका ियन उन्ोनें स्वेच्छा से
हकया िै, उसमें जिााँ एक ओर हनत्य तत्त्व की असीमता तथा अहनवपिनीयता की अछूती ऊाँिाइयो ुं
का वणपन हकया िै, विााँ दूसरी भो अन-सािारण के हलए यि भी हलखते िैं हक ज काम का
उपिार क्या िै? हशश का जविार का िोना िाहिए तथा उसका लालन-पालन कैसे हकया जाये ?
उसके द ग्धपान की बोतल की सिाइ तथा ब्रश से भली रकार सफाई करनी िाहिए। एक स्थान पर
तो अक्षक की िटनी बनाने की हवहि भी हलखी िै।

स्वामी जी योगी िैं, वेदान्ती िैं और हवरक्त िैं, हफर उनकी रिनाओ ुंमें उपय क्त
अपासुंहगक बातें कैसे आ गयी िैं? जागृहत लाने वाले इस मिान् प रुष ने क्या सवपत्र आध्याक्तत्मक
ज्ञान का रसार निी ुंहकया िै? हनःसन्देि हकया िै। िमारे मध्य स्वामी जी की उपक्तस्थहत य गान कूल
ैं। इस तपस्वी का सुंन्यास-जीवन-यापन आज के य ग के हलए जीवात्म अथापत् केवल मात्र रोिीन
पररपाटी पर िी आिाररत निी ुंिै। दूरदहशपता और हवशालता के कारण उन्ोनें दो मित्त्वपूणप बातो ुं
का पूरा-पूरा ध्यान रखा िै। रथम यि हक वे जानते िैं हक आि हनक मन ष्य के साथ व्यविार
करना िीहनयो ुंके खाने की गोिी की तरि सरल निी ुंिै।

आज का मानव जहटल रकृहत का िै। उसके अनेक जहटल रूप िैं। जीवन के पारस्पररक
सम्बक्तन्धत हवहवि क्षेत्रो ुंसे आज का मानव इतना सुंय क्त िै हक उनसे वि पृथक् निी ुंिो सकता।
हनःसन्देि वि श द्ध आत्मा िै; हकन्त देि से अपना तादात्म्य मान बैठा िै।

उसका मन हिन्तात र रिता ि ै। शरीरिारी िोने के नाते उसकी स्वास्थ्य-सम्बन्धी समस्याएँ भी
ि,ैं भौहतक आवश्यकताएँ भी िैं और उसे सामाहजक क्तस्थहत का भी ध्यान रखना पडता ि ै। अपने
दैहनक जीवन में वि गृिस्थी की देखभाल करता िै, कायापलय- सम्बन्धी कायों को सम्पन्न करता ि ै। वि सरकार का करदाता भी ि ै। लोकािार भी उसे करना पडता ि ै। सम्भवतः स्थानीय बन्द
गहलयो ंमें सट्टा भी खेलता ि ै।

अब कोई भी आध्याक्तत्मक ग रु अथवा हशक्षक यहद मानव के शरीर-मन- आत्मा-इस हत्रम खी
व्यक्तक्तत्व का तथा जो अथप पर आिाररत आि हनक समाज का एक अंग ि,ै उसके इन हवहवि पक्षो ं
की अविेलना करता िै, तो उसे शीघ्र िी ज्ञात िो जाता ि ै हक उसके समस्त रयत्न हनष्फल हुए
िैं।

स्वामी जी का यि हवश्वास ि ै हक भूखे पेट और वस्त्रिीन व्यक्तक्त पर िमप निी ंलादा जा
सकता। इसीहलए उन्ोनंे हनश्चयत: मानव जाहत की शारीररक, सामाहजक, मानहसक तथा नैहतक
स ख की राक्तप्त को आध्याक्तत्मक ज्ञान की पूवापेक्षाएँ बताया। आत्मा और आत्मोत्तर ज्ञान की
उच्चकोहट की व्याख्या स नने के पश्चात् दाँत-ददप रोगी तो यिी किेगा-"भगवान् के नाम पर पिले
मेरी दाँत की पीडा को दूर करो।

यि क्तस्थहत सामान्य व्यक्तक्त की िै। सामान्य व्यक्तक्त िी सामान्य समाज के बहुत का
रहतहनहित्व करता िै, इसीहलए समाज का बहुमत िी उनका वहणपत हवषय ि ै हजसको उन्ें जगाना
और रेरणा देनी िै। अतः स्वामी जी का साहित्य हशक्षाद, पथ-रदशपक एवंु हवसूतृत ज्ञान से पूणप िै।
स्वामी जी िारा वहणपत हवषयो ंका ज्ञान हवश्व-ज्ञान से पररपूणप ि ै। उनकी कृहतयाँ रेरणा, व्याविाररक
ज्ञान एवंु मित्वपूणप सूिनाओ ंका सार-संुग्रि िैं।

पररणामतः स्वामी जी के साहित्य में मिती हवहविता रिी ि ै। 'जीवन में सफलता के
रिस्य', 'हवद्याथी-जीवन में सफलता', 'स्त्री–िमप', 'पाररवाररक हिहकत्सा', 'दैहनक जीवन में
योग', 'दैहनक जीवन में वेदान्त', 'काव्य में गीतासार', 'रेरणादायक सने्देश', 'मन : रिस्य
और हनग्रि', 'योग के सरल सोपान' आहद प स्तकें अपनी-अपनी हवहशष्टता हलये हुए िैं। ये सब
प स्तकें हवहभन्न व्यक्तक्तयो ंकी हभन्न-हभन्त्र रुहियो,ं हवहभन्न रकृहत एवंु आवश्यकताओ ंके अन कूल िैं।

आज के हशवानन्द-साहित्य की पृष्ठभूहम में उसके हवकास और स्वामी जी के अध्यवसाय का
ध्यानपूवपक हनरीक्षण करें, तो एक स हनयोहजत स न्दर पद्धहत आपको दृहष्टगोिर िोगी। उनकी कृहतयाँ
स्वयंु में एक हवषय िैं हजसका अध्ययन रुहिकर िोते हुए भी ज्ञानवद्धपक और आनन्दरद िै।

स्वामी जी ने मानव के शरीर, मन और आत्मा के उत्थान के हलए बौक्तद्धक ढंुग से लक्ष्य
की पूहतप की ि ै। िम जब उनकी कृहतयो ंका हनरीक्षण करते िैं, तो यि सब रत्यक्ष िो जाता ि ै।

उन्ोनंे अपनी रारक्तम्भक सवपहरय प स्तको ंमें 'योगासन' की रिना करके शरीर-रक्षा के
आदशप को प नजीहवत कर रभावोत्पादक ढंुग से राष्टर के सि ख रस्त त हकया ि ै। प ष्ट शरीर और
स न्दर स्वास्थ्य के मित्त्व को भली रकार जानते हुए स्वामी जी ने आसन-सम्बन्धी इस व्याविाररक
लाभदायक प स्तक की रिना की ि ै। उन्ोनंे स्पष्टतया हलखा ि ै हक मानव का सवपरथम कतपव्य िै

शरीर को हृष्ट-प ष्ट बनाना तथा स्वास्थ्य की रक्षा करना, भले ि◌ी वि सुंसारी ि◌ो या आध्याक्तत्मक पथ का पहथक ि◌ो।

सब उपलक्तब्धयो ◌ुंका मूलिाार स्वास्थ्य ि◌ै। 'ब्रह्मियप का अभ्यास', 'ि◌ठयोग' तथा 'यौहगक ग्मि एक्सरसाइहजज़' (घरेलू यौहगक व्यायाम) ये तीन प स्तकें हलख कर ि◌ै, हवशेषकर हवद्याहथपयो ◌ुंमें स्वास्थ्य-रक्षा के रहत ि◌तना उद्भूत करने में उन्ोनें वायी योगदान हदया ि◌ै।

अब तक पतुंजहल के अष्टाुंगयोग को ि◌ी मित्त्व दे कर आसन, राणायाम और सररक हियाएँ हुआ करती थी।◌ुं स्वामी जी के बौक्तद्धक ढुंग से समझाने से अष्टाुंगयोग के पक्षपात का हनवारण ि◌ो गया। इसके हलए ि◌म उनके आभारी ि◌ैं। उन्ोनें यौहगक छ वाओ ◌ुंको रोगो ◌ुंके ि्ामण से शरीर-रक्षा और स्वास्थ्य को स न्दर रखने के सािन के रूप में स्वीकार हकया ि◌ै।

अब वे हियाएँ केवल भस्म रमाये हुए जटािारी योहगयो ◌ुंकी ि◌ी सम्पहत्त नि◌ी ◌ुंि◌ाँ, बक्तल्क दिात, नगर, शिर, य वक, वृद्ध, स्त्री सबने इनको अपनाया ि◌ै। उपय क्त प स्तको ◌ुंमें 'हद फैहमली ि◌ॉक्टर' (घरेलू दवाइयाँ) भी पाररवाररक हिहकत्सा के रूप में ि◌क्तिहलत ि◌ै; क्योहुंक इसका उद्देश्य भी स्वास्थ्य का स ि◌ार एवुं रक्षा और राष्टर की शक्तक्त ३ स्वास्थ्य की वृक्तद्ध करना ि◌ै।

स्वामी जी ने अपनी अहिकाुंश कृहतयो ◌ुंमें नैहतक हविार और मानहसक शक्तक्तयो ◌ुंके हवकास की सम हित रहिया पर रकाश ि◌ाला ि◌ै। 'मन: रिस्य और हनग्रि' (Mind, Its Mysteries and Control) और 'योगाभ्यास' (रेक्तक्टस ऑफ योगा) तथा 'जीवन में सफलता के रिस्य' (Sure Ways for Success in Life) के पिले और पाँिवें अध्याय में मानहसक सािना का हवसूतृत वणपन हकया ि◌ै।

इन प स्तको ◌ुंके अध्ययन के उपरान्त एक पाठक हलखता ि◌ै हक स्वामी जी की ये तीन प स्तकें- 'Mind, Its Mysteries and Control' अथापत् 'मन : रिस्य और हनग्रि', 'Sure Ways for Success in Life' अथापत् 'जीवन में सफलता के रिस्य' और 'Practice of Bhakti Yoga' अथापत् 'भक्तक्तयोग' - श्रेष्ठतम रिनाएँ ि◌ैं। इन अमूल्य रिनाओ ◌ुंका अध्ययन सब सािको ◌ुंको करना ि◌ाहिए–ि◌ि–ि◌ो वे लोकैषणा के इच्छ क ि◌ो अथवा हवत्तैषणा के अथवा आत्म-साक्षात्कार के।

स्वामी जी ने अपनी रत्येक प स्तक में आध्याक्तत्मक पक्ष का स्पष्ट वणपन हकया ि◌ै। यि तो किने की आवश्यकता नि◌ी,◌ुं उनकी सब रिनाओ ◌ुंमें ि◌ि◌ि◌ो वे बडी प स्तकें ि◌ो या पररपत्र-यि तथ्य ि्ािार रूप में हनहित ि◌ै।

पारम्पररक दृहष्टकोण से भी यहद रिनाओ ◌ुंका हनरीक्षण हकया जाये, तो स्पष्ट ज्ञात ि◌ोता ि◌ै हक स्वामी जी ने भी आत्म-साक्षात्कार के हलए ि◌ली आ रि◌ी पररपाटी के अन सार ि◌ार म ख्य हवहियो ◌ुंका बोिगम्य ढुंग से वणपन हकया ि◌ै। इन ि◌ार भागो ◌ुंसे अहभराय ज्ञान-ज्योहत की राक्तप्त ि◌ेत हिन्दू–िमप के ि◌ार मािन् व उच्चकोहट के मा ि◌ै। रािीन काल के मािन् ज्ञाहनयो ◌ुंकी दृहष्ट में ये िारो ◌ुंि◌ी सवपमान्य पथ ि◌ैं जो मान को सदा के हलए रदान हकये गये।

उनकी 'Practice of Karma Yoga' अथापत् 'कमपयोग का अभ्यास', 'Praete of Bhakti Yoga' अथापत् 'भक्तक्तयोग', 'Practice of Vedanta' अथापत् 'वेदान क

अभ्यास', 'Practice of Raj Yoga' अथापत् 'राजयोग का अभ्यास' और 'Practice of Kundalini Yoga' अथापत् 'क ण्डहलनी योग का अभ्यास' प स्तकें स्थायी रभाव रखती िैं, ऐसा मेरा हनहश्चत मत िै। ये इतनी अमूल्य रिनाएँ िैं, हजन्िोंने आज के सुंसार में स्थायी स्थान राप्त कर हलया िै।

म झे हवश्वास िै हक आगामी पीहढ़याँ भी बहुत अहिक अुंश तक इससे लाभाक्तित िोती रिेंगी। िार मागों में से हकसी एक मागप की उपलक्तब्ध िेत रत्येक प स्तक अपने में पाठ्य-प स्तक के रूप में समूपूणप िै। इन रिनाओ ुंमें स्वामी जी ने हवशेष पररश्रम हकया िै। योग के हवशेष अभ्यास के हलए हजज्ञास आहद से अन्त तक आवश्यक हनदेशो ुंसे अवगत िो जाता िै। उसे हफर हकसी अन्य प स्तक या शास्त्र के अध्ययन की अपेक्षा निी ुंरिती।

इनमें से रत्येक रिना स्वयुं में सवोत्तम शास्त्र िै। उसमें मूल हवषय एवुं स्वामी जी के व्यक्तक्तगत अन भवो ुंका सारतत्त्व वहणपत िोता िै। प स्तको ुंमें वहणपत स्वान भूहतयाँ- स झावो,ुं बहुमूल्य सुंकेतो ुंतथा व्याविाररक अन देशो ुंके रूप में- िमारी सियताथप रस्त त की गयी िैं। वे हवहशष्टताएँ स्वामी जी की िार-पाँि स्मरणीय प स्तको ुंका मित्त्व बढ़ा देती िैं।

आत्म-साक्षात्कार के इन िारो ुंमौहलक योगो ुंकी पूरक व्याख्या उन्िोंने नये हविारो ुंसे सुंय क्त, व्यवक्तस्थत ढुंग से (कई प स्तको ुंमें) हलखी िैं। इस रकार िम देखते िैं हक 'वेदान्त का अभ्यास' (Practice of Vedanta) की प हष्ट 'उपहनषदो ुंके सुंवाद' (Dialogues from the Upanishadas) एवुं 'दैहनक जीवन में वेदान्त' (Vedanta in Daily Life) िारा हुई ि।ै

'भक्तक्तयोग' की व्याख्या के हलए केवल 'भक्तक्तयोग का अभ्यास' (Practice of Bhakti Yoga) िी निी ुंहलखा, बक्तल्क दो और प स्तको ुंकी रिना भी की। वे िैं 'भक्तक्त और सुंकीतपन' तथा 'भजन–सुंग्रि' (Inspiring Songs and Kirtans) राजयोग के हवसूतृत ज्ञान तथा बौक्तद्धक व्याख्या के हलए 'िठयोग' और 'रणायाम-सािना' प स्तकें सामने आयी।ुं 'कमपयोग-सािना' के हलए 'दैहनक जीवन में 'योग-सािना' की रिना कर लौहकक जीवन-यापन के साथ-साथ आध्याक्तत्मक अथवा हदव्य जीवन-यापन का परामशप हदया िै।

सािना-सम्बन्धी मित्त्वपूणप साहित्य की रिना के उपरान्त रिहयता ने हिन्दू–मप िे तीन म ख्य एवुं आहिकाररक मूल हसद्धान्तो ुंका वणपन रस्थानत्रय िै-उपहनषद्, सुंता और ब्रह्मसूत्र में हकया िै। दश रम ख उपहनषदो ुंकी व्याख्या स्वामी जी ने दो भागो ुंइकी िै। तीसरी प स्तक में रणव-दशपन को समझाने के हलए माणूडूक्योपहनषद् की सरल शब्दो ुंमें व्याख्या की िै।

इन रिनाओ ुंको पक्तण्डत और हविानो ुंके ग ण-दोष-हविेिन के हलए निी ुंरिा तया, अहपत एक सामान्य ब क्तद्ध वाला व्यक्तक्त भी इनके अध्ययन िारा उपहनषदो ुंका पररिय राप्त कर सकता िै। श्रीमद्भगवद्गीता का अन वाद भी स न्दर व्याख्या सहित हकया िै। आजकल वे रस्थानत्रय के तीसरे परन्त कहठन हवषय 'ब्रह्मसूत्र' की व्याख्या हलखने में व्यस्त िैं।

िरि मागप एवुं परमोच्च साक्षात्कार नामक भारतीय सुंसूकृहत का दूसरा सुंग्रिालय समझा जाता ि। इसके पश्चात् स्वामी जी ने प राणो ुंपर अपना ध्यान केक्तित हकया। परम पावन श्रीमद्भागवत मिाप राण का सारतत्त्व 'श्रीकृष्ण और उनकी लीलाएँ' (Lord Krishna His Lilas and

Teachings) हित्ताकषपक रूप में रस्त त हकया गया िै। श्रीकृष्ण-उद्धव के हृदयग्रािी सुंवाद को सारुंश-रूप तथा भागवतर्–मप के तत्त्व के रूप में रस्त त करने के हलए सरल, नवीन तथा
उच्चकोहट की भाषा-शैली को अपनाया िै।

'Essence of Ramayana' (रामायण–सार) में वाल्मीहक के अमर काव्य 'रामायण'
की हशक्षाओ ुंको पाठको ुंके हलए रेरणारद बनाने का पूरा रयास हकया िै। रामायण के भव्य पात्रो ुं
के आदशप िररत्र-हित्रण में लेखक ने स्पष्ट पर भावग्रािी वणपन का आश्रय हलया िै।

एक अन्य प स्तक 'मिाभारत की किाहनयो'ुं (Stories From the Mahabharata)
में दाशपहनक एवुं नीहतपूणप हशक्षाओ ुंका सुंकलन हकया गया िै। इस रिना में वीर योद्धाओ ुंके
शौयपूणप जीवन, मानवेतर शौयप, अहवस्मरणीय करुणा, सािस, आत्म-बहलदान और स्वामी-भक्तक्त
जैसी गाथाओ ुंका समावेश हकया िै हजनका वृत्तान्त मिाभारत के मिाकाव्य में आया िै।

'अमृत-मन्न' की पौराहणक गाथा का नवीन ढुंग से रस्त तीकरण करके सा जी ने अपनी
अद्भ त रहतभा का पररिय हदया िै। हवश्व-रेम से ओत-रोत ज्ञान हनक िष्टा ने वेदो,ुं श्र हतयो,ुं प राणो ुं
तथा सभी िमों के रम ख िमप-ग्रन्ो ुंका मगर कर नवनीत-सार को अमृत-रूप में पृथ्वी के रते्येक
व्यक्तक्त के हलए स लभ कर हदया।।।

सुंसृकृत के स्तोत्रो ुंका स न्दर सुंग्रि 'स्तोत्र-रत्नमाला' के नाम से रकाहशत हुआ िै, हजसमें
श्री शुंकरािायप जी की 'आनन्द-लिरी' का अहवकल एवुं सटीक अन वाद हुआ िै। रेरणादायक एवुं
दशपन-तत्त्व से पूणप योगवाहसष्ठ की स न्दर गाथाओ ुंका सुंकलन भी स्वामी जी ने हकया िै। इस
रकार स्वामी जी ने हिन्दू-दशपन के रम ख तत्वो,ुं रम ख हिन्दू–मप-शास्त्रो ुंऔर हिन्दू–मप के िार
मौहलक योगो–ुंइन सभी का समावेश अपनी रिनाओ ुंमें हकया िै। हकसी ग्रन् को अछूता निी ुंछोडा
िै। उन्ोनें इस हवषय-सामग्री को हवहशष्ट एवुं व्यवक्तस्थत ढुंग से अपनी रिनाओ ुंमें दशापया िै।

अब स्वभावतः यि जानने की उत्स कता िोती िै हक स्वामी जी ने हकस हवहि-हवशेष को
अपना कर हभन्न-हभन्न पाठको ुंके हवहभन्न स्वभाव एवुं रुहि के अन सार अपने साहित्य की रिना की
िै? उनका साहित्य सावपभौहमक रूप से ग्रिण करने योग्य िै। साुंसाररक जीवन के सुंघषप में रत िर
रकार के सािक की हवलक्षण ढुंग से जो सेवा स्वामी जी ने अपनी कृहतयो ुंिारा की िै, उसका
हवशे्लेषण उनकी प स्तको ुंके िारा िी करने का रयास करना िोगा।

हशवानन्द-साहित्य िारा सभी रकार की रुहियो ुंऔर रकृहत के व्यक्तक्तयो ुंको सािना और
आध्याक्तत्मक जीवन-सम्बन्धी ज्ञान की राक्तप्त उनकी िाहदपक अहभलाषा के अन सार िी िो रिी िै।
हनष्काम कमपयोगी, भक्त, वेदान्ती और योग के सािक सभी स्वामी जी की प स्तको ुंसे व्याविाररक
ज्ञान िारा लाभाक्तित िोते िैं। स्वामी जी की कमप, भक्तक्त, ज्ञान और राजयोग-सम्बन्धी रिनाएँ सभी
सािको ुंकीिािे वे भक्त िो, िािे ज्ञानी, िािे ब क्तद्धजीवी अथवा कमपयोगी-आवश्यकताओ ुंकी
समान रूप से पूहतप करती िै।

'आध्याक्तत्मक हशक्षण' (रथम एवुं हितीय भाग) प स्तक में दी गयी आध्याक्तत्मक हशक्षाएँ,
'दैहनक जीवन में योग–सािना' (Yoga in Daily Life), 'योग के सरल सोपान' (Easy
Steps in Yoga), 'जपयोग–सािना' (Japa Yoga) आहद प स्तकें भी व्यस्त गृिक्तस्थयो ुंके

हलए सरल, हशक्षारद और उपयोगी हसद्ध हुई ि। 'जपयोग-सिाना' की रिना तो मानव-जाहत के हलए वरदान-स्वरूप िै हजसके हलए मानव उस रेरक रिहयता के हलए अनन्त काल तक आभारी
रिगा। आज के य ग के दाहयत्व-भार से दबे गृिस्थी के हलए आत्मसाक्षात्कार िेत सतत हदव्य नाम-स्मरण की एवुं सरलतम हवहि के आदशप सािन के रूप में 'जपयोग-सिाना' रदान की िै।

हत्रयोपयोगी िार प स्तकें िै- 'स्त्री–मप', 'घरेलू दवाइयााँ' (Family Doctor),
रामायण-सार' तथा 'भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाएाँ'। इन प स्तको ुंमें आदशप गृिलक्ष्मी बनने की हशक्षाओ ुंके साथ-साथ बच्चो ुंको स हशहक्षत बनाने एवुं आध्याक्तत्मकता के बीज बोने के हनदेश हदये िैं। भक्तक्तमती भारतीय गृिलक्ष्मी के हलए दो प स्तकें 'स्तोत्र-रत्नमाला' तथा 'राथपना-मुंजरी' रेरणारद एवुं सफल हमत्र सरीखी िै। नव रकाहशत 'सुंगीत-रामायण' तथा 'सुंगीत भागवतम्' सभी स्त्री, प रुष तथा बच्चीुंके हलए रत्नो ुंकी हनहि त ल्य सुंग्रिणीय िैं।

आज का तरुण एवुं हवद्याथी वगप क छ िी पीहढ़यो ुंके अपने पूवपजो ुंसे हभन्न दृहष्टकोण रखता िै। सभी हवषयो ुंको आाँकने का एक हभन्न दृहष्टकोण िै। जीवन के हकसी भी क्षेत्र में वि आाँख पर पट्टी बााँिकर नेतृत्व का अन करण निी ुंकरना िािता। स्वीकारने से पूवप वि सभी हवषयो ुंकी बौक्तद्धक स्तर पर जााँि करना िािता िै। वि हकसी भी सािना को दैहनक जीवन में हियाक्तित करने के रत्यक्ष रमाण को देखना िािता िै।

क्ष िातप ब्राह्मण की किावत के अन सार स्वामी जी की कृहतयााँ कटे फल की तरि ब वा सािको ुंके अुंग में हगर पडती िैं अथापत् हबना पररश्रम के अभीष्ट सािन की राक्तप्त िो जाती िै। उनकी रिनाओ ुंकी इन हवहशष्ट हवशेषताओ ुंके बौक्तद्धक एवुं वैज्ञाहनक हवहि से हवषय की व्याख्या जो व्याविाररक सामान्य ब क्तद्ध, सािन भूहत एवुं पररज्ञान से पररपूणप िै-कारण िी आज का य वावगप स्वामी जी की खोज में रिता िै तथा स्वास्थ्य, व्यक्तक्तगत समस्याओ ुंऔर आध्याक्तत्मक सािना-सम्बन्धी मागप-दशपन राप्त करना िािता िै।

अत: 'जीवन में सफलता के रिस्य' (Sure Ways for Success in Life), 'योगासन' (Yoga Asanas) और 'ब्रह्मियप–सािना' (Practice of Brahmacharya) के अध्ययन के हलए हकसी भी हवद्याथी को हिकना निी ुंिाहिए। ये प स्तकें रत्येक हवद्याथी के पास िोनी िाहिए, क्योहुंक ये रिनाएाँ गम्भीर दशपन की व्याख्या न करके जीवन-यापन के हलए सन्मागप दशापती िैं।

इन कृहतयो ुंमें स्वामी जी का रम ख उद्देश्य सबको स्वस्थ, शहक म क्तद्धमान् एवुं समृद्ध बनाना िै। हवशेषतया 'जीवन में सफलता के रिस्य' (for Success in Life)) जैसी अन पम प स्तक तो भारतीय सभ्यता एवुं सुंसूकृहत हदव्य आध्याक्तत्मकता के भव्य तत्त्वो ुंिारा मानव को सवपग ण-सम्पन्न बनने के उत्साहित करती िै।

स्वामी जी की ब्रिियप हवषय पर अत लनीय रिना 'ब्रह्मियप-सािना' पर यिााँ पर क छ हवस्तार से रकाश िालना िािता हाँ। इसकी व्याख्या का आिार बौहदक िै। शरीर तथा स्वास्थ्य-हवज्ञान, आन्तररक, मानहसक तथा भावात्मक पश्च की व करते हुए इसमें (ब्रिियप-सािना में) हवहभन्न रयोगो–ुंशारीररक, मानहसक और आध्याक्तत्मक की स्पष्ट व्याख्या की िै।

इक्तिय-हनग्रि के अनेक रूपो ंमें सफलता राप्त करने के हलए लेखक ने अनेक ढंग बताये ी; जैसे सादा और सिज-स्वाभाहवक जीवन-यापन, भोजन-सामग्री का ध्यानपूवपक ियन, सुंगहत में हववेकपूवपक रिना, अध्ययन और मनोरुंजन, द व्यपसनो ंका मूलोचे्छेदन, हविारो ंका श द्धीकरण, नवीन हविारशील दृहष्टकोण, आसनो ंका हनत्यरहत अभ्यास, आसन-हवशेष पर बल देना, म िाएँ, हियाएँ एवुं राणायाम में हनप णता राप्त करना आहद।

मनोहवज्ञान का भी सम हित उपयोग हकया गया िै। सहिारो, ं आत्म-स झावो, ं सकारात्मक तथा हवकासोन्म खी रयोगो ंिारा पाठक को अपनी शक्तक्त के सम हित उपयोग के हलए इक्तिय-हनग्रि तथा शक्तक्त-सुंिय का हनदेश हदया िै। ध्यानाभ्यास, जप और राथपना का समथपन बौक्तद्धक व्याख्या के आिार पर हकया गया िै। 'ब्रह्मियप' की मित्ता पर अपूवप बल हदया गया िै; क्योहुंक यिी तो वास्तहवक तथा मिान् हवहि िै। हनस्सने्देि 'ब्रिियप-सािना' की बौक्तद्धक व्याख्या पर पिले कभी इतना बल निी ंहदया गया।

स्वामी जी की उपय पक्त कृहत की हवसूतृत व्याख्या का हवशेष कारण िै। इसको सािारण समझ कर कोई इसकी उपेक्षा भी कर सकता िै; क्योहुंक आकार और मूल्य में यि सािारण-सी िी िै, पर मेरे हविार में यि प स्तक अपने हवषय के कारण सबसे अहिक मित्त्वपूणप िै। यि समस्त उपलक्तब्धयो ंका आिार िै। ब्रह्मियप के हबना रगहत तथा सफलता के रयत्न हवफल िो जाते ीं। इसके हबना क छ भी सम्भव निी ंिै। इसका रहशक्षण आि हनक भारत की ज्वलन्त माँग िै।

आज के भारत के य वा कल के राष्टर के कणपिार िैं। आज की ब द्ध से पीहडत पीढ़ी के उपरान्त इन्ें िी बागिोर सुंभालनी िै। अतः ब्रिियप की शक्तक्त िी इनको भहवष्य के कष्टसाध्य कायों को सफलतापूवपक सम्पन्न करने की क्षमता देगी। भारत के य वावगप को शक्तक्तशाली, उत्सािी, श द्ध-हृदयी तथा आत्म-हवश्वासी बनाने में स्वामी जी का यि मित्वपूणप योगदान िै। अतः आशा िै हक सभी माता-हपता, सभी हशक्षक गण, सभी उपदेशक तथा समस्त हवद्यालय, कालेज, प स्तकालय तथा वािनालय इस प स्तक को लेकर और रख कर गौरव का अन भव करेंगे।

एक बार जब मैं नवय वको ंकी आवश्यकताओ ंके हवषय में सोि रिा था, तब एक हविार मेरे मक्तस्तष्क में कौंिा। कई बार ऐसा घहटत िोता िै, जब व्यक्तक्त माँगता िै रोटी और उसको हमलता िै पत्थर!

उपिार देने के अवसरो ंपर जैसे जन्म-हदवस, नव-वषप, हववाि तथा उपनयन-सुंस्कार भी मिारा ि नाव श्रेष्ठ प स्तको ंकी ओर िी िोना िाहिए। हसल्क की कमीज, सजप का कोट, कलाई की घडी, फाउणे्टनपैन तथा अन्य अथपिीन उपिारो ंसे प स्तको ंका उपिार िजारग ना अच्छा िै। शेष वस्त एँ तो कभी भी खरीदी जा सकती िैं। ऐसी वस्त एँ सदैव मन ष्य को मोहित करती िैं तथा छलती िैं। भला िो आज की यन्त्रवत् सभ्यता का और ल भावने हवज्ञापनो ंकी कला-ित री का!

'जीवन में सफलता के रिस्य' (Sure Ways for Success in Life), 'ब्रह्मियप-सािना' (Practice of Brahamcharya), योगासन (Yoga Asanas) तथा 'योग-सािना' का दूसरा भाग प स्तको ंजैसे अमूल्य उपिार आजीवन उपयोगी हसद्ध िोते िैं, क्योहुंक हजसको भी यि उपिार हमलेगा, वि अवश्यमेव जीवन पयपन्त आभारी रिेगा। हवद्यालयो ंमें भी वाहषपकोत्सव के

अवसर पर यहद प स्तको ◌ंके ि◌ी प रस्कार हवतररत हकये जायें, तो प रस्कार का मूल्य भी सैकडो ◌ं ग ना बढ़ जाता ि◌ै।

अन्त में 'Inspiring Messages' अथापत् 'रेरणादायी सन्देश' की रिना कर स्वामी जी ने रत्येक वगप के स्त्री-प रुषो ◌ंके हलए लाभदायक सुंकेत, स झाव, हनदेश तथा हशक्षाएँ दी ि◌ैं। इस प स्तक में ि◌ाक्टर, वकील, हशक्षक, माता-हपता, हबबाहित, अहववाहित, वानरस्थी, सुंन्यासी, सेवा हनवृत्त व्यक्तक्त, नारी-वगप, सािक गण, नाक्तस्तक एवुं रोगी आहद सभी के हलए हशक्षारद सन्देश हनहित ि◌ैं।

स्वामी जी की रिनाओ ◌ंकी हवहविता व हवशेषता भी उिेखनीय ि◌ै। हशवानन्द-साहित्य का अध्ययन करने वाले रत्येक व्यक्तक्त को अपनी रुहि एवुं हित का एिा अन चे्छेद अवश्यमेव हमल जाता ि◌ै। सचे्चे सािको ◌ंतथा आध्याक्तत्मक एथ के पहथको ◌ंके हलए तो उसमें आध्याक्तत्मक अन भव एवुं ज्ञान का मानो स्रोत ि◌ी भरा पडा ि◌ै। आत्यक्तन्तक सत्य को दृष्टान्तो ◌ंएवुं कथाओ ◌ंि◌ारा समझने के आकाुंक्षी व्यक्तक्त के हलए भी दो परमोपयोगी प स्तकें ि◌ैं- 'दाशपहनक कथाएँ' एवुं 'योगवाहसष्ठ की कथाएँ'। उन कृहतयो ◌ंमें ि◌मप और दशपन को बडी सरल, स्पष्ट एवुं रोिक शैली में रस्त त हकया गया ि◌ै। गम्भीर हवषयो ◌ंमें रुहि न रखने वाले लोगो ◌ंके हलए ये प स्तकें बडी ि◌ी लाभरद ि◌ैं। वे दो लघ प स्तकें रोिक और हशक्षारद ि◌ोती हुई भी जीवन के ि◌रम सत्य को रभावोत्पादक शैली में समझाती ि◌ैं।

'Lives of Saints' अथापत् 'सन्तो ◌ंके जीवनि–ररत्र' में मिात्माओ ◌ंके जीवन के सुंहक्षप्त वृत्तान्तो ◌ंि◌ारा भक्त लोगो ◌ंको हदव्य जीवन-सम्बन्धी रोमाुंिकारी घटनाओ ◌ंऔर उपाख्यानो ◌ंसे अवगत कराया गया ि◌ै। सन्तो ◌ंके जीवन-यापन को अपना आदशप मानने वालो ◌ंके हलए यि रिना बहुत ि◌ी रेरणारद ि◌ै। इस लघ काय प स्तक में स्वामी जी ने रािीन भक्तो ◌ंके जीवन को आकषपक एवुं रोिनतकारी सरल एवुं स्पष्ट शैली में रस्त त कर उन्ें प नजीहवत कर हदया ि◌ै। उनकी यि सफलता हनश्चय ि◌ी स्तिाप का हवषय ि◌ै।

रुहियाँ हभन्न-हभन्न ि◌ोती ि◌ैं। इसीहलए स्वामी जी ने क छ लोगो ◌ंकी रुहि के अन कूल बनाने के हलए ि◌मप के हवविेन को वातापलाप के रूप में 'Dialogues from the Upanishadas' and 'Conversations in Yoga' (उपहनषदो ◌ंके सुंवाद तथा यौहगक वातापलाप) प स्तको ◌ंमें रस्त त हकया ि◌ै। इस रकार की रिनाओ ◌ंकी यि हवशेषता ि◌ै हक इनमें रश्नोत्तर-शैली को अपना कर सािको ◌ंकी समस्याओ ◌ंऔर शुंकाओ ◌ंका समािान बडे स न्दर रूप से दशापया ि◌ै। हजज्ञास ओ ◌ं िारा हकये गये अनेक रश्नो ◌ंको उत्तर सहित सािको ◌ंतक पहुँिाने के हलए इस प स्तक की रिना की गयी ि◌ै।

रेरणारद पत्रो ◌ंका ि◌मबद्ध सुंग्रि स्वामी जी की कृहतयो ◌ंका पाँिवाँ रकार ि◌ै। यि भी उनकी अमूल्य कृहतयो ◌ंमें से एक ि◌ै; क्योहुंक इसमें देश-भर के रत्येक भाग से हभन्न-हभन्न रुहियो ◌ं के व्यक्तक्तयो ◌ंके पत्र एवुं स्वामी जी ि◌ारा हदये गये उनके उत्तर सुंकहलत ि◌ैं। इसमें सुंशय-हनवारण, समस्याओ ◌ंका समािान, कहठनाइयो ◌ंका हनराकरण, उपािो ◌ंके स झाव, परामशप एवुं रेरणारद हशक्षाओ ◌ंका समावेश स्वतः ि◌ी ि◌ो गया ि◌ै।

स्वामी जी ने काव्य-पक्ष की भी उपेक्षा नि ी ंकी ि ै। गद्य की अपेक्षा काव्य की हवशेषता यि ि ै हक हविारो ंएवं भावो ंको िम सुंहक्षप्त एवं सामाहसक शब्दावली िारा मित्वपूणप तथा रभावशाली शैली में रस्त त कर सकते िैं। कई पाठको ंको यि शैली हवशेष रूप से रुहिकर लगती ि ै। अतः 'गीतासार' काव्य रूप में तथा 'सुंगीत-लीला-योग दशपन और योग कहवताओ ंमें' तथा
'रेरणादायक भजन'- ये प स्तके उपय पक्त हवषय की समूपूहतप करके अनोखे और आकषपक रूप में मिारे सामने आयी िैं।

दो लघ नाटको ंके हलए भी िम स्वामी जी के आभारी िैं। इनके नाम िैं-'ब्रह्मियप िरामा'। यि िार अुंगो ंका उद्बोधक नाटक ि ै तथा दूसरा ि ै 'हदव्य जीवन' जो एक स न्दर लघ एकाुंकी ि ै। 'ब्रह्मियप िरामा' रेरणादायक, उत्सािरद तथा रभावशाली िोने के कारण सभी हवद्यालयो ंएवं य वा सुंस्थाओ ंिारा अहभनीत करने योग्य ि ै। रूहढ़वादी पक्ष का िोते हुए भी इसमें ओजपूणप शैली में असत् पर सत् की हवजय दशापयी गयी ि ै।

'योग और वेदान्त पर रविन' (Lectures on Yoga and Vedanta) का हवषय अन्य प स्तको ंकी अपेक्षा अहिक गम्भीर ि ै। नीले आवरण की इस प स्तक में सुंकहलत हवषय क्तक्लष्ट साहित्य अवगािन करने वाले पाठको ंकी रुहि के अन कूल ि ै।

एक प स्तक की ििाप मैंने अन्त में िी करना उहित समझा ि ै; क्योहुंक इसे मैं िर तरि से एक हवलक्षण कृहत मानता हाँ, इसमें स्वामी जी के व्यक्तक्तत्व और जीवन के क छ पक्ष गिरे स्वर में अहभव्युंहजत िैं। इस कृहत का नाम ि ै 'How to Get Vairagya?' (वैराग्य की राक्तप्त कैसे िो?)। यि म हित रूप में वैराग्य हवषयक एक स्मारक ि ै। इस प स्तक के पृष्ठो ंमें शाक्य वुंश के एक राजक मार हसद्धाथप को राजमिलो ंसे पावन वट-वृक्ष की ओर खींि ले जाने वाली मिान् त्याग और वैराग्य की सूक्ष्म शक्तक्त को अहनवपिनीय ढुंग से अुंहकत हकया गया ि ै।

यि प स्तक हशहक्षत अज्ञाहनयो ंऔर भौहतकवाद के द गप पर एक सशक्त रिार ि ै। आि हनक य ग के अज्ञानान्धकार से काँपती हुई दीवारो ंपर, स्पष्ट शैली में, इन पृष्ठो ंिारा मूक एवं रच्छन्न रूप से आिमण हकया गया ि ै। मैं भी िर समय इस प स्तक का स्वाध्याय करता हाँ। म झे इसके रत्येक शब्द में एक रभावशाली गरजता हुआ नाद स नायी देता ि ै। हकसी एक पाठक के िाथ में जब तक यि एक भी प स्तक रिेगी, तब तक गरजना हनरन्तर स नायी देती रिेगी।

मन की िूतपता, क हटलता तथा िात री, रत्येक क्षण मानव को अपनी कल्पनाओ ंसे भ्रहमत करने की हवहि, इक्तियो ंकी सवपथा अहवश्वसनीयता, उनकी कामनाओ ंऔर रलोभनो ंका हमथ्या स्वरूप, सब हवषयो ंकी नश्वरता, दृश्य जगत् की क्षणभुंग रता- इन सब बातो ंको रभावोत्पादक शैली में िमारे मक्तस्तष्को ंके सि ख रस्त त हकया गया ि ै। जगत् की नश्वरता की तीव्र भावना मन को हनत्य एवं अहवनाशी तत्व की खोज के हलए रेररत िी नि ी ंकरती, अहपत उस तत्त्व में हवलीन िो जाने की उत्कण्ठा िी जाग्रत करती ि ै।

मेरी उत्कट इच्छा ि ै हक 'वैराग्य की राक्तप्त कैसे िो?' (How to Get Var) प स्तक का अन वाद अन्य भाषाओ ंमें भी िो। यि ऐसी कृहत ि ै हजसके हकसी-न-हकसी अुंश का पाठ अनौपिाररक सभाओ ंतथा गोहष्ठयो ंमें अवश्य िोना िाहिए। माया के हवहभन्न रूपो ंएवं उसके िररत्र का सहवस्तर उद्घाटन स्वामी जी की इस कृहत की अद्भ त देन ि ै। इसीहलए यि एक मिान् कृहत

ीं। भले िी इस हवषय पर और प स्तके भी उपलब्ध िो; ं हकन्त हकसी ने भी इस हवषय पर इतनी पूणप एवुं रभावशाली व्याख्या निी ंकी िै।

उनके अनवरत श्रम से हजज्ञास जनता के हलए िर रकार के साहित्य का सृजन हुआ िै। साहित्य की कोई भी हविा उनके कर कमलो ंसे अछूती निी ंरिी। सभी हवषयो–ंमौहलक ग्रन्, सुंवाद, कथाएँ, उपकथाएँ, नाटक, कहवताएँ, भाषण, सन्देश और गीत, िररत्र-हनमापण, रोहगयो ं की सेवा-स शूरूषा, शारीररक व्यायाम, स्वास्थ्य- हवज्ञान, मनोहवज्ञान, औषहि-हवज्ञान, हनष्काम सेवा, भक्तक्त, उपासना, सुंकीतपन- हवज्ञान, जप और अन ष्ठान के प रश्चरण, राणायाम, आसन, षहिया, ठियोग, पतुंजहल का अष्टांगयोग, शुंकर का 'केवलिैत वेदान्त', दैहनक जीवन में वेदान्त का व्याविाररक रूप, वैराग्य, ब्रह्मियप, स्त्री–िमप आहद हवषयो ंकी हनश्चयात्मक रूप से रतीहत कराते ीं।

इस सूिी को देखते हुए इसमें आश्चयप की क्या बात िै जो श्री मसूरी शमशेर ने स्वामी जी को एक पिेली की सुंज्ञा दी; क्योंहुंक स्वामी जी ने हिन्दू–िमप के रामाहणक शास्त्रो ंका सार िी निी ं हदया, अहपत हवश्व-भर के सन्तो ंके जीवनि–ररत्र को भी लेखबद्ध हकया िै। िर वगप के स्त्री-प रुष के हलए उपाख्यानो ंकी रिना की िै। साहित्य की सभी हविाओ ंमें- आख्यान, काव्य, नाटक एवुं सुंवाद-अपने साहित्य का रिवा बिाया िै।

इस हवश्लेषण से स्पष्ट िो जाता िै हक पूवप प रुषो ंिारा की गयी िाहमपक साहित्य की अपूणपता व अिप-पूणपता को स्वामी जी ने अपनी रिनाओ ंमें तकपसुंगत पूणपता में पररणत कर हदया ीं।

सौभाग्य का हवषय िै हक राष्टर के हविारशील लोग उनकी कृहतयो ंके मित्त्व को पििान रिे ीं। पररणामतः ये कृहतयाँ अब सवपहरय िो गयी िैं। आध्यात्मक जीवन-यापन और सािना-सम्बन्धी स्वामी जी के हविारो ंका केवल समकालीन भारतीयो ंपर िी निी, ं हवदेहशयो ंपर भी अरहतम रभाव पडा िै।

(२)

स्वामी जी की कृहतयो ंके हवषय में जो कछ भी लाभरद तथा रोिक रूप मैंने अवलोकन हकया, उसे पाठको ंके सामने रस्तत हकया िै। उनके साहित्य के मित्त्व की एक और हवशेषता िै हजसे सम्भवतः हकसी और ने न देखा िो। मेरा आशय उनकी पस्तको ंके आकार-रकार, हवषय-हवन्यास तथा साज-सज्जा से िै। उनकी रिनाएँ सूक्ष्माकृहत में उनकी योजना एवुं कृहतयो ंकी हवहविता को दशापती िैं। पररणामतः एक हवशेष हवषय की पस्तक में भी ऐसे सामान्य उपहवषय िोगें हजससे हभन्न-हभन्न रकृहत वाले पाठको ंकी रुहियो ंएवुं आवश्यकताओ ंकी पूहतप िो जायेगी।

समपपण की पररपाटी-हजसको स्वामी जी असािारण शैली में हलखते िैं-के पश्चात् कछ सुंस्कृत के सन्दर श्लोक अँगरेजी अन वाद-सहित हलखे हमलते िैं हजससे पाठक को बडा आनन्द व रेरणा हमलती िै। पृष्ठ पलटते िी ईश-स्तवन अथवा मातृ-शक्तक्त की सन्दर राथपना िोती िै। उनकी रत्येक पस्तक में आप सदैव ऐसी मि र एवुं आत्ममयी अहभव्यक्तक्त पायेंगे।

इसके पश्चात् उनके िस्तहलक्तखत रेरणारद पत्र की म हित रहतहलहप भी िोती िै। भूहमका में पाठक को जाग्रत िोने और कमपशील बनने का आग्रि एक रभावशाली भाषण के रूप में िोता िै।
हफर प स्तक का म ख्य भाग रारम्भ िोता िै। मूल हवषय से सम्बक्तन्धत हवहवि आध्याक्तत्मक पिलओ ुं पर हवहभन्न अध्याय िोते िैं।

प स्तक का समापन करने की भी स्वामी जी की अपनी िी शैली िै। इसमें कई पररहशष्ट िोते िैं हजसका अहभराय सािको ुंको हवशेष सने्देश या क्तस्त्रयोपयोगी उपदेश तथा हदव्य जीवन के हवहि-हनषेि को लेखबद्ध करना िोता िै। 'योग-माला' के अन्तगपत रश्नोत्तर-माला िोती िै। सामहयक मिात्माओ ुंका सुंहक्षप्त पररिय, आध्याक्तत्मक दैनक्तन्दनी तथा सुंकल्प-पत्र का भी समावेश िोता िै।

प स्तक के अन्दर किी ुंओजपूणप काव्यमय गद्य भी हलखा िोता िै तथा किी ुंस्वामी जी के कथनो ुंका ियन भी अुंहकत िोता िै। क छ तथ्य वणपमाला के िमान सार वहणपत िोते िैं। ऐसी सन्दर व्यवस्था हवशेष रूप से उपयोगी िै; क्योहुंक इसमें म ख्य आदेश-हनदेशो ुंको स्मरण रखने का सरल एवुं स न्दर ढुंग हनहित िै।

हनष्कषप यि िै हक स्वामी जी की एक िी प स्तक अपने में पूणप प स्तकालय िै क्योहुंक इसमें हवहवि रूपो ुंका समावेश िोता िै-जैसे स्तोत्र, उद्बोिन, राथपना, रेरणादायक एक-दो पत्र, दो जीवन्त सने्देश, भूहमका या आम ख में छोटा-सा भाषण, हवशेष हशक्षा, कहवता, वणपमाला-मिान सार योग-वणपमाला, हवहि-हनषेि, सन्तो ुंका जीवन-िररत्र और सूत्र आहद।

(३)

एक बार एक हजज्ञासु ने अपने पररहित से, जो िाँसमख भगवद्भक्त था, यि पूछा-"आपके देवता के अनन्त मख और अनन्त िाथ क्यो ुंहदखाये जाते िैं?" भक्त ने सुंयत िो कर उत्तर हदया- "क्या तम निी ुंजानते हक सुंसार-भर के लाखो ुंलोग, लाखो ुंवस्तओ ुंकी माँग ले कर उनके सामने हदन-रात यािना करते िैं। करुणा-वरुणालय भगवान् भक्तो ुंकी राथपना के पूवप िी कृपावृहष्ट कर देते िैं। यहद वे केवल दो िाथो ुंसे उनकी आवश्यकताओ ुंकी वस्त देते, तो रलय-काल तक देने के काम में िी समय बीत जाता। अतः अपनी दया को लटाने तथा सबके सब मनोरथ पूणप करने के हलए िी उनको अनन्त िाथ िारण करने पडते िैं। अब भी आप समझ पाये हक निी ुं?"

अब भी स्वामी जी घोर पररश्रम के िारा देश-भर में पस्तको ुंकी बाढ़ ला कर सिस्रो ुं व्यक्तक्तयो ुंको सफलतापूवपक जाग्रहत और ज्ञान का सने्देश दे कर भी सन्तष्ट निी ुंहुए। ऐसी आध्याक्तत्मक साहित्य-सेवा एक सामान्य व्यक्तक्त के सामथ्यप से बािर की बात िै। दश वषों की अल्पावहि में स्वामी जी ने इतना अहिक कायप हकया जो दश जन्मो ुंमें भी कोई निी ुंकर सकता।

अपने दीन-िीन भाइयो ुंको तृप्त करने की लालसा से उन्ोनें और भी सुंहक्षप्त साहित्य की रिना की िै। उनका हविार िै हक बडी-बडी पस्तकें सम्भवतः सब तक न पहुँि पायें; क्योहुंक रत्येक व्यक्तक्त पस्तको ुंको खरीदने में समथप निी ुंिोता अथवा हकसी पस्तकालय का सदस्य भी निी ुं बन सकता। एक औसत वगप का श्रहमक अपनी छोटी-सी गृिस्थी का जीवन-हनवापि िी कहठनाई से

कर पाता ि◌ै। ऐसे व्यक्तक्तयो ◌ुंके हलए स्वामी जी ने छोटी-छोटी प स्तकें हलखी ि◌ैं हजनमें सदिाार, सिाना एवुं सेवा का सार ि◌ै। यि साहित्य हन:श ल्क हवतरण के हलए ि◌ै।

बहुमूल्य प स्तको ◌ुंको रसाद रूप से हवतरण करने के काम को सुंस्था के कायपकतापओ ◌ुंने हन:श ल्क रखा ि◌ै। इस रकार के ज्ञान-दान अथवा ज्ञान-यज्ञ को स्वामी जी बहुत मित्व देते ि◌ैं। इसका रत्यक्ष रभाव जनता पर असािारण रूप से पडा ि◌ै। देश के स दूर भागो ◌ुंमें इसका रसार अरत्याहशत रूप से हुआ ि◌ै। उनके व्याविाररक उपदेश, म हित पत्रक के रूप में आध्याक्तत्मक ज्ञान की मसाल ले कर, जगत् के कोने-कोने में जा कर अज्ञानान्धकार का हवनाश करने में पूणपतया सफल हुए ि◌ैं, हदव्य जीवन-यापन के हलए नयी हदशा जनता को हमली ि◌ै।

एक समय एक दशपनाथी स्वामी जी से बोला- "आध्याक्तत्मक ज्ञान के रिार-रसार का आपका ढुंग हनश्चय ि◌ी आश्चयपजनक ि◌ै। 'शुंकरन नायर' (हवशेष रूप से वि पाश्चात्य जगत् के हवषय में ि◌िाप कर रिा था) के 'काफी क्लब' की तरि आपके भी आध्याक्तत्मक पत्रक सवपत्र फैल ि के ि◌ैं। जिाूँ-किी ◌ुंभी मैं गया, हदव्य जीवन सुंघ की प स्तकें विाूँ पिले ि◌ी पहुूँि ि◌ की थी।◌ुं"

कि ा जाता ि◌ै हक जब ि◌िमा में हवद्यमान स्वणापगार पर ि◌िाप ि◌ो रिी थी, तो एक आदमी ने जोर दे कर इसे असम्भव बताया। उसके इस हनश्चयात्मक वक्तव्य पर रश्न करने पर उसने तत्काल उत्तर हदया- "मैं हनहश्चत रूप से जानता हूँ हक ि◌िमा में स्वणप निी ◌ुंि◌ै; क्योहुंक यहद विाूँ स्वणप ि◌ोता तो अ◌ुँगरेज पिले से ि◌ी विाूँ उपक्तस्थत ि◌ोता।" इसी रकार जिाूँ-किी ◌ुंभी जप, कीतपन, आसन, राणायाम, गीता का स्वाध्याय तथा हलक्तखत जप का आध्याक्तत्मक रूप से अभ्यास ि◌ो रिा ि◌ा, तो ि◌म हवश्वासपूवपक कि सकते ि◌ैं हक विाूँ हदव्य जीवन सुंघ की पहत्रका हवद्यमान ि◌ै।

'हदव्य जीवन' पहत्रका ि◌ारा अपने स न्दर व उत्तम लेखो ◌ुंमें स्वामी जी अपना सन्देश सामान्य, व्यस्त और अल्प आय वाले व्यक्तक्त तक पहुूँिाने में सफल रिे ि◌ैं। इस पहत्रका का सबसे बडा लाभ यि ि◌ै हक यि सबके हलए राप्य ि◌ैं ि◌ो वि २००० रुपये माहसक आय वाला अफसर ि◌ै अथवा १० या १२ रुपये मानहसक आय वाला बस-कण्डक्टर अथवा ि◌ोटल का नौकर।

इस पहत्रका तक ि◌ी स्वामी जी की आध्याक्तत्मक सेवा सीहमत निी ◌ुंि◌ै; अहपत दैहनक, साप्ताहिक तथा माहसक पहत्रकाओ ◌ुंके हलए, भी वे लेख हलख कर भेजते रिते ि◌ैं। उन्ोंने लेख अथवा सन्देश भेजने की राथपना को आज तक निी ◌ुंठ कराया। नयी 'ज्ञान-सूयप-माला' जन-जाग्रहत के हलए उत्सािविपक तथा अहत-उपयोगी ि◌ै। उनकी उवपर लेखनी से रहित ये अनेको ◌ुंरिनाएँ आध्याक्तत्मक ि◌न ष के तूणीर से हनकले शक्तक्तमान तीर सरीखी ि◌ैं हजनका एकमात्र लक्ष्य अहवद्या, माया, अन्धकार, हनराशावाहदता, नाक्तस्तकता तथा अिमप का सुंिार करना ि◌ै।

सप्तदश अध्याय

पाश्चात्य जगत् से रहतध्वहन

मानव-जीवन के ताने-बाने को मूक भाग्य-देवता ब नता ि ै, पर उसको रुंगता ि ै मानव स्वयुं। कोई हवरला मन ष्य ि ी उस ि ादर को हनष्कलुंक रखने में सफल ि ोता ि ै। ज लो भी अपने ािगो ुंके रुंग स्वयुं ि नते ि ैं।

दो दशक पूवप स दूर पूवप में जब उस य वा ि ाक्टर के हृदय में तीव्र वैराग्य की ज्वाला भडकी, हजसने उसे मातृभूहम भारत में भ्रमण करने वाला पररव्राजक बना हदया, तब उन्ोनें मिोपदेश करने, आध्याक्तत्मक साहित्य हलखने तथा परमाथप के हलए हकसी सुंघ की स्थापना के हवषय में स्वप्न तक में भी कल्पना न की थी। उनकी एकमात्र आकाुंक्षा हकसी एकान्त, हनजपन प ण्य-स्थली के अज्ञात कोने में ईश्वर-ध्यान में लीन ि ो जाने की थी।

गरमी में झ लसा देने वाले दहक्षणीय मैदानो ुंव भारतवषप के हनिले भागो ुंको पार करने के पश्चात् वि एकाकी पहथक हिमालय की तलिटी में पहुँाँा। हिक्सल के दयाल पोस्टमास्टर श्री दस्तार ने उनको ि ररिार तक का हटकट ले कर हदया। अतः वि ि ररिार पहुँाँ गये।

ररिार से स्वामी जी ने पैदल ि ी ऋहषकेश के हलए रस्थान हकया। एक बार जब वि मागप में किी ुंहवश्राम कर रिे थे, तो एक घटना घटी जो हक समयान्तर के कारण हवहित्र एवुं अहवश्वसनीय लगती ि ै। वि घटना स्वामी जी के वतपमान जीवन से एकदम हवपरीत ि ै। जुंगल के ऊबड-खाबड मागप में एक ताँाँगा खडखड करता हुआ आया। जैसे ि ी वि ताँाँगा विाँ से हनकला जिाँ वि य वा त्यागी बैठा हवश्राम कर रिा था, तो ताँाँगे में बैठे यात्री ने एक हसक्का भेंट-स्वरूप उस यवा त्यागी की ओर फेंका। तीव्र वैराग्य और आध्याक्तत्मक आकाुंक्षा में उिहसत उस य वा त्यागी ने उस हसक्के पर दृहष्ट तक निी ुंि ाली और आगे बढ़ गया।

तो यि थी उनकी वैराग्य की पराकाष्ठा तथा सुंसार और साुंसाररक उपिारो ुंसे हवरक्तक्त हजससे उनके सिाना-जीवन का रारम्भ हुआ। यहद विी त्याग-वैराग्य की ज्वाला उनके हृदय में ििकती रिती, तो कि ा निी ुंजा सकता हक सुंसार हकतने उच्चकोहट के आध्याक्तत्मक वैभव से वुंहित रि जाता; पर मानवता के सौभाग्य से ऐसा न हुआ और उन्ोनें अपने स्वभाव का रूपान्तर कर हदया।

अब स्वामी जी गुंगातट पर क्तस्थत अज्ञात स्थल ऋहषकेश पहुँाँ गये, हजसे वैरागी और भगवत्साक्षात्कार के आकाुंहक्षयो ुंके अहतररक्त और कोई निी ुंजानता था। वि एकाकी, अपररहित और सवपथा आश्रयिीन थे। वि इस ओर की भाषा तया आिार-हविार से सवपथा अपररहित थे, तभी तो पिले ि ी हदन हमट्टी के क ल्हड में दूप पी कर क ल्हड दूकानदार का ि ी समझ कर उसे वापस करना िािा। दूकानदार को आश्चयप भी हुआ और खीझ भी हुई; क्योहुंक ऐसे हमट्टी के बतपन एक बार रयोग में आने पर अश द्ध माने जाते ि ैं। अगले क्षण उसने क ल्हड को फेंक देने का आदेशात्मक सुंकेत हकया। उस हवक्तस्मत तथा ि तरभ सिाक ने जैसा उसे इुंहगत हकया गया, वैसा िी हकया और साथ ि ी स्वयुं को साविान भी हकया हक इस नये स्थान में उसे अभी बहुत क छ सीखना ि ै।

स्थायी आश्रय न िोने के कारण वि मायाक ण्ड के हनकट एक िमपशाला के ख ले बरामदे में राहत्र व्यतीत करते थे। कालान्तर में जब उन्ें स्वगापश्रम में एक क टीर हमली तो उस समय उनके पास हनजी सम्पहत्त के नाम पर एक लोटा और एक कम्बल िी था। स्वगापश्रम में वास कर वि गम्भीर सािना में हनमग्न िो गये। भोजन के हलए वि विााँ के अन्नक्षेत्र पर हनभपर करने लगे। उनके जीवन का यि पक्ष भी उल्लेखनीय िै, क्योहुंक यि उनके जीवन का मौहलक उत्क्रमण था हजसमें क छ समयोपरान्त सवपथा अरत्याहशत तथा नाटकीय पररवतपन आया।

अब स्वामी जी के उस हित्र का अवलोकन करें जो उनकी आज की अहत- व्यस्त हदनियाप
तथा उस मिान् कायप में दृहष्टगोिर िोता िै हजसे हविाता ने मानो स्वामी जी के हलए अलग रख
छोडा था। उनके आक ल हृदय के स्पन्दन में भगवत्साक्षात्कार की अदम्य आकाुंक्षा, आत रता तथा
छटपटािट पराकाष्ठा पर पहुाँि गयी। ईश्वर का साक्षात्कार हुआ। उस हदव्यानन्द की लिररयााँ इतनी
अहिक बढ़ी ुं जो सूदूर, यिााँ तक हक सम ि पार के देशो ुं में पहुाँि गयी।ुं

भले िी िमें हवश्वास न िो, पर इसी के पररणाम स्वरूप हदव्य प नजीवन का बीज यूरोप के
हृदय में रोहपत हुआ और विी आध्याक्तत्मकता के पौिे के रूप में अब फल-फूल रिा िै। विााँ
(यूरोप) के हजज्ञास -हजनकी सुंख्या हदन-रहत-हदन बढ़ती जा रिी िै-स्वामी जी को अपना सद्ग रु
मानते िैं तथा उनके सद पदेशो ुं का पालन करते िैं। वे अन्य जनो ुं को घोहषत करते िैं हक स्वामी
जी उद्धारक, य ग-हवभूहत तथा रािी हदशा के हक्षहतज में उहदत उस ज्योहत-नक्षत्र की भााँहत िैं जो
सतत पथ-रदशपन करता रिता िै।

वे अपने हमत्रो ुं को श्रद्धा तथा हवश्वासपूवपक उस रकाशमय नक्षत्र का अन सरण करने को
किते िैं। स्वामी जी के हदव्य जीवन तथा हदव्य रेम के सन्ेदेश को, उनके सावपभौहमक तत्वो ुं तथा
योग और सािना के रिार-कायप में पाश्चात्य देशो ुं के उन हवज्ञास ओ ुं की हनष्ठा व उत्सािा देख कर
उसकी त लना में अपने देशवाहसयो ुं के मन्द हवश्वास को देख कर ग्लाहन िोती िै।

उदािरण के हलए स्वामी जी की 'क ण्डहलनी योग' प स्तक ने योग-हवज्ञान की अहितीय
दहशपका के रूप में अपनी अमूल्य व्याविाररक मित्ता से श्रीमान् िैरी हिकमैन को इतना अहिक
रभाहवत हकया िै हक लैटहवया के इस स सुंसूकृत भि प रुष ने उस (क ण्डहलनी-योग) का पूणप
मनोयोग से सहित्र सोदािरण ताहलकाओ ुं सहित अहवकल अन वाद करने में अपने िमत्कारक िैयप
और पररश्रम का अपूवप पररिय हदया िै। श्ेरेय की बात तो यि िै हक श्रीमान् हिकमैन ने सारी
प स्तक को टाइप करने में अथक पररश्रम हकया।

पिले-पद्धहत में हिहश्चयन िमप के अहतररक्त अन्य हकसी भी िमप से सम्बक्तन्धत प स्तक के
म िण की अन महत निी ुं िै। यिी कारण था हक प स्तक को रकाहशत करने के हलए उन्ें टुंकण का
ढुंग अपनाना पडा। श्रीमान् हिकमैन ने अपनी श्रद्धा-भेंट के रूप में उस अन वाद की दो
रहतहलहपयााँ साइक्लोस्टाइल (िि-लेक्तखत्र) करके स्वामी जी को रेहषत की,ुं जो आनन्द-क टीर के
प स्तकालय में-सूदूर पहश्चम में स्वामी जी के अहमट रभाव के रमाण का पररिय दे रिी िैं। पाश्चात्य
सभ्यता का पौवापत्य सभ्यता के सूयप के हलए यि अहभनन्दन-स्वरूप िै। स्वामी जी उत्स क
दशपनाहथपयो ुं को इन रहतहलहपयो ुं का दशपन करा कर स्वयुं िहषपत िोते िैं तथा रेररत करते िैं हक
हदव्य जीवन सन्ेदेश के रहत सबको इतना िी उत्सािा िोना िाहिए।

श्रीमान् हिकमैन सब रकार के आसन, म ◌ा, बन्ध, हिया और राणायाम में अहिकार राप्त करके तथा वैहदक सुंसूकृहत का गिरा अध्ययन-मनन कर अब हदव्य ज्ञान तथा आध्याक्तत्मक सुंसूकृहत का रिार करने में भगीरथ पररश्रम कर रि ◌ैं। हिमालय की तलिटी की भाग्यशाली
पिाहडयो ◌ुंके गहतमान हदव्य प त्र की प कार के रत्य त्तर में श्रीमान् हिकमैन हजज्ञास ओ ◌ुंके हशक्षण तथा रहशक्षण ◌ारा ◌न-वैभव में उन्मत्त पाश्चात्य जगत् में योग का रिार कर रि ◌ैं।

लैटहवया के उच्च समाज ने पाश्चात्य सुंसूकृहत के सहिय और अहभहनवेश से सिाना और हनष्काम सेवा-भाव को गम्भीर रूप से अपनाया ◌ै। य जी के सद पदेशो ◌ुंसे रेररत तथा उनके ग्रन्ो ◌ुं से रभाहवत ◌ो कर लैटहवया की योगी को रबल अन मोदन हमला ◌ै, हजससे वि हनरन्तर रगहत-पथ पर अग्रसर ◌ोती ◌ि हनकट भहवष्य में रवृहत्तयो ◌ुंके पररवतपन की हवश्वासपूणप आशा कर रिी ◌ै। स्वामी जी के साहित्य के सम्पकप में आ कर विाँ के सिाको ◌ुंके जीवन में इतना ◌मत्कार क हवकासोन्म खी पररवतपन हुआ ◌ै हक उन्ोनें आत्म-हवकास के क्षेत्र में मिान् उपलक्तब्ध की राक्तप्त का दृढ़ हनश्चय कर हलया ◌ै। स्वामी जी के साहित्य तथा उसकी अिताप सेत्र इतने अहिक रभाहवत हुए ◌ैं हक अब उनका हवश्वास ◌ै हक हविाता ने पाश्चात्य जगत में योग और आध्याक्तत्मक सािना की जाग्रहत लाने के हलए स्वामी जी को हवशेष रूप से ◌ि ना ◌ै।

लैटहवया के रीगा नगर की एक रख्यात महिला श्रीमती एन. प्लाहिस स्वामी जी के जन्म-हदवस के उपलक्ष्य में भेजे गये अपने सन्देश में हलखती ◌ैं हक स्वामी जी का जीवन तथा उनके सद पदेश अनेकानेक पाश्चात्य लोगो ◌ुंके हृदय में स्थायी रूप से घर कर गये ◌ैं और उनसे ◌ी उनको रेरणा तथा पथ-रदशपन हमला ◌ै। आध्याक्तत्मक उत्थान के हलए उनके हविार विाँ की जनता के हलए मूल्यवान् हसद्ध हुए ◌ैं। इसीहलए वे उनकी रिनाओ ◌ुंको लोगो ◌ुंतक पहुँिाने व रिार करने में ◌हदपक रुहि हदखाते ◌ैं।

स्वामी जी के ◌मप की व्याख्या करने की सरल स बोि शैली से, उनके हविारो ◌ुंकी गिराई से तथा प नजीवन रारम्भ करने के रोत्सािन से अनहगनत पाश्चात्य हजज्ञास ओ ◌ुंको शक्तक्त और आश्वासन राप्त हुआ ◌ै। लैटहवया की हशहक्षत एवुं सम्भ्रान्त महिलाएँ हदव्य जीवन सुंघ की शाखा खोल कर सामूहिक रूप से भगवान् श्री कृष्ण के ◌ादशाक्षर मन्त्र **'ॐ नमो ◌गवते वासुदेवाय'** का जप हनयहमत रूप से करती ◌ैं।

यहद आप ◌मत्कार ◌ी देखना ◌िाते ◌ैं, तो इससे अहिक ◌मत्कार और क्या ◌ोगा? उन उत्कक्तण्ठत हजज्ञास ओ ◌ुंने कभी स्वामी जी के दशपन निी ◌ुंहकये और न ◌ी स्वामी जी अपने गुंगातीर के क टीर से बािर गये, तो भी स दूर पहश्चम के लोग, जो यिाँ की सभ्यता, सुंसूकृहत तथा भाषा से सवपथा अपररहित ◌ैं, स्वामी जी को अपना सद्ग रु मान कर पूजा करते ◌ैं।

किाँ ऋहषकेश और किाँ रीगा! गुंगा से ब ल्गाररया तक की मिान् खाई पर सेत बन्ध। हकतनी आश्चयपजनक बात ◌ै। पर यहद परमा माता की ऐसी ◌ी इच्छा ◌ै तो क्या सम ◌ि और क्या पवपत-ये तो मात्र पोखर और वल्मीक सदृश ◌ी ◌ैं। ये भागवत्सन्देश के रिार-रसार में बािा उपक्तस्थत करने का सािस भला कैसे कर सकते ◌ैं? त्रेताय ग में मिावीर ◌न मान् ने लुंका की ओर गमन करते हुए सेत का सिारा तो हलया ◌ी निी ◌ुंथा। हवयोहगनी सीता को भगवान् राम के सन्देश-स्वरूप अ◌ाँगूठी देने के हलए सम ◌ि पार जाने के हलए कूद ◌ी तो गये थे। यि उदािरण स्वामी जी

पर– पाश्चात्य जगत् में उत्तरोत्तर आध्याक्त्मक रगहत के सम्बन्ध में सवपथा ठीक-ठीक िररताथप िोता ौै।

स्वामी जी उपिीप से मििीप तक-सम ि पार-योग और व्याविाररक बेदान्त तथा भागवतीय जीवन के सन्देश-रूपी अमूल्य महण को िाताश लोगो ुंमें सोत्सिा बााँट रि िैं। आि हनक सैहनक शासन की द ष्प्रवृहत्त तथा प रोहितो ुंकी घृणा से पीहडत कहतपय भक्तो ुंकी भक्क्त तथा अभीप्सा दश-पन्दरि वषों से यूरोप में रिहलत पैशािी वृहत्त से हमट जाने वाली थी। उनकी भक्क्त भी आस री शक्क्तयो ुंकी िमहकयो ुंसे आिान्त सीता की तरि आतुंहकत थी। पौराहणक मिावीर िन मान् की भााँहत सम ि पार से स्वामी जी के सन्देश के विााँ पहुाँिने से उनकी सब हनराशा और भय को, उनके अन्धहवश्वासो ुंको भस्मीभूत करने तथा योग से सम्बक्न्धत मायावी हवद्या के रिलन का समूल नाश करने का हवशेष कायप हुआ।

अब वे यूरोपवासी पूणप हवश्वास के साथ अपनी सािना-जप, ध्यान तथा आसन का अभ्यास करते िैं। िैरी हिकमैन के साथ श्रीमती एना प्लाहिस हदव्य जीवन सुंस्था की समस्त प स्तको ुंतथा परराष्ट्रो बाढ़ुंद कर रकाहशत कर-हवश्व-रेम, हनष्काम सेवा, हत्रहवि-मन-विन-कमप की पहवत्रता, सत्य, अहिुंसा, ब्रह्मियप, दानशीलता आहद के सािन-सन्देश का रिार करने में अथक पररश्रम कर पूणप एवुं सहिय सियोग दे रिी िैं।

इस हदव्य सन्देश का रिारक एक और सच्चा यूरोहपयन भक्त िै ल ई हब्रकफोटप जो इस क्षेत्र में लगन से कायप कर रिा िै। उसी के साथपक रयत्नो ुंका फल िै हक स्वामी जी की अनवाहदत रिनाएाँ कोपेनिेगन के समािार-पत्र तथा पहत्रकाओ ुंमें छपती िैं। गााँवो ुंअथवा शिरो ुंमें जिााँ भी वि जाता िै, योग और सािना के ज्ञान का रिार करता िै।

अध्ययनहरय श्री हब्रकफोटप स्वामी जी के हसद्धान्त और व्याविाररक ज्ञान की अद्भ त वैज्ञाहनक समिय-पद्धहत से बहुत अहिक रभाहवत हुआ। उसने समस्त ज्ञान को हृदयुंगम कर सािना-हवषय को आत्मसात् कर हलया िै। अतः वि स्वामी जी के 'हदव्य जीवन' रिार में रम ख रूप से कायप करने में सफल हसद्ध हुआ िै। कोपेनिेगन की हवव्य जीवन की शाखा में महिला-हवभाग िै हजसकी मागपदहशपका िै एक महिला-रत्न श्रीमती इमाप।

एक अन्य सज्जन िैं जो स्वामी जी के सद पदेशो ुंतथा सन्देशो ुंके रिार-रसा हलए सिल पस्तकालय तथा सन्देशविाक के रूप में कायप कर रिे िैं, ये िैं. िा. बॉगबे्लेट्। वि जिााँ भी जाते िैं, बााँटने के हलए स्वामी जी के आध्याक्त्मक साहित्य भरी एक पेटी अपने पास रखते िैं, जन-समिू के समक्ष भाषण देते िैं तथा प स्तको ुंमें जे मित्त्वपूणप पुंक्क्तयााँ पढ़ कर स नाते िैं। स्वामी जी की हशक्षाओ ुंके अन सार 'ॐ' का उच्चारण, कीतपन और राथपना तो उनके कायपिम के स्थायी अुंग िैं। उन्ोनें अपूवप सवा के िारा अपने सम्पकप में आने वाले सभी लोगो ुंको हनष्काम रेम तथा सेवा का पट पढ़ाया िै। इस्टोहनया में श्रीमान् िामेर भी अपने भाषणो ुंतथा योग-साहित्य के हवतरण िारा हदव्य जीवन के सन्देश का रिार कर रिे िैं।

स दूरवासी स्वामी जी के अकथनीय रभाव का मित्त्वपूणप दृष्टान्त िै बले्गेररया-वासी एक ससुंसृ्कत पादरी श्री सेपे्लेवेको। अन्तरेरणा से उन्ोनें हदव्य जीवन सुंस्था के प ण्य-कायप िेत अपना जीवन समहपपत कर हदया िै। योग में भी उनका अभ्यास उच्च कोहट का िै। वे अपने ज्ञान से औरो ुं

को भी रहशहक्षत करते िैं। इस हदशा में भले िी हकसी को हवश्वास न िो, पर वे हलक्तखत मन्त्र-प क्तस्तका भी रखते िैं, हजसमें पुंक्षिर मन्त्र 'ॐ नमः हशवाय' हलखते िैं तथा प क्तस्तका पूणप िो जाने के पश्चात् हनयहमत रूप से स्वामी जी के पास अवलोकनाथप भेजते िैं।

वे श्री इ. कोस्मोवस्की और अलेक्जेण्डर हमनीफ के सहिय सियोग से िमप और आध्याक्तत्मक ज्ञान का रिार कर रिे िैं। हदव्य जीवन-सम्बन्धी प स्तकें हनःश ल्क हवतरणाथप अनूहदत की जा रिी िैं। उनकी अपनी भाषा-पहत्रका 'योग'-जो विााँ की 'हदव्य जीवन सुंघ' की शाखा की रिार-पहत्रका िै-में स्वामी जी के लेख बल्गेररयन भाषा में रकाहशत िोते िैं। सेपेल्वेंको एवुं उनके हमत्र बोररस सिारो स्वभाव से कमपयोगी िैं। वे दोनो ुंहमल कर परोपकार का कायप-हवशेष रूप से रोहगयो ुं और पीहडतो ुंकी सेवा हनष्काम भाव से कर रिे िैं।

इुंग्लैण्ड के िोम्ब्रोयस्की, श्रीमती िॉलहफज, एटहकिन, मैहबसको के आल्डो लावहग्ननी भी हनष्ठापूवपक स्वामी जी से हनयहमत रूप से पत्र-व्यविार िारा राप्त पथ-रदशपन के आिार पर रगहत के पथ पर हनरन्तर अग्रसर िो रिे िैं।

हकतना अन्तर िै आज में और तब में। कई वषप पूवप हदव्य जीवन का कायप रारम्भ िा छोटी-सी सीमा से और विी सन्देश देश-हवदेश में पहुाँच गया। रसार का कल्पनातीत कायप हुआ। 'हदव्य जीवन सुंस्था' और उसके हकतने िी कें िो ुंमें िल रिे कायपिमो ुंकी हवहविता से सिस्रो ुं हजज्ञास मागप-दशपन राप्त करते िैं। स्वामी जी के इन्म-हदवस मिोत्सव पर पाश्चात्य भक्त तथा रशुंसक अपनी मुंगल-कामनाएाँ रेहषत करते िैं तथा अपनी िाहदपक भावनाओ ुंके रतीक-रूप में अपने-अपने देश की हवश्वकला तथा िस्तकला की वस्त एाँ उपिार स्वरूप भेजते िैं। सैकडो ुं भारतवासी व्यक्तक्तगत रूप से श्रद्धाुंजहल अहपपत करने आते िैं। 'हदव्य जीवन सुंघ' का कायप छोटी-सी सीमा से श रू िो कर मिान् उपलक्तब्ध को राप्त हुआ। इसी से इसकी मिानता रत्यक्ष िो जाती िै।

यूरोप में हदव्य जीवन सुंघ की शाखाओ ुंके कायपकलापो ुंको देख कर मैंने यिी हनष्कषप हनकाला हक स्वामी जी ने अवश्य िी क छ हदनो ुंके हलए उस मिािीप में रवास हकया िोगा, पर यि मेरा भ्रम था। हकसी को हवश्वास निी ुंिोता हक भारत से बािर केवल मलाया में िी स्वामी जी रिे जिााँ उनके सुंन्यास-जीवन के बीजारोपण की पृष्ठभूहम हनहमपत हुई। इन बीस-इक्कीस वषों में स्वामी जी भारत की प ण्य-स्थली से बािर निी ुंगये। इतना िी निी,ुं हवदेहशयो ुंने तो उनके अब तक भी दशपन िी निी ुंहकये, तो भी वे हदव्य जीवन के रसार का कायप इतनी भव्यता से कर रिे िैं। मैं इस हवषय में हजतना अहिक सोिता हाँ, उतना िी अहिक आश्चयप में िूब जाता हाँ।

इस सम्बन्ध में कई और रोिक तथ्य िैं। ज्योहतमपय आत्मा हववेकानन्द तथा रखर रहतभाशाली स्वामी रामतीथप ने यूरोप तथा अमेररका में जा कर आध्याक्तत्मक क्षेत्र में सरािनीय कायप हकया। उन्ोुंने व्यक्तक्तगत रूप से भ्रमण हकया हजसमें उनको पररश्रम भी करना पडा; पर िमारे तत्त्ववेत्ता स्वामी जी ने (हजनके अिुंशून्य व्यक्तक्तत्व के पीछे रहतभा हछपी िै) इस मिान् आध्याक्तत्मक कायप की उपलक्तब्ध हिमालय की तलिटी में अठखेहलयााँ करती हुई पावनी गुंगा-तट पर अवक्तस्थत क टीर के भीतर रि कर िी की।

रारम्भ में उनमें जो सवोपरर वृहत्त थी-वि थी हवरक्तक्त। अपने अन भवो ुंको हलक्तखत रूप देने तथा अपने हविारो ुंको हवश्व के लोगो ुंके साथ आदान-रदान करने का हविार स्वामी जी को कैसे
आया, इसकी भी रोिक किानी िै। वि पढ़ने में हबलक ल उपन्यास-सी लगती िै।

जब स्वामी जी स्वगापश्रम में थे, तो तीथपयात्री तथा दशपनाथी उनके पास यदा-कदा आते
रिते थे। उस समय सत्सुंग के साथ-साथ आध्याक्तत्मक हवषयो ुंपर िािप भी िलती थी। स हशहक्षत
और ब क्तद्धमान् तो वे थे िी। आगन्त को ुंने भी यिी अन भव हकया हक स्वामी जी उनकी आन्तररक
कहठनाइयो ुंतथा समस्याओ ुंको समझने में बडे क शल िैं, साथ िी उनके रश्नो ुंके उत्तर भी
सहृदयतापूवपक व सिी हनणपयात्मक ढुंग से देते िैं।

उस समय ऐसे मिाप रुष का बहुत अभाव था। दूसरो ुंकी कहठनाइयो, ुं आपहत्तयो ुंहिन्ताओ ुं
और समस्याओ ुंको अन भव कर उनका ब क्तद्ध एवुं हववेकय क्त समािान करना तथा िैयप रदान करना
सबके वश की बात निी ुंिै। उत्स क हजज्ञास ओ ुंका ध्यान इनकी ओर केक्तित िो गया। वे सदैव
आध्याक्तत्मक सािना-पथ की आन्तररक बािाओ, ुं सािना के अन भवो, ुं हवहित्र कहठनाइयो ुंजैसे हवहवि
हवषयो ुंतथा व्यक्तक्तगत समस्याओ ुंपर हनरन्तर रश्न करते रिते थे।

वे स्वामी जी के सामने अपनी शुंकाएँ समािान िेत रस्त त करते थे। स्वामी जी अपनी
योग्यतान सार स झावो ुंिारा उनकी अहिकतम सिायता करने में तत्पर रिते तया सािना-पथ पर
अग्रसर िोने के हलए स्वान भव पर आिाररत सम हित सािनो ुंका उपय क्त रयोग बतलाते थे।

उनकी हशक्षाओ ुंके व्याविाररक पक्ष की अत्यहिक सरािना हुई। इससे वे सोिने लगे हक
इस रकार की समस्या वाले अन्य व्यक्तक्त सिायता राप्त कर सकते िैं। अतः इन सब रश्नो ुंऔर
उनके उत्तरो ुंको हलक्तखत रूप दे कर अहिकाहिक लोगो ुंमें हवतरण करने का हविार मन में आया।

वि श भ हविारो ुंको त रन्त िी कायापक्तित करने के पक्ष में थे, इसहलए कायप में ज ट गये।
वि रहतहदन आने वाले दशपनाहथपयो ुंके रश्नो ुंतथा शुंकाओ ुंको याद करके अुंहकत करने तथा उन
रश्नो ुंपर मनन करने के पश्चात् उत्तरो, ुं स झावो ुंतथा हशक्षाओ ुंको हलक्तखत रूप देने लगे। रहतकूल
पररक्तस्थहतयो ुंमें भी वि हलखते रिते। दृढ़ िारणा िारा आपहत्तयो ुंकी अविेलना करते हुए उन्िोंने
आध्याक्तत्मकता को प नजीवन देने का अपूवप कायप हकया िै। लगभग आिे हवश्व में रहतहनहियो ुंिारा
उनके सन्देश का रिार हुआ िै।

हदव्य जीवन के इतने हवस्तार की आशा तो उन्िोंने भी न की िोगी। रारम्भ में जब
आध्याक्तत्मक पररपत्रो ुंके रत्य त्तर में लोगो ुंने उन्िें रशुंसा-पत्र हलखे, तो स्वामी जी के सुंन्यासी
व्यक्तक्तत्व ने उन पत्रो ुंको फाड कर ट कडे-ट कडे कर गुंगा जी में बिा हदया, हकन्त हलखने का
कायपिम िलता रिा, भले िी हकतनी िी भारी आपहत्तयो ुंसे सुंघषप करना पडा। कठोर भाग्य ने कई
बार उनके उत्साि की परीक्षा ली।

वि भी समय था जब यि तरुण स्वामी जी रद्दी कागजो ुंके छोटे-छोटे ट कडो ुंको ढूँढ़ कर
सुंग्रि करते। हफर उनको छोटी प स्तको ुंका रूप देते। हलफाफे यहद फटे ुंपडे हुए, हमल जाते,
तो अन्दर के खाली भाग पर अपने अन भवो ुंव हविारो ुंको हलखते। यहद कागज की समस्या िल
िोती, तो स्यािी की समस्या उत्पन्न िो जाती। यहद कागज और स्यािी दोनो ुंउपलब्ध िोते, तो

रकाश की समस्या रस्त त िो जाती। अतः सूयापस्त िोते िी हलखने का कायप बन्द करना पडता और हविारो ुंमें खोये हुए िी अन्धकार में समग्र राहत्र काटनी पडती।

कभी तेल भी िोता, तो हदयासलाई समाप्त िो ि की िोती। तेल तथा हदयासलाई की राक्तप्त भी भाग्य पर हनभपर करती। इतना िोने पर भी वि सदा सन्त ष्ट रिते। इस अनूठे व्यक्तक्तत्व ने बडे हवलक्षण ढुंग से हवरिो का सामना हकया तथा दूरी की बािाओ ुंका हनराकरण कर पहश्चमी जगत् के उत्सािी हजज्ञास ओ ुंके जीवन में िाक्तन्त कर दी।

इससे भी अहिक हवलक्षण बात यि िै हक स्वामी जी ने यि सारा कायप अकेले िी हकया। दृढ़ िारणा एवुं सािना-शक्तक्त और भगवान् पर पूणप हनभपरता िारा उन्ोुंने मानवता की सेवा की। यिी उनका पररिय -पत्र िै । बाद में जो सािक उनके पास आये भी, वे तरुण अन भविीन थे हजनको स्वयुं रहत-क्षण हनदेशन की आवश्यकता थी। हफर भला वे स्वामी जी की सिायता क्या करते?

स्वामी जी पररिासपूवपक बताया करते हक अपने रथम पररपत्र को रकाहशत देख कर उन् हकतनी रसन्नता हुई थी। उनके पास अच्छे कागज का अभाव था। एक भक्त आत्मा िााँद नारायण रिकोली इस य वा तपस्वी के त्याग-वैराग्य की भावना से रभाहवत िो कर उनके हनकट- सम्पकप में आये। एक बार उन्ोुंने स्वामी जी को दूि पीने के हलए पााँि रुपये का नोट हदया। इस हवषय को याद करते हुए स्वामी जी ने प स्तको ुंतथा पररपत्रो ुंकी ओर सुंकेत करते हुए किा - "आप मेरे आस-पास की वस्त एाँ देखते िै न! िााँ, यिी िााँद नारायण राय का दूि िै।"

हफर हवस्तार से बताया- "जब उन्ोुंने म झे पााँि रुपये का नोट हदया, तो मैंने उसे भगवान् की ओर से रसाद समझ कर स्वीकार कर हलया। मैं अपने हविारो ुंको सािको ुंके हलए रकाहशत करवाना िािता था। उसके हलए मैं अच्छे कागज की खोज में था। अब हबना मााँगे िी रुपये मेरे िाथो ुंमें थे। मेरी कई लेखबद्ध हटप्पहणयााँ ऐसे िी अलभ्य लाभ की रतीक्षा में थी।ुं तत्काल िी मैंने पााँि रुपये का नोट रथम पररपत्र को छपवाने में खिप कर हदया। उस पररपत्र का हवषय था- 'ब्रह्म-हवद्या' । उन्ोुंने उन रकाहशत पररपत्रो ुंको अपने हनकट-सम्पकप में आने वालो ुंमें बााँट हदया।

पाठको ुंने उस हवषय-सामग्री को इतना पसन्द हकया हक उन्ोुंने स्वामी जी से और सामग्री दे कर उसे प क्तस्तकाओ ुंके रूप में रकाहशत करवाने के हलए आग्रि हकया। रकाशन-व्यय के हलए भक्तजन स्वयुं तैयार थे। इसके पश्चात् म हित हुई दूसरी प स्तक हजसका नाम था 'आत्म-प रुष का तत्त्वज्ञान' । उसके पश्चात् तीसरी प स्तक और तद परान्त िौथी प स्तक म हित हुई। भगवहदच्छा ऐसी िी थी हक एक व्यक्तक्त, िााँद नारायण की ओर से हदया गया दूि सिस्रो ुंव्यक्तक्तयो ुंके हलए जीवन रदायक अमृत बना।

भक्तक्त-भाव से अपपण हकये गये उस पााँि रुपये के नोट ने जाग्रहत लाने वाले सन्देश के रसार का रूप हलया। यि ऐसी हदव्य प कार थी हजसके रत्य त्तर में रहतध्वहन केवल हिमालय रदेश से िी निी,ुं अहपत स दूर हक्षहतज के पार पहश्चम से भी रहतध्वहनत हुई जिााँ भारतीय सूयप स्वहणपम आभा में अस्त िोता िै।

अष्टादश अध्याय

सवपगण-सम्पन्न स्वामी हशवानन्द

आज कहलयग के घोर अन्धकार में भी सम्राटो ंके सम्राट् की अत लनीय सौदुंयपम क्त द लपभ मकट-महणयााँ राप्य िैं; क्योहुंक सन्त और ऋहष परम हदव्यता के अलुंकार िी तो िैं। अपनी भव्य जीवहनयो ंसे वे ईश्वर की शोभा को हिग हणत करते िैं। उनके दशपन अब भी िो सकते िैं। उत्स क व्यक्तक्तयो ंकी भीड उनकी झलक लेने को लालाहयत िै। वे सब दशपन तो कर लेते िैं; हकन्त उनमें हकतने िैं जो वास्तव में दशपन करते िैं।

कछ व्यक्तक्त ऐसे िैं जो समयाभाव के कारण स्वामी जी के दशपन मनोयोगपूवपक निी ंकर पाते। उनके हलए मैं स्वामी जी के आज के जीवन के पूणपत्व तथा पूणप जीवन के क छ हित्र हिहत्रत करने का रयास करूाँगा। मैं ऐसे तथ्य रखूाँगा हजससे पता िले हक हकस साािँिे में यि मिान् रहतभा तैयार हुई िै।

स्वामी जी के मानव-रूप का एक रेखा-हित्र देक्तखए। आश्रमवाहसयो ंव अभ्यागतो ंके साथ आत्मीयतापूणप व्यविार करते हुए वे एक मिान् एवुं शान्तमूहतप के रूप में अहभव्यक्त िो उठते िैं। वे सरल एवुं मिान् व्यक्तक्त िैं और सभी कायप हनष्काम व हनतान्त अनासक्त भाव से करते िैं। जब उनके साहन्नध्य में रिने का पयापप्त अवसर हमलता िै, तब उनके स्वणप-त ल्य हवश द्ध व्यक्तक्तत्व में बहुमूल्य रत्न-रूपी हवहशष्टताएाँ रकाश में आती िैं।

इस मिान् व्यक्तक्त की सवोत्तम हवहशष्टता िै-आिार और हविार में आश्चयप- जनक हनष्कपटता। उनका मन सांसाररक एवुं क हटलता से एकदम रहित िै। वे हशश वत् सरल िैं और उनकी हियाओ ंमें रहत-पग पर सरलता रहतहबक्तम्बत िोती िै। मन की दाशपहनक गिराइयो ंके िोते हुए भी यि सिज स्वतः रस्फ हटत अकृहत्रमता शीघ्र िी उनकी थोडी देर की उपक्तस्थहत से िी रकट िो जाती िै, जो एक समय में एक गम्भीर सन्त और हशश के अनूठे मेल को रदहशपत करती िै।

हजन व्यक्तक्तयो ंका स्वामी जी से सम्पकप रिता िै, उनके हृदय स्वामी जी की स्वभावगत सरलता के कारण रभाहवत िो जाते िैं।

मैंने देखा हक स्वामी जी अपने तक क छ भी निी ंरख सकते, भले िी वि बिारी सम्पदा िो या कोई हविार या जानकारी िी क्यो ंन िो। वे अतीव हनष्कपट व उन्म क्त-हृदय िैं हजनको असाविानी से देखने पर सवपमान्य हवनीत क शलता का अभाव समझने की भूल िो सकती िै।

अगाि आत्म-हवश्वास िोते हुए भी उनमें श्रेष्ठमन्यता की भावना लेशमात्र भी निी ंिै। वे सबको आत्मवत् समझते िैं और सबके साथ उन्म क्त एवुं समता का वयविार करते िैं। क छेक क्षणो ंकी बातिीत के पश्चात् िी व्यक्तक्त उनको पूणपतया अपना समझने लग जाता िै। वे सबसे, िािे कोई बच्चा िी क्यो ंन िो, परामशप लेने को तैयार रिते िैं, क्योहुंक वे हकसी को भी कम मित्त्वपूणप तथा बक्तुद्धिीन निी ंसमझते।

दूसरी रम ख हवशेषता, हजसकी उसमें रिनता िै, वि िै-शीतल ज्योत्ना के समान परम शाक्तन्त जो उनके रोम-रोम में व्याप्त िै। उन्ोंनें लक्ष्य की राक्तप्त कर ली िै और उसी में क्तस्थत िैं। हकसी भी क्तस्थहत में वि उत्तेजना या भावना के वशीभूत निी ुंिोते। रत्येक क्तस्थहत में वि शाक्तन्त की साकार मूहतप िैं। उनकी उपक्तस्थहत में वहद कोई व्यक्तक्त हकसी कायप को अव्यवक्तस्थत व अहनयहमत ढुंग से करता िै, तो उसका सुंशोिन मौन असिमहत एवुं गम्भीरता दशाप कर करते िैं। आवश्यकता पडे, तो वे उस स्थान को भी छोड देते िैं।

वे कभी भी िोिावेश के वशीभूत निी ुंिोते। रोष में आ कर उच्च स्वर से हिल्लाते निी।ुं अपना खेद तक निी ुंरकट करते। यहद कठोर शब्द किने की आवश्यकता भी पडे, तो अहिक-से-अहिक हझडकी तो दे देंगे; हकन्त त रन्त वे हवनोद भी करते िैं जैसे औषहि के त रन्त पश्चात् टिकी-भर िीनी दे दी जाती िै।

मैंने उनको कभी हकसी की राथपना अस्वीकार करते निी ुंदेखा। सत्य तो यि िै हक व्यक्तक्त िारा आवश्यकता रकट करने से पूवप िी वे उसको भाँप जाते िैं। यहद एक बार आवश्यकता रकट की जाती िै, तो जब तक वि पूणप निी ुंिोती, तब तक उन्ें िैन निी ुंपडता। पूहतप भी उसी समय, उसी जगि िोनी िाहिए। उपकार करने में देरी उन्ें सिन निी।ुं

कई ऐसे अवसर भी आये जब भक्तो ुंने उन्ें सुंकीतपन के हलए हनमक्तन्त्रत हकया। उस समय वे ज्वर से इतने अस्वस्थ थे हक उस क्तस्थहत में अन्य व्यक्तक्त शय्या पर िी पडा रिता; हकन्त स्वामी जी ज्वर की उपेक्षा करके शीघ्र िी सुंकीतपन करने के हलए िले गये। जब कभी यात्रा की थकावट और भोजन में अहनयहमतता के कारण अहतसार िो जाता,तब भी सुंकीतपन के हलए अपनी अस्वीकृहत न दे पाते। वे साथ वाले कक्ष में शौि के हलए बतपन (शौि-पात्र) रखवा लेते और सुंकीतपन िाल में मुंि पर पहुँि कर रेरणादायी कीतपन करते।

अस्वस्थता की क्तस्थहत में कीतपन करना भक्तो ुंको अच्छा न लगता। दूसरो ुंको लाभाक्तित करने एवुं रसन्न देखने की तीव्र इच्छा उनकी समस्त हियाओ ुंमें राण भरती थी । आप इसे भले िी हविाररिीनता का नाम दें; हकन्त स्वामी जी स्वास्थ्य के रहत साविान रिते हुए भी आवश्यकता पडने पर त्याग को िी अहनवायप मानते। उनकी समस्त हियाएँ उनके पर-हिताथप जीने के दृढ़ हसद्धान्त को सूहित करती िैं।

सभी वस्त ओ ुंऔर व्यक्तक्तयो ुंमें भलाई िी देखने की द लपभ रवृहत्त का उनमें अहत-आश्चयपजनक मात्रा में हवकास िो ि का िै। उनमें दूसरो ुंमें त्र हटयो ुंऔर दोषो ुंको देखने की रवृहत्त लेशमात्र भी निी ुंिै।

कई बार ऐसा हुआ हक कई ऐसे व्यक्तक्त राय: उनके पास आते रिते और कायप करते हजनमें हवहभन्न रकार की कई कमजोररयाँ िोती और वि वस्त तः कई रूपो ुंमें अशोिनीय थे। यहद उसमें एक ग ण भी लेशमात्र हदखायी दे जाता, तो उस पर अपना बाद िस्त रखते और उसकी समस्त क हटलताओ ुंकी ओर से आँखें मूँद लेते।

सहिष्ण ता और क्षमाशीलता को समझने के हलए गुंगा-तट पर गम्भीरता से हविरने वाले उस मिान् सन्त के पास हकुंहित् काल ठिरने से अहिक और अच्छी कोई बात निी ुंिो सकती। बहुत

गम्भीर अपरि को न देख कर वि हकसी के भी ग ण को दशग ना बढ़ा कर देखते थे। थोडी-सी रहतभा, अच्छाई और सेवा
ी स्वामी जी से सरिना राप्त करने के हलए पयापप्त िै। वे सोत्सि उस ग ण का वणपन सबसे करेंगे, मानो बि बहुत िी
आश्चयपजनक, सरिानीय एवं पूणपत्व के हशखर
पर पहुाँि का िो।

कई बार मैं अपने रहत की गयी रशुंसा तथा सुंस्तवन स न कर िैरान रि जाता; क्योहुंक
म झे पता था हक मैं उसके योग्य निी ुंहाँ। साथ िी मैं उनकी सच्ची मित्ता पर िहकत रि जाता।

जो उनके बहुत िी हनकट-सम्पकप में आये, उन्ोनें देखा हक स्वामी जी एक ऐसे अलौहकक
ग ण से सम्पन्न िैं जो बहुत खोजने पर भी निी ुंहमल पाता। अपने रहत हकये गये गम्भीर अपरािो ुं
को भी वे शीघ्र भूल जाते िैं। तथाहप रत्यक्ष या अरत्यक्ष रूप से की गयी उनकी सेवा को हृदय में
सदैव साँजोये रखते िैं। 'भूलो और क्षमा करो' हसद्धान्त उपदेश के हलए सरल िै; हकन्त हवरला
ी कोई ऐसी मिान् आत्मा पायी जाती िै जो इस ग ण को सिज आिरण में लायी िो। यि ग ण
मैंने इस सन्त में पराकाष्ठा तक पहुाँिा हुआ पाया िै।

ऐसे लोग भी थे हजन्ोनें उनके सत्कायप को िर सम्भव उपाय से हबगाडने का रयास हकया,
ख ले रूप से अपशब्द किे और उनकी हनन्दा की। स्वामी जी उनके द ष्कृत्यो ुंके क्षणो ुंमें भी
उनके रहत मृद ल व हशष्टता का व्यविार करते थे।

मि स नते िैं हक स्वगापश्रम के सािना-काल में उन्ोनें इस 'भूलो और क्षमा करो' के ग ण
का अजपन करने को अपना म ख्य उद्देश्य बना हलया था। उनके सन्त साथी उनको िाहन पहुाँिाना
ीिते थे। आप उनकी सेवा असामान्य रूप से करते थे।

स्वामी जी ने एक द रात्मा आततायी ित्यारे को, जो रकट में साि वेश में रिता था, वषप-
भर आदर और हवशेष रेम का व्यविार करने के हलए ि न रखा था। जब स्वामी जी की उस क्षेत्र
में लोकहरयता के रहत ईष्यापवश कई उपिव हुए, तब भी वे अपने रभाव के बावजूद हकसी भी
रहतकार की भावना के हबना उन पीडादायक क्लेशो ुंको सिते रिे। उन द रात्माओ ुंमें से जब भी
कोई अस्वस्थ िो जाता था, तो स्वामी जी स्वेच्छा से उसके स्थान पर पहुाँिकर उसकी स शूरूषा एवं
उपिार करते थे हजसे देख उन द रात्माओ ुंको हवश्वास न िोता और वे िहकत रि जाते।

(२)

आध्याक्तत्मक उत्थान के हलए उनके असािारण उत्सि को आच्छाहदत कर जो दो रमख
हवहशष्टताएाँ िमबद्ध रूप से सामने आयाप, वे िैं पस्तक-लेखन का कायप और यवा हजज्ञासओ ुंको
रहशहक्षत करना। लेखन-कला के रहत उनका असािारण उत्सि अवणपनीय िै। जब हकसी उपयोगी
हवषय में उनके मक्तस्तष्क में हविार किौंिता, तो तरन्त िी वे उसे लेखबद्ध कर लेते। कोई आश्चयप की बात निी ुंहक
उवपरा मक्तस्तष्क में एकाएक उद्भूत िोने वाली हविाररािा को लेखबद्ध करने के
हलए स्नान-हिया को अिूरा छोड कर गुंगा-तट से स्व-कक्ष में आ जाते।

बहुत बार ऐसा िोता हक कोई रेरणादायक हविार अिप-सप्तावस्था में उन्ें आ जाता, तो
शीघ्र िी पूणपरूपेण जाग कर दीपक जला कर बैठ जाते और राहत्र के शान्त वातावरण में हलखना

आरम्भ कर देते। अपनी कृहतयाँ और प स्तकें उन्हें सन्तानवत् हरय ि ै। उन पर उन्हें वैसा ि ी सम हित गौरव ि ै जैसा ममतामयी माँ को सन्तान पर ि ोता ि ै। नयी प स्तक के म ि ण के समय उनके हवषय, रूप, आकार आहद के सम्बन्ध में ि ि ाप करते हुए उन्हें अत्यहिक आनन्दान भूहत ि ोती ि ै। एक नयी प स्तक से तात्पयप ि ै हदव्यता के आन्दोलन के शस्त्रागार में संग्रीत एक नया शस्त्र।

उनका जो अहत-हरय हवषय ि ै, जो उनके जीवन का राण ि ै, हजससे उनका हवहशष्ट व्यक्तक्तत्व हनहमपत ि ोता ि ै, वि ि ै हजज्ञास ओ ं को रहशहक्षत करना। सािना- काल में उनके स्वास्थ्य एवं हित का ध्यान रखते हुए, रत्येक सवप-स लभ स हविाएँ, रदान करते हुए उन्हें बहुम खी क शल बनाने का इस सन्त का सतत रयास रि ा ि ै।

य वा सािको ं के हृदय में यहद वि तहनक भी आध्यात्मक लालसा पाते, तो उन्हें अपना हपतृवत् वात्सल्य उँडेलते तथा हिमालय के रमणीय दृश्य, पावनी गंगा माता का साहन्नध्य, स खदायी कक्ष, मनोरम मक्तन्दर, भजन-कक्ष, श द्ध आिार, स्वास्थ्य- रक्षा-सम्बन्धी रत्येक आवश्यकता आहद सभी स हविाओ ं से सम्पन्न करते। हबना हकसी भेद-भाव के वे सबके हित की सभी स हविाएँ रदान करने में कोई कमी न रिने देते।

हकसी भी भेद-भाव के हबना सािको ं के रहत पूणप समता तथा रेम का व्यविार करना उनके स्वभाव एवं आिरण का रम ख अंग ि ै। भले ि ी सािक मन्द ब क्तद्ध वाला व अहशहक्षत या तीव्र ब क्तद्धमान्, संस्कारवान् ि ो, रवीण हवद्याथी ि ो या ऐसा कायपकताप हजसमें बहुत त्र हटयाँ भरी ि ो, ं ि ि ि पि राना आश्रमवासी या नवागन्त क कोई भी ि ो- स्वामी जी के हलए सभी रकार के सािक समान रूप में मूल्यवान् ि ैं।

आश्रमवासी सािको ं के रहत उनका व्यविार आश्चयपिहकत कर देने वाला दैवी रकाशन ि ै। हनःस्वाथपता और हनष्कामता की तो उनमें पराकाष्ठा ि ै। वे सािको ं का रहशक्षण अवैयक्तक्तक भाव से करते ि ैं। उदािरणतः एक हवशेष कायपकताप यहद लौट कर घर जाने का हनश्चय कर लेता ि ै, तो ि ि ि कायप की हकतनी भी क्षहत क्यो ं न ि ो, स्वामी जी कभी अरसन्न निी ं ि ोते। कायप में सम्भाहवत िाहन की हिन्ता हकये हबना वे न केवल उसे रसन्नता से हवदा करते ि ैं; अहपत यि भी आश्वासन देते ि ैं हक वि जब भी ि ि ो लौट कर आश्रम में आ सकता ि ै। भेंट-रूप में प स्तकें देने के अहतररक्त उसकी समस्त आवश्यकताओ ं की पूहतप करते तथा हवहवि ढंग से ि ाहदपक स्नेि से हसंहित करते, भले ि ी वि मित्त्वपूणप कायप की पूहतप के पूवप ि ी क्यो ं न जा रि ा ि ो।

स्वामी जी न केवल हकसी भी व्यक्तक्त की हवशेष रहतभा को भाँप लेते अहपत उसे उसके व्यक्तक्तत्व के पूणपतया उद्घाटन में सिायता देते ि ैं। सच्चे अथों में वि उसको हशहक्षत बनाते ि ैं। ऐसा वि व्यक्तक्त के हवकास के हलए अत्यहिक उपय क्त कायप दे कर करते ि ैं। सािको ं से कायप लेते हुए वि सेवा से अहिक उसकी रगहत का ध्यान रखते और राजाओ ं की भाँहत उसकी सेवाओ ं की रहतपूहतप कायप की मात्रा से अहिक करते। सिज स्वभाव से ि ी उनकी भावनाएँ संकीणप न ि ो कर हवसृत व उदार ि ैं।

यि भावना उनमें इतनी अहिक स दृढ़ ि ै हक वि कायपकताप को अहमत रहतदान दे कर ि ी रिेंगे। वे कायपकतापओ ं तथा सािको ं के रहत सीमातीत आभार रदशपन करते ि ैं। वे सािको ं की व्यक्तक्तगत आवश्यकताओ ं की पूहतप प स्तको, ं वस्त्रो ं और स्वाहदष्ट फलो ं की भेंट ि ारा करते। बजट

और योजना की सीमा का अहतिमण करते हुए वे अपने ि ी ढ़ंग के हविारो ंऔर हवहियो ंसे अपने उच्चादशप का रिार करते ि ैं। दूसरो ंको लाभाक्तित करने, स सम्पन्न करने तथा दान देने के भाव के वशीभूत ि ो कर उनकी सभी हियाओ ंमें दैवी अहतशयता का रकटीकरण ि ोता ि ै। एक सामान्य गणना करने वाला व्यक्तक्त इस भाव का मूल्यांकन निी ंकर सकता।

स्वामी जी की दृहष्ट में सिाक के हित से बढ़ कर अन्य कोई भी वस्त हरय वा बहुमूल्य निी ंि ै। सिाक की अस्वस्थता में वि उसके उपिार की व्यवस्था शीघ्र तथा पूणपतया आश्चयपकर ढ़ंग से करते ि ैं। शिरी अस्पताल में भी उतनी व्यवस्था निी ंहमल पाती, हजतनी क्षण-भर में वे स्वयं कमरे में ि ी रोगी के हलए कर देते। रोगी के उपिार में कोई भी त्र हट निी ंरिने देते। रोगी के हलए नयी-से-नयी औषहि, िि ो उसका मूल्य १०० रुपये ि ी क्यो ंन ि ो और उसे ३०० मील की दूरी से भी क्यो ंन मँगाना पडे, उसका रबन्ध स्वामी जी अवश्य ि ी कर देते।

यहद कोई वस्त दश-ग णा मूल्य देने पर और कहठनता से भी राप्त ि ोती ि ै, तब भी उसे मँगा कर देंगे। यहद फल की आवश्यकता पडे-उस फल की ऋत ि ो या न ि ो, उसका बहुत अहिक मूल्य ि ी क्यो ंन ि ो-वि एक-दो निी,ं दजपनो ंमें रोगी की शय्या के पास की मेज पर पहुँिाये जायेंगे। यहद हकसी थके-माँदे कायपकताप के हलए ग्लूकोज की आवश्यकता पडने पर मँगाना पडे, तो उसके हलए एक व्यक्तक्त शिर जा कर जंगली और पिाडी मागप पार करता हुआ सन्ध्या तक अवश्य ि ी लौट आता ि ै। स्वामी जी का सेवा-स शूरूषा का यिी ढ़ंग ि ै।

एक सिाक के बिीनाथ-यात्रा के कष्टो ंसे पीहडत ि ो स्वामी जी को दण्डवत् रणाम हकया, तो तब तक स्वामी जी को िैन निी ंआया, जब तक उसे उपिाराथप अमृतसर भेज निी ंहदया और उनकी सन्त हष्ट तभी हुई जब वि स्वस्थ ि ो कर आश्रम लौटा।

रत्येक हवषय, िि ो वि सामान्य ि ी क्यो ंन ि ो, उसकी ओर सूक्ष्मता से ध्यान देने ग ण स्वामी जी में देखा जा सकता ि ै; हकन्त वणपन निी ंहकया जा सकता। एक वयोब द्ध जीणपकाय संन्यासी, जो संसार के कष्टो ंसे पीहडत था, शाक्तन्त की खोज मैं आश्रम आया। स्वामी जी की उसके रहत व्यक्त की गयी हिन्ता ममपस्पशी थी। स्वामी ने यि हवशेष ध्यान रखा हक उसे श्रम-साध्य कायप न हदया जाये।

मैंने देखा हक भजन-कक्ष में आयोहजत राहत्र-सत्संग में उसकी पीठ को सिारा देने के हलए पीहठका रखी जाती। उसे स्तम्भ के हनकट बैठने को स्थान हदया जाता। यहद भूल से उस स्थान पर कोई बैठ जाता, तो हनरीक्षक स्वामी जी देख लेते और िँसी में यि किते हुए-'यि ओम स्वामी जी के हलए आरहक्षत स्थान ि ै'- उसका स्थान उसे हदलवा देते।

मिाहवद्यालय से आया एक क लीन य वा नव-सिाक अस्वस्थ ि ो गया और हनत्य के कीतपन में भाग निी ंले सका। राहत्र-सत्संग में उसकी अन पक्तस्थहत स्वामी जी ने अंहकत कर ली। कीतपन-समाक्तप्त पर वे अपनी क टीर से (वे रायः ऐसा निी ंकरते थे) औषिालय में आये। एक औषहि तैयार करवा कर स्वयं हनकटस्थ रामाश्रम- प स्तकालय में अस्वस्थ सिाक की खोज में गये। उस समय राहत्र के ११ बज ि के थे।

यहद मैंने इसे स्वयुं न देखा िोता तो िमें हवश्वास न िोता; क्योहुंक ग्रीष्म ऋत में स्वामी जी राहत्र-सत्सुंग के उपरान्त क टीर से बिार िनी ुंहनकलते थे। एक िाथ में लम्बी लाठी और दूसरे िाथ में एक हगलास हलये ऊपर िढ़ रिे िैं। उनके पीछे एक सेवक िाथ में लैम्प हलये आ रिा िै।

इसी रकार वि कायपकताप की शारीररक कमजोरी की दशा का ध्यान अवश्य रखते और तदन सार आवश्यकता की पूहतप करते। यहद कोई भक्त उन्ें अमरूद भेंट करता, तो वि हजस व्यक्तक्त को कोष्ठ-बद्धता का रोग िोता, उसे तत्क्षण िी दे देते। हवहभन्न रवृहत्तयो ुंमें अहत-व्यस्तता के मध्य भी ऐसी सूक्ष्म बातो ुंकी ओर ध्यान देना वे िनी ुंभूलते थे।

जब कोई हवशेष कायप िो रिा िो, वे कायपकतापओ ुंको अहतररक्त पौहष्टक आिार रदान करने का हविार करते। यि भी आज्ञा देते हक बादाम, अखरोट आहद कायपकतापओ ुंको पयापप्त मात्रा में बाँटे जायें। उसी हदन पूछते हक बादाम आ गये िैं या निी?ुं दूसरी, तीसरी, िौथी बार याद हदलाते जब तक हक हछलके उतारे हुए साफ बादाम उनके सामने मेज पर न आ जाते।

तब एक य वा साधक को सब कायपकतापओ ुंमें बाँटने के हलए किते। मैं पूणप हवश्वास से कि सकता हाँ हक वे अगले हदन पूछने से न िूकते हक बादाम सबको हमले या निी?ुं केवल पूछताछ से क्या बात समाप्त िो जाती? निी!ुं इतनी सरलता से निी।ुं प नः स्वामी जी सभी साधको ुंसे बादाम-राक्तप्त के हवषय में पूछते - स्वीकारात्मक उत्तर हमलने पर भी वे उनके कमरो ुंमें जा कर जब तक स्वयुं न देख लेते हक वि ग्रिण हकये गये हक निी,ुं तब तक उनको शाक्तन्त न हमलती। यि देख कर िम आश्चयपिहकत िोते िैं। हक हकतने माता-हपता, भाई-बन्ध ऐसे िैं जो इस रकार का व्यविार करते िोगें।

नवागन्त क हजज्ञास को ग्रीष्म ऋत व वषाप-काल के अन कूल वे नवी मच्छरदानी देते और यहद शीत ऋत िोती, तो उसके मना करने पर भी कम्बल देते और रुईदार बण्डी हसलवा देते। शीत ऋत में अहिक कायप के समय कायपकतापओ ुंको शीत- राहत्र में लैम्प के रकाश में कायप करना पडता, तब उनको गरम दूि या िाय देते तथा अन्य गरमी पहुँिाने वाले भोज्य पदाथप रदान करते।

शीतकाल की एक राहत्र में नेपाल के एक क लीन पररवार के भक्त अहतहथ ने राहत्र-सत्सुंग के उपरान्त निी जा कर देखा हक रसोईघर में आग जल रिी िै, पानी उबल रिा िै तथा एक साधक एक प्याला दूि गरम कर रिा िै। यि देख कर उस अहतहथ ने स्वामी जी से िँस कर किा- "ऊपर अखण्ड कीतपन िलता िै, निी अखण्ड रसोई िलती िै। आप रत्येक बात का पूणप ध्यान रखते िैं।"

स्वामी जी ने गम्भीरता से उत्तर हदया - "आपने सम हित बात किी िै। वास्तव में मैं अखण्ड कीतपन व अखण्ड रसोई दोनो ुंमें हवश्वास करता हाँ। जब तक शरीर-रक्षा के हलए अखण्ड रसोई न िो, अखण्ड कीतपन निी ुंिल सकता। कायपकताप हवश्राम के हबना कायप में रत िो,ुं तो उनकी िर आवश्यकता की पूहतप करना मेरा िमप िै।

"मैं अखण्ड िाय, अखण्ड दूि, अखण्ड फल-पूररयो ुंसे ईमानदार एवुं पररश्रमी कायपकतापओ ुं का पोषणा करता हाँ। पररणामतः 'हदव्य जीवन सुंघ' प स्तको,ुं लघ प स्तको,ुं पररपत्रो ुंआहद से

ति हदपक्, आध्याक्तत्मकता का रिार कर रि ि ै। ऐसे हदव्य कायपकताप ि ी मेरी मिान् हनहि िैं। मेरे हलए एक सिाक दश िजार सम्राटो ुंसे अहिक मूल्यवान् ि ै।

"अपने नश्वर ऐश्वयप से राजा-मिाराजा तथा तानाशिा मानवता का क्या हित करते िैं? क्या वि मानव को आवागमन के िक्कर से म क्त कर सकते िैं? ये सिाक हवश्व-हित के हलए परम, मिान् एवुं सत्य वरदान स्वरूप िैं। यहद मैं एक सिाक को लक्ष्य-राक्तप्त के हनकट पहुँिा सिका, तो यि हवश्व की मिान् सेवा िोगी। इसका अथप यि ि ै हक वि रेरणा-स्रोत बन कर असुंख्य जनो ुंको जाग्रत करने व उन्नत बनाने की सेवा करेगा। इस रकार हदव्य कायप का रिार व रसार िोगा।

वे सिाको ुंका बहुमूल्य मूल्युांकन करते िैं और उनके हित का ध्यान रखते िैं तथा हनष्काम रेम की वषाप करते िैं। यि सब स्वामी जी के अन्तरुंग व्यक्तक्तत्व के स न्दरतम पक्ष िैं। आश्चयप निी ुं यहद सैकडो ुंउत्स क सिाक उनकी सेवा में पहुँिते िैं। इस रकार इस हदव्य कायप में सहिय स्वयुंसेवको ुंका अभाव कभी निी ुंखटकता।

स्वामी जी यि सब कैसे करते िैं? क्या वि अपने हसद्धान्त या हविारो ुंको उन पर आरोहपत करते िैं? क्या अपने अन याहययो ुंमें वृक्तद्ध करके उन्ोनें एक पथ, सम्प्रदाय या हवहशष्ट पररहि हनहमपत करने का रयत्न हकया ि ै? हवलक्षण बात तो यि ि ै हक वे हरय सिाको ुंको अपनी मान्यताओ ुंसे कदाहप हविहलत निी ुंिोने देते। उन्ें स्वि–मप का पररपालन करने को किते िैं और कोई मन्त्र या हवशेष सािना अपनाने को बाध्य निी ुंकरते। हकसी को न तो अपनी हनष्ठा पररवतपन करने को किते िैं और न िी उसे अपनी हनसगप-रदत्त पूवप-मान्यताओ ुंको त्यागने को किते िैं।

उदािरणतः पूज्य उत्तम (सौम्य स्वभाव के कारण वे इस नाम को वास्तव में साथपक करते थे) नाम का एक बौद्ध हभक्ष आश्रम में योग-रहशक्षण के हलए हनवास करता था, तो राहत्र-सत्सुंग में स्वामी जी उसे बौद्ध-मत की राथपना तथा पाली भाषा के भजन गाने के हलए किते।

दो पारसी भक्त थे हजनमें से एक शान्त व पावन वी. ल ुंगराना और दूसरा सेवानिी और सरल हृदय वाला िोरमसजी के. था, उनके सम्बन्ध में देखा गया हक जब स्वामी जी उन्ें जोराक्तस्टरयन तथा जैन्द अवेस्ता में से हकसी अुंश का गान करने को किते, तो वे स्वामी जी के हनवेदन के हवपरीत **'ॐ नमः डशवाय'** का िी गान करते। इसी रकार दो और सिाक, जो मन्त्र-दीक्षा लेने स्वामी जी के समीप आये थे, ऐसा िी करते।

एक हलवरपूल का अुँगरेज सिाक था, दूसरा मिाराष्टर का दत्तात्रेय का उपासक था। अुँगरेज व्यक्तक्त को **'ॐ जीसस'** जपने और हलखने को किते। मिाराहष्टरयन जो हशव के पुंिाक्षिर मन्त्र की (जो स्वामी जी का अपना मन्त्र ि ै) दीक्षा लेना िािता था, हकन्त स्वामी जी ने उसे 'दत्तात्रेयाय नमः' जपने को किा और इसमें पररवतपन की आज्ञा निी ुंदी। उन्ोनें उसे दत्तात्रेय की िी दीक्षा दी। वे अपने सिाको के साथ व्यविार में कोई गोपनीयता निी ुंरखते तथा िेला-मण्डली को बढ़ाने के हलए और कोई हवशेष पद्धहत निी ुंअपनाते।

यि ि ै आज की मिान् हवभूहत का हित्र-एक भि, हनष्कपट आत्मा, मिानता और सादगी की समहय मूहतप, सदैव शान्त हवग्रि, हकसी का दोष न देख सकने वाले, हकसी के िारा हकया गया अहित याद न रखने वाले, कभी हकसी भी क्तस्थहत में िुब्ध न िोने वाले, मौन शक्तक्त के आकार

तथा रेम और मृद ता की पृष्ठभूहम में एक आत्म-हवश्वास, हविार-रसार में दृढ़ हनश्चय और उद्देश्य-
पूहतप में उत्कट उत्सा।ि
यि रुहिकर रिेगा हक सुंक्षेप में उनके सािना-काल के आिरण का ज्ञान राप्त हकया जाये
हक हकस तरि उन्ोनें सुंयम को अपनाया, हकस-हकस परीक्षा में पडे और उन्ोनें हकन-हकन वस्त ओ ुंका त्याग हकया
?

(३)

जैसा हक खानो ुंसे राप्त महणयो ुंएवुं स्वणप-आभूषणो ुंकी पृष्ठभूहम में इहतिास रिता ि,ै वैसे िी बहुत से पराने
कागजो ुंऔर पररपत्रो ुंके ढेर में स्वामी जी की दो िायररयाँ उनके सािक से
सन्त-पयपन्त जीवन-हनमापण के आन्तररक हवकास पर रकाश िालती िैं। वे मौन पृष्ठ मूक भाषा में
बडे-बडे ग्रन्ो ुंकी सी बातें अहभव्यक्त करते िैं। ये पृष्ठ अपनी रोिक कथा स्वयुं अहभव्यक्त करते
ि।ैं मैं आपके सिख उन्ें वैसे िी रस्त त करता हाँ।

स्वामी जी की एक छोटी-सी िायरी (जो उनके एक हनकटतम हशष्य ने खोज हनकाली) में
उँगहलयाँ फेरते हुए मेरी आँखें एक आयताकार पृष्ठ पर रुक गयी, ुंहजसमें स्व-हशक्षा की ये सुंहक्षप्त
पुंक्तक्तयाँ अुंहकत थथी :

१. िीिऔ की क्तस्थहत में रिो।
२. दष्टो ुंकी सेवा करो।
३. हनम्नवगप की सेवा करो।
४. मसलमान के िाथ से भोजन ग्रिण करो।
५. हवष्ठा को स्वयुं िटाओ।
६. सािओ ुंके वस्त्र िोने में रसन्नता का अन भव करो।
७. सािओ ुंके हलए पानी भर कर लाओ।

रारम्भ से िी नम्रता और सादगी उनकी सािना का रिान अुंग बन गयी थी। उन्ोंिने इस
नम्रता की दैवी सम्पहत्त को सेवा-भावना िारा हवकहसत हकया। उनकी जीवनी पर दृहष्ट िालने से िी
उनकी सफलता का यि रिस्य मालूम िो सकता िै हक उनका जीवन हकस रकार नम्रता और
सादगी से हवभूहषत रिा। एक और पृष्ठ यि अपूवप कथा रस्त त करता िै :

नमस्कार-सािना

रत्येक व्यक्तक्त को पिले स्वयुं आप नमस्कार करो।

तीसरे पृष्ठ पर दो सुंहक्षप्त स वाक्य मोटे-मोटे हकन्त स्पष्ट शब्दो ुंमें अुंहकत िैं:

१. िीिऔ की क्तस्थहत में रिो।
२. हनवैर की क्तस्थहत में रिो।

इसके दूसरी ओर देक्तखए :

१. रहतशिो की भावना न रखो।
२. ब राइयो ंका रहतकार न करो।
३. ब राई के बदले भलाई करो।
४. अपमान और आयात सिो ।

एक और व्यक्तक्तगत दैनक्तन्दनी में यि समानान्तर सिान आत्मान शासन के हबन्द ओ ंको रस्त त करता िै :

५८. कभी भी उद्दण्ड, कठोर और िूर मत बनो।
५९. हशष्टािार, हवनम्रता, सौजन्यता, सभ्यािार, भिता, सज्जनता, कोमलता आहद सद्ग णो ंको हवकहसत करो।
६६. सुंसार में घृणास्पद क छ भी निी ंिै। घृणा अज्ञानता िै। रेम और हविार से हकसी वस्त या जीव के रहत सारी घृणा को दूर करो।

दूसरे दो स्वच्छ पृष्ठो ंको उनकी स पररहित िस्त-हलहप से अुंहकत पाया :

१. हकसी के िारा हकया हुआ अहित हशश वत् शीघ्र िी भूल जाओ।
२. हृदय में इसे कभी स्थान न दो, अन्यथा वि घृणा को रदीप्त करेगा।

हवकहसत करो
क–	(१) मैत्री।
	(२) करुणा।
	(३) दवा।
	(४) रेम।

ख–	(१) क्षमा।

सबका ध्यान रखते हुए, सबसे परम रेम करते हुए 'भूल जाने और क्षमा करने के सिज स्वभाव के िोते हुए भी आप पूणप हनहश्चन्तता तथा पूणप अनासक्तक्त से कायप करते िैं। वे कई बार ऐसा भी किते िैं- "यहद ये सब वस्त एँ, सब प स्तकें, सब भवन और कायप बन्द िो जायें तो भी कोई हिन्ता निी ंिोगी। यहद आवश्यकता पडे तो लोगो ंके मूल्य न दे पाने की क्तस्थहत में इन्ें हनःश ल्क िी हवतररत कर देंगे। यिी िमारा उद्देश्य और िमप िै। िम सिा तो हकसी भी हदन क्षेत्र से हभक्षा ले लेंगे। निी ंतो िार गृिो ंके समक्ष अुंजहल फैला कर हभक्षा माँग लेंगे। एक सिा के हलए इतना िी पयापप्त िै।"

दैनक्तन्दहनयो ंके पृष्ठो ंपर दृहष्ट िालने से ज्ञात िोता िै हक उन्ोनें सिा ता की सच्ची भावना को कठोरता से अपना हलया था। उसका एक पृष्ठ तो यि बताता िै हक एक िी गृि से बराबर हभक्षा लेने से किी ंआसक्तक्त की भावना न जाग पडे, इसहलए उन्ोनें त रन्त िी यि हनयम बना हलया हक दो या तीन हभन्न-हभन्न क्षेत्रो ंसे बारी-बारी से दो-दो रोहटयाँ लेनी आरम्भ कर दी।ं आगे िल कर उन्ोनें क्षेत्रो ंसे भोजन लेना भी बन्द कर हदया और जिाँ-तिााँ से स्वतन्त्र-रूप से हभक्षा लेनी आरम्भ कर दी।

एक अन चे्छेद से एक मित्त्वपूणप बात का पता िलता ि- "सिा बन जाने पर नया जन्म ीिता ि। यहद बडे के्षेत्राहिकारी आपको अपशब्द किं, तो भी सिन करो। पूवापश्रम के जीवन व जन्म का हविार भी न आने दो।"

दूसरे अन चे्छेद से यि पता िलता ि- "जिााँ तक सम्भव िो सके, हबना जूते के िलो। सिा को आजीवन कठोर जीवन-यापन करना आवश्यक ि।"

पुनः- "एक मास या एक पक्ष के हलए स्वगापश्रम को भी हबना हकसी को सूहित हकये छोड दो। दो वस्त्र तथा एक कम्बल साथ में ले लो। गुंगा की निर के हकनारे-हकनारे िररिार से मेरठ तक हविरते रिो। मि करी पर हनभपर रिो। ग्रामवाहसयो ुंसे बात न करो। इन हदनो ुंमौन व्रत का पालन करो।"

आमतौर पर यि देखा गया ि हक जब कोई गृि और सम्बक्तन्धयो ुंका त्याग करता ि, तो वि समझता ि हक वि सम्बक्तन्धत व्यक्तक्तयो ुंके मोि और आसक्तक्त से म क्त िो गया, पर बात ऐसी निी ुंि। उससे केवल वस्त ओ ुंका त्याग हकया ि; हकन्त आसक्तक्त साथ िी ले आया ि। यि आसक्तक्त उसके भीतर बराबर रिती ि, अतः त्याग के पश्चात् सिाना-काल में मन पर उभर आती ि और हभन्न-हभन्न रूपो ुंमें रकट िोती ि। स्वामी जी ने अनथक पररश्रम िारा मन के कोने-कोने से अपने समस्त हियाओ ुंतथा हविारो ुंका हनरीक्षण करते हुए हभन्न-हभन्न उपायो ुंसे इसका पूणपतया मूलोचे्छेदन कर हदया।

मन का सच्चा हवकास हवरल िी देखने को हमलता ि। शीघ्रता तथा तत्परता से दान देने की भावना हकसी में सिज िी निी ुंआती। आश्चयपिहकत कर देने वाली उदारता और हृदय की हवशालता जो स्वामी जी में पायी जाती ि, उसका पूवापभ्यास पररश्रमपूवपक स्वगापश्रम में िी पूणप कर हलया गया था। बहुत हदनो ुंतक याहत्रयो ुंिारा समहपपत िन, फल, अन्य खाद्यान्न पदाथों आहद का स्वयुं उपभोग न करके सब-क छ अपने पडोसी मिात्माओ ुंमें बााँट देते। स्वामी जी इस अभ्यास में इतने दृढ़ थे हक िम स नते ि हक पडोसी सिा भेंट देने वाले सभी याहत्रयो ुंको स्वामी जी की ओर अवश्यमेव भेज देते; क्योहुंक वे जानते थे हक अन्ततः ये सभी वस्त एाँ उन्ें िी हमलेंगी।

उन हदनो ुंजब उन्ें रहतमाि एक हनहश्चत राहश अपने व्यय के हलए हमलती, तो वि जान-बूझ कर समूपूणप राहश का दान कर देने का अभ्यास करते और स्वयुं कई मास केवल के्षेत्र-हभक्षा पर िी हनभपर रिते।

आज स्वामी जी में जो आत्म-हवश्वास, परम मित्ता और अखण्ड शाक्तन्त की हकरणें रस्फ हटत िो रिी ि, इसकी पृष्ठभूहम में उनके उच्च कोहट के ध्यान के अभ्यास की शक्तक्त ि। यत्र-तत्र िायरी के क छ अन चे्छेद उनके ध्यान के मिान् अभ्यास को दशापते ि।

"अहिक-से-अहिक समय (८ घण्टे) मात्र ध्यान में हबताना िाहिए। िो सके तो १२ वा १६ घण्टे रहतहदन अभ्यास करना िाहिए।"

"ध्यान के अभ्यास-काल में स्वाध्याव और औषहि आहद का सेवन भी छोड देना िाहिए।"

"शीत-ऋत का सद पयोग करना िाहिए। ध्यान के अभ्यास के हलए वि उपय क्त ऋत ि।"

हनःसने्दि उनके आन्तररक सिान और तप के कारण िी उनकी वाणी और दृहष्ट में
रिस्यमयी शक्तक्तयो ंका भास त रन्त िो जाता िै। इन रीक ियररयो ंमें स्थान-स्थान पर हनम्नहलक्तखत
तपश्चयाप की बात पायी जाती िै हक नमक छोडो, केवल ऐरी हनवापि करो, जूते और छाते का
रयोग न करो, क छ हदनो ंतक उबले आल ओ ंपर तो आहद। हजह्वा-आस्वाद को पूणपतया वश में
करने के हलए उनकी उग्र तपस्या के सम्बन्ध में एक स्थान पर हनम्न बातें हलखी देख कर मैं स्तब्ध
रि गया:

१. नमक छोडो।
२. िीनी न खाओ।
३. मसाला न खाओ।
४. सब्जी छोडो।
५. हमिप छोडो।
६. इमली छोडो।

इन सबको पढ़ कर मैं तो द हविा में पड गया हक इन सबसे रेरणा और सिास राप्त
करूँ या सिा ओ ंसे भेंट करने की आशा िी सदा के हलए छोड दूँ। मेरा तो हदल िी बैठने लगा।
िरीर पीला पड गया। आगे देक्तखए :

"जब तक आप इन सब बातो ंका अभ्यास निी ंकरेंगे, आप सचे्चे सिा निी ंबन सकते।"

मैंने भय से, आदर से, आश्चयप से उनें् मूक रणाम हकया। हपघलने, गलने, ढलने,
छेदने,तराशने और रेतने की कठोर हनदपयतापूणप क्तस्थहतयो ंसे इस महण को ग जरना पडा।

ऐसेिैंस्वामी जी!

एकोनडवांश अध्याय

यिी िै मेरी देन

कला, हवज्ञान, नैहतकता, िमप आहद समस्त मानवीय हियाकलाप-सम्बन्धी क्षेत्रो ंमें हजन
मिान् आत्माओ ंने असिारण रगहत की-जो जन-सिारण के सामथ्यप बिार थी-उन्ोनें अपनी

हवहशष्ट छाप समय-पट्ट पर अुंहकत की। उन्ोनें अपनी जीवहनयो ुंव उपदेशो ुंिारा हवशेष सन्देश तथा हवहशष्ट आदशप रदान हकया और उच्च कोहट की कृहत वसीयत के रूप में तत्कालीन मानव-जाहत एवुं भावी जनता के हिताथप रस्त त की।

ईसामसीि ने पवपत पर से जन-समिू को अपना अक्षय अमर सन्देश हदया। सूली पर से हदया गया उनका हनम्नाुंहकत सन्देश मानव के हृदय-पटल पर सदैव अुंहकत रिेगा-"िे हपता! इन्ें क्षमा करना, क्योहुंक ये निीं ुंजानते हक क्या कर रिे िैं।" इस रकार उन्ोनें श्रेष्ठतम हदव्यता और उच्चतम सन्तत्व का, निीं, ुं निीं, ुं अहपत श्रेष्ठतम हदव्यता का सारतत्त्व इस सुंहक्षप्त सारगहभपत वाक्य में अहभव्युंहजत हकया।

स करात ने अपने व्यक्तिगत एवुं सामाहजक जीवन िारा सदािार एवुं अहिंसा नैहतकता का आदशप आगे आने वाली पीढ़ी को रदान हकया। वि इसी के हलए हजया और इसी के हलए मर हमटा। उसने अपने भव्य मरण िारा सुंसार को यि हदखला हदया हक नैहतक सािस एवुं शूरता क्या िोती िै और अक्तन्तम समय तक हकस रकार व्यक्ति अपने हविारो ुंपर स क्तस्थर रि सकता िै।

मोजाटप और बीथोवन के पररश्रम ने सुंगीत के क्षेत्र में हवहभन्न स्वरो ुंके समत्व और हभन्नत्व में, सुंगीत-नाटको ुंऔर आश वक्तव्यो ुंमें हदव्य मि रता को रवाहित कर सभी लोगो ुंको मन्त्र-म ग्ध कर हदया। इसी रकार जेनेर तथा राइट पेस्र एवुं हपयरे कूयूरी ने टीका-सम्बन्धी ज्ञान और रेहियम के आहवष्कार से हवज्ञान को स सम्पन्न हकया। 'रेन' का मिान् जीवन सेण्ट पाल के भव्य वैभव का रत्यक्ष रमाण िै।

मिान् शाक्य म हन ब द्ध ने मातृभूहम को श्रेष्ठ अष्टाुंग-मागप रदान हकया, जब हक अशोक ने एक आदशप शासक का उदािरण रस्त त हकया। रेमोन्मत्त गौड िैतन्य ने नाम-सुंकीतपन और रेम की भेंट दी। श्री रामकृष्ण परमिुंस ने काहमनी-काुंिन के त्याग पर बल हदया तथा समस्त िमों की एकात्मकता को रदहशपत हकया।

स्वामी रामतीथप की आनन्दोन्मत्त हदव्यता से दी झलक अभी कल की िी बात रतीत िोती िै। उनका अक्तन्तम जीवन हशश की उन्मन ज्योतनामयी क्तखलक्तखलाि त ल्य था तथा हजन्ोनें आध्याक्तत्मक हसद्धान्त से वेदान्त को 'सन्त हलत असाविानी' का नाम हदया िै। उन्ोनें असीम आनन्द तथा असीम आत्म-हनभपरता को उपाहजपत करने का सशक्त समथपन हकया।

हिमालय एवुं गुंगा-तट वासी श्रेष्ठ व आत्म-पररत्यागी सन्त ने इसी रकार अपना समूपूणप जीवन पूणपरूपेण मानवता की सेवा में समहपपत कर हदया। मैंने पूणप रयास हकया िै हक अपने सामने रकट उनके उच्चादशी एवुं हवहशष्टताओ ुंको आपके समम ख हवस्तारपूवपक रस्त त करूाँ।

इनदोदशकोुंमेंजन-हिताथपकीगयीहनष्कामसेवािारास्वामीजीकीरवृहत्तकीक छ हवहशष्टताएाँ हवशेषरूपसेउभरी,जोवतपमानपीढ़ीकोहवहशष्टअलभ्यउपिार-स्वरूपराप्तहुई िैं।अबतकअज्ञातसािनाऔरआत्मान शासनकीहवहियााँ,हवलक्षणहविारवआध्याक्तत्मकजीवन केरहतनवीनदृहष्टकोणआहदस्वामीजीकीदेनिैं।समयएवुंपररक्तस्थहतयोुंकीमााँगकेअन सार हवशेषआवश्यकताओुंकीपूहतपकेहलएउन्ोनें क छहविारोुंकीव्याख्यारस्त तकरउसकेमित्त्व पर बल हदया िै।

जीवन को गहतमान करने के हलए स्वामी जी ने हजन व्याविाररक पिल ओ ुंपर बल हदया िै, उनमें से म ख्य ये िैं-आध्याक्तत्मक दैनक्तन्दनी का रयोग करना, सुंसार के हिया-कलापो ुंके मध्य राणदाहयनी सािना के सत्ताईस हनयमो ुंका साविानी से पालन, हदन के रत्येक क्षण की
सद पयोहगता से लाभाक्तित िोने की हवलक्षण रहिया।

हितीय-हजस हलक्तखत जप की अब तक उपेक्षा िोती री, उसे उन्ोनें प नजीहवत हकया।
इस अभ्यास का सफलतापूवपक इतना रिार-रसार हुआ हक अक्तखल भारत से स्वामी जी को हवहभन्न
हशष्यो ुंिारा भेजे गये हलक्तखत नाम-जप के बण्डल रहतहदन िाक िारा राप्त िोते िैं।

तृतीय-स्वामी जी सािको ुंसे म हित रहतज्ञा-पत्र भरवाते िैं, हजससे वे हनयमो ुंके अन पालन
का सुंकल्प लें। इसका आशय यि िै हक िलहित्र, िूम्रपान, उपन्यास का व्यसन आहद जैसी
आजकल की रिहलत ब राइयो ुंको त्याग कर िररत्रवान् बनो।

ति थप-व्यक्तक्त अपने समक्ष सदैव आदशप-वाक्य रखे। उन्ें गृि की दीवारो ुंपर मोटे अक्षरो ुंमें
अुंहकत करे या कागजो ुंपर हलख कर जेब में रखे, हजससे हदन में कई बार पढ़ कर साविान रिा
जा सके। 'हदव्य जीवन सुंघ' के रम खालय में ये आदशप-वाक्य
मोटे अक्षरो ुंमें सुंगमरमर पर अुंहकत िैं। हिन्दी, सुंसृकृत और अाँगरेजी भाषा में हलक्तखत आदशप-
वाक्यो ुंको दशपक पवपत पर अवक्तस्थत भजन मिाकक्ष में रहवष्ट िोने पर पढ़ सकता िै।

एक सामान्य व्यक्तक्त की हियाओ ुंका आध्यात्मीकरण करने के हलए उन्ोनें सािना की एक
अन्य व्याविाररक रहवहि बतलायी िै- वि िै हनहश्चत हदनियाप का दृढता से पालन करना।
हवद्याहथपयो,ुं गृिक्तस्थयो,ुं अवकाश राप्त व्यक्तक्तयो ुंऔर सािको ुंके क्तस्थत्यन सार हदनियाप को िार-पााँि
भागो ुंमें हवभाहजत हकया गया िै।

वतपमान पीढ़ी के हृदयो ुंमें उन्ोनें कौन से हविारो ुंको सफलतापूवपक सुंक्तस्थत करने का
रयत्न हकया िै? वैसे तो अनेक हविार िैं, हकन्त क छेक पर उन्ोनें अत्यहिक बल हदया िै। उनकी
समस्त हशक्षाओ ुंमें से जो हवहशष्ट एवुं सवोपरर हशक्षा िै और हजस पर इन्ोनें हवशेष बल हदया िै,
वि िै हनष्काम सेवायोग।

स्वामी जी आग्रिपूवपक किते िैं हक इस भूलोक में समस्त राणी-वगप की हनष्काम सेवा िी
श क्तद्धकरण की मिान् शक्तक्त िै। उच्च जीवन और हवराट् आत्मान भूहत का यि एक मिान् अपररियप
अुंग िै। नैहतक क्तस्थरता और आिाररक उन्नहत की दृढ़ नीवुं के अभाव में आनन्द और पूणपता-
राप्त्यथप हकये गये समस्त सािहसक रयत्न हनष्फल िैं। आिाररक क्तस्थरता और नैहतक उन्नहत के हलए
हकसी-न-हकसी रूप में सच्ची एवुं िाहदपक सेवा अपेहक्षत िै।

व्यक्तक्त में सहन्नहित कच्ची िात -रूपी अि को हपघलाने के हलए यि एक स न्दर रहिया िै।
जीवन में आनन्द, शाक्तन्त और समृक्तद्ध-रूपी पररश द्ध स्वणप के राप्त्यथप यि एक परमावश्यक रहिया
िै। रारम्भ में िी शक्तक्त और ध्यान के हलए स्वयुं को उपय क्त एवुं योग्य समझ लेना घोडे के आगे
गाडी लगा देने जैसा िै।

उदारता और परोपकार को अहिक मित्त्व देते हुए वि कभी थकते निी।ुं पूजा-भाव से
हकया गया एकमात्र यि कायप िी लक्ष्य राक्तप्त में सिायक िोता िै। उनके हविार से यि सािन और

साध्य दोनो ंिी िै। यिाँ इससे व्यक्तक्त अनेक बार इस पररणाम पर पहुाँिता िै हक स्वामी जी का रम ख उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार-राप्त्यथप हनष्काम सेवा को हनश्चयात्मक पथ बताना िै। हनकट-सम्पकप में आने वाले व्यक्तक्तयो ंका यि अहभमत िै हक इस य ग की मिान् पूजा के रूप में हनष्काम सेवा के हसद्धान्तो ंको रहतष्ठाहपत करना िी स्वामी जी के जीवन का रम ख लक्ष्य िै।

यहद कोई हकसी भी दृहष्टकोण से देखे, इस हवहशष्टता को स्वामी जी के दैहनक जीवन का सिज अंग िी पायेगा। जन-सािारण, अभ्यागत, नवागन्त क, अहतहथ हवद्याथी आहद सभी की सेवा में तल्लीन िो जाने में िी वे परम आनन्द की अन भूहत करते िैं। उनका परम हरय हवषय हनष्काम सेवा िै हजससे वे जीते िैं, हजसके हवषय में वे वातालाप करते िैं तथा हजसके हवषय में वे हलखते िैं।

सेवा की हपपासा िी आज के जीवन की हवहशष्टता िै जो सवपत्र हवद्यमान िै। सब देशवाहसयो ं के हृदयो ंमें समाज-सेवा की भावना सवोपरर िै। हवज्ञान िारा दूरी के हबलक ल हमट जाने से व्यक्तक्त स्वयं को हवश्व का नागररक मानता िै। स्वामी जी के हविारान सार स्वयं को हवश्व से पृथक् मानना मूखपता िै। यि भावना मृतराय िै।

शक्तक्त के मद से अन्धे क छ व्यक्तक्तयो ंमें घृणा, हिंसा और रहतहिंसा की भावना भले िी अल्पकाल के हलए हवद्यमान िो; हकन्त अहिकांशतः हवश्व-बन्ध त्व की भावना के सूत्र ने हवश्व को अन सूयूत कर रखा िै। आज की भावना दूसरो ंके साथ बााँट कर खाना, सेवा करना और पर-स खाथप त्याग करना िै। पाठक हिन्दी िो हकिी ंभी दृहष्टपात करें, वे देखेंगे हक हविारको, ं दाशपहनको ंऔर सन्तो ंने सेवा को िी आदशप मान कर उसकी महिमा का गान हकया िै।

यि भी एक सामान्य अन भव िै हक अहिकांश लोगो ंमें सेवा करने की भावना तो िै; हकन्त वे भली रकार यि निी ंजानते हक उसे हकस क्षेत्र में, किााँ से और कैसे रारम्भ करें? यि िै भी भ्रामक। इस कहठनाई के हनवारणाथप गृिहत-त ल्य स्वामी जी की यि सेवा स्मरणीय रिेगी। इस नव-य ग में रहवष्ट िोते िी उन्होंने सेवा-क्षेत्र में यत्नपूवपक हवशद व्याख्या िारा ऐसी रत्यक्ष सेवा की हजसका ऋण निी ंि काया जा सकता। कमपयोग पर हवसूतृत प स्तक हलख कर उन्होंने बािाओ ं के हनवारणाथप तथा सेवा को कायापक्तित करने के हवहवि उपाय वहणपत हकये िैं।

सभी रकार के व्यक्तक्तयो ंके हलए, िािे उसमें कोई हनम्नतर श्रेणी का िी क्यो ंन िो, स्वामी जी ने सबकी क्तस्थहत एवं क्षमतान सार दूसरो ंके हलए उपयोगी िोने के हवहवि उपाय बताये िैं। अपनी सेवा की भावना को कायापक्तित करने तथा पराथप लाभदायक हसद्ध िोने के हलए उपायो ं की कमी अब निी ंखटकेगी।

व्यक्तक्त को अब तक तो कमपयोग के आशय का स्पष्ट ज्ञान िी निी ंथा, जब हक भक्तक्तयोग, राजयोग, ज्ञानयोग आहद की व्याख्या व अभ्यास-रहिया स्पष्ट थी। अब तक लोग मात्र इतना िी जानते थे हक अनासक्त भाव से कमप करना िी कमपयोग िै। कोई भी यि निी ंजानता था हक कमप कैसे करना िै, क्या करना िै और फल का रूप क्या िोगा? जो-क छ था, वि स्पष्ट एवं सन्तोषदायक निी ंथा।

स्वामी जी की इस प स्तक (कमपयोग) ने मानव-समाज को एक अमूल्य हनहि के रदान की िै, क्योहंक इसने कमप-मागप हवषयक अस्पष्टता को दूर हकया िै। हनष्काम सेवा िे हवहवि रूपो ंपर

उसने पूणप रकाश िाला िै और कमपयोग व्याविाररक रूप में कैसे अहभव्यक्त िोता िै, जीवन के रि क्षण में हभन्न-हभन्न रकार के व्यक्तक्त हनष्काम सेवा कैसे कर सकते िैं-इस हवषय पर उन्ोनें मानव-समाज को अमूल्य उपिार हदया िै।

इसके पश्चात् उपेहक्षत ब्रह्मियप एवं नैहतक पहवत्रता को नवीन रूप से स्पष्टतया दशापना उनकी दूसरी मित्ता िै। आि हनक राष्टर तथा नवय वको ंको इस मित्त्वपूणप हविार का प नः- प नः ज्ञान कराने के हलए उन्ोनें भरसक रयत्न हकया िै। यि इस देश की माँग निी ंिै, यि आि हनक हवश्व-भर की माँग िै। नवय वको ंके नैहतक पतन को रोकने तथा आदशप के नये लोक का िार खोलने के हलए मानहसक, वाहिक, काहयक-हत्रहवि पहवत्रता पर बल दे कर स्वामी जी ने अमूल्य सेवा की िै।

उनकी कोई भी प स्तक ऐसी निी ंिै, हजसमें रत्यक्ष या अरत्यक्ष रूप से प रुष और स्त्री के रत्येक जीवन-स्तर के हलए ब्रह्मियप जैसे मित्त्वपूणप हवषय की ििाप न की गयी िो। ब्रह्मियप से तात्पयप केवल शारीररक संयम मात्र से निी ंिै, बक्तल्क हत्रहवि रकार की-काहयक, वाहिक तथा मानहसक- पहवत्रता से िै। इसके हलए िम उनके ऋणी िैं।

ब्रह्मियप केवल अहववाहित तथा सि ओ ंके हलए िी निी,ं अहपत हववाहित स्त्री-प रुषो ंके हलए भी िै। अपने हवशद अथप में वि उद्देश्य में स्वस्थ और संयम तथा पहवत्रता की ओर उन्म ख िोना िै। यि जीवन की हकसी हवशेष अवस्था तक सीहमत निी,ं बक्तल्क आय -भर से सम्बक्तन्धत पथ-दशपक हसद्धान्त िै।

मि स्वामी जी के कृतज्ञ िैं हजनकी कृपा से यि जान पाये हक ब्रह्मियप व्यक्तक्त एवं राष्टर की सवपश्रेष्ठ दृढ़तम नीवं और सब रकार की उन्नहत और उपलक्तब्धयो ंका अपररिायप अंग िै। सदािार गृिस्थी, हववाहित स्त्री और हवद्याथी सबके हलए ज्ञान से बढ़ कर िै। अतः इक्तिय-दमन और आत्म-संयम िररत्र-हवकास की मौहलक अपेक्षाएँ िैं। इसहलए नैहतक पहवत्रता और ब्रह्मियप के हवषय में यि नवीन दृहष्टकोण एक ऐसी आश्चयपजनक हनहि के रूप में सामने आया िै, हजसे सबको राप्त करना िाहिए। इसका अहभराय सिाक-जीवन में अहनच्छापूवपक स्वयं को संयम के वशवती ंकरना निी ंिै।

हजस आत्म-संयम और पहवत्रता के आदशप का उन्ोनें समथपन हकया िै, उसके आश्चयपजनक, िमत्कारक एवं जाज्वल्यमान दृष्टान्त वे स्वयं िैं। स्वामी जी ने अपनी स्पष्टवाहदता से, इस हवषय से सम्बक्तन्धत बेत की िारणाओ ंका सफलतापूवपक हनवारण कर हदया िै। अब हविारवान् प रुष और स्त्री इसे रकृहत के हनयमो ंका उिंघन, जीवन का व्यहतिम तथा सि ओ ंका अरिहलत व असम्भाव्य आदशप जैसी वस्त निी ंमानते।

तीसरा वरदान हजसे रत्येक व्यक्तक्त को दृढ़तापूवपक पालन करना िै, वि िै जप का हनयहमत अभ्यास। अब तक िमारे आध्याक्तत्मक साहित्य में केवल जप की महिमा बताने वाली कोई प स्तक उपलब्ध निी ंथी। जप-सािना को आत्म-साक्षात्कार का एक स्वतन्त्र और स्वतःपूणप परम सािन रहतपादन के हलए भारत देश तथा समग्र हवश्व स्वामी जी का अत्यहिक आभारी िै।

उन्ोनें जपयोग को सािसपूवपक पूणप योग बतलाया िै, न हक ताक्तन्त्रक सािना का अंग मात्र। इस हशक्षा का वास्तहवक मित्त्व एवं लोगो ंका मूल्यांकन भले िी िम अभी न कर पायें,

हकन्त लोगो ुंमें इसके िाक्तन्तकारी रभाव का रमाण समय हनश्चय िी दशापयेगा। पररणामतः सिस्रो ुं व्यक्तक्त माला ग्रिण करके हनयहमत रूप से जप करने लग गये िैं। जो व्यक्तक्त िमप को व्यक्तक्तगत क्षमता से परे तथा इन अभ्यासो ुंकी आवश्यकताओ ुंको मानवेतर समझते थे, उन्ोनें अब स्वामी जी िारा अन मोहदत एव रहतपाहदत जप-सिाना के रभावशाली ढुंग को अपना हलया िै हजससे उन्ें नव-जीवन की राक्तप्त हुई िै।

जपयोग के हलए न तो असािारण शारीररक बल की और न िी असािारण मानहसक शक्तक्त की आवश्यकता िै। यि उच्चतम अन भूहत रदान करता िै। यिी कारण िै हक अब जपाभ्यास करने वालो ुंकी सुंख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रिी िै। जप-सािना की नयी तरुंग तीव्रता से गहतमान िो रिी िैं। रतीत िोता िै हक हनकट भहवष्य में इसके अहमट रभाव लहक्षत िोगें।

स्वामी जी ने हवश द्ध िठयोग के हवषय को ले कर नवीन ढुंग से रस्त त हकया िै। उन्ोनें आसन, राणायाम, म िा आहद के रहत िमारे रिस्यमय व सुंशयात्मक दृहष्टकोण का हनवारण हकया िैं तथा िठयोग के सैद्धाक्तन्तक एवुं व्याविाररक पिल ओ ुंकी व्याख्याओ ुंके स्पष्टीकरण िारा िमें उसकी उपयोहगता से पररहित कराया हक यि एक अहत-सरल, बौक्तद्धक और पूणपरूपेण व्याविाररक पद्धहत िै, हजसके िारा िम उच्च स्तर के शारीररक और मानहसक स्वास्थ्य को राप्त कर सकते िैं।

जिााँ पिले जन-सािारण आसन और राणायाम को ग प्त और िाहनकारक समझते थे, विी ुं अब स्वामी जी के सरयत्नो ुंके फल-स्वरूप अनेक व्यक्तक्तयो ुंने उसे अपनी दैहनक हदनियाप में स्थान दे रखा िै। स्वामी जी का िम अत्यहिक आभार- रदशपन करते िैं, हजन्ोनें अपनी कृहतयो ुंिारा अत्य पयोगी िठयोग के गोपनीयता तथा रिस्यमयता के आवरण को िटा हदया िै। राष्टर के स्वास्थ्य-रदायक एवुं जीवनदाहयनी क्षमता के कारण इसकी व्याविाररक एवुं तात्काहलक उपयोहगता का समथपन हकया िै।

स्वामी जी ने औषहि-हवज्ञान और शरीर हवज्ञान में कोई शोि-कायप निी ुंहकया िै, बक्तल्क स्वाध्याय और योगाभ्यास के आिार पर िी इन मित्त्वपूणप तथ्यो ुंसे अवगत झा कर पररत हष्ट राप्त की िै। पररणामतः आसनो ुंऔर राणायाम के क्षेत्र में राष्टर ने व्यापक रूप से रुहि ली।

यिााँ मैं एक बात की ओर ध्यानाकृष्ट करता हाँ हक जो अहिकाुंश पाठको ुंके हलए लाभदायक िोगी। स्वामी जी पर यि आक्षेप हकया गया िै हक िठयोग के रिार-रसार में यि योगाभ्यास द िारी तलवार त ल्य िै। कारण यि बताया गया िै हक प स्तक में वहणपत इस योग की बाह्य सरलता से कई बार उत्सािी पाठक पथ-भ्रष्ट िो जाते िैं। शीघ्रता से अपने-आप अभ्यास करने के कारण वे अरत्याहशत कहठनाइयो ुंमें फाँस जाते िैं। यि भी तकप रस्त त हकया जाता िै हक िठयोग के रिार-रसार से हजतने लाभ सम्भव िैं, उतनी िी िाहनयााँ भी सम्भव िैं।

इनतथ्योुंकोनकारनेकारयत्ननकरते हुए मैं थोडे से शब्दो ुंमें यि बताने का रयत्न करूाँगाहकहकसरकारइनकहठनाइयोुंकादोष रत्यक्षतः अन्यायपूवपक इसके रिारको ुंऔर पद्धहत

पूर्णयोगोपयोगी।पद्धतमूल्यक योग िै। यहद िम इसके अभ्यास में हनहदपष्टसभीहनयमोुंकाअक्षरशःपररपालनकरें, तो यि िाहनकारक कदाहप निी।ुं हनहदपष्ट हनयमो ुं का उल्लंघन करने से िाहन िोती िै।

स्वामी जी ने िठयोग की पररपूणप उपयोहगता के कारण इसको उपय क्त और सम हित स्थान रदान करने का पूणप रयास हकया िै, हजसमें दोषारोपण के हलए हबलक ल स्थान निीं ुंिै। अभ्यासी हजन कहठनाइयो ुंमें फाँस गये, उनकी सम्भावना पिले िी थी। आप देखेंगे हक िठयोग या इससे सम्बक्तन्धत हवषयो ुंपर स्वामी जी ने जो प स्तकें हलखी िैं, उनमें उन्ोंनेुं सिज ब क्तद्ध के रयोग और साविानी पर बल हदया िै।

ठियोग का अभ्यास करने के इच्छ क सािको ुंको हजन मित्त्वपूणप हवशेषताओ ुंसे सम्पन्न िोना िाहिए, स्वामी जी उनका हवस्तृत पथ-हनदेश करने में कभी निीं ुंिूकते। वे क छ अपररिायप रहतबन्धो ुंका वणपन करते िैं, हजनकी पूहतप अभ्यास करने से पूवप की जानी िाहिए। पर यथाथप में देखने में क्या आता िै? योग में रवीण व्यक्तक्तयो ुंका पररिय पढ़ने से अभ्यासी मोहित िो उसी क्तस्थहत को राप्त करने के हलए अिीर िो जाते िैं; हकन्त अभ्यास करने के पूवप हनहदपष्ट हनयमो ुंका पालन निीं ुंकरना िािते। वे पहवत्रता और पूवप-तैयारी की िीमी रहिया की उपेक्षा करते िैं, पररणामत: द ःखी िोते िैं। हक दोष दूसरो ुंके ऊपर मढ़ना िािते िैं।

स्वामी जी अभ्यास की अवस्था को स रहक्षत बनाये रखने में सिायक सभी हवशेष हनदेशो ुंको आवश्यक बताते िैं। जिाँ उनकी उपेक्षा िोगी, विाँ कहठनाई स्वाभाहवक िी आयेगी। यौहगक अन शासन-सम्बन्धी इन सभी अन देशो ुंका अक्षरशः पररपालन करना िाहिए जो आवश्यक िैं, जैसे- य क्त आिार, अहत का पररिार, पहवत्रता और आत्म-सुंयम। हकतने लोग िैं जो इनका पालन करते िैं?

औषहि की बोतल या िीम की शीशी पर अुंहकत हनदेशो ुंऔर यातायात- सम्बन्धी हनयमो ुं का पालन आज का व्यक्तक्त पूणपतया करेगा, हकन्त जब िठयोग के अभ्यास के पूवप-हनहदपष्ट हनयमो ुं के पालन करने की बात सामने आती िै, तो उसके हलए वि िैयप खो बैठता िै। िठयोग के अभ्यास का फल तो िािता िै; हकन्त अहनवायप हनयमो ुंकी अविेलना करता िै। हनःसन्देि पररणाम इच्छान कूल निीं ुंिोगा। यहद सािक स्वामी जी िारा हनहदपष्ट हनयमो ुंका पालन करें, तो मिती सफलता अवश्यमेव राप्त िोगी। अच्छा या ब रा पररणाम तो अभ्यासी के िारा हनिापररत हनयमो ुंका साविानी से पररपालन अथवा उिंघन करने पर हनभपर िै।

ठियोग के प नजीहवत िोने का रमाण भारत के कोने-कोने से आने वाला पत्रािार िै। स्वामी जी की िठयोग-सम्बन्धी प स्तको ुंके ध्यानपूवपक स्वाध्याय से सैकडो ुंव्यक्तक्तयो ुंने आसनो,ुं हियाओ,ुं म िा, बन्ध व राणायाम में अत्यहिक हनप णता राक्तप्त का रमाण हजतना इस पत्रािार से ठीक-ठीक ज्ञात िोता िै, उतना हकसी अन्य सािन से निीं ुंिोता। ऋहषकेश में क्तस्थत हशवानन्दाश्रम में बहुत से पाठको ुंने आसनो,ुं हियाओ ुंव राणायाम का रदशपन करके स्वामी जी को यि कथन करते हुए िहकत कर हदया हक यि सब ज्ञान और हनप णता उनकी प स्तको ुंके अध्ययन से राप्त हुई िै।

स्वामी जी के बहुमूल्य हविार आज की पीढ़ी के हलए एक मूल्यवान् हनहि

रथमतः उन्ोंनेुं इस सुंशय का हनवारण हकया हक आध्याक्तत्मक सािना हवशेष वगप और जीवन कीहवशेष समयावहि के हलए िै तथा सामान्य जीवन की हदनियाप से पृथक् िै।

दूसरी ओर उन्ोनें यि बतलाया हक सिाना जीवन की एक पद्धहत ि ै। सिानामय जीवन-यापन करना िी स्वयमेव जीवन ि ै। रत्येक हिया-मानहसक एवं शारीररक, आन्तररक एवं बाह्य, ऐक्तच्छक एवं अनैक्तच्छक सिानान सार सम्पन्न िोनी िाहिए। इस भाव का िी यत्नपूवपक रोपण एवं पोषण िोना िाहिए। सिाना को वैयक्तक्तक दैहनक हदनियाप से अलग निी ंहकया जा सकता।

स्वामी जी ने अपने अनेक पाठको ंऔर पत्रािार करने वालो ंके मन पर यि भली रकार अंहकत कर हदया हक सिाना िी मानव-जीवन का एकमात्र उदे्देश्य ि ै। इस उदे्देश्य के राप्त्यथप िी मानव-जीवन और शरीर राप्त हुए िैं। जीवन के अन्य रूप रासंहगक और गौण िैं। िम इस तथ्य को समझने में जागरूक िो गये िैं हक सिाना, सत्य के साक्षात्कार ित जीवन का लक्ष्य-हबन्द ि ै। इसमें िी िमारे जीवन की साथपकता ि ै। उनको िमप तथा आध्याक्तत्मक जीवन की, इस बौक्तद्धक य ग तथा राष्टर की भावना के अन रूप तथा वतपमान सदी की हवशेष आवश्यकता के अन कूल व्याख्या करने का स अवसर राप्त हुआ ि ै।

समयोहित हत्रहवि संयम-अहिंसा, सत्य और पहवत्रता का दृढ़तापूवपक अन पालन करने की परमावश्यकता ि ै। आज के समाज और देश का सभ्य वगप जो रत्यक्षतः तीन ब राइयो ंसे आिान्त ैं, उनका रहतरोि केवल यि आिमणकारी हत्रहवि रहतपक्ष-भावना िी कर सकती ि ै।

१९१४ या इससे पूवप के अन्ताराष्टरीय व अन्तररजातीय सम्बन्धो ंमें िूरता, घृणा और हिंसा रत्यक्ष पररव्याप्त ि ै। व्यापाररक व अथप-परायण सम दायो ंमें झूठ व कपट सवपत्र पररलहक्षत िोता ि ै। आि हनक समाज में लाभ–िहन और पररग्रि का िी राज्य ि ै। व्यक्तक्तगत और पाररवाररक जीवन में असंयम और अनैहतकता का बोलबाला ि ै। आज की तीव्र माँग यि ि ै हक इन तीनो ंआस री शक्तक्तयो ंपर स हनयोहजत आिमण िो। इसी के सशक्त रहतरोि में स्वामी जी ने अहिंसा, सत्य और ब्रह्मियप के हत्रहवि संयमो ंका पालन अपने विनो,ं प स्तको ंऔर हदव्य जीवन संघ की हियाओ ंिारा सम्पाहदत करवाने का रयास हकया ि ै।

उनकी कृहतयो ंकी एक और रम ख हवहशष्टता यि ि ै हक उन्ोनें आध्याहतलक जीवन से व्याविाररक पक्ष को रम खतः हवश्वात्मक आिार पर रस्त त हकया ि ै, हजससे हक यि अभी और सवपत्र हवसूतृत रूप से हियाक्तित िो सके। समस्त साम्प्रदाहयक भावनाओ ंऔर रूहढ़यो ंको हनकाल कर तथा अरांसहगक , अनावश्यक एवं अव्यवक्तस्थत तत्त्वो ंका हनवारण करके तथ्य के सारतत्त्व को वे िमारे अथवा हवश्व के समक्ष आत्म-साक्षात्कार के हलए-आत्मान शासन की पद्धहत रस्त त करते िैं। संसार में रिते हुए संसार िारा िी हदव्य जीवन-यापन करने का यि रिान एवं रम ख हसद्धान्त ि ै।

व्यक्तक्त सदैव इस िेतनता को जाग्रत रखे हक सबमें विी शाश्वत सत्ता पररव्याप्त ि ै। उन्ोनें संसार के सि ख यि हविार रस्त त हकया हक समपपण-भावना से कतपव्य कमों को सम्पन्न कररए। आध्याक्तत्मकता के हलए उन्ोनें अहनवायप असाम्प्रदाहयक सारतत्त्व को िी ग्रिण हकया।

अन्ततः जो मिान् ग्रिणीय एवं सशक्त वरदान िमें इस मानव-जीवन में राप्त हुआ ि ै, वि ै िमप का सारतत्त्व-'कमप करो' का अहवस्मरणीय हविार। िमप का तात्पयप यिी ि ै। हजनमें आपको श्रद्धा ि ै, हजनका आप आदर करते िैं, हजन्ें स्वीकारते िैं, िािप करते िैं, हविार-हवमशप करते ैं, अध्ययन करते िैं, शोि करते िैं-उनमें न तो हकसी एक को और न िी सबको मानना िमप ै। कोई एक-दो सिारण कायप जो वास्तव में आप करते िैं, हजनका आप अभ्यास करते िैं,

तदन सार जीवन-यापन करते िैं यथाथप में विी िमप एवुं आध्याक्तत्मकता िै। ब्राह्मम हतप में उठ कर दश हमनट िरर-नाम-स्मरण करना गीता एवुं िमपशास्त्रो ुंके ज्ञान की अपेक्षा वास्तहवक िमप िै। इस मित्त्व एवुं उत्सािपूणप आदशापन सार व्याविाररक जीवन जीना एवुं कमप करना िी एकमात्र आध्याक्तत्मक जीवन िै-इसे उन्ोनेुं मानव के हृदय-पटल पर अुंहकत कर हदया िै।

यहद आपको अपने जीवन को आध्याक्तत्मक बनाना िै, तो रथमतः यि देक्तखए हक वि अन्य व्यक्तक्त के जीवन में हकस रूप में अहभव्युंहजत िोता िै, हफर आप भी वैसा िी कररए। उन्ोनेुं सहिय एवुं सकारात्मक अभ्यास को मित्त्व देते हुए उसे इसका आवश्यक अुंग माना िै। सभी मान्यताओ ुंऔर समग्र हवश्वासो ुंमें त हष्ट तथा िाहमपक क्षेत्र में बौक्तद्धक मनोरुंजन को इससे पृथक् माना िै।

'जीवन-यापन कैसे करें' के हवषय में बताने के उपरान्त िमप के हवषय में सब-क छ बताने की आवश्यकता निी ुंरिती। यि व्यक्तक्त पर छोड हदया जाता िै हक वि पूछे- "अब म झे िमप के हवषय में क्या करना िै?" स्वामी जी के इस क्षेत्र में पदापपण करने पर उत्तर यिी हमलता िै- "करने से रारम्भ करो, जैसे िी उत्तरोत्तर बढ़ते जाओगे, तो जान जाओगे। समय आने पर सब-क छ आपके सामने रत्यक्ष िो जायेगा।" सशक्त सकारात्मक ढुंग से उन्ोनेुं यिी सार रस्त त हकया िै हक 'कमप करो।'

रातः िार बजे उठो। आिे घण्टे के हलए पद्मासन पर बैठो। अपने इष्ट-मन्त्र की १०८ माला जपो । क छेक आसन करो। एक घण्टा मौन िारण करो। हजह्वा पर सुंयम रखो। हमिप और इमली का त्याग करो। पररग्रि कम करो। रहतहदन शास्त्राध्ययन करो। हनयहमत रूप से दान करो। ब्रह्मियप का पालन करो। म ट बोलो। कट ता का त्याग करो। रहतहदन कम-से-कम एक पृष्ठ इष्ट-मन्त्र हलखो। जागते और सोते समय भगवान् का नाम स्मरण करो। यिी िै िमप का स्वरूप, जो स्वामी जी ने हवश्व के सि ख रस्त त हकया।

क छ कमप करो। अभ्यास करो। वास्तहवक जीवन-यापन करो। केवल हवश्वास िी न करो, बक्तल्क वैसा बनो और वैसा िी जीवन-यापन करो।

डवांशडत अध्याय

पथ-हनदेश

व्यस्त जीवन के अवकाश के क्षणो ंमें इस पस्तक को खोहलए और इस अध्याय पर दृहष्ट िाहलए तथा जीवन के परम लक्ष्य-सम्बन्धी समस्त रश्नोत्तरो ंमें स्वामी जी के हविार सार-रूप में ग्रिण कीहजए। हवहभन्न अवसरो ंपर अहभव्यक्त उनकी उक्तक्तयो ंका संकलन स बो शीषपको ंमें रस्त त
ीं, जो अनौपिाररक बातिीत व कछ उत्सक हजज्ञासओ ंके रश्नो ंके उत्तरो ंमें अहभव्यंहजत हुई।
एक िी दृहष्टपात से आप इसके सारतत्त्व से अवगत िो जायेंगे।

वास्तडवक जीवन : जीवन की पृष्ठभूहम में एक भव्य उच्चादशप िै जो खाने-पीने तथा सोने से किी ंअहिक मित्त्वपूणप िै। पूणप स्वतन्त्रता, पूणप हनभपयता, पूणप आनन्दमय आत्ममय हनत्य जीवन िी वास्तहवक जीवन िै। यि अमरत्व और परम शाक्तन्त की क्तस्थहत िै। सभी रकार के हवनाश, मृत्य, अशाक्तन्त व कामनातीत क्तस्थहत िी हनत्य तहष्ट की क्तस्थहत िै।

जगत् : पृथ्वी हवशाल सृहष्ट के एक हबन्द मात्र से भी छोटी िै। समस्त सृजन अपने अनहगनत सूयप, ग्रि तथा तारा-मण्डल सहित परम सत्ता की अनन्तता के एक क्षण त ल्य िै।

सवापतीत परम सत्य हनत्य, अखण्ड, सत्, हित्, आनन्द िै।

यि सम्पणप दृश्य जगत् अणओ ंका हपण्ड मात्र िै। यि मिान् मिासागर केवल दो गैसो ंकी संयक्त संरिना िै।

लक्ष्य : इस पाहथपव जीवन का लक्ष्य सत्, हित्, आनन्द की परमानन्द क्तस्थहत की अन भूहत करना िै। जीवन का उदे्देश्य मन की हनम्न वृहत्तयो ंको हवहजत करना, पररसीमाओ ंसे ऊपर उठना और खोये हुए हदव्यत्व को पनः राप्त करना िै।

डवघ्न-बाधाएँ : क्षहणक ऐक्तिक सखो ंके आवतप में मानव ने अपने लक्ष्य का हवस्मरण कर हदया िै। वि निी ंजानता हक वि वस्ततः क्या कर रिा िै? वि समझता िै हक वि सब-क छ

जानता ि ै; हकन्त वि अज्ञान के गतप में ि ूबा हुआ ि ै। इस भ्रम का कारण अहवद्या या माया ि ै। यि रिस्यमयी शक्तक्त आपके वास्तहवक रूप को आच्छाहदत कर लेती ि ै तथा आनन्द व अमरत्व
की राक्तप्त में बिाक बनती ि ै। अहतशय अि-भावना, मानहसक ि ुं ि लता और ऐक्तिक स खो ुंकी सतत लालसा के रूप में माया मानव को भ्रहमत करती ि ै। हनज दि के, कांुनि और काहमनी की आसक्तक्त के मद में मानव पूणपतया अन्धा ि ो गया ि ै।

लौडकक जीवन : इस जगत् का जीवन अव्यवक्तस्थत, अपूणप तथा अशाक्तन्त से पररपूणप ि ै। सांुसाररक हवषय-स ख-भोगो ुंकी कामना ि ी इस द ः ख का कारण ि ै। इस हवषय-स ख-भोग की कामना का कारण शाक्तन्त को बिार से राप्त करने की अज्ञानता ि ै। समस्त कामनाएँ, आसक्तक्तयाँ, हनराशाएँ और यातनाएँ सदा के हलए हवनष्ट ि ो जायेंगी, जब यि अन भूहत ि ो जायेगी हक शाक्तन्त आपके हृदय में क्तस्थत ि ै। आपके भीतर ि ी आनन्द का सागर ि ै। बिार अिुं एवुं वासना की आग िि क रिी ि ै। सब राणी इसमें झ लस रि े िैं। उनके पास आत्म-हनरीक्षण, मानहसक श क्तद्ध व ध्यान करने के हलए समय ि ी निीं ुंि ै।

एकमात्र उपाय : मानव शरीर ि ी एकमात्र ऐसा माध्यम ि ै, हजससे ि म भव-सागर को पार कर सकते िैं। इसके अहतररक्त और कोई हवकल्प निीं ुंि ै। हत्रलोक में मानव-जन्म ि ी मित्त्व एवुं बहुमूल्य वरदान ि ै। असाविानी और ऐक्तिक स ख में जीवन को व्यथप ि ी मत गँवाओ, अहपत रत्येक क्षण का सद पयोग करो। यहद आपने इस द लपभ अवसर को खो हदया, तो यि प नः राप्त निीं ुंि ोगा। समय गहतशील ि ै और मन व इक्तियाँ रत्येक पग पर आपको रलोहभत कर ि ोखा दे रिी िैं। हवघ्न-बिाएँ व हवरोिी शक्तक्तयाँ सवपत्र िैं, तो भी म क्तक्त के हलए यिी सम पय क्त स्थान एवुं सम हित समय ि ै। 'सम ि की तरुंगो ुंके शान्त ि ोने पर ि ी मैं स्नान करूँगा' - ऐसा सोिना मूखपता ै। सोिना को स्थहगत मत करो।

आवश्यकताएँ : अरे मानव! भली-भाँहत समझ लो हक आपको इसी क्षण से रयत्न करना रारम्भ कर देना ि ोगा। जीवन अहनहश्चत ि ै, जब हक मृत्य हनहश्चत ि ै। यि भी समझ लो हक अहनत्य लौहकक सम्बन्ध और नश्वर हवषय-स ख असत्य िैं। सत्यता या वास्तहवकता केवल मात्र ईश्वर ि ी ि ै। सत्य और असत्य को हववेक से जानो । सत्यान सन्धान के हलए उत्कट हजज्ञासा उत्पन्न करो और हमथ्या रलोभनो ुंसे अपने को म क्त करो। परीक्षाओ ुंऔर कष्टो ुंकी घडी में क्तस्थर रिना सीखो। अपनी इक्तियो ुंऔर आवेगो ुंको हनयन्त्रण में रखो। सभी पररक्तस्थहतयो ुंमें सन्त ष्ट और रसन्न रिो। आत्म-हवश्वास एवुं ईश्वर में हनष्ठा बनाये रखो। सम्यक् ज्ञानान सार आिरण करो।

खोज के स्थल : ज्ञान और आनन्द केवल सुंन्याहसयो ुंऔरआरणयको ुंकी ि ी सम्पहत्त निीं ुं ै। हृदय भगवान् का स्वणप-मक्तन्दर ि ै। ईश्वर आपके और रत्येक राणी के हृदय में अवक्तस्थत ि ै। यि जगत् ईश्वर का पररव्यक्त स्वरूप ि ै। अपने हृदय एवुं मन को श द्ध कररए, तभी आप अपने भीतर, बिार एवुं सवपत्र उसी का दशपन करेंगे।

मागि-दशिक सांकेत : सांुसाररक द ः खो ुं और अपूणपताओ ुं का सतत स्मरण करो। भगवत्साक्षात्कार-राप्त सन्तो ुंका स्मरण करो और उनसे रेरणा राप्त करो। एक हनहश्चत उद्देश्य सि ख रखो; उत्तम हविारो ुंकी पृष्ठभूहम में जीवन का हनिापररत सम हित कायपिम बनाओ। श्रद्धा और हवश्वास से कायप करो। आत्म-सुंयम और य क्त जीवन के अभाव में सद्ग ण रस्फ हटत निीं ुं िोंगे। अतः ि ररत्र का हवकास करो। समस्त ज्ञान और ि न-सम्पदा की अपेक्षा ि ररत्र अहिक

मूल्यवान् और शक्तक्तमान् ि ै। श द्धता, सत्यता, सच्चररत्रता और दृढ़ ि ारणा से आप त रन्त जीवनादशप की अन भूहत करेंगे।

मागगि–तुष्टय : हभन्न-हभन्न रवृत्यन सार ि ार रशस्त मागप हनदेहशत ि ैं। बौक्तद्धक राहणयो ंके हलए ज्ञान-मागप, भावना-य क्त राहणयो ंके हलए भक्तक्त-मागप, सहिय व्यक्तक्तयो ंके हलए कमप-मागप तथा रिस्यमयी रकृहत वालो ंके हलए राजयोग ि ै।

अन सन्धान कररए-हनज स्वरूप का, छल, भय तथा ि ि के मूल कारण का, अवस्था-त्रय (जागृहत, स्वप्न तथा स ष क्तप्त) का। अहनत्यता को पूणपरूपेण नकारए, तभी आपमें ज्ञान-सूयप का उदय ि ोगा और आप माया के बन्धन से म क्त ि ोगें।

ईश्वर के रहत अगाि आसक्तक्त का उपाजपन करने से, उनसे दृढ़, रगाढ़ रेम-सम्बन्ध स्थाहपत करने से तथा पूणप आत्म-समपपण एवुं पूणप रपहत्त से आप हदव्य दृहष्ट और ईश्वर–ैतन्यता की राक्तप्त करेंगे।

मानवता, माता-हपता, पूज्यजन, ग रुजन, सा ओ,ं सुंन्याहसयो,ं मिात्माओ,ं रोहगयो ंऔर हनिपनो ंके रहत की गयी हनष्काम सेवा ि ी ईश्वर की आरािना ि ै। फल की इच्छा से रहित सेवा मन को श द्ध करती ि ै तथा इसे हदव्य रकाश व आनन्द-राक्तप्त के हलए तैयार करती ि ै।

यम और हनयम का अभ्यास, आसन में क्तस्थरता, राणायाम, बाह्य हवषयो ंसे मन की उपरहत तथा रत्यािार से मन की एकाग्रता आती ि ै। पररणामतः मन ध्यान व समाहि में सुंक्तस्थत ि ो जाता ि ै।

कमियोग साधना : ब राई का रहतकार भलाई से करो। जो आपका अहित करते ि ो,ं उनकी सेवा करो। दूसरे की आवश्यकताओ ंको अपनी आवश्यकताओ ंसे अहिक मित्व दो। जो-क छ आपके पास ि ै, उसे दूसरो ंमें बााँटो, हनिपनो ंको दान दो। अहशहक्षतो ंको हशहक्षत करो। रोहगयो ंकी पररियाप करो। यथाशक्तक्त दूसरो ंके कष्टो ंका हनवारण करो। सेवा के हलए अपनी स ख-स हविाओ ंका पररत्याग करो। 'मन में राम, ि ाथ में काम' के माध्यम से अपने दैहनक कायों को ईश्वर-पूजा में रूपान्तररत करो।

हकन्त नाम व यश की आकाुंक्षा से सिेत रिो। अिुंकार ि ीरे-ि ीरे पनपेगा। सेवाहभमान अहत–ाहनकारक ि ै। रहतहदन आत्म-हनरीक्षण एवुं आत्म-हवश्लेषण ि ारा इसका हनवारण करो। अपनी सभी रेरणाओ ंका हवश्लेषण करो। सच्ची हवनयशीलता का उपाजपन करो।

ित्तियोग : भक्तो ंऔर सा ओ ंकी सत्सुंगहत, ब्राह्मम हतप में उठना, भगवान् के मि र नामो ंका सुंकीतपन करना, जप, राथपना व अपने इष्टदेव का पूजन करना, ि ाहमपक ग्रन्ो ंका स्वाध्याय करना, दान देना, सामहयक व्रत करना, राहत्र जागरण करना आहद भगवत्प्रेम के हवकास एवुं रगहत के हलए अपेहक्षत सािनाएाँ ि ैं। भगवन्नाम का गायन भक्तक्त-भाव से करो। समस्त राहणयो ं में भगवद्-दशपन करो। अपने मन, हृदय तथा आत्मा को भगवान् के ि रण-कमलो ंमें समहपपत करो। रह्लाद की भााँहत उत्स कता से राथपना करो। मीरा, रािा एवुं रामकृष्ण परमिुंस की भााँहत

भगवद्-दशपन िेत सचे्चे हृदय से रुदन करो। भावपूणप हृदय से जपो - "मैं आपका हाँ, सब आपका िै; िे रभो! आपकी इच्छा पूणप िो!"

आलस्य, कोरी भाव कता, थोथी भावनाएँ, शिन्ता, कपट, स्वाथपरता आहद भक्तक्त-मागप के हवकास में हवश्वासघाती शत्र िैं। सतत सजग रिो। हनहश्चत हदनियाप बनाओ और दृढ़ता से रत्येक हियाप का पालन करो। इस रकार आलस्य को हवहजत करो। सत्य पर दृढ़ रिो। नैहतक सािस का उपाजपन करो। अतीत के भक्तो ुंके सािसपूणप कायों से रेरणा राप्त करो। सबको साष्टुांग रणाम हनवेदन करने के िारा शिुंकार और पाखण्ड पर हवजय पाओ। उसकी करुणा-राक्तप्त के हलए सदा राथी रिो।

ज्ञानयोग : ज्ञानी ग रु की शरण लो। उससे श्र हतयो ुंका श्रवण करो। श्रवण हकये गये उपदेशो ुंका प नः -प नः मनन करो। वेदान्त के सत्यो ुंपर अनवरत हनहदध्यासन करो। स्पष्ट, गम्भीर ज्ञान तथा दृढ़ सुंकल्प-शक्तक्त हवकहसत करो। इस दृश्य जगत् को स्वप्नवत् समझो। हत्रलोकी की सम्पहत्त को त च्छ समझो। शरीर की नश्वरता और हवषय-वासनाओ ुंकी क्षणभुंग रता पर हविार करो। य गो ुंके असत्य िेिाध्यास को हवनष्ट करो। खोजो- 'मैं कौन हाँ?' सत्य और असत्य को हववेक िारा जानो। म क्तक्त और सत्य ज्ञान की राक्तप्त के हलए उत्कट आकाुंक्षा उत्पन्न करो।

िेिासक्तक्त तथा 'मैं' और 'मेरे' की भावना मन को अज्ञानबद्ध रखती िै। शिुंकार सदैव मनमानी करता िै। पूवप-जन्मो ुंकी वासनाएँ, सुंकल्प, भय, मानहसक िुंिलता भ्रमात्मक हविार एवुं भ्रम िी आक्तत्मक खोज और ध्यान की बािाएँ िैं।

ब्रिा-भाव की सकारात्मक भावना को दृढ़ता से हवकहसत करो। आप हनत्य श द्ध, हनराकार, असीम आत्मा िैं इस भाव की अन भूहत करो। जो भी पदाथप देखो, उसके नाम-रूप को नकारते हुए उसके भीतर सुंक्तस्थत अन्तरात्मा के दशपन करो। वाह्य हवकारो ुंसे अरभाहवत रि कर साक्षी-भाव में सुंक्तस्थत रिो। इक्तियान भव को नकारो। 'ॐ' का हनरन्तर उच्चारण करो तथा इस भाँहत मन को क्तस्थर तथा शरीर और जगत् की भावना को हवनष्ट करो।

राजयोग : इक्तिय-दमन तथा िररत्र की श द्धता के पश्चात् िी राजयोग की कठोर सािना सम्भव िै। यि एक ग प्त रिस्यमय हवज्ञान िै। सत्यवादी बनो। हकसी को िाहन निी ुंपहुँिाओ। सुंयमी रिो। श द्धता, सन्तोष, तपश्चयाप, स्वाध्याय तथा आरािना-सम्बन्धी शास्त्रोक्त रहनयमो ुंका अन पालन करो। आसनो ुंके अभ्यास िारा स्वस्थ एवुं प ष्ट शरीर बनाओ तथा राणायाम िारा अन्दर के कोषों को श द्ध करो। जब मन श द्ध िो जाये, तब उसे इक्तिय-जन्य अन भवो ुंसे हवम ख करो। इसे िी रत्यािार से अहभहित हकया जाता िै।

रत्यािार मन की बहिम पखता पर रभावकारी अुंक श का काम करता िै, मन की उते्तजनाओ ुं को शान्त करता िै तथा मन को एकाग्र करता िै। एकाग्रता िी िारणा का रूप िारण करती िै। िारणा अहवक्तच्छन्न िारा में रवाहित िो कर ध्यान में रूपान्तररत िोती िै। पररणामतः ध्यान समाहि में पररणत िो जाता िै और समाहि आवागमन के िि से जीव को म क्त करती िै।

अश द्ध रेरणा, ब्रह्मियप का अभाव, अहिक भोजन, आलस्य, अहिक सोना, हमथ्या भय, कल्पना में हविरण करना और हनम्न स्तर की अलौहकक शक्तक्तयाँ, जैसे-दूर की बातो ुंको स नने एवुं

घटनाओ ंको देखने की शक्तक्त आहद इस मागप की बािाएँ एवुं गड्ढे िैं। हजह्वा का हववेकपूणप
हनयन्त्रण, त्राटक और राणायाम समाहि के सियक उपकरण िैं। सिास को सजगता से सुंय क्त कर रते्येक क्तस्थहत में
अपनी सामान्य ब क्तद्ध का रयोग करो। परमानन्द और अमरत्व के उच्चादशों
की अन भूहत के हलए तीव्र वासनाओ ंव इच्छाओ ंके त्याग से हसक्तद्धयो ंको दूर भगाओ।

सामान्य पृष्ठिडम : मानव के सफल रयासो ंकी मौहलक पूवपहषक्षाएँ, सवपत्र समान िैं। वे
िैं-नैहतकता तथा सामान्य मानहसक और शारीररक स्वस्थता। नैहतकता के अभाव में रगहत सम्भव
निी।ं सब-क छ िोते हुए भी यहद इस जगत् में व्यक्तक्त आरोग्यता-सम्पन्न न िो, तो वि न स्वयुं के
हलए और न जगत् के हलए िी लाभदायक िोगा। स्वास्थ्य के अभाव में कोई भी रयत्न अथवा
रयास सम्भव निी ंिै। इसी रकार सुंसार का स्वाहमत्व राप्त िोने पर तथा असीम शक्तक्त एवुं ब क्तद्ध
से सम्पन्न िोने पर भी नैहतकता के अभाव में उसका जीवन व्यथप िै। अन्ततः उसका घोर पतन
िोगा। अतः स्वास्थ्य और राकृहतक हनयमो ंका पालन करो। सुंयहमत तथा हनयहमत सरल जीवन
यापन करो।

दैहनक व्यायाम, राणायाम, आसन, अल्पािार और श द्ध हविारो ंसे शरीर को िलका और
श द्ध रखो। सद्ग णो ंके व्याविाररक अभ्यास िारा िररत्रवान् बनो। भले कायप करो और समस्त
क हटलता और कायरता को हवनष्ट करो। ईष्याप व घृणा का उन्मूलन करो। सत्य पर दृढ़ रिो, समग्र
स्त्री-जाहत में हदव्यता के दशपन करो। सफलताओ ंऔर उपलक्तब्धयो ंमें जीवन रथम नीवुं सुंक्तस्थत िै।
त्वररत रगहत और आत्म-साक्षात्कार के हलए आप आश्वस्त िो जायेंगे।

मडहमा : हकतना भी कहठन कायप क्यो ंन िो, एक ईमानदार व्यक्तक्त के हलए क छ भी
असम्भव निी ंिै। जो एक व्यक्तक्त कर ि का िै, वि दूसरा भी कर सकता िै। जब आप
जीहवकोपाजपनाथप पिीस रुपये माहसक वेतन राप्त करने के हलए आठ घण्टे कायापलय में बैठ कर
खून-पसीना बिा सकते िैं, तब कैवल्य और अमरत्व की आनन्दमयी क्तस्थहत राप्त करने के हलए
क्या थोडा भी रयास उपयोगी न िोगा? यि परमानन्द की क्तस्थहत अवणपनीय िै। आपको अखण्ड
आनन्द, परम स्वतन्त्रता और हनत्य शाक्तन्त की राक्तप्त िोगी। आप मिाराजाहिराज िो। वि परम
क्तस्थहत हनभपय, हनहवपकार और अमर िै।

आह्वान : ओ अमर प त्रो! अपूणपता, अज्ञानता और असन्तोष का जीवन खूब हबता ि के
िो। पूणप और सब रकार से हवकहसत जीवन व्यतीत करो। एक ज्योहतमपय आत्मा बनो। इसी क्षण,
जिाँ भी त म िो, पृथ्वी को स्वगप बनाओ। अहवद्या-रूपी हनिा से जागो और हदव्य जीवन व्यतीत
करने के हलए तत्पर िो जाओ। रयत्नशील बनो। आलस्य और कायरता को हवनष्ट करो। हसुंकि
समान बनो। रते्येक कायप में आपको सफलता राप्त िोगी। आप भौहतक और आध्याक्तत्मक क्षेत्र में
भव्य उन्नहत करोगे। आप अहवलम्ब लक्ष्य की राक्तप्त करोगे। मैं आपको आश्वासन देता हँ।

प्रगडत हेतु सामग्री (जानो और साहसी िनी):

१. बाह्य शत्र ओ ंसे भयभीत मत िोइए। अिुंकार, मद, काम, क्रोि, लोभ, मोि और स्वाथप
आपके वास्तहवक शत्र िैं।
२. हजतनी शक्तक्त आप दूसरो ंके उत्थान में लगायेंगे, उतनी िी अहिक हदव्य शक्तक्त आपके भीतर
रवाहित िोगी।

३. रारम्भ में सुंयम, आत्म-पररत्याग व िारणा के अभ्यास बहुत अहिक अरुहिकर व शष्क रतीत िोंगे। यहद आप इनमें शाक्तन्तपूवपक सुंलग्न रिें, तो आपको इनके िारा बल, शाक्तन्त, नया ओज और आनन्द की राक्तप्त िोगी।

४. यहद आप सचे्चे और ईमानदार िैं, यहद आप सदैव सामान्य बक्तद्ध को रयक्त करते िैं तथा ियपवान् और हनरन्तर रयत्नशील िैं, तो आप लक्ष्य की राक्तप्त शीघ्र िी कर लेंगे।

५. सफलता आपको अवश्य हमलेगी; क्योहुंक आपने इसीहलए जीवन िारण हकया िै। आप अपने उत्तराहिकार का हवस्मरण कर ि के िैं। अभी अपने जन्महसद्ध अहिकार की माँग करें।

पाठको! यिी सन्देश िै! यिी जागृहत का उद्घोष िै! यि आप पर हनभपर करता िै हक अबआप माँगें, खोजें और खटखटाएँ। जो िाहिए वि यिी ुंिै। केवल राक्तप्त की इच्छा की अपेक्षा ि।आओ! क छ समय के हलए बातें बन्द कर दें। भगवान् आपको कायप करने की रेरणा दें!

एकडवांश अध्याय

आलोक-पुंज

"लोग दीपक जला कर पैमाने के नीि नीि ुंरखते; परन्त दीवट पर रखते िैं, तब उस घर के सब लोगो ुंको रकाश पहुँिाता िै।" -यीश का सन्देश

काल यगो ुंसे उन मिान् आत्माओ ुंका एक मनोिर हवश्व-कोष सुंरहक्षतकरताआयािै,जो अपने िरण-हिह्न सन्दरता से यथािाम उसके हृदय पर अुंहकत करते गये।अनन्तकालपूवपघिी घहटत घटनाओ ुंके रामाहणक हववरण को सरहक्षत रखने का श्रीगणेश िोगयाथा,हजसकापता इहतास और हवज्ञान भी न लगा सके।

समय की सतत यि आकांक्षा रिी हक वि हदव्य लोक से हनःसृत मोती के हबन्द ओ ंका सुंग्रि और अपनी मनोरम कल्पना-शक्तक्त से उनको हित्र-रूप में हिहत्रत करता रि। हवश्व की हित्रशाला इन हवलक्षण हित्रो ंसे स शोहभत िै। इनकी शोभा कभी िूहमल निी ंिोती; बक्तल्क जागरूक नेत्रो ंके हलए सदैव आकषपण का कि बनी रिती िै। उस हित्रशाला में राज्य-रभ ता-सम्बन्धी, इिलोक-सम्बन्धी, नयी हवहियो ंतथा आहवष्कारो-ंसम्बन्धी ऐसे भी हित्र अंहकत िो जाते िैं हजन्ोनंे क्षहणक सफलता राप्त की िो; हकन्त सिासी और हवजेताओ ंकी श्रेणी में वि उनको स्थान कैसे दे सकती िै? स्वभावतः वि उन्ें पृथक् करेगी।

िररत मूसा ने घोहषत हकया िै- "हवनम्रता से बढ़ कर कोई म क ट निी ंिै, रहसक्तद्ध से बढ़ कर कोई कीहतप स्तम्भ निी ंिै तथा कतपव्य-पालन से बढ़ कर कोई लाभ निी ंिै। सज्जन व्यक्तक्त अन्यो ंको सन्मागप का पहथक बनाता िै, पडोसी से रेम करता िै, ग प्तदान करता िै तथा सत्कायप सद्भाव व भगवद्भाव से करता िै।"

उसके हृदय में रभ हनवास करते िैं। वि वन्दनीय िै। वि आरािनीय िै। वि िमारे मन और हृदय में समाया रि, िािे िम जाग्रतावस्था में िो,ं रमाद में ऊँघ रिे िो ंया गिरी हनद्रा में िी।ं वि हनभपयता से समग्र हवश्व पर अपना आहिपत्य स्थाहपत कर लेता िै तथा मिान भावता, उदारता, कृपाल ता तथा सौजन्यता िारा िैयप का रहतरूपक हनमापण करता िै। दृढ़ सुंकल्प, रावैहगक शक्तक्त, अहिग िररत्र तथा श द्ध मौहलकता से सम्पन्न वि हतहतक्षा का स्तम्भ िै। आत्म-रशुंसा करना, नश्वर जीवन की नश्वर हवलाहसताओ ंसे रलोहभत िोना, हकसी अन्य की सिायता से पराकाष्ठा पर पहुँि कर अगले िी क्षण निी िकेल हदया जाना-ये उसके आत्म-सिानी िोने के कारण निी ंिैं।

अन्त हृदय की यि ज्योहत ब क्तद्ध, ज्ञान, पररज्ञान और आत्म-हनरीक्षण से ज्योहतत िै। यि मक्तस्तष्क और हृदय की सन्त हलत क्तस्थहत िै। उसका हृदय में पूणपरूपेण जीवन्त रूप से दशपन करो। वि मृत निी ंिै। सूयापस्त िो जाने से सूयप का अन्त निी ंिो जाता। थोडे समय हवश्राम करने के हलए वि अपने पुंिभौहतक दिे का त्याग भी कर सकता िै। वि था, वि िै और वि रिेगा।

समय ने स दूरपूवप िमारी मातृभूहम में अहतशय रुहि ली। उसने इस पर अवतररत िोने वाले रभ -रेहषत सन्देशवािको ंको शाक्तन्तपूवपक, िैयप से, आश्चयप से हिहत्रत हकया। सच्चाई की आशापूणपता, वातावरण के मि र रभा-मण्डल तथा िरातल की उवपरता को समय ने अन भव हकया।

भारत दूर तक फैला हवशाल वट वृक्ष िै। योग-दशपन रूपी स हवस्तीणप शाखाओ ंतथा आगन्त क मूलो ंवाले इस वृक्ष की जडें िमप में गिराई तक रवेश कर गयी िै। जीवन-लक्ष्य, जीवनोद्देश्य तथा जीवनादशप का उपदेश सुंसार में रिाररत करने के हलए भारत माता एक के पश्चात् दूसरा तत्त्ववेता अवतीणप करने में थकती निी।ं आज उसने िमारे समक्ष हकसको रस्त त हकया िै? वे स्वामी हशवानन्द िैं।

मानव निी ंिािता हक उसकी सन्तहत क्षीण ज्योहत हवकीणप करने वाली तारका, हसक्थवहतप तथा वहतपका-दीप िो। जब सामान्य लोगो ंकी यि बात िै तो उनके हवषय में क्या किना िै जो स्वयुं रोज्ज्वल ज्योहत िो!ं

ऐसे िी एक पररवार ने गभप में िी पररपक्व अहग्न-प ुंज को रज्वहलत हकया। ८ हसतम्बर १८८७ को स दूर दहक्षण भारत में एक हशश ने जन्म हलया, हजसका रिस्य सम्भवतः माता-हपता ने भी निी ुंजाना था। बहुत सम्भावना इस बात की िै और हनश्चयात्मक रूप से किा जा सकता िै हक रभ ने उस हशश की आत्मज्ञान से सम्पन्न कर हदया था।

इनके जन्म-स्थान को गायक पहक्षयो ुंका घोसुंला किा जाता िै। इस ग्राम पर अप्पय दीहक्षतार की अहमट छाप लगी िै, जो सदैव स्मरणीय रिेगी। इसे एक छोटी नदी ने पररवृत्त कर रखा िै। इसके िरत हदपक् िरागिो ुंतथा िरे-भरे खेतो ुंकी दृश्यावहलयाँ िैं तथा यत्र-तत्र गगनच म्बी गाढ़ा नीला पहश्चमी घाट िै, जो सम्भवतः मिा यप भाव को मूहतपमान् करता िै। इसके हनवासी ज्ञात-अज्ञात रूप से भगवद्-स्मरण में तिीन िो जाते थे।

ज्ञान और ब हिमत्ता से रदीप्त तथा पूणप उिास, शहक्त, उत्सिा और अन्तःरेरणा से य क्त स्वामी जी अपने सभी हखलाडी साहथयो ुंऔर सिपाहठयो ुंको पराहजत कर देते िैं। उनका शरीर हवलक्षण रूप से सम्प ष्ट एवुं स िौल था। हवद्यालय तथा मिाहवद्यालय मैं वे अनेक प रस्कारो ुंके हवजेता थे।

सम्भवतः उन्ोनुं यि हविार हकया हक मनोहवज्ञान के ज्ञान से भी पूवप आरोग्य-हवज्ञान का ज्ञान िोना परमावश्यक िै। तभी सन् १९१० में उन्ोनुं हिहकत्सक का व्यवसाय अपनाया तथा हसुंगाप र रस्थान हकया। व्यहक्त और पदाथप में समता लाने का कायप समीकरण कला के न्यायिीशो ुं को उत्तराहिकार के रूप में सौपुं ा गया; हकन्त अहववेक और अज्ञानता के कारण उनमें से अहिकुंश इसका उपय क्त रयोग करने में असफल रिे। अपनी बारी में हिहकत्सको ुंने इस कला को सीखा और दिे की असन्त हलत अवस्था को सन्त हलत बनाने में इसका हववेकपूणप रयोग हकया।

स्वामी जी ने इस कला को हिहकत्सा क्षेत्र में निी ुंबहल्क आध्याहत्मक क्षेत्र में भी अपनाया। स्वामी जी ने न केवल सिस्रो ुंरोहगयो ुंको व्याहियो ुंसे म क्त हकया अहपत उन आत्माओ ुंको, जो वतपमान यातनाओ ुंतथा कष्टो ुंसे सुंघषपरत व पीहडत और म हक्त के हलए रयत्नशील थी–ुंउनको भी म क्त हकया।

भारत माता कब तक उनके हवयोग की पीडा सिन कर सकती थी? परन्त क्या वि पररिय-पत्रो ुंतथा पत्र-शीषों की शोभा बढ़ाने वाली तथा अुंगरेजी वणपमाला के छब्बीस वणों के उलट-फेर मात्र से रहित रहतहष्ठत उपाहियो ुंसे हवभूहषत इस व्यहक्त को स्वीकार करने को तैयार थी? कदाहप निी!ुं कदाहप निी!ुं क्या वि इनकी अन पयोहगता और अहियता को निी ुंजानती थी? क्या वि उस उद्देश्य का हवस्मरण कर ि की थी, हजसके हलए उसने उन्ें जन्म हदया था?

उनका हृदय त्याग से दीप्त िो उठा था। उनका हनवास स्थान उनके हलए अहग्न की भट्टी त ल्य भडक उठा। आध्याहत्मक ज्वालाओ ुंने उनकी िल और अिल सम्पहत्त को हनगल हलया। पदवी, सम्पहत्त, हमत्रो ुंतथा साहथयो ुंका उन्ोनुं पररत्याग कर हदया। उनके अन्तर में आध्याहत्मक आवेग ने रिार हकया और उनके िाथ में जलती ज्वाला थमा दी।

दृढ़ हनश्चय और सुंकल्प से इस मशाल को ले कर हविार और आिार की ब राइयो ुंहजनसे मानवता आिान्त िै -का उन्मूलन अपने शबद् और नाद से करने के हलए अपूवप ब हि और नवीन उिास से पररपूणप व्यहक्त अब भारत में १९२३ में लौटे। ४ जनवरी १९२४ को एक ज्योहतमपय

मित्मा ने उनको परमिुंस-परम्परा में दीहक्षत हकया। तब से वे 'हशवानन्द सरस्वती' के नाम से समलुंकृत हुए।
सुंसार-रूपी हपुंजरे से म क्त ि ो कर उन्ोनेुं एक स्थान से दूसरे स्थान की पद-यात्रा की, विााँ के हनवाहसयो ुंको अमूल्य हशक्षाएाँ रदान की, तैयार हजज्ञास ओ ुंकी भावनाओ ुंको उद्दीप्त हकया तथा जो उद्दीप्त थे, उनकी भावनाओ ुंको पूणपतया रज्वहलत हकया।

पररव्राजक-जीवन की सन्त हष्ट के उपरान्त उन्ोनेुं हिमालय की तलिटी में पहुाँ कर एकान्त-वास हकया। घोर तपस्या, सुंन्याहसयो ुंतथा याहत्रयो ुंकी हनष्काम सेवा, स्वाध्याय में अदम्य रुहि, उच्च गम्भीरता, कायों में हनयहमतता, समग्र मानव-जाहत का आहलुंगन करने वाली मिती भावना एवुं सिान भूहतमय दृहष्टकोण से सम्पन्न ि ो कर तथा जाहत-भेद-भाव से ऊपर उठ कर वे पूणप योगी बन गये। अवहशष्ट ऐक्तिक उते्तजनाएाँ तथा हृदय के कोने में रच्छन्न अहत सूक्ष्म वासनाएाँ ऐसी भागी जैसे भट्टी से हबच्छ भागता िै।

उनके हृदय में आनन्ददायी गम्भीर शाक्तन्त का साम्राज्य िै, हजसकी मि र स रहभ तथा आध्याक्तत्मक स्पन्दन वे हवश्व-भर में भेजते रिते िैं, हजनका रसास्वादन सुंसार के हकसी भी कोने में वास करने वाला रते्येक व्यक्तक्त करता िै। वे ज्ञान की हवहभन्त्र पद्धहतयो ुंसे पूणपतया पररहित िैं। वे हवलक्षण स्मरण-शक्तक्त से सम्पन्न िैं। उनका रविन सबको मन्त्र-म ग्ध कर देता िै।

वे कतपव्य-सम्पादन में हनप ण िैं। उनकी सब पर समदृहष्ट िै और अपने मि र स्वभाव से सबके साथ सम-व्यविार करते िैं। वे अहतशय सरल िैं। वे सिज राप्य िैं, सबको आत्म-सम मानते िैं। क्या उनकी कृपा राक्तप्त का यि अवसर खो देना िोगा? अहतमानव-रहित स्पष्ट स बोि शैली में ज्ञान-रदाहयनी प स्तको ुंके रूप में स्वहगपक उपिारो ुंको रत्यक्ष पा कर भी िाथ से जाने देंगे? क्या िमें दैवी उपिार-जो खडी िट्टान-सम पतनकारी सांुसाररक बन्धनो ुंसे म क्त करवाने में सिायक िै-को अस्वीकृत करना िोगा।

क छ क्षणो ुंके हलए अपनी आाँखें मूहदए। समूपूणप पापो ुंसहित अपने मन को हशवानन्द की ओर रेररत कीहजए। इस वेदी पर अपनी समस्त ब राइयााँ अपपण कर दीहजए। समस्त शारीररक अवयवो ुंको शाक्तन्तः ! शाक्तन्तः !! शाक्तन्तः !!! का पाठ पढ़ाइए। क छ समय के हलए आनन्द में लीन िो जाइए।

ओ मानव! मन को अन्तम पखी करो। आपने सुंसार का अभी पूणपरूपेण त्याग निी ुंहकया िै। 'जन्म-हदवस' पर हदये गये उनके सने्देश को श्रवण कीहजए। ध्यानपूवपक उनका अन स रण कीहजए। ईश्वर आप पर शाक्तन्त, रि रता और समृक्तद्ध की वषाप करें!

पररहशष्ट

"आप कब तक अपनी वासनाओ ुंके वशवती बने रिना िािते िैं? शाहन आपके अन्त करण में िी अवक्तस्थत ै। विी ुंवैराग्य तथा अभ्यास के िारा उसकी खोज करें। उठें, जागें तथा अपने लक्ष्य की राक्तप्त तक हनरन्तर आगे बढ़ते िी जायें।"

-स्वामी हशवानन्द

ऊँ आकाश में हविरण करने वाला गरुड पक्षी सररताओ ुंको पार करने के हवषय में हित्तन्तत नी ुंोता। उसी रकार जीवन की गररमा हभन्न-हभन्न रकार की समस्याओ, ुं हजसमें िमारा भौहतक जीवन व्यहथत तथा मन उहिलत रिता ै, से रभाहवत नी ुंोती। अन शाहसत जीवन, आत्म-सुंस्कार व हनष्काम सेवा के अभाव में िम पथच्य त िो जाते ै। िम हनरथपक हवषयो ुंके
सम्बन्ध में हनरुद्देश्य हिन्तन करते रिते िैं।

मिारे हविार अहनयत्तन्त्रत रिते िैं तथा काल्पहनक आशाओ ुंव हनरथपक स्वप्नो ुंके लोक में स्वच्छन्दता से हविरण करते रिते िैं। िम यि समझते िी नी ुंहक स्वाथप से िम कभी भी हसत्तद्ध-रात्तप्त की आशा नी ुंकर सकते। िम यि जानते िी नी ुंहक केवल हनष्काम्य सेवा से िी मिानता की रात्तप्त की जा सकती िै। िम त च्छ कायों को अन्धिा न्ध करने लग जाते िैं और यि आिम्बरपूणप रदशपन करते िैं हक समग्र सुंसार का दाहयत्व िमारे कन्धो ुंपर िै। तब िम स खमय जीवन-यापन की आशा कैसे कर सकते िैं और आनन्द में कैसे सुंत्तस्थत िो सकते िैं?

मिारी हनयहत हबना रुदन के, हबना िास्न के व हबना सुंगीत के िी समाप्त िो जाने की नी ुंिै। अनेक कहठनाइयो ुंऔर यातनाओ ुंके पश्चात् िमें ज्ञान और आनन्द की रात्तप्त िोने वाली िै। मिें सत्य का रत्यक्ष सामना करना िोगा। िमारी हनयहत आन्तररक शत्र ओ ुंकी छडी की िेय आिीनता स्वीकार करने की न िो कर उन सब पर सफलतापूवपक हवजय-रात्तप्त की िोगी। रत्येक सामान्य व्यत्तक्त, रत्येक हविान् तथा सन्त को इसे अहवरोि रूप से मानना िी िोगा।

क्या यि केवल हसद्धान्त एवुं स्वयुंहसद्ध कल्पना िै? िमें अनन्त अतीत पर दृहष्टपात करना िोगा। असुंख्य मिान् आत्माएँ रकट हुईं; भले िी वे हकसी भी हविार-पद्धहत से सम्बत्तन्धत रिी िो।ुं सत्य िी क छेक ने तत्काल िी रहसत्तद्ध पायी, बहुतो को रहसत्तद्ध देर से राप्त हुई। पर ऐसा घहटत कभी नी ुंहुआ हक हकसी को रारम्भ गवा हदया गया िो।

रत्येक व्यत्तक्त में कोई-न-कोई एक स्वाभाहवक हवहशष्टता िै; हकन्त वि उसकी गाई में पहुुंने की ओर ध्यान िी नी ुंदेता, न िी उसकी खोज करता िै, न िी उपिाता, न िी पररश द्ध और न रकट िी करता िै और न िी उसका रहतरूपेण लाभ उठा सकता िै।

क छ ऐसे व्यत्तक्त हमलते िैं, जो हनराश िो कर कि उठते िैं- "िम जन्म न लेते तो अच्छा िोता।" ऐसा क्यो?ुं उनकी इस हनराशा का मूल कारण क्या िै? आपके जीवनर्ि– के दाँत तो दोषपूणप िैं जो सम हित ढुंग से कायप नी ुंकर रिे िैं। जीवनर्ि– क्या िै और उसके दाँते क्या ै? स्वस्थ प रुषत्व समग्र जगत् का हनभपयता से सामना करने वाला िास, आत्म-हनभपरता, सच्चाई, उदारता और दया की एक पररहि िै। हवश्वास प री िै। सम्यक् ज्ञान ग्राभ िै जो जीवन-र्ि के दाँतो ुंका हनयमन करता िै। आत्म-सुंयम िी िोलक पट्टा िै। ज्ञान और हवजय हवद्य त् िैं। जीवन का आनन्द लो और पूणपता में त्तस्थत िो जाओ।

जीवन के हवहवि झकोरो ुंसे ितोत्साहित न िोइए। मानव सररता-त ल्य िै। उनसे हशक्षा ग्रिण करो। जो आज हछछला िै, वि कल अगािता का रूप ग्रिण कर लेता िै। जो इस समय ब लब ले ै, क छ क्षणोपरान्त वे शान्त िो जायेंगे। सूयोदय की छोटी लिरें सूयापस्त तक रबल लिरो ुंका रूप िारण कर लेंगी।

सावपभौहमक हविान तथा न्याय में अहिग हवश्वास रक्तखए। अनन्तता में हवश्वास हवकहसत
कीहजए। जीवन में सफलता-राक्तप्त का यिी उपिम िै। यातनाएँ केवल अन भव और आत्म-श क्तद्ध के हलए हशक्षाएँ
िैं। सूयोदय समग्र हदन के स्वरूप का पूवप-सूिक िै। हवश्वास और श्रद्धा जीवन के स्वरूप को सूहित करते िैं। ब राई के
सामने कभी मत झ को और अपने वातावरण को कभी दोषी
मत ठिराओ।

सफलता-असफलता का कारण आपका मन िै। सहिष्ण ता और आत्म- समपपण िी आपके
सच्चे पथ-रदशपक िैं। भागवतीय हविान व्यवक्तस्थत िै, अव्यवक्तस्थत निीं। ब रे कायप की अपेक्षा भले
कायप अहिक हवकहसत िोते िैं। स ख और द ःख उनके मापदण्ड िैं।

मन ष्य अज्ञानतावश ब राई का हशकार िो जाता िै और जीवन के हकसी-न-हकसी अवसर
को पा कर भाग्य को कोसता िै। जीवन की हवषमताएँ सफलता-रदायक िैं। अपने हृदय में श्रद्धा
को गिराई से ररत कीहजए, हजस और मक्तस्तष्क में समत्व रिे। यहद आप खिी, हिक्तन्तत रिे,
हनराशायी वस्त ओं पर आँसू बिायें तो िाहमपक रवृहत्त व दाशपहनकता िोने पर भी आपने पढ़ा का
अभाव िै।

अपने मन-मक्तन्दर में श्रद्धा का दीप रदीप्त कीहजए, उसकी दीश हकरामी के रका में,
जीवन की अज्ञानता के अन्धकार में, िीरे-िीरे िहलए। यि सत्य िै हक देयमार रकाश के हवपरीत
यि रकाश मन्द िै, हकन्त एक पग भी आपको गहतमान कर लहथन हदशा की ओर अग्रसर
करेगा, हजसको प नः खोजना निीं पडेगा।

को दबानेकीिेष्टाकीहजए। श्रद्धा की भाँहत सच्चाई भी एक उत्तम पथ-रदहशपका िै।
कन्यूहशयस का कथन िै-"िमारे जीवन में सच्चाई का स्थान म क ट के समान िै। इसके अभाव में
सत्कायप भी हनरथपक िो जायेंगे। बाह्य रूप से भि हदखायी देने वाले भी मात्र दोगुी िो जायेंगे तथा
मिारे नेत्रों को िौहुंयिाँ देने वाला ज्योहतमपय रकाश काम की सामान्य-सी फूँक से शहमत िोने वाली
मन्द रभा बन जायेगा।" मनसा, वािा, कमपणा सच्चे बहनए।

अपने प रुषत्व को बनाइए। यिाँ प रुषत्व से तात्पयप पाशहवक वृहत्तयों से निीं िै। बलवान्,
स्वतन्त्र और आत्म-हनभपर बहनए। अपनी शक्तक्त का अपव्यय मत कीहजए। शक्तक्त सीहमत िै। एक
हदशा में अपव्यय िोने से प नः उसकी क्षहत-पूहतप निीं िोती, जब तक हक उसका सृजन सदैव न
िोता रिे। बीता समय िाथ निीं आता। शक्तक्त आपके आदशों और ग णों का हवद्य त्-गृि िै। पूणप
हवकहसत, पूणप अन शाहसत, पूणप पररपक्व प रुषत्व-एक शान्त, नम्र, आडम्बर-रहित अपने अक्तस्तत्व
को जानने वाली भिता, दैवी नम्रता, आत्म-िेतनता और आत्म-हनभपरता की कसौटी िै।

अनेक व्यक्तक्त रभ की खोज तथा ज्ञान की हपपासा में संलग्न िैं, परन्त उनमें से क छ ऐसे
लोग िैं जो यि समझते िैं हक उनको कोई उपय क्त मागप-दशपक निीं हमल सका। उनको द ःख िै
हक 'जीवन-लक्ष्य की राक्तप्त िेत उनका कोई भी मागप-दशपक निीं िै।' उनको क्षण-भर यि
सोिना िाहिए हक कभी भी कोई ऐसा य ग आया िै जो परमात्मा के सन्देशवािकों व जागरूक
आत्माओं से हवभूहषत न रिा िो ? निीं, ऐसा तो कभी निीं हुआ।

प रातन काल से एक िारा हनरन्तर रवाहित िो री िै जो कभी अवरुद्ध नीि ंिोती। आप अभीप्सा के अभाव में ग रु-राक्तप्त से वंहित िैं। क्या आप इक्तियो ंकी क्ष ि वासनाओ ंकी त हष्ट के हलए स्थान-स्थान पर मारे-मारे हफरने में लक्तज्जत नीि ंिोते? हिमालय की तलिटी में एकहत्रत िो
जाओ, जो गुंगा माता को पररवृत्त हकये हुए िै, हजसकी पहवत्रता अवणपनीय िै।

आनन्ददायक आनन्द-क टीर में हसद्ध मिात्मा हनवास करते िैं। अपनी दृहष्ट उस रकाश-प ंज पर क्तस्थर रखो, जिााँ से ज्ञान-ज्योहत की हकरणें हवकीणप िो री िैं। यिााँ पर आपको हवश्व-नागररक, िमपदूत और ग रु की राक्तप्त िोगी। वि नभ-मण्डल से उच्च स्वर में उद्घोषणा करते िैं- "मेरे जीवन का उदे्देश्य आपकी सेवा करना तथा आपको रसन्न रखना िै। अज्ञानान्धकार को हवनष्ट करने में और जीवन-लक्ष्य-कैवल्य एवुं परम गहत की राक्तप्त में मैं आपका पूणपरूपेण सियोगी बनूाँगा।"

ॐ शाक्तन्तः ! शाक्तन्तः !! शाक्तन्त!!!

इस पुस्तक के डवषय में :

इस छोटी-सी प स्तक में सामान्य जन के समक्ष स्वामी जी के अतीत तथा वतपमान रोिक जीवन की क छ रम ख घटनाओ ंके पररेरेक्ष्य में उनके व्यक्तक्तत्व का एक हनष्पक्ष अध्ययन रस्त त करने का रयास हकया गया िै।

उनके जीवन-हवषयक इससे पूवपतन रकाहशत दो-तीन ग्रन्ो ंसे सवपथा हभन्न, रस्त त प स्तक का म ख्य उदे्देश्य उनकी सामान्य गहतहवहियो ंमें अिःस्थ दशपन तथा समाहवष्ट व्याविाररक हशक्षाओ ंको रकाश में लाना िै। अतः यि प स्तक उनकी जीवनियाप का मात्र वणपन न िो कर राक्तन प स्तको ंका हवकहसत तथा पररहनष्पन्न रूप िै।

क छ हवश्लेषणात्मक भाविारा में हलखी जाने के कारण, इसमें अनेक उपयोगी तथा पथ-रदशपक सुंकेत रस्त त हकये गये िैं जो हनश्चय िी रत्येक वगप के पाठक के हलए अतीव व्याविाररक मूल्य के िोंगे। यिी इस प स्तक की हवहशष्ट िपता िै।

यि प स्तक आदशप मानव के अनेकहवि रहतमान के रूप में स्वामी जी के अब तक अज्ञात क छ स न्दर हवहशष्ट ग णो ंको रकाश में लाती िै।